तेरापंथ दिग्दर्शन

१९८७

जैन विश्व भारती प्रकाशन

तेरापंथ दिग्दर्शन
१९८७
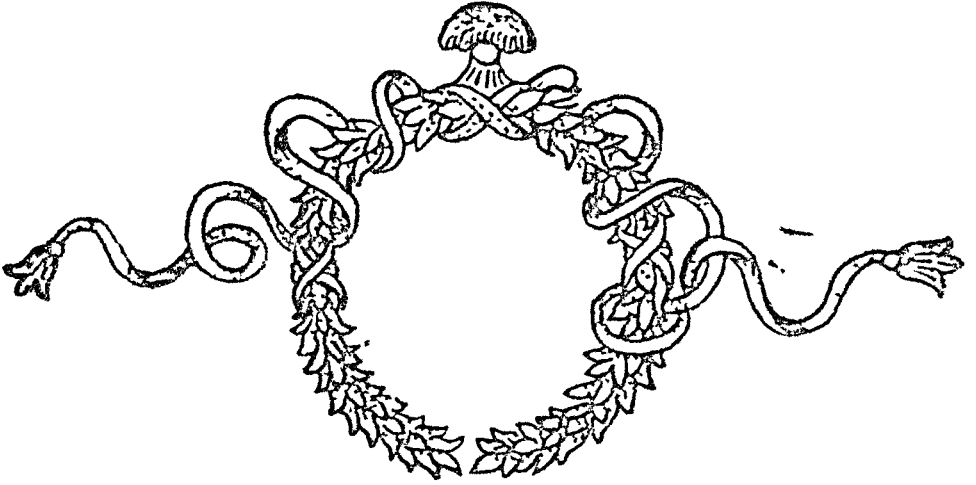
मुनि सुमेरमल (लाडनूं)

आशीर्वचन

वर्तमान की हर आहट पर समय का पहरा बैठा है। वह उसे अतीत मे ले जाता है और उस पर मौन की अमिट छाप लग जाती है। कुछ व्यक्ति ऐसे होते है, जो उस आहट को स्थायित्व देने का काम करते है। इतिहास उन्ही के दिमाग की उपज है। "तेरापंथ दिग्दर्शन" तेरापंथ धर्मसंघ का वार्षिक इतिहास है। इतिहास की एक छोटी सी झलक इसमे दिखाई दे सकती है।

तेरापंथ दिग्दर्शन का यह चौथा वर्ष है। इसका प्रथम वर्ष अपने आप मे एक नया प्रयोग था। कोई भी नई धारा आगे बढती है, तो उसमे कुछ छूटता है, कुछ जुडता है। 'तेरापंथ दिग्दर्शन १९८७' मे भी कुछ छोड़ने और जोडने का सलक्ष्य प्रयास किया गया है। पिछले वर्ष के इतिहास मे रही कमियो को परिमार्जित करने के बाद भी इसमे परिष्कार की सभावना सदा रहेगी। किसी भी लेखन या सम्पादन मे परिष्कार की दृष्टि जितनी स्पष्ट और उदार होती है, कृति का महत्त्व उतना ही बढ़ता है।

पाठको का यह दायित्व है कि वे पुस्तक को पैनी दृष्टि से पढें और और तटस्थ समीक्षा-समालोचना करे। पाठको की आलोचना की धार जितनी तीखी होगी, लेखक और संपादक की उतनी ही सजगता बढेगी। लेखक, सम्पादक भी अपने पुरुषार्थ को परिमार्जित करने मे अपनी सफलता समझे और विकास की संभावना देखे, यह आवश्यक है।

इतिहास के संकलन और सम्पादन का काम पूरी तरह से श्रम और शक्ति के नियोजन की अपेक्षा रखता है। आन्तरिक लगन और उत्साह के बिना ऐसा काम होना बहुत कठिन है। प्रस्तुत इतिहास के संकलन, संपादन मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने निष्ठा और श्रमशीलता के साथ काम किया है। मैं चाहता हूं कि "तेरापंथ दिग्दर्शन" एक ऐसा ऐतिहासिक दस्तावेज बने, जो आने वाली पीढियों को युग-युग तक प्रेरणा दे सके। इसके लिए एक बात की ओर विशेष ध्यान देना है कि इसमे प्रशस्ति न हो, केवल प्रस्तुति हो। यथार्थ को प्रस्तुत करने का दृष्टिकोण ही इतिहास को एक निष्कलंक दर्पण बना सकता है, जिसमे अतीत की प्रत्येक आकृति का सही रूपांकन संभव है।

—आचार्य तुलसी

मंगल संदेश

पूरे मार्ग पर साथ चलना संभव नही होता। इतना ही बहुत है कि कोई सही-सही दिशा दिखा दे। तेरापन्थ अनुशासित और प्रगतिशील धर्मसंघ है और उसे आचार्यश्री तुलसी जैसे प्रगतिशील आचार्य का नेतृत्व उपलब्ध है। उसने शतशाखी वट वृक्ष की भांति सभी दिशाओं मे विस्तार किया है। उसका समग्रता से लेखा-जोखा प्रस्तुत करना किसी लेखक के वश की बात नही, फिर भी उसका दिशादर्शन कर देना अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। मुनि सुमेरमल "लाडनू" तथा उनके सहयोगी मुनि उदितकुमार ने दिशासूचन के लिए जो प्रयत्न किया है, वह प्रशस्य है। इससे ऐतिहासिक तथ्यो की सुरक्षा होगी। यह ग्रन्थ अगले वर्ष तथा चिर भविष्य के लिए प्रेरणासूत्र बना रहेगा।

—**युवाचार्य महाप्रज्ञ**

प्रेरक-संदेश

इतिहास साहित्य की एक रोचक और प्रामाणिक विधा है। यह संस्कृति, सभ्यता और कला की ऐसी निधि है, जो युग-युग तक लोक चेतना को झंकृत करती रहती है। 'तेरापन्थ दिग्दर्शन' इसी दिशा में उठाया हुआ एक पग है, जो नैतिक, मानवीय, धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों के विकीर्ण पन्नों का एक सहज जोड है। तेरापन्थ धर्मसंघ के संक्षिप्त वार्षिक विवरण के रूप में यह महत्त्वपूर्ण सकलन है। इतिहास के पाठक और शोध विद्यार्थी इससे अच्छा लाभ उठा सकते है।

युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी धर्मसंघ के नेता ही नहीं हैं, एक नैतिक आन्दोलन के प्रणेता है। आपका समग्र जीवन मानव जाति की सेवा में समर्पित है। आपने अपने सम्पूर्ण धर्मसंघ को इस दिशा में नियोजित कर रखा है। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, साहित्य, जन-सम्पर्क आदि आयामों के माध्यम से जो काम होता है, उसकी संक्षिप्त-सी झलक "तेरापन्थ दिग्दर्शन" मे मिल सकती है। बोध और आचरण—दोनों भूमिकाओं का समरसीकरण ही इसकी सार्थकता है।

—साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

प्रकाशकीय

तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साध्वियो के १५० दल पाद विचरण कर देश के कोने-कोने मे जन-मानस के जीवन मे नैतिक मूल्यो की पुनर्स्थापना करने का प्रयास कर रहे है ।

इतना ही नही, अपने धर्मसंघ के अनुशासन का पालन करते हुए आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत, प्रेक्षा-ध्यान, जीवन-विज्ञान के कार्यक्रमो का सुनियोजित संचालन व निर्देशन करते हैं तथा लोगो को उनके आत्म विकास का मार्ग प्रदर्शित करते है ।

इसी क्रम मे आचार्यश्री द्वारा नवनिर्मित समण-समणी वर्ग के आदरास्पद सदस्य अनेक दूरगामी स्थानों की यात्रा कर जन-जन का नैतिक एवम् आध्यात्मिक विकास करने में सतत प्रयत्नशील है । इन यात्राओ का कार्यक्रम अनेक देशो में सम्पादित किया जा रहा है ।

उपरोक्त कार्यक्रमो की स्थायी यादगार बनाने की दृष्टि से इतिहास साहित्य के सृजन की योजना प्रारंभ की गई । इस योजना के अन्तर्गत यह चौथी कृति मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनू' के अथक श्रमसाध्य प्रयास एव सक्रियता की निष्पत्ति है ।

मुनिश्री द्वारा निर्मित यह रचना वार्षिकी पाठको के लिए प्रेरक पठन सामग्री के अतिरिक्त उनके समग्र आध्यात्मिक विकास में सहयोगी है । इसके प्रकाशन योग्य प्रस्तुतीकरण के लिए आदरणीय मुनिश्री के प्रति हार्दिक श्रद्धा आभार प्रस्तुत है ।

श्रीचंद बैंगानी
मंत्री

१० नवम्बर १९८८
जैन विश्व भारती, लाडनू
(आचार्यश्री तुलसी ७५ वां जन्म दिवस)

प्राक्कथन

राजस्थान मे उत्कृष्ट कोटि के मिष्ठान्न के लिए एक कहावत है—'डीग वंवगी कलेजे तक'। इतिहास का मिठास भी कुछ ऐसा ही है। इसे पढने वालों का केवल कलेजा ही नही, चेतन-अवचेतन मन भी सरोवार होकर स्थायी रूप से प्रभावित व परिवर्तित हो जाता है। इतिहास केवल घटनाओं का ही दस्तावेज़ नही, प्रेरणा का पावर हाऊस है; एक सुखद गुदगुदी व स्फुरणा है। इतिहास लेखको के लिए इतिहास-ज्ञान की अनिवार्यता होती है।

अतीत को सुरक्षित रखने वाले केवल वर्तमान की ही कृतज्ञता ज्ञापित नही करते, भविष्य को भी उपकृत करते है। इतिहास जीवित है, तो समाज जीवित हैं, राष्ट्र जीवित है। इतिहास के मृत होने पर व्यक्ति, समाज व राष्ट्र की संस्कृति एव सभ्यता का अस्तित्व ही नही रहेगा। इतिहास की सुरक्षा ही सस्कृति एवं सभ्यता की सुरक्षा है। इसीलिए इतिहास की सुरक्षा को सर्वोपरि करणीय कार्य माना गया है।

तेरापंथ धर्मसघ अपने इतिहास संकलन के प्रति सदैव जागरूक रहा है। तभी हमारे आचार्यो एवं साधु-साध्वियो का इतिवृत्त सुरक्षित है। वैसे इतिहास की कुछ घटनाएं लिपिवद्ध की जाती रही है, पर संघ की सारी महत्त्वपूर्ण घटनाओ का एक स्थान पर संकलन नही होता है। तेरापंथ धर्मसंघ वहुआयामी प्रवृत्तियो वाला धर्मसंघ हैं। इसके केन्द्र आचार्य है और साधु-साध्विया इसका विस्तार है। अनेक अवसरों पर ऐसे आकर्षक व प्रेरक प्रंसग घटित हो जाते हैं यदि उन्हे व्यवस्थित संकलित किया जाए, तो इतिहास की दुर्लभ सामग्री तैयार हो सकती है। इसी दृष्टि से उनके आकलन व संकलन की योजना वनी। "तेरापंथ दिग्दर्शन" उसी योजना की निष्पत्ति है।

दिग्दर्शन तेरापंथ की वार्षिक गतिविधियो का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ हैं। तेरापंथ दिग्दर्शन की यह यात्रा ८ फरवरी, १९८७ रतनगढ़ से ७ फरवरी, १९८८ दिल्ली तक समाप्त हो जाती है। यह दिग्दर्शन का चौथा पड़ाव है।

तेरापंथ दिग्दर्शन दो खड़ो मे विभक्त है। प्रथम खड मे आचार्यवर की यात्रा, कार्यक्रम, सस्मरण आदि का दिनांक के क्रम से विवरण है। साथ ही आचार्यवर के संपर्क मे आने वाले विशिष्ट व्यक्तियो का भी उल्लेख है, जिनकी अपने-अपने क्षेत्रों मे विशेष अर्हता प्राप्त है। 'वैराग्य विकास' के अन्तर्गत आचार्यवर, युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री द्वारा दिए जा रहे

शिक्षण-प्रशिक्षण उपक्रम तथा साधु-साध्वियों की प्रवृत्तियों की एक संक्षिप्त झलक है। विभिन्न अवसरो व समारोहो पर आचार्यवर ने जिन श्रावक-श्राविकाओ व अन्य विशिष्ट जनों को जो अलंकरण व विशेष उल्लेख किया, उनका विवरण है। समाज के वे व्यक्ति जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों मे विशिष्ट पहचान बनाई है और तेरापंथ के प्रति आस्था के भाव रखते हैं, उनका परिचय है। इस बार राजधानी दिल्ली मे प्रवास होने से आचार्यवर के विचार व संदेश को प्रचार माध्यमो ने महत्त्व दिया, विस्तार दिया, उसका वर्णन है। बम्बई में आयोजित अहिंसा पुरस्कार प्रदान समारोह की भी संक्षिप्त नोंध इसी खंड में है।

द्वितीय खंड में साधु-साध्वियों का विवरण है। उनमे अग्रगण्य, सहयोगी साधु-साध्वियों व चातुर्मास का नाम प्रत्येक संघाटक के विवरण मे है। यात्रा किलोमीटर व तेरापंथ के क्षेत्रों में विचरण (केवल संख्या) का उल्लेख है। साधु-साध्वियों की सन्निधि मे आयोजित होने वाले संघीय महत्त्व एवं सार्वजनिक प्रभावना के कार्यक्रम सम्मिलित हैं। पूरे वर्ष भर में कितने भाई-बहिनों ने प्रतिक्रमण, थोकड़ा, (तात्त्विक संग्रह) भक्तामर, आदि कठस्थ किए, कितने अणुव्रती, व्यसनमुक्त, मंत्रदीक्षा, सम्यक्त्व दीक्षा, गुरु धारणा लेने वाले व्यक्ति बने। तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, प्रेक्षाध्यान शिविर कितने, कहां लगे। भाई-बहिनो मे जो तपस्या हुई, (तपस्या प्रायः चातुर्मास में होती है, उसमे भी सावन व भादवा माह मे विशेष रूप से होती है।) उसके आंकड़े उपलब्ध हैं। साधु-साध्वियो की तपस्या, वाचन, (आगम, संघीय व अन्य साहित्य-पृष्ठों में), स्वाध्याय (गाथा) आदि के आंकड़ों को यथास्थान दिया गया है। कुछ संघाटको के साथ जुडी विभिन्न घटनाओं व संस्मरणों ने इस पुस्तक को रोचक व प्रेरक बना दिया है। इस वर्ष स्वर्गस्थ साधु-साध्वियों का विवरण 'महाप्रयाण' विभाग में है। समण-समणी वृंद, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान की प्रवृत्तियो की वार्षिक गति-प्रगति इसी प्रथम खंड का विषय है।

जैन विश्व भारती द्वारा तेरापंथ दिग्दर्शन के लिए जारी विशेष बुलेटिन से काफी साधु-साध्वी संघाटकों का विवरण उपलब्ध हुआ। कई संघाटकों का प्रतिवेदन आचार्यवर को समर्पित होने वाले 'वार्षिक विवरण' से प्राप्त हुआ। सांवत्सरिक क्षमायाचना पत्रों से भी कुछ सामग्री मिली। पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष काफी सिंघाड़ों का व्यवस्थित विवरण मिला है। ३७ श्रमण सिंघाड़ो में ३४ व ९६ श्रमणी सिंघाडो मे ८३ सिंघाडों के प्रतिवेदन दूसरे खंड मे गुम्फित है। साधु-साध्वियों का विवरण ३ नवम्बर १९८६ से २३ अक्टूबर १९८७ तक की अवधि का है।

परिशिष्ट में सात विभाग है, जिनमे अक्षय तृतीया पर वर्षीतप का पारणा करने वाले भाई-बहिनों के नाम है। आचार्यवर द्वारा समुच्चारित भिक्षु चरमोत्सव व मर्यादा महोत्सव गीत, क्षमापना व पट्टोत्सव पर बोली गई

साध्वी प्रमुखाजी की कविता समाविष्ट हैं। 'शोक विमोचन' के अन्तर्गत उन स्वर्गस्थ भाई-बहिनों के नाम है, जिनके परिजनों ने आचार्यवर के दर्शन किए। 'यात्रा विवरण' के साथ संस्थाओं की गतिविधियो व कार्यकलापो का निदर्शन है।

तेरापथ जैन धर्म का अर्वाचीन सस्करण है। यह भगवान महावीर के सिद्धातों पर पूर्ण समर्पित है। आचार्य भिक्षु ने एक आचार्य, एक आचार, एक विचार जैसे महत्त्वपूर्ण सूत्र तेरापंथ को दिए। जिनके वदौलत यह धर्मसंघ एक आचार्य के नेतृत्व व मार्गदर्शन में एक आचार और एक विचार की मौलिकता को कायम रखते हुए निरंतर गतिमान है।

सम्प्रति आचार्यश्री तुलसी के गतिशील नेतृत्व में वर्तमान का तेरापंथ विविधमुखी प्रवृत्तियो का केन्द्र वन गया है। आचार्यश्री धार्मिक जगत् के एक बहुचर्चित जैनाचार्य हैं। वे एक महान् जैनाचार्य हैं। उन्होने अपनी इक्यावनवर्षीय संघीय शासना मे करीव इक्यावन हजार किलोमीटर से भी अधिक पदयात्रा की है। इस "तेरापंथ दिग्दर्शन १९८७" पुस्तक मे कुल ३६५ दिनों का विवरण प्रस्तुत है। इन ३६५ दिनों में दिल्ली प्रवेश तक कुल ३८ यात्रा दिवस थे। कुल ७७ दिनों में करीव ३७ क्षेत्रो मे आचार्यवर का पदार्पण हुआ, जिनमें तेरापथ के ९ क्षेत्र थे। हिसार नगर मे तीन दिन यात्रा हुई, पर क्षेत्रों की गिनती मे एक को ही लिया गया है। दिल्ली मे आचार्यवर का २८८ दिनों का प्रवास हुआ। इस दौरान ३२८ किलोमीटर की यात्रा हुई। २८८ दिनो में अणुव्रत भवन मे २०३ दिनो का प्रवास पाच वार मे हुआ। ७६ दिनो का दिल्ली के विभिन्न ५८ उपनगरों में विचरण हुआ। कई उपनगरो मे आचार्यवर का दो-तीन वार पदार्पण हुआ, पर उपनगरों की संख्या मे एक ही लिया गया है। इस वीच एक सप्ताह का प्रवास हरियाणा के फरीदावाद क्षेत्र मे हुआ। इस वर्ष आचार्यवर की कुल पदयात्रा ६४७ किलोमीटर हुई। दिल्ली पावस के पश्चात् कुछ साधु-साध्वियो के ग्रुप विभिन्न उपनगरो मे भेजे गये। ग्रुपलीडर थे मुनि हंसराजजी, धर्मरुचिजी, सुमेरमल 'लाडनूं', साध्वी सूरजकुमारीजी आदि। सभी ने अपने-अपने क्षेत्रो में उल्लेखनीय कार्य किया।

आचार्यश्री तुलसी एक राष्ट्रसत हैं। उनका देश-विदेश मे व्यापक प्रभाव है। उनसे सात्विक मार्गदर्शन लेने, समसामयिक समस्याओ व ज्वलन्त सवालो पर विचार-विमर्श करने के लिए समय-समय पर साहित्यकार, पत्रकार, राजनेता सभी लोग आते हैं। आचार्यश्री ने देश के नैतिक उत्थान व चरित्र निर्माण के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। अणुव्रत आदोलन एक असाम्प्रदायिक आंदोलन हैं। इसी कारण हर वर्ग व कौम के लोग इसके साथ जुडे है।

आचार्यवर का इस वर्ष दिल्ली प्रवास होने से अनेक वरिष्ठ व्यक्तित्व

आचार्यवर से मिले। राजनीति, समाज, धर्म व सरकार के अधिकारियों ने विभिन्न मसलों पर आचार्यवर से वातचीत की। दूरदर्शन, आकाशवाणी, समाचार पत्र जैसे प्रचार माध्यमों मे आचार्यवर के सान्निध्य में आयोजित होने वाले समारोहो व विचारो को काफी महत्त्व मिला। प्रधानमंत्री श्री राजीव गाधी को आचार्यवर से धर्म, सप्रदाय तथा अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नो पर एक नई दृष्टि मिली। राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह भी दो वार मिले व वातचीत की। इस प्रवास मे अनेक महत्त्वपूर्ण व प्रभावी कार्यक्रम समायोजित हुए। इनका विस्तृत व रोचक विवरण इस पुस्तक में मिलेगा।

'तेरापथ दिग्दर्शन' के निर्माण मे श्रद्धेय युगप्रधान आचार्यप्रवर, जैन योग पुनरुद्धारक युवाचार्यश्री के आशीर्वाद व मार्गदर्शन को ही योगभूत मानता हूं। महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाजी का भी समय-समय पर अपेक्षित सहयोग मिलता रहा। आभार प्रदर्शन की औपचारिक रस्म के सकुचित दायरे मे मैं अपने आपको नही वांधना चाहता। लेखन व संपादन में सहयोग किया है मुनि उदितकुमार ने। उसके प्रति आभार तो क्या, आशीर्वाद ही दूंगा कि वह विकास के पथ पर और तेजी से आगे वढ़े।

इसकी निर्मिति मे जो कार्यकारी वने, वे है—

- मेरे अपने निजी नोट्स
- विज्ञप्ति व अन्य संघीय पत्र-पत्रिकाएं

अन्य साधु-साध्वियो व भाई वहिनो का जो यत्किंचित् सहयोग मिला, एतदर्थ उनके प्रति आभार प्रकट करता हूं।

तेरापथ दिग्दर्शन काफी परिष्कृत हुआ है, पर परिवर्तन/परिवर्द्धन/सशोधन की संभावना हर कृति मे सदैव रहती है। तेरापंथ धर्मसंघ के गौरवशाली इतिहास की परम्परा मे यह 'तेरापथ दिग्दर्शन १९८७' मजवूत स्तम्भ वनेगा और इतिहासप्रेमी पाठको की आकाक्षा-सपूर्ति मे योगभूत होगा, यही विश्वास है।

२८ अक्टूबर, १९८८ — मुनि सुमेर 'लाडनूं'
बोथरा भवन
श्रीडूगरगढ़ (राज०)

अनुक्रम

खंड—१

खंड—२

साधुओं का विवरण

साध्वियों का विवरण

परिशिष्ट

खण्ड १

पदयात्रा का महत्त्व

यात्रा दो प्रकार की होती है एक वाहनयात्रा व दूसरी पदयात्रा। वाहनयात्रा से आदमी सुदूर स्थानो मे भी बहुत शीघ्रता से पहुंच जाता है, पर पदयात्रा मे यह संभव नही है। आज के इस वैज्ञानिक युग मे आदमी मात्र चंद घंटो मे दुनिया के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंच जाता है। आधुनिक टेक्नोलोजी ने जहां ध्वनि से भी दुगुनी गति से चलने वाले वायुयानों के युग में प्रवेश कर लिया और उससे भी तेज रफ्तार से उड़ने वाले वायुयानो के निर्माण की खोज के अंतिम चरण मे है, वहां पदयात्रा की बात जरा अटपटी सी लगती है। समय की अधिकता के अतिरिक्त पदयात्रा आज भी वाहनयात्रा के सामने एक चुनौती है। वाहनो से आदमी ढोया जाता है, यत्र तत्र प्राकृतिक दृश्यो को देखने, ऐतिहासिक स्थलो का अवलोकन करने, भारतीय ग्राम्य जीवन व संस्कृति को समझने से वह सहज ही अछूना रह जाता है। आम आदमी से उसका कोई संपर्क नही रहता।

पदयात्रा के भी विविध उद्देश्य है। जहां कुछ लोग व सगठन आतंकवाद को खत्म करने, वनों की अंधाधुंध कटाई का विरोध करने, सामाजिक कुरूढ़ियो व अंधविश्वासों के उन्मूलन हेतु जन-जागरण करने, देश, राज्य तथा स्थानीय स्तर की समस्याओ की ओर जनता तथा सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के लिए पदयात्रा करते हैं, वहां कुछ लोग व दल मात्र राजनैतिक उद्देश्यों व तुच्छ स्वार्थो की संपूर्ति हेतु भी पदयात्रा करते हैं। ये पदयात्राएं सीमित अवधि की होती है इसलिए उनका उद्देश्य भी सीमित और लाभ भी क्षणिक ही होता है।

जैन मुनियों की पदयात्रा उनका जीवन व्रत है। वे आजीवन कही भी, किसी भी परिस्थिति मे वाहन का उपयोग नही करते। उनका पदयात्रा के जरिये जहां सीधे-सादे, भोले-भाले ग्रामीणों से सम्पर्क होता है वहां पढे-लिखे, बुद्धिजीवी व अधिकारी लोगो से भी सीधी बातचीत होती है। उनकी पदयात्रा का अधिकाश समय गांवों मे ही व्ययीत होता है। आज भी भारत की आत्मा गांवों में बसती है। वहा भारतीय संस्कृति के स्पष्ट दर्शन होते हैं। ग्रामीण जनता में भी अब बदलते युग की हवा के साथ कुछ विजातीय सस्कार हावी हो गये है। उनके रूढि एव अधविश्वास की परतें भी गहरी जम चुकी है। आज गांवो मे शराब का आम प्रचलन है। इन सब बुराइयो को जड से समाप्त करने के लिए एक सशक्त आंदोलन अपेक्षित है।

अणुव्रत और आचार्य तुलसी

भारत को अग्रेजी दासता से मुक्ति मिली। अंग्रेजो की गुलामी की

जजीर से हिन्दुस्तान को आजाद करने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों ने बहुत कष्ट सहे। भारत माता को स्वतंत्र करने के लिए वे जेल गये, काले पानी की सजा भोगी, अपने प्राणो तक की आहुति दी, उन सबके संयुक्त एवं संगठित प्रयासो का यह सुफल था कि सदियो से गुलाम भारत ने आजादी की सांस ली।

स्वतत्रता के बाद भारत के कर्णधारो ने देश के विकास हेतु अनेकों योजनाएं बनाई। कलकारखाने स्थापित हुए। निर्माण के विविध उपक्रम चालू हुए। उस दिशा मे सरकार ने अपनी पूरी शक्ति झोक दी, पर नैतिकता व प्रामाणिकता, जो भारत की थाती है को नजरअंदाज कर दिया।

आचार्य तुलसी ने इस स्थिति को गंभीरता से लिया। उन्होंने देश के चारित्रिक उत्थान के लिए अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया। उनका यह स्पष्ट चिंतन है अध्यात्म शून्य भौतिक विकास यथोचित फल नही दे सकता। इस चिंतन को मद्देनजर रखते हुए देश के नैतिक धरातल को मजबूत बनाने हेतु उन्होने पूरे भारत की पदयात्रा की। हजारो अणुव्रती बने, लाखों प्रशंसक बने, करोडो तक यह स्वर पहुंचा। उनके असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण व मण्डनात्मक नीति से वे आज भी सभी धर्म सम्प्रदायो मे बहुचर्चित व लोकप्रिय धर्मनेता है। वे राष्ट्र सत के रूप में सर्वत्र विख्यात है। सामयिक व ज्वलंत विषयों पर उनके द्वारा प्रदत्त विचारों को प्रेस मीडिया काफी महत्व देता है। आकाशवाणी व दूरदर्शन उनके महत्त्वपूर्ण विचारों को जनता तक पहुंचाता है। आलोचको द्वारा साम्प्रदायिक होने का आरोप लगाने के बावजूद वे मानवीय भावना को विकस्वर बनाने के लिए सतत प्रयत्नशील है।

आचार्यश्री ने अणुव्रत आदर्शों के प्रचार-प्रसार हेतु लगभग पूरे देश की पदयात्रा की है। उन्होने राष्ट्रपति भवन से लेकर गरीब की झोपडी तक अणुव्रत का स्वर फूका है। उन्होने पजाब से कन्याकुमारी व कच्छ से कलकत्ता तक पचास हजार से भी अधिक किलोमीटर की पदयात्रा की है। अभी भी उनकी पदयात्रा का क्रम जारी है। उनकी यात्राओ से मजदूर, किसान, राज्य कर्मचारी, साहित्यकार, पत्रकार, समाजसेवी, राजनीतिज्ञ आदि विविध क्षेत्रो की जानी मानी हस्तियां उनके सपर्क व परिचय मे आई है। आज के इस भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी व भाई भतीजावाद के माहौल मे नैतिकता की लौ को अक्षुण्ण रखते हुए आचार्यवर पिछले चालीस वर्ष से पूरे देश की पदयात्रा कर रहे हैं।

आचार्यवर के मानवतापरक व संघीय विकास के उपक्रमो को यत्किंचित् प्रस्तुति देने हेतु पिछले तीन वर्षों से एक उपक्रम प्रारम्भ हुआ है जो तेरापंथ दिग्दर्शन के रूप मे सबके सामने है। तीन विराम के बाद अब यह चौथी यात्रा के लिए प्रस्तुत है।

ऐतिहासिक व प्रभावी प्रवास

रतनगढ का मर्यादा महोत्सव कई दृष्टियों से ऐतिहासिक रहा। यह वही क्षेत्र है जहां आचार्यवर को भयंकर संघर्ष झेलना पड़ा था, किंतु इस वार सभी वर्गों व जातियो के लोगों ने जो सहयोग दिया वह अविस्मरणीय रहेगा। उन्होने प्रवचन का रसास्वादन लिया, वहां आगंतुक यात्रियों को आवास आदि की सुविधाए भी मुहैया कराई। सभी क्षेत्रों मे उन्होने हर संभव मदद की। वहां के प्रमुख सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक मंचों के लोग स्वागत समिति के साथ उत्साह से जुडे हुए थे। सचमुच साम्प्रदायिक सद्भाव के वे दिन अप्रतिम थे।

आचार्य श्री तुलसी मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के कार्यकर्त्ताओं ने आगंतुक यात्रियो की वाहवाही लूट ली। उनके द्वारा प्रदत्त आवास, भोजन आदि मूलभूत सुविधाओ से वे पूर्णतया संतुष्ट थे। उन्होने स्थानीय कार्यकर्ताओ की सूझबूझ व कार्यकुशलता की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। गोलछा परिवार द्वारा निर्मित गोलछा ज्ञान मंदिर का भव्य भवन व विशाल प्रांगण आचार्य प्रवर का प्रवास व प्रवचन स्थल था। श्री हंसराज, श्री हुलासमल गोलछा हर कार्य मे पूरी लगन के साथ सलग्न थे। श्री भंवरलाल सिंघी ने कार्यक्रमों का कुशल एवं प्रभावी संयोजन किया। शिल्पशाला के विशाल प्रांगण मे मर्यादा महोत्सव का भव्य एवं विशाल कार्यक्रम आयोजित हुआ। मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम मे रात्रि प्रवास 'भुवालका भवन' में हुआ। यह एक विशाल व पुरानी कोठी है। रतनगढ जंक्शन होने एवं यातायात की अच्छी व्यवस्था की बदौलत यात्रियों का काफी आवागमन हुआ। इस तरह यहा का मर्यादा महोत्सव तेरापंथ के इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण कडी बन गया।

पर्यावरण संगोष्ठी

८ फरवरी/पूरा विश्व प्रदूषण की समस्या से ग्रस्त है। पानी, भोजन, तथा हवा तक शुद्ध नही मिलती। इस ज्वलंत समस्या ने सम्पूर्ण जगत् को उबारने हेतु समय-समय पर ऐसी संगोष्ठिया समायोजित होती है, जिनमे जन मानस को पर्यावरण समस्या व उसकी रोकथाम के अधुनातन उपायो से सजग कर सके। ऐसी ही एक संगोष्ठी आचार्यवर के सान्निध्य मे आयोजित हुई, जिसमे बंजर भूमि विकास बोर्ड की अध्यक्ष श्रीमती कमला चौधरी, जोधपुर विश्वविद्यालय के जीव-विज्ञान विभाग के प्रोफेसर श्री एम. एन. महनोत तथा डा. स्नेहलता दूगड उपस्थित थी। सभी ने पर्यावरण पर महत्त्वपूर्ण विचार रखे। प्रारभ में मुनि सुखलालजी ने उस समस्या पर अपनी बात कही।

जैन योग पुनरुद्धारक युवाचार्यश्री ने उस मौके पर कहा—'कुछ लोग

नियंता में विश्वास करते है। हम लोग नियम मे विश्वास करते है। पर्यावरण प्रदूषित होता है तब भूमि ही बंजर नही, हमारा दिमाग भी बजर बनता है। इसकी रोकथाम अपेक्षित है।' आचार्यवर का इस अवसर पर प्रेरक प्रवचन हुआ।

रात्रि मे मुनि राजकुमारजी के गीत के पश्चात् मुनि विजयराजजी एवं पानमलजी के वक्तव्य हुए।

शरीरजन्य सुख लोकोत्तर है ?

१० फरवरी/प्रातःकालीन प्रवचन के दौरान यह जिक्र चला कि किसी को शारीरिक सुख पहुचाना लौकिक धर्म है या लोकोत्तर। इस सदर्भ मे आचार्य-वर ने स्वतत्रता सेनानी, विशिष्ट अणुव्रती श्री मिश्रीमल सुराणा की एक घटना का उल्लेख किया—एक बार उनके अभिन्न मित्र ने उनसे कहा—'तेरापथ की यह मान्यता गलत है जिसमे किसी को शारीरिक सुख पहुचाना लौकिक धर्म माना है जबकि होना चाहिये लोकोत्तर धर्म।' सुराणाजी ने इसका प्रतिवाद किया। आखिर सबने अन्तिम निर्णय के लिए गाधीजी के पास जाना तय किया।

गाधीजी से पूर्व उनके सचिव प्यारेलालजी मिल गये। उनसे महात्माजी का व्यक्तिगत समय मागा। उनके मिलने का कारण पूछे जाने पर उन्होने पूरा वृत्तांत सुनाया। प्यारेलालजी ने कहा—'आप गांधीजी का समय क्यो लेते है? उनका मतव्य मै ही प्रकट कर दू।' सबके सहमत होने पर उन्होने कहा—'सुराणाजी जो तेरापंथ की मान्यता बता रहे है, वह ठीक है। शरीरजन्य सुख लौकिक है लोकोत्तर नही।'

मध्याह्न गढ़ मे युवाचार्यश्री का विशेष प्रवचन हुआ। विषय प्रवेश मुनि किशनलालजी ने किया। रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' का वक्तव्य हुआ।

दीक्षा समारोह

११ फरवरी/जैन शासन मे जीवन परिवर्तन के विविध सोपान है। आचार्यवर ने अपने धर्मसंघ मे साधना की विभिन्न श्रेणियां स्थापित की हैं। मंत्र दीक्षा, सम्यक्त्व दीक्षा, व्रत दीक्षा, उपासक दीक्षा, समण दीक्षा, मुनि दीक्षा—ये जीवन शुद्धि की श्रेणियां है। मुनि दीक्षा का अर्थ है जीवन का रूपान्तरीकरण, अपनी आदतो का मार्गान्तरीकरण, अपने विजातीय संस्कारों का पलायन।

मध्याह्न १२.५० बजे दीक्षा समारोह का प्रारम्भ मुमुक्षु बहिनो के मगलाचरण से हुआ। दीक्षार्थिनी बहिनो की परिचय प्रस्तुति, आज्ञा-पत्र वाचन व समर्पण के अनन्तर दीक्षा पर युवाचार्यश्री का मार्मिक प्रवचन हुआ। शिल्पशाला के विशाल प्रागण में करीब दस हजार की महती उपस्थिति मे आचार्यवर ने आर्ष वाणी का उच्चारण करते हुए तीन मुमुक्षु बहिनो को जैन

दीक्षा प्रदान की। तीनो नवदीक्षित साध्वियो का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. साध्वी मुक्तियशाजी (रतनगढ़)—जन्म-९-७-१९६४; पिता-श्री जयचंदलाल कोचर; माता-माणकदेवी; शिक्षा-९कक्षा; साधनाकालीन अध्ययन—प्राग् स्नातक द्वितीय वर्ष; पूर्व नाम-मुदिता

२. साध्वी शीतलयशाजी (सांडवा)—जन्म-१८.९.६५; पिता-श्री सुमेरमल वैद, माता-किरणदेवी; शिक्षा-१० कक्षा; साधनाकालीन शिक्षा-स्नातक द्वितीय वर्ष; पूर्व नाम-शिल्पा

३. साध्वी शीलयशाजी (रतनगढ़)-जन्म-१५.१२.६५; पिता-श्री श्रीचंद वैद; माता-मानकंवरदेवी; शिक्षा-१० कक्षा; साधनाकालीन शिक्षा-प्राग् स्नातक द्वितीय वर्ष; पूर्व नाम-श्वेता

रात्रि मे युवाचार्यश्री के सान्निध्य मे विदाई समारोह का आयोजन हुआ। अस्वस्थता के कारण आचार्यवर कार्यक्रम मे पधार नही सके। कई जनो ने विदाई मे अपने विचार व्यक्त किये। कई सामाजिक व धार्मिक संस्थाओ को प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। इस अवसर पर युवाचार्यश्री का महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन हुआ।

विहार में विलम्ब

१२ फरवरी/पूर्व कार्यक्रम के अनुसार आज आचार्यवर का विहार निर्णीत था, पर सुबह तक उच्च रक्तचाप सामान्य नही हुआ। अनुभवी वैद्य धनाधीशजी, डा. सोनी व डा. कोचर ने प्रातः आचार्यवर का शारीरिक परीक्षण किया और उन्होने कुछ दिन विश्राम की सलाह दी। युवाचार्य श्री, चतुर्विध धर्मसंघ व डाक्टरो के विनम्र निवेदन पर आचार्यश्री ने विहार स्थगित कर दिया। प्रातःकालीन प्रवचन मे युवाचार्यश्री ने आगम के रहस्यो का सरल विवेचन किया।

रतनगढ़ से विहार

१५ फरवरी/आचार्यवर के स्वास्थ्य मे कुछ सुधार हुआ और वे रतनगढ़ से प्रस्थित हो गये। उनका पहला पडाव 'जालेवा' ग्राम बना। आचार्यवर को कुछ थकान महसूस हुई, किन्तु आचार्यवर दृढ मनोबली व्यक्तित्व के धनी है। इतनी थकान होने के बावजूद सायं विहार कर गोरीसर में तातेड धर्मशाला मे ठहरे। गोरीसर ग्राम पंचायत द्वारा आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया गया। पचायत की ओर से कई स्वागत द्वार बनाये गये। रात्रि मे गोरीसर ग्राम पंचायत के सरपच श्री शिवदत्त पारीक ने रात्रि में अपने गांव व पंचायत की ओर से आचार्यवर का अभिनन्दन करते हुए कहा—'आचार्यश्री का व्यक्तित्व चुम्बकीय है। उसमे आकृष्ट होकर देश के विचारक, साहित्यकार, राजनेता

आपके सपर्क मे आये है। आपके सान्निध्य मे सभी पार्टियों, वर्गों व जातियों के लोग पहुचते हैं तभी आप राष्ट्रसंत है।" ग्रामीणों की उस विशाल जन सभा मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने अपने विचार व्यक्त किये।

अणुव्रत साहित्य का प्रचार जरूरी

जनसभा से पूर्व सरपच श्री शिवदत्त पारीक ने आचार्यवर से व्यक्तिगत वार्तालाप किया। उन्होने कहा—'आचार्यजी ! आज गांधी साहित्य का लोप हो रहा है, देश के चिंतन मे रिक्तता आ रही है इसलिए अणुव्रत साहित्य का प्रचार-प्रसार बढ़ना चाहिए। गांधी साहित्य के बाद अणुव्रत साहित्य ही एक ऐसा साहित्य है जो जन-भावना को प्रभावित कर सकता है, पूरे राष्ट्र को प्रेरणा दे सकता हे। मैं चाहता हूं कि गांवो मे अणुव्रत साहित्य अवश्य पहुचना चाहिये। मैं तो इन मित्रो से, जो आपके श्रावक हैं, वार-वार कहता हूं कि आप आचार्यश्री के पास दो वार जाते हो तो एक वार जाओ और एक वार के पैसो से साहित्य खरीद कर उसे गावो मे पहुचाओ। इससे न केवल आचार्यश्री के मिशन का प्रसार होगा अपितु ग्रामीणो के हृदय परिवर्तन मे योगभूत बनेगा।"

उन्होने आगे कहा—'आचार्यश्री ! मैं आपके सम्पर्क मे अभी से नहीं हू, अग्नि परीक्षा के समय से हूं। उस समय मेरी पत्नी ने मेरे पर यह आरोप लगाया कि आप आचार्य तुलसी के पक्ष की बात करते हो। कही आपका दिमाग पागल तो नही हो गया। मेरे द्वारा इसका कारण पूछे जाने पर उसने कहा—'आचार्य तुलसी ने माता सीता को गालिया दी, मैं सोचता रहा कि इसे कैसे समझाऊ ? समझाना भी आवश्यक है। घर मे भ्रांति रहे और वाहर स्पष्ट करता रहूं यह उपयुक्त नही। मैंने एक कागज पर दो अक्षर लिखे और पत्नी की ओर सरकाते हुए कहा—'तुम इसका जाप करो, तुम्हारा कल्याण हो जायेगा।'

उसने कागज को खोलते हुए कहा—'क्या लिखा है इसमे?' मैंने कहा—'पढो।' उसने कहा—'कुती!' मैंने अपने कनिष्ठ पुत्र से पढ़ाया तो उसने पढ़ा—कुंती; मैने कहा—'देख, तुमने ऊपर का अनुस्वार नही पढा तो कुंती कुती वन गया। ठीक वैसे ही आचार्य तुलसी की पुस्तक 'अग्नि परीक्षा' मे है। जिनकी जितनी बुद्धि व जैसी दृष्टि है उन्हे उसमे वैसा ही दिखाई दे रहा है। आचार्य जी राष्ट्रसत है। वे राम सीता को तो क्या, किसी को भी गाली नही देते। पत्नी समझ गई। उसके वाद तो वह आपके प्रवचनों का लाभ मेरे से ज्यादा ले रही है।'

आचार्यवर ने कहा—'हमारे यहां जनसाधारण के लिए तीन तरह का साहित्य निर्मित हो रहा है अणुव्रत साहित्य, प्रेक्षा साहित्य व जीवन-विज्ञान

साहित्य । तीनों ही प्रकार का साहित्य पठनीय है ।'

अपूर्व रात : विलक्षण बात

१७ फरवरी/सातडा) आज रात्रि मे एक विशिष्ट घटना घटित हुई जो सीधी आचार्यवर से सम्बन्धित थी । वह विलक्षण प्रसग उनके ही शब्दों मे प्रस्तुत है—

'रात के लगभग नौ वज रहे थे । मैं पूर्ण जागृत अवस्था मे था । अचानक ऐसा हुआ कि कोई मुझे उठाकर बैठने की प्रेरणा दे रहा है । आखें खोलकर इधर-उधर देखा कुछ भी दिखाई नही दिया सब सन्त लेटे हुए थे । मुनि बालचन्द पट्ट के पास बैठा था । शायद मुझे भ्रम हो गया यह सोच मैंने पुन: आंखे वन्द कर ली, फिर वैसा ही अहसास हुआ । मैं उठकर बैठ गया और नमस्कार महामन्त्र का जप करने लगा । जप करते-करते मैं उसी मे लीन हो गया । मुझे अतिरिक्त आनन्द का अनुभव हुआ, एक ओर मुझे आश्चर्य हो रहा था । दूसरी ओर मे वार-वार कुछ पद्यो का स्मरण कर रहा था ।

सुत्ता अमुणी सया, मुणिणो सया जागरंति ।
या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि, सा निशा पश्यतो मुनेः ।।

इन पद्यों का स्मरण करते समय मुझे नीद न आने की बिल्कुल चिंता न थी । चिन्तन था तो इतना ही कि यह सब हो क्या रहा है? मै फिर जप मे लीन हो गया । इस बीच मुनि बालचन्द बोला—'ग्यारह वज रहे है ।' मैंने जप छोडकर ध्यान करना शुरू कर दिया । ध्यान शुरू करते ही एक वार मैंने सोचा—आज नीद न आने का क्या कारण हो सकता है ? शरीर पर ध्यान केन्द्रित किया तो सब कुछ सामान्य था । न श्वास लेने मे किसी प्रकार का अवरोध, न सिर मे भारीपन, न शरीर मे दर्द और न कोई अन्य कारण । फिर भी आंखो मे नीद नही थी । मैं श्वास-प्रेक्षा करने लगा । ध्यान मे मन अच्छी तरह रम गया । एक घण्टा का समय कब पूरा हो गया पता ही नही चला । आंखें खोली तो कमरे मे मौन व्याप्त था । वडा अच्छा लगा । उस मौन को तोडते हुए मुनि बालजी ने कहा—'क्या बात है, स्वास्थ्य कैसा है, मुनि मधुकरजी को जगा दू ?' मैने कहा—'चिन्ता की कोई बात नही । स्वास्थ्य ठीक है । मुझे अभी ध्यान करना है ।' ध्यान मे एक क्षण का व्यवधान भी अच्छा नही लगा । इस वार मैं पद्मासन लगाकर बैठ गया ।

ध्यान जमा तो ऐसा जमा कि मानो मन के सारे विकल्प समाप्त हो गए । निर्विकल्प समाधि की अवस्था अनुभूत होने लगी । मैं अभिभूत हो गया । कुछ समझ मे नही आया कि क्या हो रहा है? पर कुछ न कुछ ऐसा घटित हो रहा था, जिसकी अभिव्यक्ति मौन से अधिक कुछ नही हो सकती । सातड़ा गाव

की उस रात्रि मे मैंने जिस अपूर्व और अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव किया, उसकी स्मृति मात्र से रोमाच हो जाता है। लगभग एक घण्टा पद्मासन मे बैठने के बाद मैंने आखे खोलकर चारो ओर देखा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई अदृश्य शक्ति मेरा सहयोग कर रही है। मैंने मन ही मन कहा—'कौन है, क्या है, कुछ प्रत्यक्ष दिखाई क्यो नही दे रहा है? मुझे लगता है कि कोई सहारा दे रहा है, पर वह दिखाई क्यो नही देता है ? यह समाधि की स्थिति है अथवा और कुछ है ? मेरे द्वारा क्या होनेवाला है ? कम से कम कोई ऐसा चिह्न ही प्रकट हो जाए जो मुझे प्रत्यक्ष आभास दे सके।' मन ही मन वहुत पुकारा पर कोई सामने नही आया। शब्दों की कुछ ऐसी आकृतियां उभरकर आई 'गहराई में जाओ, आज संसार मे जो मानवीय समस्याएं हैं उनका समाधान करो।

क्या मेरे द्वारा कोई समाधान होगा, इस प्रश्नचिह्न को विराम मिला अपने ही भीतर से उठकर वही विलीन होने वाले नाद से····हां, समाधान होगा। वे शब्द कहा से आए और कहां गए, कुछ ज्ञात नही। वस इतना सा याद है कि मै उस समय विल्कुल हल्का हो गया था और ऐसा लग रहा था मानो पट्ट से ऊपर उठ रहा हूं। मन मे इच्छा जगी—सारी रात ऐसे ही बिता दू। पर पता नही क्यो मैंने ध्यान समाप्त कर दिया और महाप्रज्ञजी को बुला लाने का निर्देश दिया। तव तक मुनि मधुकर भी जाग चुका था। वह महाप्रज्ञजी को बुलाने गया। असमय मे नीद से जगाने पर वे घवरा गए। उनका पहला प्रश्न था—'आचार्यश्री का स्वास्थ्य कैसा है?' 'स्वास्थ्य ठीक है,' यह सुन वे आश्वस्त हो गए। उनके आने पर मैंने पूरा घटनाक्रम उनको सुना दिया। पूरी वात सुन वे बोले—'आपमे अर्जित शक्तियां वहुत है। उनका उद्घाटन कभी-कभी ऐसा ही होता है। आप जिस निर्विकल्पता की स्थिति मे है वही आनन्द की अवस्था है। अव तो काफी समय हो चुका है। थोड़ी देर आप लेट जाइए।'

मैंने कहा—'लेटने की इच्छा ही नही हो रही है। फिर ध्यान मे बैठूगा। तुम भी साथ-साथ ध्यान करो। वहा जो अन्य साधु थे, उन्हें भी निर्देश दे दिया कि ध्यान करना हो तो बैठ जाओ अन्यथा दूसरे कमरे में जा कर लेट जाओ। इस निर्देश पर मुनि मधुकर, मुनि वालचन्द, मुनि हीरालाल, मुनि मुदितकुमार आदि ध्यान मे बैठने के लिए तैयार हो गए। मैं पट्ट से नीचे उतरा और बैठ गया। सोचा—'मुंह किधर किया जाए ? जिस ओर पहले मुह था उसी दिशा मे यानि उत्तराभिमुख होकर मैंने इस बार सामूहिक ध्यान किया। डेढ से सवा दो-ढाई वजे तक यह क्रम चला। आनन्द की श्रृंखला अव तक टूटी नही थी। फिर मैने ध्यान पूरा किया। महाप्रज्ञजी को लेटने का निर्देश देकर भेज दिया। उनके आग्रह पर मै भी थोड़ी देर लेट गया। लेटने के बाद भी नीद नही आई। प्रातः चार वजे उठा तो नीद न आने

का बिल्कुल ही भार नही था।

अठारह फरवरी को प्रात: सातड़ा से चले और आठ किलोमीटर चल कर बीनासर पहुचे। विगत तीन दिनो मे चलने से जितनी थकान का अनुभव हुआ उस दिन नही हुआ। मन पूरी तरह प्रसन्न रहा। शरीर मे भी हल्कापन रहा। यह सब क्या था ? क्यों था ? नही बता सकता। पूज्य गुरुदेव कालूगणी की स्मृति के कई चमत्कार अनुभव मे है। उस दिन बिना स्मृति के अनायास ही जो चमत्कार हुआ, वह विलक्षण है। सातड़ा की वह अपूर्व रात फिर कब आएगी, इस प्रतीक्षा मे श्रीमद् रायचद्र की एक पक्ति कानो मे गूजने लगी। 'अपूर्व अवसर एवो क्या रे आवशे।'

चूरू में भव्य स्वागत

१६ फरवरी/सातड़ा, बीनासर मे स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रमो की समायोजना के पश्चात् आज चूरू पधारने पर स्थानीय जनता द्वारा आचार्यवर का भव्य स्वागत किया गया। जिला क्षेत्र चूरू का यह जुलूस विशाल एवं मौन था। रावतमलजी बैद की हवेली मे आयोजित स्वागत समारोह का शुभारंभ केशरदेवी बालिका विद्यालय की छात्राओ के स्वागत गीत से हुआ। स्थानीय विधायक श्रीमती हमीदा बेगम ने अपने प्रभावी वक्तव्य मे कहा— 'मैं आचार्य तुलसी मे रूहानी शक्ति का दर्शन करती हू। मुझे ऐसा लगता है कि इनके व्यक्तित्व मे चमत्कार है।'

इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष जिलाधीश श्री जी. एस. संधु, साहित्यकार श्री प्रदीप शर्मा, भारतीय जनता पार्टी के सदस्य श्री नारायणदास मंडावावाले, जिला एव सत्र न्यायाधीश श्री जुगराज वर्मा, राष्ट्रीय छात्र संगठन के जिलाध्यक्ष श्री राधेश्याम चोटिया ने अपने विचार रखे। चूरू मे पहले से विराजित मुनि छत्रमलजी ने भी अपनी जन्मभूमि की ओर से आचार्यवर का भावभीना अभिनंदन किया। अंत मे युवाचार्यश्री, आचार्यश्री के प्रेरक उद्बोधन हुए।

२० फरवरी/रात्रि मे 'क्या आप दु.ख को कम करना चाहते हैं' विषय पर युवाचार्यश्री का सारगर्भित प्रवचन हुआ। विषय प्रवेश मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने किया।

शिक्षा संगोष्ठी का समायोजन

२१ फरवरी/मध्याह्न २.३० बजे आचार्यश्री की सन्निधि मे शिक्षा संगोष्ठी समायोजित हुई। 'शिक्षा के साथ जीवन-विज्ञान को कैसे जोडा जाए' इस विषय पर अनेक प्रबुद्ध व्यक्तियो ने अपने विचार रखे। विचार प्रस्तुत करने वालो मे प्रमुख थे राजस्थान के शिक्षामंत्री श्री दामोदर आचार्य, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर के अध्यक्ष श्री जगन्नाथसिंह मेहता, उपसचिव

श्री मांगीलाल जैन ।

राजस्थान के विभिन्न जिलों के २६ स्कूलों मे चल रहे जीवन-विज्ञान पाठ्यक्रम की चर्चा करते हुए श्री जैन ने वताया—'इस प्रयोग के परिणाम वड़े आशाजनक रहे । जिन छात्रो पर यह प्रयोग किया गया उनकी प्रगति सभी दृष्टियो से अन्य छात्रो की अपेक्षा संतोषप्रद थी ।' उन्होंने जीवन-विज्ञान की भावी गतिविधियो पर भी प्रकाश डाला ।

श्री मेहता ने जीवन-विज्ञान की प्रासंगिकता को वताते हुए कहा 'शिक्षा जगत् की एक वड़ी कमी को आचार्यश्री ने महसूस किया है । उसकी सम्पूर्ति हेतु उन्होने जीवन-विज्ञान के रूप मे हमें एक स्थायी व क्रान्तिकारी कार्यक्रम दिया है । यह पद्धति वच्चो के सर्वतोमुखी विकास की दृष्टि से पूरी तरह सक्षम है ।'

शिक्षामंत्री ने अपने वक्तव्य में कहा- 'जीवन-विज्ञान के रूप मे हमे शिक्षा के क्षेत्र मे सुन्दर मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है । छोटे-छोटे प्रयोगों द्वारा तन और मन को प्रशिक्षित करने की जो वात इस पद्वति मे वताई गई है वह विशालकाय ग्रंथो में भी दुर्लभ है । हमे जीवन और विज्ञान दोनो को अलग-अलग नही देखना है, उन्हे जोड़कर समग्र अर्थ ग्रहण करना है ।'

युवाचार्यश्री ने अपने प्रेरक उद्‌वोधन में कहा 'जीवन-विज्ञान शिक्षा पद्धति मे सिद्धान्त की वात कम और प्रयोग की वात अधिक है । संतुलित शिक्षा प्रणाली के प्रयोग के रूप मे हम इसे प्रस्तुत कर रहे हैं । इससे नैतिकता निष्पत्ति के रूप मे स्वतः फलित होगी ।'

आचार्यवर ने अपने हृदयस्पर्शी प्रवचन में कहा 'हमारे सामने महत्त्व-पूर्ण प्रश्न है-शक्ति जागरण कैसे हो ? इसी प्रश्न के समाधान मे हमने अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान की वात कही और आज शिक्षा जगत् के लिए जीवन-विज्ञान की वात भी उसी भूमिका पर प्रस्तुत कर रहे हैं ।'

रात्रि मे 'आत्मा से साक्षात्कार: परमात्मा से साक्षात्कार' विषय पर युवाचार्यश्री का विशेप प्रवचन हुआ । विषय प्रवेश मुनि किशनलालजी ने किया । कार्यक्रम का संयोजन श्री हनुमानमल कोठारी ने किया ।

साध्वी छगनांजी (सरदारशहर) का स्वर्गवास

२२ फरवरी/साध्वी छगनांजी का आज हृदयगति रुक जाने से स्वर्ग वास हो गया । प्रातः श्री भूमरमल वच्छावत के मकान मे गोचरी जाते वक्त दिल का दौरा पड़ा और वहीं गिर पडी । तत्काल साध्वियां उनके मकान मे ले गई । विविध उपचार हुए, पर नियति को कुछ और ही मंजूर था और वह कालकवलित हो गई । २४ को स्मृति सभा आयोजित हुई ।[1]

---

१. पूरा विवरण पढे—'साधु-साध्वियों का महाप्रयाण' विभाग में

२४ फरवरी/रात्री में युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य हुआ। विषय था 'अनैतिक धर्म।' विपय प्रवेश किया मुनि राजेन्द्रकुमारजी ने।

२५ फरवरी/'धर्म से आदमी वदल क्यो नही रहा' विपय पर रात्रि मे युवाचार्यश्री का सारगर्भित भापण हुआ जिसका स्थानीय प्रवुद्ध एव सामान्य जनता ने अच्छा लाभ उठाया। विषय की भूमिका पर प्रकाश डाला मुनि उदितकुमारजी ने।

डा. शामसुखा का अभिनन्दन

२६ फरवरी/मध्याह्न आचार्यवर की पावन सन्निधि में स्थानीय राजकीय भरतिया चिकित्सालय के वरिष्ठ विशेपज्ञ प्रभारी डा. मांगीलाल शामसुखा के सम्मान मे एक अभिनदन कार्यक्रम आयोजित हुआ। विशाल उपस्थिति मे स्थानीय तेरापथ समाज द्वारा उनकी दीर्घकालीन उल्लेखनीय समाज एवं सघसेवा के लिए उन्हे 'समाज सेवी' के रूप मे सम्मानित किया।

समाज की प्रतिनिधि संस्थाओं-जैन श्वेताम्वर तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिपद् एवं महिला मडल द्वारा संयुक्त रूप से प्रस्तुत प्रशस्ति पत्र का समर्पण जैन विश्व भारती के कुलपति श्रीचंदजी रामपुरिया के हाथो हुआ। इसका वाचन तेयुप अध्यक्ष श्री सोहनराज तातेड ने किया। सभा के अध्यक्ष श्री दुलीचद सुराणा ने शाल ओढाकर अभिनंदन किया। श्रीमती कमला कोठारी ने महिला मंडल की ओर से साहित्य समर्पित किया।

समाज के स्नेह व आत्मीयता से अभिभूत डा. शामसुखा ने अभिनंदन का प्रत्युत्तर देते हुए कहा—'मैं तो समाज का सामान्य सेवक हूं। धर्मसंघ का छोटा सा श्रावक हूं। इस नाते समाज और संघ के प्रति मेरा एक दायित्व है। आज जो मेरी प्रशस्ति व अभिनदन किया गया, वह मेरा नही, गुरुदेव का अभिनदन है। गुरु की महिमा अपरम्पार है। मै अपनी जवान से उनका गुणानुवाद कर सकु यह मेरे सामर्थ्य से वाहर है।'

आचार्यवर ने अपने आशीर्वचन मे कहा—'डा. शामसुखा का परिवार हमारे धर्मसंघ का श्रद्धानिष्ठ परिवार है। संघनिष्ठा एव श्रद्धा के संस्कार डा. सामसुखा को विरासत मे मिले है। मुझे सवसे वडी प्रसन्नता इस बात की है कि डा. शामसुखा का जीवन सहज धार्मिक है, एक आदर्श अणुव्रती है। ईमानदारी, प्रामाणिकता, नीतिनिष्ठा उनके जीवन मे सहज रूप में मूर्तिमती है।'

उन्होने आगे कहा—'चूरू तेरापंथ समाज ने डा. शामसुखा का अभिनंदन किया। मैं मानता हूं कि ऐसा कर समाज ने अपने कर्तव्य का सम्यक् निर्वाह किया है। यह व्यक्ति पूजा या प्रशंसा नही, अपितु वास्तविकता का प्रस्तुतीकरण है। 'समाज सेवी' के इस सम्मान के साथ उनकी विशिष्ट संघीय सेवाओ के लिए उन्हे 'शासन सेवी' के रूप मे संबोधित करता हूं।'

इस अवसर पर मुनि छत्रमलजी, स्थानीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री मघाराम वाकोलिया, श्री डूंगरमल कोठारी, श्री मानसिंह वैद, श्री विजयराज सुराणा आदि वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त करते हुए उनकी सेवाओं का उल्लेख किया

आज प्रातः युवाचार्यश्री रेगर सम्मेलन मे पधारे। वहां उनका महत्त्वपूर्ण भापण हुआ। रात्रि में काव्य संध्या का भव्य आयोजन हुआ। मुनि लोकप्रकाशजी के संयोजन मे चले इस कार्यक्रम मे मुनियो के अलावा स्थानीय कवियो ने भी भाग लिया। आचार्यवर की सन्निधि मे आज जैन विश्व भारती के पदाधिकारियो एवं कुछ चुनिंदा मुनियों की एक बैठक आयोजित हुई, जिसमे सन् १९८९ में आयोजित होने वाले योग क्षेम वर्ष पर चिंतन चला।

स्वाध्याय योग का विधिवत् प्रारम्भ

२६ फरवरी/रतनगढ़ मर्यादा महोत्सव पर आचार्यवर ने साधु-साध्वियों एव श्रावक-श्राविकाओं के लिए इस वर्ष कुछ विशेष दिशादर्शन प्रदान किया, जिनमे स्वाध्याय योग प्रमुख है। एक मुहूर्त के लिए अपने-अपने क्षेत्रो में साधु-साध्वियां सामूहिक स्वाध्याय करे। स्वाध्याय में आगम तथा तत्सम्वन्धी ग्रंथ, संघीय साहित्य, योग साहित्य, जप योग तथा उससे सम्वन्धित ग्रंथ का वाचन किया जा सकता है।

आज मध्याह्न आचार्यवर की पावन सन्निधि मे स्वाध्याय योग के अन्तर्गत सभी साधु-साध्वियों की अनिवार्य उपस्थिति मे उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन शुरू हुआ। करीव अठाईस वर्ष पूर्व यह सूत्र संस्कृत छाया, अनुवाद व टिप्पण सहित छपा था। संशोधन/परिवर्तन/परिवर्धन की अपेक्षा थी, इस दृष्टि से इस सूत्र पर सांगोपांग विवेचन प्रारम्भ हुआ। विवेचक एवं व्याख्याकार थे जैन योग पुनरुद्धारक श्रद्धेय युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ।

२७ फरवरी/प्रातःकालीन प्रवचन में वड़ी हाजरी का कार्यक्रम हुआ। साधु-साध्वियों ने पंक्तिवद्ध खड़े होकर मर्यादा पालन मे सजग रहने की शपथ ली। मध्याह्न साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे स्थानीय महिला मंडल की विशेष गोष्ठी आयोजित हुई। साध्वी प्रमुखाश्री ने महिलाओं को सम्वोधित करते हुए उन्हे धार्मिक प्रवृत्तियो एवं ज्ञानशाला के माध्यम से वच्चों को सुसंस्कारी वनाने की प्रेरणा दी। रात्रि मे वोथरा कुंज मे साध्वियों द्वारा विविध भारती कार्यक्रम समायोजित हुआ। आज मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' के दिशादर्शन मे स्थानीय लोगों की वैठक हुई, जिसमे अणुव्रत समिति का गठन किया गया।

२८ फरवरी/प्रातःकालीन प्रवचन मे मुनि लोकप्रकाशजी व समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने अपने विचार अभिव्यक्त किये। आचार्यवर ने अपने उद्वोधन मे

निर्जरा पर विशद विवेचन किया। मध्याह्न सामायिक का अभिनव प्रयोग हुआ, जिसमे सैकडों भाई-वहिनो ने कतारवद्ध वैठकर विधिवत् सामायिक की। सामायिक जैन उपासना पद्धति का एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है।

१ मार्च/मध्याह्न चूरूवासियो द्वारा आचार्यवर को भावपूर्ण विदाई दी गई। आचार्यवर के ग्यारहदिवसीय प्रवास का स्थानीय जनता ने पूरा-पूरा लाभ लिया। स्थानीय सभी कार्यक्रमों का सयोजन श्री हनुमानमल कोठारी ने किया। कोठारी भवन से विहार कर आचार्यवर नौरतनमल सुराणा के फार्म पर पधारे। रात्रिकालीन प्रवास वही हुआ।

युवाचार्यश्री की जन्मभूमि में

५ मार्च/मार्गवर्ती गांवो का स्पर्श करते हुए आज आचार्यवर टमकोर पधारे। टमकोर युवाचार्यश्री की जन्मस्थली है। राजलदेसर मे उनके युवाचार्य पद पर मनोनयन के वाद जव आचार्यवर दिल्ली पधार रहे थे उस समय आचार्यश्री दूधवा खारा से सादुलपुर-राजगढ पधार गये। युवाचार्यश्री टमकोर होकर राजगढ़ पधारे। उसके करीव नौ वर्ष वाद युवाचार्यश्री दूसरी वार, किन्तु आचार्यश्री के साथ पहली वार पधारने पर स्थानीय जनता द्वारा उनका हार्दिक स्वागत किया गया। टमकोर के सुदूर क्षेत्रो मे रहने वाले परिवार भी इस मौके पर पहुंच गये।

टमकोर ग्राम पचायत के सरपच श्री गोकुलचंद सोनी ने स्वागत किया। इस अवसर पर मुनुक्षु संतोष द्वारा 'प्रेक्षाध्यान और शरीर विज्ञान' विषय पर लिखित शोध प्रवन्ध तथा मुमुक्षु सीमा ने ग्यारह संकल्पो की एक डायरी भेंट की। मुमुक्षु प्रतिभा ने आचार्यवर का अभिनंदन करते हुए टमकोर की तीनो वहिनो की दीक्षा की अर्ज की।

जैन योग पुनरुद्धारक युवाचार्यश्री ने कहा—'आज मैं आचार्यवर के साथ अपनी जन्मभूमि मे आया हूं। मुझे भी इसका हर्ष है। मैं यह समझ नही पा रहा हूं कि आचार्य श्री का स्वागत क्या व किस रूप मे करूं क्योकि लौकिक जगत् की सामग्री वहुत पहले ही छोड़ चुका हूं और दूसरी वात यह है प्रसिद्ध कहावत 'सदा दिवाली सन्त के, आठो पहर आणंद'। जहां सदा दिवाली होती है, वहां दिवाली एक दिन मनाने की वात नही होती। जहां स्वागत प्रतिदिन होता है वहां कालवद्ध, क्षेत्रवद्ध स्वागत करना अर्थवान् नही है।'

आचार्यवर ने अभिनदन के जवाव मे कहा—'मैं एक धर्म का व्यक्ति हूं, एक सम्प्रदाय विशेष का आचार्य हूं, पर मेरी दृष्टि मे धर्म का स्थान सम्प्रदाय से वहुत ऊंचा है। धर्म और सम्प्रदाय को कभी एक तुला पर नही तोला जा सकता। मजहव और धर्म, सम्प्रदाय और धर्म को एक करना भयंकर

भूल है। जिन-जिन लोगों ने संप्रदाय और धर्म को एक किया है उन लोगो ने इस संसार मे एक अविस्मरणीय भूल की है।'

उन्होने आगे कहा—'इस संसार मे धर्म के दो ही रूप है—सहिष्णुता और धैर्य। अगर धर्म के इन दो रूपों को हमने स्वीकार कर लिया तो मैं आत्मतोष के साथ कह सकता हूं कि हम लोग कम से कम अपने वर्तमान जीवन को सुखी बना सकते है।'

टमकोर के चारदिवसीय प्रवास का लोगो ने अच्छा लाभ लिया। रामदेव ट्रस्ट द्वारा निर्मित गेस्ट हाउस मे प्रेक्षाध्यान पर युवाचार्यश्री का विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। ६ मार्च को 'अणुव्रत एवं प्रेक्षाध्यान' पर युवाचार्यवर का विशेष वक्तव्य हुआ। विषय प्रवेश मुनि प्रशांतकुमारजी ने किया। ७ को रात्रि मे साध्वियो का विविध भारती कार्यक्रम आयोजित हुआ।

भाग खुल गया!

७ मार्च/व्याख्यान के बाद युवाचार्यश्री अपने जन्म स्थल पधारे। वहां उन्होने बचपन के कई खट्टे मीठे संस्मरण सुनाए। प्रातःकाल जब माता बालुजी चौवीसी, आराधना चितारा करती थी, उस समय बालक नथमल सोया-सोया सुना करता था। एक बार वह घर के अहाते मे खेल रहा था। खेल-खेल मे वह दीवार से जा टकराया, नुकीले पत्थर से उनके मस्तक पर चोट लग गई, खून की धार बह चली। इस पर बुजुर्ग अभिभावको ने कहा—'इसके लगी नहीं, भाग खुल गया है भाग! उसी वर्ष उनकी माता के साथ पूज्य कालूगणी के कर कमलो से सरदारशहर मे दीक्षा हो गई।

आचार्यवर ने टमकोर प्रवास के दौरान विसर्जन का महत्त्व बताया। अमृत महोत्सव पर श्रावक समाज के लिए उद्घोषित चतुः सूत्री कार्यक्रम का यह महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। स्थानीय लोगों ने इस योजना की क्रियान्विति हेतु सामूहिक रूप से यह संकल्प किया कि हम अपनी आय का एक निर्धारित हिस्सा अवश्य विसर्जित करेंगे।

८ मार्च को टमकोर से विहार हो गया। ९ को 'हरियार' स्टेशन मे विद्यालय के सैकड़ो छात्रो व अध्यापको के बीच मुनि मुदितकुमारजी का वक्तव्य हुआ। रात्रि मे मुनि रणजीतकुमारजी व मुनि विजयराजजी का भाषण हुआ।

सादुलपुर में शानदार स्वागत

११ मार्च/औद्योगिक क्षेत्र से प्रमुख मार्गो से गुजरता हुआ जुलूस सेठिया गेस्ट हाऊस के पास सभा के रूप मे परिणत हो गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के अध्यक्ष वैद्य श्री परमेश्वरीप्रसाद, मुख्य अतिथि एस. डी. एम.

श्री स्वरूपसिंह पंवार, प्रमुख शिक्षाविद् श्री हनुमानप्रसाद सुरोलिया ने अपने स्वागत भाषण मे आचार्यश्री को देश की महान् विभूति बताते हुए उनकी अभ्यर्थना की। श्री पंवार युवाचार्यश्री के निदेशन में जयपुर पुलिस अकादमी में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर में भाग ले चुके है। वे इस प्रक्रिया से बहुत प्रभावित हैं। उन्होंने अपने भाषण मे इसका विशेष उल्लेख किया। इस मौके पर आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्बोधन हुए।

रात्रि में आचार्यवर के सान्निध्य मे एक संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसका विषय था 'बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास मे संतुलन'। प्रवचनकार थे युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ। संगोष्ठी मे भाग लेने वालों मे प्रमुख थे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मोहता कॉलेज के प्राचार्य श्री वासुदेव शास्त्री, अध्यक्ष मुंसिफ एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री अयाज मोहम्मद कुरेशी, मुख्य वक्ता श्री फकीरचंद चौधरी, उपजिला शिक्षा अधिकारी श्री महीपालसिंह, राज. उ. मा. वि. राजगढ के प्रधानाध्यापक श्री महेशविहारी आदि। कार्यक्रम बहुत प्रभावी रहा।

१२ मार्च/मध्याह्न २ बजे आचार्यवर की सन्निधि में अणुव्रत और प्रेक्षा ध्यान विषय पर एक गोष्ठी हुई। आचार्यवर के प्रवचन से पूर्व मुनि किशन-लालजी ने विषय की भूमिका पर प्रकाश डाला। आज रात्रि प्रवास 'कान कुमारी बोथरा औषधालय भवन' में हुआ। यह औषधालय जैन विश्व भारती, लाडनूं द्वारा सचालित है।

महिला संगोष्ठी

१२ मार्च/रात्रि में महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में महिला संगोष्ठी आयोजित हुई। सगोष्ठी का विषय था 'सामाजिक विकास में महिलाओं का योगदान'। कार्यक्रम की अध्यक्षता नीलकंठ होस्पीटल, राजगढ़ की डा. मंजुबाला गिरधर ने की। कार्यक्रम के प्रारम्भ मे समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी ने कहा—'आज दहेज भयंकर रूप ग्रहण कर चुका है और यह समाज के सिर पर कलंक है। महिलाएं इस दिशा मे जागरूक बनें।'

मुख्य वक्ता के रूप मे गीतादेवी सरावगी बालिका विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती तारा गौड ने कहा—'नारी एक ताकत है, शक्ति और चेतना है, पर भारतीय नारी अपनी सस्कृति को विस्मृत कर रही है। उसी का परिणाम है कि बच्चो मे अच्छे संस्कारो का अभाव होता जा रहा है अतः समाज-निर्माण के लिए आवश्यक है कि माताएं स्वयं संस्कारी बन बच्चों को संस्कारी बनायें।'

साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—'परिवार, समाज और देश की उन्नति के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है—महिलाएं जागृत बनें। वे

अंधविश्वास और रूढ परम्पराओं को बढावा न दें। परिवार-निर्माण की सर्वाधिक जिम्मेवारी महिला समाज की है। इस संदर्भ में व्यवस्थित योजना बनाकर बहिनें काम करें, यह अपेक्षा है।'

सामाजिक उत्थान के तीन सूत्र प्रस्तुत करते हुए साध्वी प्रमुखाश्री ने आगे कहा—'महिलाएं सहनशील, श्रमशील और स्नेहशील बनें, इससे समाज स्वतः स्वस्थ बन जायेगा और सामाजिक विकास के आयाम निश्चित रूप से उद्घाटित होंगे।'

आज आचार्यवर ने आगामी अक्षय तृतीया का कार्यक्रम दिल्ली में मनाने की घोषणा की। दिल्ली से अणुव्रत न्यास के प्रधान न्यासी श्री जसवंतराय जैन इसके लिए विशेष रूप से उपस्थित थे।

१३ मार्च/हासी से समागत प्रतिनिधिमण्डल ने प्रवचन में आगामी महावीर जयंति हासी में मनाने की जोरदार विनती की। हुबली (कर्नाटक) से समागत प्रधानाध्यापक श्री पारसमल जैन ने एक सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। प्रवचनोपरान्त स्थानीय कार्यकर्ताओ की एक विशेष बैठक आचार्यवर के सान्निध्य में हुई। रात्रि में 'युवा वर्ग में मानसिक तनाव एवं प्रदूषण' विषय पर युवाचार्यश्री का सारगर्भित प्रवचन हुआ। कई वक्ताओं ने इस अवसर पर अपने विचार रखे। उनमें प्रमुख थे महाविद्यालय के अध्यक्ष श्री सुरेश शर्मा, NSUI अध्यक्ष श्री दीनदयाल मुद्गल, मोहता महाविद्यालय के प्रवक्ता श्री राजीव कक्कड, श्री रामधारीसिंह सैनी 'इमरोज'। सेठिया गेस्ट हाउस में आचार्यवर के त्रिदिवसीय प्रवास का लोगो ने अच्छा लाभ लिया। कार्यक्रम का संयोजन श्री मालचन्द मालू ने किया।

राजगढ़ में

१४ मार्च/सादुलपुर से विहार कर आचार्यवर राजगढ पधारे। सादुलपुर और राजगढ़ परस्पर सटे हुए हैं। राजगढ पुराना शहर व बड़ा बाजार है जबकि सादुलपुर एक कस्बा है, किन्तु रेल्वे स्टेशन व डाकतार आदि सरकारी महकमों मे सादुलपुर नाम अंकित है। आज राजगढ़ पदार्पण पर स्थानीय जनता द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। मुनि विजयराजजी, समणी सुप्रज्ञाजी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से अपने आराध्य का अभिनन्दन किया। सघसेवी डा. सामसुखा के पुत्र बालक निशांत जैन ने अंग्रेजी मे अपने विचार रखे। विधायक श्री इन्द्रसिंह पूनिया ने राजगढ़ तहसील की ओर से राष्ट्रसंत का स्वागत किया। देश के मूर्धन्य साहित्यकार श्री प्रभाकर माचवे इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे। साध्वी प्रमुखाश्री, युवाचार्यश्री व आचार्यवर के प्रेरक प्रवचन हुए।

जीवन-विज्ञान पर महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी

आज मध्याह्न आचार्यवर की सन्निधि मे 'मूल्यपरक शिक्षा एवं जीवन विज्ञान' विषय पर महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें वरिष्ठ साहित्यकार डा. माचवे, साप्ताहिक हिंदुस्तान के उपसपादक श्री हिमांशु जोशी एवं डा. प्रभाकार मूले ने विशेष रूप से भाग लिया। गोष्ठी मे सैकड़ों बुद्धि-जीवी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मोहता महाविद्यालय के प्रवक्ता श्री आर. डी. सैनी ने किया।

वार्तमानिक शिक्षा प्रणाली पर अपने महत्वपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'आज के बच्चे विद्यालयो से शिक्षा प्राप्त कर घर आते हैं। उनमें मानवीय मूल्यों का अभाव देखकर माता-पिता व्यथित बन जाते है। अपराध और असहिष्णुता की वृत्ति विद्यार्थियों मे बढ़ती जा रही है इसलिए सबसे पहले अणुव्रत आचार-संहिता पर ध्यान दें। वह आधुनिक है, वैज्ञानिक है। जीवन-निर्माण के लिए उसकी अनिवार्य अपेक्षा है।'

आचार्यवर ने शिक्षा को जीवन का बुनियादी तत्त्व बताते हुए कहा—'जीवन मे सर्वाधिक अपेक्षा शिक्षा की है। आज की शिक्षा व्यक्ति को धर्म-कर्म और व्यवहार से, अपितु जीवन से पृथक् कर रही है, इनसे जुड़ी शिक्षा ही जीवन के लिए श्रेयस्कर है।'

रात्रि मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के साथ श्री माचवे, जोशी व मूले का अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व अन्य समसामयिक विषयों पर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ। कुछ चुने हुए बुद्धिजीवियो, मुनियों के बीच चली यह गोष्ठी बहुत महत्वपूर्ण थी।[1]

१५ मार्च/स्थानीय महिला मंडल ने प्रवचन के समय आठ संकल्प स्वीकार करने वाली बहिनों की सूचि आचार्यवर को उपहृत की। श्रीमती सिरेकवर शामसुखा ने अपने पुत्र शांतिलाल की स्मृति मे चार सौ गज का एक भूखंड महिला मंडल को भेंट किया। स्थानीय श्रावक लूणकरणजी गधैया पिछले कुछ अर्से से समाज से कटे हुए थे, इसका उन्हे गम था। स्थानीय कार्यकर्ता श्री मालचंद मालू के विशेष प्रयास की बदौलत वे उनके साथ रात्रि १२.३० बजे आचार्यवर की सन्निधि में पहुचे, बातचीत की और समाहित हुए। दूसरे दिन प्रातः आचार्यवर उनके घर गोचरी पधारे। प्रवचन के समय श्री गधैया ने अतीत की भूलो का परिष्कार करते हुए आचार्यश्री के प्रति अपने पूर्ण समर्पण को दोहराया।

मध्याह्न समागत विद्वज्जनो को तेरापंथ के साहित्य से अवगत कराया। आगम साहित्य, योग साहित्य व अन्य स्फुट साहित्य को देखकर वे

१. विस्तार से देखे पुस्तक—'महाप्रज्ञ से साक्षात्कार' पृ० १४७, १६१

अतिशय प्रभावित हुए । सायं श्री माचवे, श्री जोशी व श्री मूले दिल्ली रवाना हो गए।

रात्रि मे 'जीवन मे वसंत आये' विषय पर युवाचार्यश्री का प्रभावी उद्बोधन हुआ । प्राग् वक्तव्य मुनि विजयराजजी ने दिया ।

१६ मार्च/जैन विश्व भारती के कुलस्थविर दृढ़धर्मी विहारीलालजी जैन की स्मृति में सभा का आयोजन हुआ । इस अवसर पर मित्र परिषद् कलकत्ता के अध्यक्ष श्री माणकचंद नाहटा, नागरिक सभा राजगढ के सचिव श्री सुवीर कोठारी, समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती के निदेशक श्री मूलचंद घोसल, महासभा के न्यासी श्री सोहनलाल दूगड, श्री जैन के सुपुत्र श्री जगदीश जैन ने अपने विचार रखे। युवाचार्यश्री, आचार्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए ।

आज रात्रि प्रवास श्री जसकरण सुराणा की हवेली में हुआ । इसी भवन मे करीब ४१ वर्ष पूर्व आचार्यवर ने चातुर्मास किया था । रात्रि कार्यक्रम कोठारी भवन मे साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में हुआ । उपस्थिति उल्लेखनीय थी ।

अपराध वृत्ति क्यों ?

१८ मार्च/आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के सान्निध्य मे विद्वत् संगोष्ठी आयोजित हुई । गोष्ठी का विषय था 'अपराध वृत्ति क्यो ?' गोष्ठी की अध्यक्षता मुसिफ एव न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री अयाज मोहम्मद कुरेशी ने की । श्री कुरेशी तथा वकील श्री धर्मपाल के वक्तव्य हुए । दीपकलता जैन शामसुखा (पी० एच० डी०) का सम्मान किया गया । श्री कुरेशी ने उन्हे साहित्य भेंट किया ।

युवाचार्यश्री ने इस मौके पर कहा—'भोग व सुविधावाद बढ़ेगा तो अपराध बढ़ेगा । त्याग बढेगा तो अपराध स्वत: कम हो जायेगा । इसलिए अपराध वृत्ति को पनपने से रोकने के लिए संयम ही एक मात्र साधन है ।' आचार्यवर ने अपने आशीर्वचन में कहा—'दंड प्रणाली से हृदय परिवर्तन नहीं होता । अशुद्ध साधन से शुद्ध साध्य की प्राप्ति नही होती ।' अन्त मे श्री कुरेशी ने अध्यक्षीय भाषण दिया ।

सायं कोठारी भवन से विहार कर लुदीवास स्थित स्वर्गीय श्री शोभाचंद सुराणा के मकान मे विराजे । श्री सुराणा मित्र परिषद् कलकत्ता के संस्थापको मे से है । उनके सुपुत्र इंद्रचंद और पूरे परिवार ने उपासना का पूरा लाभ लिया । राजगढ के कार्यक्रमों का संयोजन श्री श्याम जैन मुसरफ ने किया । सादुलपुर व राजगढ़ का कुल आठ दिनो के प्रवास का स्थानीय जनता ने पूरा लाभ उठाया । आचार्यवर के आगमन से सुदूर क्षेत्रो में रहने वाले लोग

भी बड़ी संख्या में पहुंचे और धर्म लाभ लिया।

१६ मार्च/प्रातः बूंदाबांदी होने से विहार कुछ विलम्ब से हुआ। चार किलोमीटर पैदल चलने के बाद आचार्यवर ने साधन का उपयोग किया। इन दिनो आचार्यवर का स्वास्थ्य कमजोर चल रहा था। कई दिनों के आग्रह व निवेदन पर आचार्यवर ने साधन का प्रयोग किया। लसेडी गांव पहुचने पर विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के बीच मुनि मुदितकुमारजी का वक्तव्य हुआ। २० मार्च को लसेडी से विहार कर 'गोठ्यां' पधारे। वहां तेरापंथ के आठ परिवार रहते है। आचार्यवर वहां करीब एक घंटा विराजे। गोठ्यां राजस्थान राज्य का अन्तिम गांव है। वहां से करीब चार फर्लांग बाद हरियाणा राज्य की सीमा प्रारम्भ हो जाती है।

आचार्यवर ने नाथद्वारा मर्यादा महोत्सव होने के बाद उदयपुर होते हुए गुजरात राज्य में पधारे थे। वहा अहमदाबाद, वाव होते पुनः राजस्थान राज्य मे प्रवेश किया। उसके बाद बालोतरा, जोधपुर, आमेट व लाडनू चातुर्मास किए। करीब चार वर्ष तक निरन्तर राजस्थान राज्य मे रहे।

हरियाणा में सोलहवीं बार पदार्पण

२० मार्च/अपने साधु-साध्वी परिकर के साथ गोठ्यां से चलकर हरियाणा राज्य के सीमावर्ती गांव 'झुम्पां' मे पधारे। वहां विशाल स्कूल में आचार्यवर का प्रवास हुआ।

हरियाणा राज्य मे आचार्यवर सोलहवी बार पधारे। पहली बार आचार्य श्री सं० २००७ मे पधारे। उस समय हांसी चातुर्मास व भिवानी मर्यादा महोत्सव हुआ। दूसरी बार २००८ मे हरियाणा होते हुए सरदारशहर मर्यादा महोत्सव किया। तीसरी बार २०१३ मे सरदारशहर चातुर्मास के बाद बहल के रास्ते भिवानी होकर दिल्ली पधारे। और चौथी बार पुनः हरियाणा होकर सरदारशहर मर्यादा महोत्सव किया। पांचवी बार हरियाणा को आचार्यवर के चरण स्पर्श का लाभ तब मिला जब कलकत्ता से लौटते वक्त हांसी मर्यादा महोत्सव किया। छठी बार लाडनू मर्यादा महोत्सव के बाद २०२१ मे हरियाणा होकर पधारे। पुनः उसी मार्ग से सातवी बार हरियाणा होकर बीकानेर चातुर्मास किया। आठवी बार २०२२ मे हिसार मे मर्यादा महोत्सव किया। २०३० मे नवी बार हरियाणा का स्पर्श किया व हिसार चातुर्मास किया। २०३१ मे दसवी बार दिल्ली मर्यादा महोत्सव सम्पन्न कर हरियाणा होते हुए राजस्थान पधारे। २०३५ में राजलदेसर मर्यादा महोत्सव पर युवाचार्य श्री का मनोनयन हुआ। मनोनयन के पश्चात् ग्यारहवी बार फिर हरियाणा होकर दिल्ली पधारे। वहां से बारहवी बार पुनः हरियाणा होते हुए पंजाब पधारे। तेरहवी बार पंजाब मे संगरूर मर्यादा महोत्सव सम्पन्न कर हरियाणा मे सिरसा होकर

राजस्थान पधारे। चौदहवी बार सरदारशहर मर्यादा महोत्सव के बाद २०३८-३९ में जयपुर के रास्ते हरियाणा होते हुए दिल्ली पधारे। वहां से पन्द्रहवी बार हरियाणा होते हुए गंगाशहर मर्यादा महोत्सव किया। आज आचार्यवर के सोलहवी बार हरियाणा पदार्पण पर पूरे हरियाणा निवासी अतिशय प्रफुल्लित थे। सन् १९६६ तक हरियाणा स्वतत्र राज्य नही था। वह पंजाब का ही अंग था, किन्तु वह अंग हरियाणा के रूप मे जाना जाता था। उसके बाद वह भारत के मानचित्र मे स्वतत्र राज्य घोषित हो गया।

हरियाणा के प्रथम गाव भूपा मे मध्याह्न आचार्यवर की सन्निधि मे स्वागत कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर हरियाणा की साध्वियों—साध्वी चंदनबालाजी, सत्यवतीजी, वर्धमानश्रीजी, व कुन्दनरेखाजी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री बजरंगलाल ने किया। हरियाणा पदार्पण के साथ ही वहां के उत्साही क्षेत्रो के लोग मार्ग की पर्युपासना मे पहुंच गये। उपासना करने वाले क्षेत्रो मे प्रमुख थे—हिसार, हांसी, भिवानी, ऊमरा, नरवाना, जीद तथा पंजाब से संगरूर। राजगढ व सादुलपुर के भाई-बहिन तो उपासना मे अपने-अपने क्षेत्रो से पहले से ही साथ थे।

२१ मार्च/भिवानी जिले के सिवानी क्षेत्र मे आचार्यवर के पदार्पण पर एस. डी. एम. श्री प्रहलादसिंह, सरपंच श्री दुलीचंद बसल सहित स्थानीय जनता ने हार्दिक स्वागत किया। एस. डी. एम. तथा सरपंच ने व्यसन परिहार कर आचार्यवर का त्यागभरा अभिनन्दन किया। रात्रि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' के वक्तव्य के बाद युवाचार्यश्री का विशेष प्रवचन हुआ। प्रवचन मे उपस्थिति उल्लेखनीय थी। प्रवचनोपरान्त मुनि किशनलालजी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराये। लोगो ने अच्छा लाभ लिया। देर रात गरज के साथ छीटे पड़े, हवा तेज बहने लगी और उसमे शीतलता आ गई।

२२ मार्च/चौधरीवास/स्वाध्याय योग के अन्तर्गत आचार्यवर के सान्निध्य व युवाचार्यश्री के निदेशन व प्रायः सभी साधु-साध्वियों की उपस्थिति में पिछले कुछ अर्से से उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन चल रहा था। कुछ साधु-साध्वियो को उसके प्रथम दो अध्ययन पर नवीनता के साथ संक्षेप में किसी एक विषय पर लिखने का आचार्यवर का इंगित था। कई साधु-साध्वियो का इस दृष्टि से प्रथम प्रयास होते हुए भी उनके निबन्ध उपयोगी लगे। १३ साधु-साध्वियो ने इस गोष्ठी मे अपने निबंध पढ़े। आज रविवार होने की वजह से पार्श्ववर्ती क्षेत्रो के सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

२३ मार्च/गुरुकुल/अवशिष्ट साधु-साध्वियों ने अपने शोधपत्र आज पढे। सायं हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री श्री बनारसीदास गुप्त आचार्यवर से मिले, बातचीत की। रात्रि मे मुनि प्रशांतकुमारजी के प्राग् वक्तव्य के बाद मुनि सुमेरमल का प्रवचन हुआ।

हिसार में भव्य स्वागत

२५ मार्च/गगवा गांव से विहार कर आचार्यवर हिसार नगर के किनारे पर अवस्थित राजकीय विद्यालय के प्रांगण मे पधारे । वहां कुछ क्षण रुके । वहा से जुलूस के साथ आचार्यवर नगर की ओर प्रस्थित हो गये । नगर के मुख्य मार्गो व चौराहो से होता हुआ भव्य एवं विशाल जुलूस विश्नोई मन्दिर मे विशाल सभा के रूप मे परिणत हो गया । नगर मे जहां से जुलूस गुजरा, सैकड़ों नर-नारियों ने आचार्यश्री का अभिवादन किया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध उद्योगपति व प्रमुख श्रावक श्री ओम-प्रकाश जिन्दल ने की । श्री जिन्दल सपत्नीक राजगढ़ से हिसार तक हमेशा आचार्यवर के दर्शनो का लाभ लेते रहे । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे हरियाणा के उद्योगमंत्री सेठ किशनदासजी । श्री जिंदल, सेठजी, हरियाणा व्यापार मंडल के अध्यक्ष श्री गोपालकृष्ण, हरियाणा अणुव्रत समिति के अध्यक्ष अणुव्रत सेवी श्री राजेन्द्रप्रसाद, दिगम्बर पंचायत की ओर से श्री जयकुमार जैन, दैनिक जैन समाज एवं यंग लीडर के सम्पादक श्री जिनेन्द्रकुमार, विश्नोई मदिर की ओर से श्री ताराचद एवं श्री ब्रजलाल, तेरापंथ महिला मंडल की तरफ मे प्रो. उषा जैन व प्रिंसिपल श्री एस. आचार्य ने अपने विचार प्रकट करते हुए आचार्यवर की अभिवंदना की । युवाचार्यश्री का प्रेरक उद्बोधन हुआ ।

हरियाणा के राजकवि श्री उदय भानु 'हंस' ने अपने भावपूर्ण मुक्तको के द्वारा आचार्यवर की अभ्यर्थना की । कुछ चुने हुए मुक्तक निम्नोक्त हैं—

अपने आदर्शों की वह चलती फिरती तसवीर हैं ।
नील गगन सा ऊंचा है तो सागर सा गभीर है ॥
बड़ा क्रातिकारी है वह कहने को भले फकीर है,
मेरी नजरो मे तुलसी इस युग का संत कबीर है ॥१॥

तुलसी का कहना है कभी न गेहूं और गुलाब जले ।
हिंसा की लपटों मे यू खूशबू की नही किताब जले ॥
जले अगर तो घृणा द्वेष का नकली निपट नकाब जले,
हंसता गाता और नाचता कभी न यह पंजाब जले ॥२॥

चारो ओर निराशा के अब काले बादल छाए हैं ।
हिंसा की ज्वाला मे चाहे शांति कमल मुरझाए हैं ॥
देकर अग्नि परीक्षा सपना रामराज्य का लाए हैं,
नवयुग की रामायण लिखने फिर मे तुलसी आए हैं ॥३॥

इस व्यक्ति मे मानवता का वरदान छुपा है ।
इक वूद मे जैसे कोई तूफान छुपा है ॥
ससार की गंभीर हर समस्या का,
तुलसी के विचारों में समाधान छुपा है ॥४॥

तुम दुःखी विश्व के घाव सीते रहो ।
धर्मशास्त्रो का अमृत भी पीते रहो ॥
सत्य-अहिंसा का संदेश देते हुए,
कम से कम सौ वरस तक तो जीते रहो ॥५॥

आचार्यवर ने इस अवसर पर कहा—'धर्म एक सार्वभौम व्यापक तत्त्व है । इसको कठघरे मे नही वाधा जा सकता, किन्तु व्यक्तियों ने अपनी अहं तुष्टि के लिए उसे सकीर्ण वना दिया । जो धर्म विशाल राजपथ था, आज पगडडी वन गया है । जो धर्म जन-जन का आश्रय स्थल था, विश्वास स्थल था । आज उसके नाम से लोग आतंकित है ।

आचार्यवर ने उपस्थित जन समूह से तीन वातें स्वीकारने की अपील की—

- क्रूरता के स्थान पर करुणा का प्रयोग ।
- अर्जन के स्थान पर विसर्जन का उपक्रम ।
- व्यसन के स्थान पर व्यसन मुक्ति का सकल्प ।

कार्यक्रम का सचालन मास्टर श्री नन्दलाल जैन ने किया ।

२६ मार्च/सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री चाननराम वंसल का आचार्यश्री की सन्निधि मे अभिनन्दन किया गया । ग्रामीण सेवाओं के लिए उन्हे राष्ट्रपतिजी की ओर से शिरोमणि एवार्ड मिला । श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन ने श्री वंसल को साहित्य भेंट किया । श्री वन्सल ने आचार्यवर की अभ्यर्थना करते हुए आशीर्वाद मागा । पंजाव से समागत साध्वी कमलश्रीजी ने गीत प्रस्तुत किया ।

रात्रि मे विश्नोई मन्दिर के कार्यकर्ताओं ने स्वागत-गीत प्रस्तुत किया । 'जरूरत है आज ईमानदारी की' विषय पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण प्रवचन हुए । विषय प्रवेश मुनि किशनलालजी ने किया ।

१८ मार्च/साध्वी चंदनप्रभाजी, सत्यवतीजी, सिरेकुमारीजी के वक्तव्य के वाद आचार्यवर का प्रवचन हुआ । आज चतुर्दशी होने से 'हाजरी' का वाचन हुआ । रात्रि मे मुनि रवीन्द्रकुमारजी के वक्तव्य के वाद युवाचार्यश्री का उद्वोधन हुआ ।

कृषि विश्वविद्यालय में

२८ मार्च/हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत राष्ट्रीय एकता

समिति व छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा एक संगोष्ठी का समायोजन हुआ। मध्याह्न २.४५ बजे मौलिक विज्ञान महाविद्यालय सभा भवन में आयोजित इस संगोष्ठी का विषय था 'राष्ट्रीय एकता के सदर्भ मे धर्म।' युवाचार्यश्री की सन्निधि मे कार्यक्रम की अध्यक्षता उपकुलपति श्री एल. डी. कटारिया (आई. ए. एस.) ने की। स्वागत मे सस्कृत वंदना व वंदना गीत से कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। समणी श्रुतप्रज्ञाजी के गीत के वाद मौलिक विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य डा. डी. एस. वागले ने युवाचार्यश्री का स्वागत व डा. आर. एम. दक ने परिचय भापण प्रस्तुत किया।

खचाखच भरे सभा-भवन के हॉल मे बुद्धिजीवियो को संवोधित करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'हम एकता की वात सोचते है, किंतु सोचने मात्र से एकता नही सधती। जव तक स्वार्थ का वोलवाला है, विघटन व विखराव का शखनाद सुनाई देता रहेगा। त्याग या विसर्जन किसी को रुचिकर नही है फिर एकता सधेगी कैसे?'

वार्तमानिक शिक्षा प्रणाली पर बोलते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'आज शिक्षण संस्थान वौद्धिक विकास का काम कर रहे है पर भावनात्मक विकास का काम अधूरा पड़ा है। धर्म के तीन अंग मुख्य है—अध्यात्म, नैतिकता, उपासना। अध्यात्म और नैतिकता दोनों का आज अभाव नजर आ रहा है। केवल रूढ़िगत उपासना के सहारे धर्म खिसकता जा रहा है। आज अपेक्षा है उपासना के साथ अध्यात्म व नैतिकता के योग की। तभी धर्म प्रत्येक समस्या का समाधान दे सकता है।'

अध्यक्षीय भाषण देते हुए उपकुलपति श्री कटारिया ने कहा—'हमारा भारत देश महान् है किंतु समस्याग्रस्त है। कुछ व्यक्ति समस्या वढ़ाने में अपनी शान समझते है। हमारे लिए यह गौरव की वात है कि आप जैसे त्यागी व महान् संत अपना अधिकांश समय समस्या के समाधान मे लगाते हैं।'

इस कार्यक्रम मे विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागो के विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर, शोध विद्यार्थी वडी संख्या मे समुपस्थित थे। युवाचार्यश्री के महत्त्वपूर्ण उद्‌वोधन से उन पर गहरा प्रभाव पडा।

रात्रि मे विश्नोई मंदिर मे 'ज्ञान वडा या आचार' विपय पर युवाचार्य श्री का प्रवचन हुआ। विपय प्रवेश मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने किया।

हरियाणा प्रदेश अणुव्रत सम्मेलन

२९ मार्च/आचार्यवर की सन्निधि मे साध्वियो के अणुव्रत गीत के साथ अणुव्रत सम्मेलन का प्रारम्भ हुआ। हरियाणा अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन ने समागत अतिथियो का स्वागत व अणुव्रत के क्रिया-कलापो के वारे मे प्रकाश डाला। सम्मेलन मे जिला शिक्षाअधिकारी श्री

प्रसन्नलाल, अ. भा. अणुव्रत समिति के कार्यकारी अध्यक्ष श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट, श्री निर्मलकुमार सुराणा, स्थानीय अणुव्रत समिति के सहसंयोजक श्री श्रीचद जैन, हरियाणा अणुव्रत समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री मांगेराम गुप्ता व कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री कृष्णराघवन ने अपने विचार रखे। आचार्यवर व साध्वी प्रमुखाश्री के महत्त्वपूर्ण उद्‌बोधन हुए। कार्यक्रम का सयोजन मास्टर नन्दलाल जैन ने किया।

रात्रि में युवाचार्यश्री का विशेष प्रवचन हुआ। विषय था–'समाज की समस्याएं व अणुव्रत'। प्रवचन से पूर्व मुनि मुदितकुमारजी ने विषय की भूमिका पर प्रकाश डाला।

श्रावक सम्मेलन

३० मार्च/आज प्रात: आचार्यवर तेरापंथ सभा भवन में पधारे। सभा के अध्यक्ष विद्यासागर जैन ने समाज की ओर से आचार्यवर का स्वागत किया। श्री लक्ष्मीसागर, श्री छवीलदास जैन, श्री वलराज जैन, श्री प्रकाशचंद जैन ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किये। सुप्रसिद्ध उद्योगपति व स्थानीय प्रमुख श्रावक श्री ओमप्रकाश जिंदल ने आचार्यवर के प्रवास का अधिकाधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। साध्वी प्रमुखाश्री ने तत्त्वज्ञान सीखने पर विशेष वल दिया। आचार्यवर ने संघनिष्ठा व मर्यादा पालन मे जागरूक रहने पर विशेप वल दिया।

रात्रि मे संघ परामर्शक मुनि मधुकरजी के सान्निध्य व मुनि लोकप्रकाशजी के संयोजन मे काव्य सन्ध्या का आयोजन हुआ। कई साधुओं ने अपने मुक्तक, कविता व गीत प्रस्तुत किये।

हिसार के शिवराजजी व श्याममुंन्दरजी के बीच वर्षो पुराना मनमुटाव आचार्यश्री के प्रयत्न से समाप्त हो गया। भ्रातृद्वय लक्ष्मीसागर व दयासागर के बीच भी पिछले कुछ अर्से से विवाद चल रहा था। आचार्यवर के विशेप इंगित को पाकर उन्होने अपने आपसी विग्रह को खत्म कर दिया।

३१ मार्च/प्रात:कालीन प्रवचन प्रेमनगर में हुआ। रात्रिकालीन प्रवास देवीभवन मे हुआ जहां युवाचार्य श्री के मार्गदर्शन मे प्रेक्षाध्यान शिविर चल रहा था। वहां शिविरार्थियो के वीच आचार्यवर का उद्‌वोधन हुआ। उधर विश्नोई मंदिर मे साध्वी प्रमुखाश्री की सन्निधि में विविध भारती कार्यक्रम चला जिसमे साध्वियों के सुमधुर गीत, मुक्तक व भापण हुए।

१ अप्रैल/मेवाड के सुप्रसिद्ध कवि श्री माधव दरक ने आचार्यवर की अभ्यर्थना मे सुमधुर छंद प्रस्तुत किये। संघ से वहिर्भूत साध्वी दर्शनाश्रीजी ने अपने वक्तव्य आचार्यवर के प्रति मे अपनी श्रद्धा व्यक्त की। आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे श्री दरक तथा श्री मीठालाल दरजी, जिन्होने केलवाड़ा

(मेवाड़) के उस उग्र विरोध में भी अपने घर में स्थान दिया, का विशेष उल्लेख किया। दोनो व्यक्ति उस समय उपस्थित थे।

आचार्यवर ने साध्वी दर्शनाश्रीजी, साध्वी अरुणिमाश्रीजी के बारे मे कहा—'ये दोनो साध्वियां संघ से पृथक् हैं, फिर भी संघ के अनुकूल हैं यह अच्छी बात है। संघ से बहिष्कृत या बहिर्भूत व्यक्ति सामान्यतः विरोध के आदी बन जाते हैं। ये इस प्रवृत्ति से बची हुई हैं, यह एक शुभ बात है। इन्होंने इस अवधि मे जो काम किया है वह संघ व संघपति के नाम से किया है। इसकी सर्वत्र प्रशंसा हो रही है।' कल दोनो साध्वियों साध्वी दर्शना श्रीजी व अरुणिमाश्रीजी ने आचार्यवर के दर्शन किये व बातचीत की।

भादरा से आज कुछ कार्यकर्ताओं ने आचार्यवर के दर्शन किये। वहा सभा के मकान को लेकर मनमुटाव चल रहा था। बात यह थी कि श्री लालचंद बैद की धर्मपत्नी श्रीमती मनोहरी देवी ने भादरा तेरापंथी सभा को एक मकान दिया, किंतु कुछ कारणो से उस मकान की चाबी वह स्वयं के पास रख रही थी। आज आचार्यवर के इंगित से उसका समाधान हो गया।

आज रात्रि प्रवास श्री लक्ष्मीसागर व दयासागर एडवोकेट की कोठी पर हुआ। उधर विश्नोई मंदिर मे साध्वी प्रमुखाश्री की सन्निधि मे साध्वियों का रोचक कार्यक्रम रहा।

२ अप्रैल/आज इन्द्रप्रस्थ कोलोनी होते हुए आचार्य प्रवर नई अनाजमंडी पधारे। वहां प्रमुख उद्योगपति व समाजसेवी श्री नंदकिशोर गोयनका ने आचार्य वर का भावभीना स्वागत किया। मुनि राजकरणजी ने सक्षेप में आचार्यवर का परिचय दिया। लगभग चार हजार की विशाल उपस्थिति मे आचार्यवर का प्रेरक प्रवचन हुआ। जनता ने उनके विचारों को अत्यन्त आह्लाद एवं शांति के साथ सुना।

४ अप्रैल/प्रातःकालीन प्रवचन मे साध्वी स्वयंप्रभाजी ने अपने विचार रखे। उद्योगपति श्रीनन्दकिशोर गोयनका ने अपने वक्तव्य मे कहा —'नई अनाज़-मंडी मे २ अप्रैल को मैंने जो कुछ कहा उस पर मैं खेद प्रकट करता हूं' वहां उन्होने कहा था—' आप जैसे महान् सतो के द्वारा किसी संत के प्रति अभद्र शब्द कहना अनुचित है।' उनका कहने का स्पष्ट तात्पर्य संघ से बहिर्भूत साधुओं की ओर था। ऐसा कहा जाता है कि किसी ने उनको भरमा दिया था। श्री ओ. पी. जिंदल ने अपने भाषण मे अन्य धर्मसंघों की अपेक्षा तेरापंथ धर्मसंघ को मर्यादित, त्यागमय व अनुशासित बताया।

आचार्यवर ने इस अवसर पर कहा—'हम किसी की व्यक्तिगत आलोचना नही करते, किंतु उनकी गलत प्रवृत्तियों का समुचित प्रतिकार करना हमारे धर्मसंघ की स्वस्थ परम्परा है। मैं भी उसी आदर्श के अनुरूप चलता रहा हूं।' आचार्यवर ने विस्तार से तेरापंथ की रीति, नीति व

गौरवशाली परम्परा पर अपने विचार रखे ।

प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन

आज रात्रि में पैंतालीसवें प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन कार्यक्रम था । बाबूजी श्री शंकरलाल मेहता ने शिविर की रिपोर्ट पेश की । पूरे भारत से समागत ५१ भाई-बहिनो के अलावा ४० मुमुक्षु बहिनें, समण, समणिया व नीडम् के साधक-साधिकायें भी शिविर मे शामिल थी । तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा आयोजित यह शिविर २७ मार्च को प्रारम्भ हुआ । उसमे जिला पुलिस अधीक्षक श्री एस. एम. राठी विशेष रूप से उपस्थित थे । शिविरार्थियों की अनुभव प्रस्तुति के अनन्तर मुनि किशनलालजी ने प्रेक्षाध्यान प्रणाली पर अपने विचार रखे । आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्बोधन हुए ।

५ अप्रैल/हिसार के एक उपनगर माडल टाऊन में तेरापंथ भवन का उद्घाटन हुआ । दिल्ली निवासी श्री सुरेशचंद जैन ने अपने पिता स्व. लाला शेरसिंह की स्मृति में यह समाज को समर्पित किया । इस उदारता के लिए समाज द्वारा उनका अभिनदन किया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे हरियाणा के परिवहन मंत्री श्री अमरसिंह धानक, अध्यक्ष, थे श्री ओ. पी. जिंदल ।

श्री धानक ने कहा—'जनता में नई आस्था जगाने के लिए आचार्य श्री तुलसी ने अणुव्रत का संदेश दिया है । आप एक राष्ट्रसंत हैं । मेरी यह दिली इच्छा है कि आचार्यवर के आगमन को चिरस्थायी बनाने के लिए इस चौक का नाम 'आचार्य तुलसी चौक' रखा जाए । इसके लिए मैं प्रयत्न करूंगा ।'

आचार्यवर ने सामाजिक कर्त्तव्य, दान व विसर्जन पर महत्त्वपूर्ण प्रवचन दिया । आचार्यश्री ने स्व. लाला शेरसिंह को एक समर्पित व आस्थाशील श्रावक बताया । उन्होने लाला के पुत्रो से कहा—'सभी अपने पिता की भांति सदैव देव, गुरु व धर्म के प्रति आस्थाशील रहे ।'

रात्रि मे आचार्यवर को हिसार की जनता द्वारा भावभीनी विदाई दी गई । आचार्यवर ने अपने उद्बोधन मे हिसार के चार व्यक्तियो का विशेष उल्लेख किया । जिनका व्यक्तित्व व कर्तृत्व समाज के लिए प्रेरक है ।

श्री विद्यासागर जैन

स्व० लाला पारसदास के ज्येष्ठ पुत्र श्री विद्यासागर जैन स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष है । उनके पिता पारसदासजी एक प्रभावशाली व्यक्ति थे । वे पेशे से सी. ए. हैं । वे हर दायित्व को निष्ठा के साथ पूरा करते है ।

श्री लक्ष्मीसागर जैन

ये भी लाला पारसदासजी के पुत्र है । श्री लक्ष्मीसागर का विश्वास

बात कम और काम अधिक करने मे है। वे अपने कार्य के प्रति लगनशील है, पेशे से वकील है ।

श्री बालचन्द जैन

वे पीढियों से तेरापंथी है। हिसार के कर्यकर्त्ताओ मे वे प्रमुख है। रामलीला कटला मे निर्मित तेरापंथ सभा भवन के निर्माण मे उनका उल्लेखनीय योगदान है। साधु-साध्वियो की उपासना मे वे विशेष सचेष्ट रहते है।

श्री रामप्रसाद सोनी

सोनीजी भाईजी महाराज मुनि श्री चम्पालालजी की विशेष प्रेरणा से हिसार चातुर्मास मे तेरापंथी बने थे। वे तेरापथ दर्शन के अच्छे जानकार है। लम्बे-चौडे शरीर वाले सोनीजी की बुद्धि भी विशाल है। उन्होने अपनी श्रद्धा के रग मे पूरे परिवार को रगा है। उसी का यह परिणाम है कि उनका पूरा परिवार पीढियो से तेरापंथी कहलाने वाले श्रावको से कम कर्तव्यनिष्ठ व श्रद्धानिष्ठ नही है।

६ अप्रैल/आज प्रातःकालीन कार्यक्रम जिंदल ग्रुप पाइप फैक्ट्री ऑडिटोरियम मे था। जिंदल ग्रुप की ओर से श्री शिवराम जिंदल, श्री ओ. पी. जिंदल तथा श्रीमती सावित्रीदेवी जिंदल ने आचार्यवर का स्वागत किया। श्रीमती सावित्रीदेवी, जो ओ. पी. की धर्मपत्नी है, के सार्वजनिक रूप मे बोलने का यह प्रथम अवसर था। इस अवसर पर आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के वक्तव्य हुए। प्रवचन के अनन्तर आचार्यवर श्री जिंदल की कोठी पर विराजे। रात्रिकालीन प्रवास भी वही हुआ। साध्वियां शिवरामजी जिंदल के घर पर विराजी। मॉडल टाऊन मे एक स्थानकवासी भाई ने आचार्यवर से अपने घर पधारने की भावपूर्ण प्रार्थना की, पर समयाभाव से यह सभव नही हो सका। वह भाई हताश हो गया, दुकान भी नही गया और घर पर ही सो गया। जब आचार्यवर को यह जानकारी मिली तो साय उसके घर पधारे। वह भाई आचार्यवर को अपने घर मे पाकर खुशी से झूम उठा।

आचार्यवर का तेरहदिवसीय प्रवास बहुत ही शानदार रहा। हिसार नगर कई उपनगरो, कॉलोनियो मे बंटा हुआ है। आचार्यवर का प्रायः सभी उपनगरो मे पदार्पण हुआ जहां श्रद्धा के परिवार है। हिसार मे तेरापंथ के एक सौ पच्चीस परिवार रहते है। इस अवधि मे आचार्यश्री का करीब पाच सौ घरो, दुकानो व कार्यालयो मे जाना हुआ, जिन तेरापंथी घरो मे आचार्यश्री पधारे, उनकी श्रद्धा परिपक्व बनी। जो आचार्यश्री से विशेष लगाव रखते है, वे और निकट आये। कुछ ऐसे भी परिवार थे जो पहली बार आचार्यवर के सम्पर्क मे आये। युवाचार्यश्री के मार्गदर्शन मे आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर से लोग परिचित व प्रभावित हुए। युवाचार्यश्री के

विषयबद्ध प्रवचनों से स्थानीय जनता बहुत लाभान्वित हुई। उसका अनुमान प्रवचनो में होने वाली भाई-बहिनों की विशाल उपस्थिति से आंका जा सकता था।

हिसार में आयोजित कार्यक्रमो का संयोजन हिसार तेरापंथी सभा के मंत्री श्री नंदकुमार जैन ने कुशलता के साथ किया। प्रमुख उद्योगपति श्री ओ. पी. जिंदल व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सावित्रीदेवी जिंदल आचार्यवर के प्रवचनों के लाभ से कभी नहीं चूके। वे श्रद्धाशील श्रावक है। उनका मानना है कि हमे गौरव है कि हम तेरापंथी हैं। आचार्य श्री तुलसी के अनुयायी है। हमने अनेक धर्मसंघों व धर्मगुरुओं को देखा है पर त्याग, मर्यादा व अनुशासन का जीता-जागता उदाहरण हमने तेरापंथ में देखा है।' इस प्रकार यह हिसार प्रवास कई दृष्टियों से उपलब्धिपूर्ण रहा।

हिसार से विहार

७ अप्रैल/हिसार के तेरहदिवसीय प्रवास को सम्पन्न कर नगर से विहार किया। हिसार औद्योगिक क्षेत्र मे जिंदल ग्रुप के अनेक औद्योगिक प्रतिष्ठानों तथा अन्य कई फैक्ट्रियो में आचार्यवर पधारे। इन फैक्ट्रियों के अधिकारियो एवं कर्मचारियों के बीच आचार्यश्री का प्रवचन हुआ तथा उन्हें व्यसनमुक्त बनने की प्रेरणा दी।

करीब १०.१५ बजे विद्यादेवी जिंदल पब्लिक स्कूल मे पधारे। श्री ओ. पी. जिंदल ने अपनी पत्नी विद्यादेवी की स्मृति में इस विशाल विद्यालय भवन का निर्माण करवाया। पांच करोड़ की लागत से निर्मित व सैंतालीस एकड विस्तृत भूभाग में अवस्थित इस पब्लिक स्कूल में विद्यालय भवन, ऑडिटोरियम, छात्रावास, कैंटीन के साथ विशाल हरा-भरा बगीचा है। विद्यालय के एक प्रवक्ता के अनुसार अभी तक निर्माण का कार्य अवशिष्ट है। अभी इस विद्यालय मे पूरे भारत की करीब ३५० लड़कियां पढ़ती हैं।

विद्यालय मे आचार्यवर के पदार्पण पर ऑडिटोरियम मे कार्यक्रम रखा गया। श्री ओ. पी. जिंदल ने विद्यालय परिवार की ओर से आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत किया।

युवाचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे श्री, ह्री, धी इन तीनो मंत्रों को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा—ये क्रमशः लक्ष्मी लज्जा-अनुशासन व बुद्धि के वाचक हैं। आजकल लोग धन व बुद्धि तो चाहते हैं, पर मध्यवर्ती मन्त्र ही पर ध्यान नहीं दे रहे है। इसके अभाव मे दोनों खतरनाक बन सकते हैं।' आचार्यश्री ने कहा—'जीवन छोटी-छोटी बातों से बनता है। इस ओर सघन प्रशिक्षण होना चाहिये।' रात्रि मे मुनि किशनलालजी ने छात्राओ को ध्यान के विभिन्न प्रयोग बताये।

हांसी में भव्य स्वागत

८ अप्रैल/प्रात: हांसी पधारने पर आचार्यवर का स्थानीय जनता द्वारा भावभीना स्वागत किया गया। हरियाणा में हांसी तेरापंथ का सबसे बड़ा व पुराना क्षेत्र है। तेरापथ के षष्ठम आचार्य माणकगणी व अष्टम आचार्य कालू गणी के चरणस्पर्श से यह क्षेत्र पावन बना है। आचार्यवर के एक चातुर्मास, एक मर्यादा महोत्सव तथा अनेक बार चरण-स्पर्श का हांसी को सौभाग्य मिला है। हांसी मे तेरापंथ के १७५ घर है।

स्वाधीनता संग्राम मे प्रदर्शित शौर्य के लिए हांसी नगर का इतिहास में उल्लेखनीय स्थान प्राप्त हैं। सन् १८५७ मे भारत की आजादी के लिए एक व्यापक जन संघर्ष हुआ, किन्तु अंग्रेजों ने उसे बंदूक की नोक पर कुचल दिया। उस संघर्ष में अंग्रेज अफसरों ने हांसी के स्वतंत्रता सेनानियो को पकडा, रस्से से बांधा और उन पर भारी रोलर फेर दिया। इस जघन्य कृत्य से गली लहू से लाल हो गई। आज भी उसका नाम 'लाल गली' है। समय-समय पर वहां के लोगो ने देश, समाज व धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणो तक की आहुति दे दी। वहां का पुराना किला आज भी खंडहर रूप मे मौजूद है।

आचार्यवर एक भव्य जुलूस के साथ बलवंतसिंह कटला मे पधारे। वहां आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि हरियाणा के परिवहन मंत्री श्री अमर सिंह धानक, अध्यक्ष श्री सुरेश जैन व विशेष अतिथि थे श्री ओ. पी. जिंदल। कन्यामण्डल के मंगलाचरण के पश्चात् श्री नूनियामल जैन, श्री बजरंग जैन, दिगम्बर समाज की ओर से श्री सुरेन्द्रकुमार जैन, सनातन समाज की ओर से श्री सुभाषचद गोयल, हरियाणा शांति सद्भाव समिति के मन्त्री श्री रिखीराम, श्री नरेश गोयल ने अपने विचार रखे। मुनि राजेन्द्रकुमारजी, साध्वी सरस्वतीजी, विनयवतीजी व सत्यवतीजी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से अपने आराध्य का अभिनन्दन किया। इस मौके पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्बोधन हुए।

८ अप्रैल/रात्रि मे 'क्या आपने आदर्श का चुनाव कर लिया' विषय पर युवाचार्यश्री का विशेष प्रवचन हुआ। विषय प्रवेश मुनि किशनलालजी ने किया। १० को भी युवाचार्यश्री का विशेष उद्बोधन हुआ। प्राग् वक्तव्य मुनि मुदितकुमारजी ने दिया। अत मे आचार्यवर का सारगर्भित उद्बोधन हुआ।

हरियाणा प्रान्तीय तेरापंथ युवक सम्मेलन

१० अप्रैल/अपराह्न आचार्यवर की सन्निधि मे हरियाणा प्रान्तीय युवक सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन मे मास्टर बलराज जैन ने युवक परिषद् के त्रिसूत्री कार्यक्रम की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री पदमचन्द पटावरी ने युवको को

संबोधित किया। साध्वी प्रमुखाश्री ने युवकत्व की जीवन्त निशानी पुरुषार्थ बताते हुए पुरुषार्थी व्यक्ति को देश, समाज व परिवार के लिए उपयोगी बताया।

आचार्यवर ने युवको को उद्वोधन देते हुए आशा व्यक्त की—'तेयुप के सदस्य समर्पित हों, प्राणवान् हो, अनुशासित हो और संयमित हो। ऐसे सदस्य परिषद् के गौरव होगे। चाहे वे सख्या मे थोड़े हो, काम वहुत कर सकेंगे। यद्यपि प्रयत्न यह होना चाहिये कि अच्छे मार्ग पर सभी आएं।' कार्यक्रम का संयोजन अभातेयुप के मन्त्री श्री भंवरलाल डागा ने किया।

रात्रि मे युवक सम्मेलन के अन्तर्गत स्थानीय तेरापंथी सभा के मंत्री व शिक्षक श्री नेमीचद जैन का अभिनदन किया गया। श्री जैन को इस वर्ष हरियाणा सरकार द्वारा राज्य शिक्षक पुरस्कार का सम्मान मिला। पिछले वर्ष वे शिक्षा निर्धारण समिति के सदस्य चुने गये। अभातेयुप के अध्यक्ष श्री पदमचंद पटावरी, जिला शिक्षाधिकारी श्रीधवन ने श्री जैन का स्वागत किया। अभिनन्दन कार्यक्रम के अनन्तर 'राष्ट्र निर्माण में युवकों का दायित्व' विपय पर युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य हुआ। कार्यक्रम के वाद हरियाणा राज्य की तेरापंथी सभाओ के समागत अध्यक्ष, मत्री व कार्यकर्त्ताओ की एक गोष्ठी मुनि सुमेरमल के सान्निध्य मे हुई।

महावीर जयन्ती का भव्य समारोह

१२ अप्रैल/जैन धर्म के चौबीसवें व अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर की आज २५८५ वी जयन्ति थी। इस उपलक्ष मे सभी जैन मतावलम्वी उनकी शिक्षाओ व उपदेशों का स्मरण करते है और उन्हे अपने जीवन मे उतारने का संकल्प स्वीकार करते हैं। आज प्रातः पूरे नगर में प्रभात जागरिका निकाली गई, जिसमें काफी लोगो ने भाग लिया।

सार्वजनिक स्थान पर निर्मित विशाल पंडाल में समणी वृंद के सुमधुर गीत के साथ महावीर जयंति का भव्य समारोह प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि थे अणुव्रत न्यास के प्रधान न्यासी श्री जसवतराय जैन व अध्यक्ष साहित्यकार वावू गंगाशरणसिंह। प्रधानाध्यापक श्री रतनलाल जैन, नूनियामल जैन, दिगम्वर समाज की ओर से श्री सतीश जैन व साध्वी रूपांजी ने भगवान् महावीर को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। राजकवि श्री उदयभानु 'हंस' ने कविता, श्री रामप्रसादजी सोनी ने मुक्तक प्रस्तुत किये। साध्वी समुदाय ने सुमधुर समूह गीत का संगान किया। श्री नरेश गोयल ने अपने पिता स्वर्गीय विष्णुदयाल गोयल के संवंध मे संकलित सामग्री आचार्यवर को समर्पित की। श्री शुभकरण दसाणी ने श्री गगाशरणसिह का परिचय दिया। साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने मूल्यवान् उद्गार व्यक्त किये। साथ ही उन्होने स्वयं के द्वारा संपादित आचार्यवर की एक महत्त्वपूर्ण कृति 'राजपथ की खोज'

आचार्यवर को समर्पित की।

युवाचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—'हम महावीर जयंति मनाते है, किन्तु हमने महावीर को देखा नही और जानते भी नही। यह भी विचित्र वात है कि भगवान् को हुए सदियां वीत गई, फिर भी हम उन्हें मना रहे हैं और जो वर्तमान मे हैं, उसकी उपेक्षा कर रहे हैं। मेरी दृष्टि में महावीर को मनाने का अधिकार उसे है जो उन्हे देख चुका है अथवा उनके सिद्धान्तों के अनुसार वनने की तैयारी कर चुका है तथा जिनका अहिंसा, अपरिग्रह व अनेकांत मे विश्वास है।'

आचार्यवर ने अपने उद्‌वोधन मे कहा—'महावीर का उपचार मे नही, यथार्थ मे विश्वास था। इसलिए महावीर जयंति मनाने का अर्थ है उनके सिद्धांतों को स्वीकार करने का प्रयत्न करना। समता, सहिष्णुता व समन्वय की मनोवृत्ति ये महावीर की तीन मौलिक विशेषताएं थी।' आचार्यवर ने महावीर के जीवन व दर्शन पर विस्तार से चर्चा की।

अपराह्न आगम वाणी का सामूहिक पाठ हुआ। काफी आकर्षक था वह कार्यक्रम। तदनन्तर श्रावक सम्मेलन का आयोजन हुआ। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' व मुनि राजकरणजी ने सम्मेलन को संवोधित किया। रात्रि कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में चला।

अव असलियत का पता लग गया

१२ अप्रैल/हिसार के एक प्रमुख व्यापारी श्री विजयकुमार गुप्ता ने आज आचार्यवर के दर्शन किए। वातचीत के दौरान गुप्ताजी ने कहा—'अव तक मैं आपके संघ से पृथक् शिष्यो के सम्पर्क मे था। उन्होने प्रलोभनस्वरूप मुझे जाप वतलाया। उससे तो मेरा भट्टा ही वैठ गया। उनके प्रति मेरी आस्था कभी नही जुडी, फिर भी मै उनकी वातो मे आ गया। उनके चक्कर में मैं इतना था कि आपके हिसार पदार्पण के वावजूद मैं आपके पास नही आया। कल पता नही क्यो यह चिंतन आ गया और वह भी वहुत गहरा कि ऐसे महापुरुषो के दर्शन कर ही लेने चाहिये। मैंने पहली वार किसी के चरण स्पर्श किये है तो आपके किए हैं। अव मुझे असलियत का पता लग गया है।'

१३ अप्रैल/स्थानकवासी समाज के आग्रह पर हांसी के एक उपनगर ढाढ़र मे युवाचार्यश्री के सान्निध्य मे समारोह हुआ। श्री राघवेन्द्र जैन की अध्यक्षता मे वालिकाओ ने सामूहिक संगान किया। मुनि सुमेरमल ने अपने प्राग् वक्तव्य में जैन सस्कारो पर वल दिया। युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन में एकता मे अनेकता और अनेकता में एकता देखने को वीतराग दर्शन वताया।

१४ अप्रैल को हाजरी का वाचन हुआ। हरियाणा व पंजाव मे इस वर्ष चातुर्मास करने वाली साध्वियों को आचार्यवर ने पृथक्-पृथक् उपासना

का लाभ दिया और उनकी विशेष गोष्ठी हुई। सायं पांच बजे तेरापन्थ भवन से विहार कर आचार्यश्री नई अनाजमन्डी पधारे। वहां केन्द्रीय पर्यावरण मन्त्री श्री भजनलाल मिले व संक्षिप्त बातचीत की।

एक सप्ताह के हांसी प्रवास का स्थानीय जनता ने अच्छा लाभ लिया। प्रातः व रात्रि मे होने वाले आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के प्रवचनो में केवल तेरापन्थी ही नही, जैन व जैनेतर लोगों ने भी पूरा रस लिया। कटला बलवंत सिंह दोनों समय के प्रवचनो मे खचाखच भर जाता था।

रोहतक में

१६ अप्रैल/हांसी से महम, मदीना होते हुए आज आचार्यवर ने रोहतक शहर में प्रवेश किया। शहर प्रवेश से पूर्व इण्डस्ट्रीयल एरिया में स्थित नव-भारत इण्डस्ट्रीज मे आचार्यवर कुछ क्षण रुके। यह फैक्ट्री हांसी के श्री श्रीपाल चौधरी की है। उसके बाद एस. के. जैन के शो रूम पधारे। वहां से एक भव्य एवं संयत जुलूस के साथ आचार्यवर जैन जतीजी के स्थान पर पधारे। वहां आयोजित स्वागत समारोह की अध्यक्षता हरियाणा के उद्योग एवं कराधान मन्त्री एवं स्थानीय विधायक सेठ श्री किशनदास ने की। मन्त्री ने अपने भाषण में आचार्यश्री को शांति का उद्‌गाता बताया और कहा—'एक लम्बी अवधि से निःस्वार्थ भाव से मानव जाति की जो आप सेवा कर रहे हैं, उसका एक ही उद्देश्य है कि हमारे देश में अच्छे नागरिक तैयार हो।' दिगम्बर समाज के प्रमुख एडवोकेट जिनेन्द्रप्रसाद तथा हरियाणा अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रप्रसाद जैन ने स्वागत मे अपने विचार रखे। इस अवसर पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्बोधन हुए। कार्यक्रम का संयोजन श्रीमती सतोष जैन ने किया।

अपराह्न साध्वी प्रमुखाजी की सन्निधि मे महिला संगोष्ठी आयोजित हुई। रात्रि मे युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य हुआ।

२० अप्रैल/मध्याह्न युवाचार्यश्री ने दिगम्बर समाज के प्रमुख ग्रथ समयसार का वाचन करते हुए मार्मिक विवेचन किया। उस समय दिगम्बर समाज के भाई-बहिनों की भारी उपस्थिति थी। सायं आचार्यवर रोहतक में ही ग्रीन रोड़, शक्तिनगर स्थित मालाबार गेस्ट हाऊस पध र गए।

बुद्धिजीवी सम्मेलन

रात्रि में मालाबार गेस्ट हाऊस में स्थानीय रोटरी क्लब, लायन्स क्लब व सेन्ट्रल रोटरी क्लब के संयुक्त तत्त्वावधान मे विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रारम्भ मे तीनों क्लबों के क्रमशः अध्यक्ष श्री प्रमोदकुमार मरवाह, श्री भारतभूषण बतरा, श्री महेन्द्र अरोडा ने आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री का अभिनंदन किया। तीनों क्लबो के पदाधिकारियों, बुद्धिजीवियो व नगर के

संभ्रान्त नागरिको से खचाखच भरे हॉल मे युवाचार्यश्री का प्रभावी प्रवचन हुआ। प्रवचन का विषय था—'मानसिक तनाव : कारण और निवारण'। आचार्यश्री का इस अवसर पर आशीर्वचन हुआ।

२१ अप्रैल/मध्याह्नकालीन कार्यक्रम साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे आयोजित हुआ। साध्वियों ने भाषण, कविता, मुक्तक आदि के द्वारा अपने भाव प्रस्तुत किए। अन्त मे साध्वी प्रमुखाजी का प्रवचन हुआ।

रात्रि मे युवाचार्यश्री का 'शिक्षा मे जीवन-विज्ञान' विषय पर महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुआ। कार्यक्रम मे काफी सख्या मे शिक्षक उपस्थित थे। उपजिला शिक्षाधिकारी श्री शर्मा ने अपने भाषण मे शिक्षा मे समागत विसंगतियों को हल करने पर बल दिया। कार्यक्रम का संयोजन प्रेमजी वकील ने किया। दिल्ली के सांसद श्री केयूरभूषण ने आचार्यवर के दर्शन किए। दिल्ली मे होने वाले एक समारोह के सिलसिले मे उन्होने आचार्यश्री से बातचीत की। मालाबार गेस्ट हाऊस के मालिक श्री रमेशचन्द जैन अपने गेस्ट हाऊस मे आचार्यवर के प्रवास से बहुत प्रसन्न थे। रोहतक के त्रिदिवसीय प्रवास ने नगर के बुद्धिजीवियो से लेकर सामान्य नागरिक तक एक हलचल सी पैदा कर दी।

मैने भी बदल दिया

२२ अप्रैल/कलावड़/ आचार्यवर रोहतक से विहार कर कलावड़ पधारे। आज थामला (मेवाड़) से श्राविका श्रीमती झमकूदेवी का एक पत्र आया। उसने लिखा था—'थामला मे इस बार महावीर जयंति के अवसर पर स्थानकवासी आचार्य मेवाड़ प्रवर्तक श्री अंबालालजी महाराज का पदार्पण हुआ। महावीर जयंति के अवसर पर उनका व अपने संप्रदाय की साध्वी संतोषकुमारीजी का संयुक्त कार्यक्रम था। आचार्य अंबालालजी ने विशाल उपस्थिति मे कहा—'मैं अपनी जन्मभूमि थामला आया हूं उसके पीछे मुख्य रूप से तेरापन्थी भाइयो का सौहार्द व भक्ति है। आचार्य तुलसी के कारण मैंने भी अपने विचारो को बदल दिया है। उन्होंने सभी संप्रदायो मे संवत्सरी एक मनाने का जो अभियान चलाया है, उसे मैंने स्वीकार कर लिया है।'

बहादुरगढ़ में

२५ अप्रैल/आचार्यवर का आज बहादुरगढ पधारने पर भावभीना स्वागत किया गया। बहादुरगढ हरियाणा राज्य का अन्तिम क्षेत्र है। वहां के प्रमुख श्रावक लाला हरकिशनदास पत्थरवाला ने अपने क्षेत्र व घर विराजने पर आचार्यश्री का स्वागत किया। आचार्यवर ने अणुव्रतो के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

आचार्यवर की यह हरियाणा यात्रा चूकि सक्षिप्त रही, फिर भी जिन क्षेत्रो में आचार्यवर का पदार्पण हुआ, वहाँ धर्म-त्रिपथगा की निर्मल धारा

बह चली। इस सैंतीसदिवसीय हरियाणा यात्रा मे राज्य के लोगो व अन्यो ने रास्ते की उपासना का पूरा लाभ लिया। हिसार, हांसी, भिवानी, जींद, नरवाना, ऊमरा आदि क्षेत्रो ने पूरी व्यवस्था के साथ सेवा की। माइक, जेनरेटर, पण्डाल आदि का सम्पूर्ण प्रवन्ध हरियाणा प्रांतीय तेरापन्थी सभा के अधीन था। रोहतक से दिल्ली संघ सेवा में आ गया। इन क्षेत्रो के अतिरिक्त व्यक्तिगत उपासना करने वाले भी काफी भाई-बहिन थे। उनमें अधिकांश सुबह आते व सायं चले जाते। जिन्होने कई दिनो तक मार्ग की उपासना का लाभ लिया, वे है—

- श्रीमती रतनी वाई बरडिया (सरदारशहर-दिल्ली)
- श्रीमती सुमेरमल पटावरी (मोमासर-दिल्ली)
- श्री कमलसिंह दूगड सपरिवार (लाडनू-कलकत्ता)
- ,, देवीचन्द पुगलिया (गंगाशहर)
- ,, जयचन्दलाल बैद सपरिवार (गंगाशहर)
- ,, नगराज सामसुखा ,, (सरदारशहर)
- ,, मन्नालाल खटेड ,, (लाडनूं)
- ,, जयचन्दलाल डोसी ,, (सरदारशहर)
- ,, लाला बालचन्द जैन ,, (दिल्ली)

श्री हनुमानमल नाहटा (वीदासर) ने जिस निष्ठा व लगन से मार्ग की उपासना का लाभ लिया वह उल्लेखनीय है। रतनगढ़ मर्यादा महोत्सव के बाद अब तक वे सपरिवार निरन्तर उपासना मे रहे। वीच मे कुछ दिनों के लिए बीदासर जाना पड़ा, क्योंकि उनके दामाद श्री विजयसिंह दूगड़ (लाडनूं) का एक दुर्घटना मे गौहाटी में देहावसान हो गया। कुछ ही दिनो में वे पुनः सेवा में उपस्थित हो गये।

राजधानी दिल्ली में

हरियाणा राज्य की यात्रा संपन्न कर आचार्यवर ने दिल्ली महानगर मे प्रवेश किया। भारत के चार महानगरों (मद्रास, वम्बई, कलकत्ता) में दिल्ली भी एक महानगर है। शताब्दियों तक यह मुगल साम्राज्य की राजधानी रहा। अंग्रेजो ने भी वाद मे कलकत्ता छोडकर दिल्ली को राजधानी बनाया। अस्सी लाख से भी अधिक जनसख्या वाले इस महानगर मे हजारो कॉलोनियां, उपनगर व बस्तिया है। नई दिल्ली क्षेत्र की सडके, फुटपाथ व भवन विशाल व साफसुथरे है। रोड पर वृक्षावली, हरे भरे बगीचों व विशाल चौक के लिए यह अतिशय क्षेत्र है। एशियाई खेलो के समय निर्मित विशाल स्टेडियम, फलाई ओवर ब्रिज व सुन्दर सड़कों से इस नगर की शोभा द्विगुणित हो गई है। उन खेलो के दौरान निर्मित 'अप्पू घर' आज विशेष आकर्षण का केन्द्र वना हुआ है। लाल किला, कुतुबमीनार आदि प्राचीन इमारतें मुगल

साम्राज्य के स्मृति चिह्न है। विशाल 'राष्ट्रपति भवन' अंग्रेजो की स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है। निर्माणाधीन करीव आठ सौ फुट ऊंचा टी. वी. टावर आधुनिक तकनीकी की उत्कृष्टता का ज्वलंत निदर्शन है।

तेरापंथ का दिल्ली में प्रवेश तृतीय आचार्य श्री रायचन्दजी स्वामी के शासनकाल मे हुआ। सं० १८८६ मे श्रीमज्जयाचार्य (मुनि अवस्था में) चार मुनियो के साथ पहली वार दिल्ली पधारे थे। तेरापंथ के आचार्यों मे पहली वार आचार्य श्री तुलसी पधारे। उन्होंने अव तक दिल्ली में चार चातुर्मास क्रमश. सं० २००८, २०२२, २०३१, २०३८ तथा एक मर्यादा महोत्सव सं० २०३० मे किया है। दिल्ली मे दसवी वार उनका सं० २०४४ के चातुर्मास के लिए पदार्पण हुआ है। पूर्व मे दिल्ली पदार्पण का क्रम इस प्रकार रहा—

सं० २००७ जयपुर मार्ग से
" २००८ पंजाब से
" २०१३ सरदारशहर से वहन, भिवानी होकर
" २०१६ कलकत्ता से
" २०२१ लाडनू से हरियाणा होकर
" २०२२ वालोतरा से जयपुर होकर
" २०३० हिसार से
" २०३५ राजलदेसर से
" २०३८ सरदारशहर से जयपुर होकर

दिल्ली प्रवेश पर भव्य स्वागत

२६ अप्रैल/प्रातः आचार्यवर ने ससंघ वहादुरगढ से विहार किया। मार्ग मे दिल्ली के वरिष्ठ श्रावक श्री वालचन्द जैन की फैक्ट्री रमेश इण्डस्ट्रीज में करीव ४५ मिनट रुके। वहां से आचार्यवर ने नजफगढ के लिए प्रस्थान किया। ज्योंही आचार्यवर हरियाणा राज्य की सीमा पार कर दिल्ली नगर निगम की सीमा में प्रविष्ट हुए, जयनारों से आकाश गुंजित हो उठा। राजधानी के गणमान्य श्रावको ने आचार्यवर का स्वागत किया। मुनि महेन्द्र कुमारजी आदि तीन संतो ने सीमा पर आचार्यवर के दर्शन किए। मुनिश्री पिछले दो वर्षों से राजधानी मे प्रवासित थे। गुरु दर्शन के इस अवसर पर वे अतिशय पुलकित थे।

सीमा पर आयोजित अनौपचारिक समारोह मे आचार्यवर ने महत्त्वपूर्ण उद्गार व्यक्त करते हुए एक पद्य फरमाया—

सन् सित्यासी एप्रिल छव्वीस, नजफगढ की नई सडक।
दिल्ली नगर निगम की सीमा में प्रवेश वेहडक धडक॥

आचार्यवर राजस्थान, हरियाणा से कई वार दिल्ली पधार चुके हैं पर

बहादुरगढ-नजफगढ रोड से पहली बार दिल्ली की सीमा मे प्रवेश किया है।

अभिनंदन समारोह

नजफगढ़ जैन स्कूल मे दिल्ली प्रवेश पर आचार्यवर का भावभीना अभिनंदन किया गया। स्कूली बच्चों के मंगल गीत के बाद आचार्य तुलसी चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मांगीलाल सेठिया ने स्वागत भाषण किया।

दिल्ली महानगर परिषद् के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम गोयल ने आचार्यश्री को महान् व्यक्तित्व के धनी व समन्वय के संयोजक बताते हुए कहा —'आपका चिंतन व्यापक व विचार उदार है। अणुव्रत के माध्यम से आपने हर समस्या को समाधान देने का प्रयत्न किया है। सासद श्री रामचन्द विकल ने आचार्यश्री को मानवता का संरक्षक बताया'। हरिजन सेवक संघ के सयोजक श्री चितामणि ने कहा—'आचार्यश्री ने दीन, हीन, शोषितो को ऊचा उठाने मे महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।' नजफगढ दिगम्बर समाज के प्रमुख श्री शीतलप्रसाद ने स्वागत मे अपने विचार रखे।

मुनि अजितकुमारजी ने स्वागत मे मुक्तक बोलते हुए स्वनिर्मित अमृत कलश भेंट किया। मुनि मदनकुमारजी ने अंग्रेजी मे हस्तलिखित पत्रिका भेंट की।

आचार्यवर ने अपने उद्बोधन में कहा—'आज सर्वत्र हिंसा व भय का वातावरण है, नीतिनिष्ठा का ह्रास हो रहा है, परन्तु हमे निराश नही होना है। देश मे अभय, अहिंसा और मैत्री का वातावरण बने तथा नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठा हो। इन्ही दो बुनियादी कामो को लेकर हम दिल्ली प्रवेश कर रहे है। हमसे जितना बन पड़ेगा इस दिशा मे पूरा प्रयास करेंगे। इस अवसर पर युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री के प्रेरक संबोधन हुए।

दिल्ली मे अणुव्रत परीक्षा मे उत्तीर्ण २५० छात्रों, जो नजफगढ के पार्श्ववर्ती ११ केन्द्रो से आए थे, को सांसद श्री रामचन्द विकल ने प्रमाण पत्र वितरित किए। परीक्षा संयोजक श्री सत्यदेव शास्त्री ने परीक्षा संचालन मे काफी श्रम किया। कार्यक्रम का सयोजन चातुर्मास व्यवस्था समिति के महामन्त्री श्री टोडरमल लालाणी तथा उपाध्यक्ष श्री फरजनकुमार जैन ने आभार ज्ञापन किया। आज दिल्ली के विभिन्न उपनगरो से दिन भर दर्शनार्थियों का आवागमन होता रहा। नजफगढ के जैन लोगो ने भाई रामकुमार के साथ यात्रियो की समुचित व्यवस्था की।

पत्रकार प्रलोभन से बचे

२८ अप्रैल/विजवासन उपनगर के सहगल फार्म मे अखिल भारतीय

लघु समाचारपत्र महासंघ के राष्ट्रीय सम्मेलन के अन्तर्गत एक गोष्ठी आयोजित की गई। गोष्ठी को संवोधित करते हुए आचार्यवर ने कहा—'देश मे व्याप्त समस्याओ के समाधान के लिए केवल राजनीतिक हल ही पर्याप्त नही है। जव तक आध्यात्मिक एवं राजनीतिक नेतृत्व में समन्वय नही होगा, समस्याओ का समाधान हो पाना मुश्किल है। पत्रकार प्रलोभनों से वचते हुए यदि राष्ट्रीय चरित्र निर्माण एव नैतिक उन्नयन की दिशा मे कार्य करते है तो भ्रष्टाचार, अनैतिकता एवं आतंकवाद जैसी समस्याओ से समाधान पाया जा सकता है।'

क्रूरता को आज की सवसे वडी समस्या मानते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'जिस राष्ट्र ने करुणा, मैत्री, अहिंसा व भाईचारे का सदेश संपूर्ण विश्व को दिया, उसी राष्ट्र मे आज करुणा के स्थान पर क्रूरता का वातावरण वना हुआ है। क्रूरता ही हिंसा, आतकवाद व भ्रष्टाचार की जननी है। समाचारपत्र यदि क्रूरता के प्रसारक न वनें तो हिंसा, आतंकवाद जैसी समस्याओ का समाधान हो सकता है।'

अ. भा. लघु समाचारपत्र सघ के अध्यक्ष एवं सांसद श्री केयूरभूपण ने राष्ट्र विकास मे पत्रकारो की अहम् भूमिका मानी। अणुव्रत इण्टरनेशनल के अध्यक्ष श्री शुभकरण दसाणी ने आचार्यवर का परिचय दिया। श्री मागीलाल सेठिया ने पत्रकारो का स्वागत किया। नरोला की सीनियर सैकण्ड्री स्कूल की वालक-वालिकाओ ने गीत प्रस्तुत किया।

अ. भा लघु समाचारपत्र संघ के द्विदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दूसरे दिन का यह कार्यक्रम था। इस कार्यक्रम में भारत के विभिन्न प्रांतो के करीव १५० पत्रकार मौजूद थे। कार्यक्रम के अनन्तर कुछ वरिष्ठ पत्रकारों ने विविध विषयो पर आचार्यवर से अलग से वातचीत की।

अध्यात्म साधना केन्द्र मे

२६ अप्रैल/आचार्यवर महरौली मे छतरपुर रोड स्थित अध्यात्म साधना केन्द्र पधारे। शहरी कोलाहल से दूर, रमणीक, शांत व एकात वातावरण तथा एक विशाल भूभाग मे यह केन्द्र अवस्थित है। इसके निकट सुप्रसिद्ध आद्या कात्यायनी शक्तिपीठ का मदिर व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी का फार्म है। आचार्यवर के केन्द्र मे पधारने पर इस केन्द्र के प्राण समाज भूपण श्री मोहनलाल कठौतिया, अणुव्रत न्यास के प्रधान न्यासी श्री जसवतराय जैन ने स्वागत किया। साधना केन्द्र के साधक श्री गुलाटी व श्री श्रद्धानन्दजी ने संस्कृत श्लोको के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये। साध्वी चंदनवालाजी व वर्द्धमानश्रीजी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से आराध्य का स्वागत किया।

आद्या कात्यायनी शक्तिपीठ के संचालक बाबा नागपाल की ओर से उनके प्रतिनिधि श्री देवीसिंह ने कहा—'बाबा नागपाल बाहर होने के कारण उपस्थित नही हो सके इसलिए मैं शक्तिपीठ की ओर से आपका अभिनंदन करता हूं। आपके प्रवचनों से हमे अध्यात्म एवं जीवन-निर्माण के सूत्रो को पहचानने का अवसर मिलेगा।'

केन्द्रीय समाजकल्याण राज्यमंत्री श्रीमती राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी ने कहा—'भारत का सौभाग्य है कि उसे समय-समय पर देश के ऋषि-मुनियों का मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। आज हमारे देश में धर्म, भाषा, जाति व संप्रदाय के नाम पर जो घृणित कार्य हो रहे है, वे उचित नही हैं। अणुव्रत की स्थापना से आचार्यश्री ने मानवधर्म की स्थापना की है। आशा है आचार्य जी के दिल्ली प्रवास से सांप्रदायिकता के जहर को मिटाने मे सहयोग मिलेगा।'

युवाचार्यश्री ने कहा—'आज सबसे बड़ी समस्या है मनुष्य के मस्तिस्क को बदलने की, व्यक्ति को बदलने की। हिंदुस्तान के लोग अपनी मूल थाती को भूल गये है, इसलिए व्यक्ति का बदलना जटिल हो गया है। प्रेक्षा-ध्यान के द्वारा व्यक्ति को बदला जा सकता है।' साध्वी प्रमुखाश्री ने आचार्य श्री के दिल्ली आगमन को सत्य, ज्योति तथा अमृतत्व का आगमन बतलाया।

आचार्य श्री ने अपने उद्बोधन में कहा—'हमने अपने जीवन में दो काम करने का प्रयत्न किया है (१) अध्यात्म की प्राचीन संस्कृति को नवीनतम रूप मे प्रस्तुति (२) धर्म और सम्प्रदाय दो है इसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति।'

उन्होने आगे कहा—'हम ७२ वर्ष की अवस्था में दिल्ली आए है। दिल्ली मे कही गई बात सम्पूर्ण राष्ट्र ही नही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आसानी से पहुचाई जा सकती है। आज पूरे विश्व को पुनः अहिंसा एव शांति स्थापना हेतु अणुव्रत आंदोलन जैसे असाम्प्रदायिक धर्म की आवश्यकता है।' संयोजन श्री धर्मानन्द जैन ने किया।

अक्षय तृतीया समारोह

१ मई/प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष भी अक्षय तृतीया का भव्य एवं आकर्षक कार्यक्रम आयोजित हुआ। मर्यादा महोत्सव के बाद यह सबसे बड़ा समारोह बन गया है। आद्या कात्यायनी शक्तिपीठ के प्राकृतिक चिकित्सालय के विशाल प्रांगण मे आयोजित अक्षय तृतीया समारोह मे बोलते हुए जवाहर-लाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति श्री दौलतसिंह कोठारी ने कहा—'आज ज्ञान-विज्ञान के साथ हिंसा और घृणा बढ रही है। हम महावीर, बुद्ध और गांधी के अहिंसा, मैत्री व करुणा के संदेश को भूल रहे हैं। आवश्यकता है विज्ञान के दो विपरीत ध्रुवों को संयम के सेतु से संबधित करे।'

हरिजन सेवक संघ की अध्यक्ष सुश्री निर्मला देशपांडे ने कहा—'आचार्य श्री प्राचीनता एवं नवीनता के संगम हैं। तपस्या के द्वारा भी राष्ट्र की रक्षा हो सकती है यह संदेश देश को आगे ले जाने का प्रशस्त मार्ग है।' सांसद श्री रामचन्द्र विकल ने कहा—'मैं निराशापूर्ण वातावरण मे आचार्यश्री को आशा दीप के रूप मे देख रहा हूं।'

युवाचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे कहा—'उच्छृंखलता तथा स्वतंत्रता की पूरी सामग्री प्रस्तुत की जा रही है। इस स्थिति मे परिवर्तन का एक प्रयोग है वर्षीतप अनुष्ठान।' साध्वी प्रमुखाश्री का इस अवसर पर महत्त्वपूर्ण वक्तव्य हुआ। उन्होने वर्षीतप करने वाले भाई-वहिनो के लिए कुछ निर्णीत नियम वताए।

आचार्यवर ने अपने उद्‌वोधन मे कहा—'तपस्या का सम्वन्ध आत्मा की शुद्धि से है। जो व्यक्ति अपने शरीर, इन्द्रिय और मन का संयम कर सकता है वही तपस्या कर सकता है।' उन्होने भारत सरकार से अपील की 'वह अखंड तप की घोषणा करे। अखण्ड तप का अर्थ है कि एक दिन भी ऐसा न जाए जिस दिन उपवास या आयंविल की तपस्या न हो। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि तपस्या का तेज हिंसा की शक्ति को निरस्त कर सकता है।'

इस अवसर पर साध्वियों की सुमधुर गीतिका हुई। श्री शुभकरण दसाणी, शक्तिपीठ के प्रतिनिधि श्री देवीसिंह, श्री जसवंतराय जैन, श्री मागीलाल सेठिया, जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री राणमल जीरावला, भारत निर्माण संस्था के अध्यक्ष श्री एम. सी. भंडारी ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का प्रारंभ समणीवृंद की गीतिका से हुआ। इस अवसर पर कुछ साहित्यिक कृतियां आचार्यवर को भेंट की गईं। कार्यक्रम का संयोजन श्री टी. एम लालाणी ने किया।

करीव दस हजार की महती उपस्थिति मे मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने तपस्वी भाई-वहिनो का परिचय दिया। पूरे देश से समागत १२१ भाई-वहिनों ने वर्षीतप का पारणा किया।[1] तपस्वी भाई-वहिनों मे सवसे कम आयु की रतनगढ की श्रीमती कनक वैद (२७ वर्ष) थी। वर्षीतप करने वाली एक समणी उज्ज्वलप्रज्ञाजी भी थी। श्रीमती शांतादेवी चौपड़ा (वालोतरा) का यह नवां वर्षीतप था। भीनासरवासी वयोवृद्ध तपस्वी लूणकरणजी सेठिया ने वीस महिने तक पारणे मे अन्न नही लिया। उपासक मानवमित्र जी (सरदारशहर) तपस्या मे आचार्यवर की यात्रा मे निरन्तर पैदल चलते रहे। छठा वर्षीतप करने वाली छियासी वर्षीया हरिजन महिला श्रीमती आशादेवी (उदासर) तथा आदिवासी महिला श्रीमती खूमादेवी (शहादा-महाराष्ट्र) भी मच पर

१. देखे परिशिष्ट १

उपस्थित थी। युवाचार्यश्री ने सभी तपस्वी भाई-वहिनों के हाथों से इक्षुरस ग्रहण किया।

अक्षय तृतीया पर प्राय:गर्मी का साम्राज्य रहता है, किन्तु इस वार पिछले दो-तीन दिनो से हो रही वर्षा से मौसम खुशनुमा हो गया।

वर्षीतप करने वाले भाई-वहिनों के तप के साथ इस वार कुछ विशेप संकल्प भी निर्मित किए गये हैं। संकल्प निम्नोक्त है—

१. ॐ श्री ऋपभाय नम:—मंत्र की प्रतिदिन ११ माला।
२. आधा घंटा ध्यान या जप
३. एक घंटा मौन
४. व्रह्मचर्य का पालन
५. सचित्त तथा जमीकंद का त्याग
६. रात्रि चौविहार
७. एक वार प्रतिक्रमण या उस समय स्वाध्याय व जप
८. प्रतिदिन एक सामायिक
९. क्षमा का अभ्यास—क्रोधवश गाली निकल जाए तो पारणे मे चीनी, नमक या लालमिर्च का प्रयोग वद।

श्री राव आचार्यवर से मिले

१ मई/ केन्द्रीय मत्रिमडल में वरीयता क्रम मे नंवर दो मानव संसाधन मंत्री श्री पी. वी नरसिहराव प्रात. अक्षय तृतीया समारोह मे आने वाले थे, पर आवश्यक कार्यवश वे नही आ सके। उन्होने यह सूचना भेजी कि वह रात्रि में आचार्यश्री से मिलेगे। मध्याह्न तेज अधंड़ आ गया। सायं ओलों के साथ मूसलाधार वर्षा हो गई, जिससे कुछ इलाकों मे तो विजली भी गुल हो गई। उम प्रतिकूल मौसम में सवको यही लग रहा था कि श्री राव नही आ पायेंगे। किंतु वे रात दस वजे साधना केन्द्र पहुंच गए और आचार्यश्री, युवाचार्यश्री से मिले। करीव पचास मिनट तक चली इस वातचीत के मुख्य विषय थे—नई शिक्षानीति मे जीवन-विज्ञान, राष्ट्रीय समस्याएं व उनका समाधान। इस सिलसिले मे उन्होने ४ मई को भी विशेप रूप से वातचीत की।

पूर्व रक्षा व वित्त मंत्री का मिलन

२ मई/पूर्व रक्षा व वित्त मत्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह आज अपराह्न करीव १.३० वजे आचार्यवर से मिले। श्री सिंह आचार्य श्री तुलसी स्वागत समिति के अध्यक्ष है। हाल ही मे उन्होने केन्द्रीय मंत्रिपरिषद् से इस्तीफा दिया है। पदमुक्त होने के वाद भी उनके चेहरे पर खेद का भाव नही था। श्री सिंह ने अपनी अन्तरंग स्थिति भी वडी स्पष्टता के साथ आचार्यवर को निवेदित की। अन्य विविध विपयो पर उनकी वातचीत करीव ६० मिनट चली।

राष्ट्रपतिजी का आगमन

७ मई/राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह मध्याह्न १२.५० वजे अध्यात्म साधना केन्द्र मे आचार्यवर से मिले। दस मिनट तक वे साधु-साध्वियो व भाई-वहिनो के वीच रहे। वाद मे आचार्य प्रवर व राष्ट्रपतिजी के वीच देश के ताजा हालातो पर वातचीत हुई। वातचीत करीव ३५ मिनट चली। ज्ञानीजी ने कहा—'आचार्यजी ! आपका दिल्ली आगमन उपयोगी है। देश के विगड़ते माहौल को देखते हुए इस समय आध्यात्मिक महापुरुषों का मार्गदर्शन जरूरी है। आपके उपदेशो से लोगो मे नया उत्साह जागेगा।' राष्ट्रपतिजी ने कहा—'मै अपनी श्रद्धा के कारण यहा आपके पास आया हूं। आपके त्याग और सेवा के कार्य से सारा मानव समाज आपके प्रति श्रद्धानत है।' युवाचार्यश्री तथा साध्वी प्रमुखाश्री ने भी वातचीत मे भाग लिया। राष्ट्रपति ने साधना केन्द्र की गतिविधियो के वारे मे भी जानकारी ली। आचार्यवर के साथ हुई राष्ट्रपति की इस मुलाकात को विभिन्न क्षेत्रो में महत्त्वपूर्ण माना गया।

प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन

८ मई/आचार्यवर के सान्निध्य मे आज प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन हुआ। युवाचार्यश्री के निदेशन मे २ मई से प्रारम्भ इस सप्तदिवसीय शिविर मे ६० भाई-वहिनो ने भाग लिया, जिनमे अनेक डॉक्टर, वकील, इजीनियर, साहित्यकार आदि बुद्धिजीवियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्वोधन हुए। संयोजन मुनि किशनलाल जी ने किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम मे युवाचार्यश्री के साथ मुनि किशनलालजी, महेन्द्रकुमारजी, श्री जेठाभाई जवेरी, श्री धर्मानंद, श्री एस. के. जैन (रोहतक) तथा श्री शुभकरण सुराणा (मोतीपुर) का सहयोग रहा।

आचार्यवर की सेवा मे विशेष रूप से संलग्न सघसेवी मुनि वालचंदजी ने तीन सन्तो के साथ आज आचार्यवर के दर्शन किए। वे शारीरिक अस्वस्थता के कारण पीछे रोहतक मे रुक गये थे। मुनिश्री के सक्षिप्त रोहतक प्रवास से वहां के लोगो मे अच्छी जागृति आई।

ब्रिटिश युवति समणी वनी

१२ मई/साधु व श्रावक के वीच की कडी के रूप मे एक श्रेणी की परिकल्पना वर्षो से चल रही है। साधु की कठोर चर्चा के कारण दूरस्थ क्षेत्रो में धर्मप्रचार करने मे कठिनाई होती है। आहार, विहार सम्वन्धी नियमो के कारण साधु-साध्विया वहा जा नही सकती। प्रत्येक श्रावक मे इतनी क्षमता नही होती। इसी दृष्टि को ध्यान मे रखते हुए आचार्यवर ने सं० २०३६ मे लाडनूं मे समण श्रेणी का शुभारम्भ किया, जिसकी समाज मे अनुकूल प्रतिक्रिया हुई। समण दीक्षा जीवनपर्यन्त भी हो सकती है तथा सावधिक भी। वर्तमान मे सावधिक व जीवनपर्यन्त दोनो समण-समणी है।

आज प्रातः आचार्यश्री की सन्निधि में लंदन निवासी सावित्री होल्मस्ट्रोम ने एक माह की समण दीक्षा स्वीकार की। युवाचार्यश्री ने मंत्रों के द्वारा उसे जैन समणी के रूप में दीक्षित किया। पाश्चात्य सम्यता के रंग में रंगी हुई स्नातकोत्तर इक्कीस वर्षीय कुमारी होल्मस्ट्रोम ने कहा—'त्यागमय जीवन मे प्रवेश पाने के विचार से मै बहुत ही पुलकित हूं तथा जैन संयमपद्धति से बहुत प्रभावित हूं।'

युगप्रधान आचार्यवर ने अपने दीक्षान्त भाषण मे कहा—'भारतीय संस्कृति मे त्याग और संयम की साधना को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। समणी दीक्षा ग्रहण करने का तात्पर्य है—संयम, अहिंसा व अपरिग्रह का जीवन व्यवहार मे अभ्यास।' उन्होंने आगे कहा—'भारत की युवापीढी के लिए कुमारी होल्मस्ट्रोम ने एक अनूठा उदाहरण पेश किया है। पश्चिमी राष्ट्र भौतिकवाद से ऊब गए है और सच्चे सुख की तलाश मे भारत की ओर देख रहे है।'

खचाखच भरे साधना केन्द्र के अहाते में मुनि महेन्द्रकुमारजी, साध्वी निर्वाणश्रीजी, राजस्थान के पूर्व वित्तमंत्री संघ प्रवक्ता श्री चन्दनमल वैद, बनारस संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो. भागीरथ त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' श्री मोहनलाल कठौतिया, श्री धर्मानन्द आदि ने अपने विचार व्यक्त करते हुए इस दीक्षा को भारतीय युवापीढी के लिए एक आदर्श उदाहरण बताया।

कुमारी होल्मस्ट्रोम ब्रिटेन की किंग्स कॉलेज मे एम. ए. करने के पश्चात् 'जैन साध्वियो मे त्याग' विषय पर अपना शोधकार्य करने पिछले महिने भारत आई थी। जयपुर मे वह प्रो. सोहनलाल गांधी से मिली। उन्होने उसे आचार्यश्री की सन्निधि मे हांसी भेज दिया। वहां से एक माह से पदयात्रा करती हुई दिल्ली आई। प्रतिदिन करीब १५-१६ किलोमीटर की पदयात्रा कर उसने त्याग एव तपस्या के प्रति अपनी रूचि को प्रत्यक्षतः प्रस्तुत किया। कुमारी होल्मस्ट्रोम का नाम परिवर्तित कर समणी जयन्तिप्रज्ञा रखा गया। सायं इंडियन एक्सप्रेस के संवाददाता ने समणी से इन्टरव्यू लिया व आचार्यश्री से बातचीत की।

आद्या कात्यायनी मंदिर में

१५ मई/श्री आद्या कात्यायनी शक्तिपीठ के सस्थापक बाबा नागपाल ने अस्वस्थ होने के कारण आचार्यश्री से मन्दिर मे पधारने का अनुरोध किया। प्रातः करीब ८.३० बजे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री समेत कई साधु-साध्वियां मंदिर मे पधारे। मंदिर के अधिकारियो ने प्रवेशद्वार पर आचार्यवर का परम्परागत ढंग से स्वागत किया। करीब एक घंटे तक बाबा के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण मे वार्तालाप हुआ। बाबा के भीतरी कक्ष मे भगवान् महावीर व आद्या कात्यायनी देवी के चित्र लगे हुए थे। वार्ता प्रसंग

मे वावा ने कहा—'मैं दो का भक्त हूं भगवान् महावीर व मां कात्यायनी का। महावीर से मुझे शांति मिलती है व मां से शक्ति प्राप्त होती है। यहां जो भी कार्य हो रहा है उसके प्रेरणास्रोत वे हैं। आप त्यागी हैं। मैं तो मां का द्वारपाल हूं, शक्ति का उपासक हूं। आप यहां पधारे इसकी मुझे अतीव प्रसन्नता है।'

वावा ने छतरपुर रोड़ पर अध्यात्म साधना केन्द्र के अतिरिक्त सारी जमीन खरीद ली है। उन स्थानो पर अलग-अलग भवन वने हैं व वन रहे है। वहां अनेकों प्रवृत्तियां चलेगी। मन्दिर में लोगों का जमघट लगा रहता है। मंदिर से लौटते वक्त आचार्यश्री वावा के प्रतिनिधि श्री देवीसिंह के घर पधारे। श्री सिंह वायुसेना के रिटायर्ड रॉडार ऑफीसर है। आचार्यश्री के प्रति वे विशेष आस्था के भाव रखते हैं। उन्होंने आचार्यश्री के प्रवचनों तथा प्रेक्षा-ध्यान मे पूरा रस लिया।

योगक्षेम ध्यानकक्ष का शिलान्यास

१७ मई/योग और ध्यान के अभ्यास व प्रचार-प्रसार में लिए अणुव्रत न्यास ने अध्यात्म साधना केन्द्र का निर्माण किया। सन् १९८५ मे षट्कोणीय कलात्मक भवन का निर्माण हुआ। आज इसी परिसर में केन्द्र संयोजक श्री कठौतियाजी ने 'योगक्षेम ध्यानकक्ष' का शिलान्यास किया। दिल्ली के स्वर्गीय श्रावक लाला शेरसिंह जैन की स्मृति मे उनके सुपुत्र श्री सुरेश, नरेश व रमेश के आर्थिक सौजन्य व देखरेख मे यह निर्मित होगा। शिलान्यास समारोह मे समणीवृंद की गीतिका व मुनि महेन्द्रकुमारजी, सासद श्री रामचंद्र विकल, केन्द्रीय सार्वजनिक कार्य एवं निर्माण विभाग के महानिदेशक श्री हरिशचंद्र, श्री कठौतिया, श्री कन्हैयालाल पटावरी, श्री दसाणी ने अपने विचार व्यक्त किये। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री के प्रेरक उद्‌वोधन हुए।

श्री विकल ने युवाचार्यश्री की पुस्तक 'Towards inner harmony' का विमोचन किया। यह 'मैं कुछ होना चाहता हूं' का अंग्रेजी अनुवाद है। इसके प्रकाशक श्री प्रेमनाथ जैन ने अतिथियों को यह पुस्तक भेंट की।

साइकिल सवार विश्वयात्री साधना केन्द्र में

१७ मई/निक वाकर के नेतृत्व मे आस्ट्रेलिया का साइकिल सवार चार सदस्यीय दल आज आचार्यश्री से मिला। यह दल २२ अक्टूबर को आस्ट्रेलिया के मेलवोर्न शहर से रवाना हुआ। करीव ६००० किलोमीटर की यात्रा तय कर यह दल १५ मई को अणुव्रत भवन पहुचा। वहां मुनि धर्मरुचिजी ने उनको संवोधित किया। यह दल आज साधना केन्द्र मे दो घण्टे रहा। मुनि महेन्द्र कुमारजी ने जैनधर्म व प्रेक्षाध्यान से उन्हें परिचित कराया। उनके साथ गांधी शांति प्रतिष्ठान के श्री ए. वी. भारद्वाज, श्री राकेश शर्मा, सर्वोदय कार्यकर्त्ता श्री सत्यदेव शास्त्री, अ. भा. अणुव्रत समिति के कार्यालय मन्त्री श्री ललित गर्ग भी थे।

विशिष्ट व्यक्तियों का सम्पर्क

आचार्यवर के अध्यात्म साधना केन्द्र पधारने के साथ ही राजनीति, समाज व प्रशासन-क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तियों के आने का तांता सा लगा रहा। आचार्यश्री के मानवतापरक कार्यक्रमो से आज उनकी एक राष्ट्रसंत के रूप मे छवि उभरी है। जैनाचार्य होते हुए भी उनको सब अपना मानते हैं। तभी कोई भी व्यक्ति चाहे वह किसी भी दल, जाति व समुदाय से सम्बन्ध रखता हो, वह निस्संकोच आचार्यवर से मिलता है। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्थितियों पर चर्चा करता है और समस्याओं के समाधान की बात करता है।

अध्यात्म साधना केन्द्र के उन्नीसदिवसीय प्रवास में अपने-अपने क्षेत्रों के विशिष्ट लोग आचार्यवर से मिले। राष्ट्रपति का आगमन महत्वपूर्ण रहा। केन्द्रीय मानव संसाधन मन्त्री श्री पी. वी. नरसिंहराव तीन बार (१, ४ व १२ मई) आए व अनेक मसलो पर गम्भीर बातचीत की। इनके अलावा भेंट करने वालो का दिनाक के क्रम से संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

० २९ अप्रैल—दैनिक हिंदुस्तान के सम्पादक श्री विनोदकुमार मिश्र

० ३० अप्रैल—प्रसिद्ध साहित्यकार श्री के. एस. दुग्गल

० २ मई—चीफ मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट श्री. आर. एस. चुग

० ३ मई—वैज्ञानिक श्री आर. सी. जैन

० ४ मई—स्वर्गीय राष्ट्रपति श्री राजेन्द्रप्रसाद के आयुर्वेदिक चिकित्सक श्री चण्डीप्रसाद

० ५ मई—स्टेट बेंक के जनरल मैनेजर श्री भारत भट्टाचार्य (सपत्नीक)

० ६ मई—उद्योगपति श्री अशोक साहू व श्री चन्द्रकांत बिडला (सपत्नीक) पौत्र श्री बृजमोहन बिडला, उद्योगपति श्री अशोक साहनी

० ७ मई—पूर्व केन्द्रीय स्वास्थ्यमन्त्री एवं कश्मीर नरेश डा० कर्णसिंह, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री आरिफ मोहम्मद, ऊर्जा सचिव श्री महेश्वरलाल, सिसली-आईसलैण्ड में भारत के उच्चायुक्त के प्रथम सचिव की पत्नी श्रीमती वेदी जिनकी प्रेक्षाध्यान मे गहरी अभिरुचि है, दो बार शिविर मे भी भाग ले चुकी है।

० ८ मई—टाइम्स ऑफ इंडिया के विशेष सवाददाता श्री रविकांत, श्री रविकात ने प्रेक्षाध्यान पर आचार्यश्री व युवाचार्यश्री से विशेष बातचीत की, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो पाठक।

० ९ मई—टेलीफोन के महानिदेशक श्री वी. एम. खन्ना (सपत्नीक), शिलाग (मेघालय) के पुलिस कमिश्नर श्री रवि सोलंकी; मेजर रामसिंह (सपत्नीक)।

० १० मई—सम्पूर्णानन्द संस्कृत कॉलेज के संस्कृत विभागाध्यक्ष श्री भागीरथ त्रिपाठी 'वागीश शास्त्री' व उनकी पत्नी श्रीमती रेखा शास्त्री। दोनों ही संस्कृत के अच्छे मर्मज्ञ व कुशल वक्ता है। वे करीब चार दिन तक साधना केन्द्र मे रहे और तेरापन्थ व उसकी प्रवृत्तियों की सूक्ष्मता से अवगति ली। श्री त्रिपाठी ने अब तक १०७ ग्रंथो का संपादन किया है। सौ से अधिक शोध प्रबंध उनकी लेखनी का विषय बन चुके है। दोनों पति-पत्नी परस्पर बहुधा सस्कृत सभाषण ही करते है।

सुप्रसिद्ध कार्यकर्त्री श्रीमती इन्दु जैन, गो सेवासंघ के प्रमुक श्री राधाकृष्ण बजाज। उन्होंने गो रक्षा पर आचार्यवर से बातचीत की।

० ११ मई—मेजर अजीतसिंह; 'ओक्यूल्ड' मासिक अंग्रेजी पत्रिका के संपादक श्री जगदीशकुमार। उन्होने प्रेक्षाध्यान के बारे में इन्टरव्यू लिया।

भारत के सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता श्री लक्ष्मीमल्ल सिंघवी। वकील श्री अरविंद जैन द्वारा सुप्रीम कोर्ट मे दायर बालदीक्षा केस के संदर्भ मे आचार्यश्री व युवाचार्यश्री से श्री सिंघवी की लम्बी बातचीत हुई।

० १३ मई—कृष्णाश्रम दिल्ली के स्वामी गणेशानंद सरस्वती; मुगेर के स्वामी सत्यानंदजी के शिष्य स्वामी अमृतानंद; धनवाद आश्रम के स्वामी कैवल्यानंद सरस्वती; हिन्दुस्तान टाइम्स के चीफ रिपोर्टर श्री रमाकांत गोस्वामी।

० १६ मई—राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह के पौत्र श्री इन्द्रजीतसिंह अपनी मंगेतर किरण के साथ आचार्यवर के दर्शन किये। डा० आदर्शकुमार अपनी डाक्टर पत्नी व पिता के साथ आचार्यवर से मिले। डा० के पिता अमरीकी दूतावास के रिटायर्ड अधिकारी हैं; चार्टड एकाउंटेन्ट श्री रविनारायण माथुर व महेन्द्र माथुर।

० १६ मई—फिल्म डायरेक्टर श्री अनिल श्रीवास्तव; जादूगर श्री पी०सी० जैन।

० १७ मई—केन्द्रीय सार्वजनिक निर्माण के डाइरेक्टर श्री हरीशचंद्र; प्रो० श्रीमती सरोज जैन।

इनकमटेक्स कमिश्नर श्री चंद्रस्वरूप रस्तोगी, बाल भवन की निदेशक श्रीमती पद्मा सेठ, दिल्ली पब्लिक स्कूल (आर. के. पुरम्) के प्रधानाध्यापक श्री रामस्वरूप मिगलानी, 'हंस' के संपादक श्री राजेन्द्र यादव, बहाई धर्म के दिल्ली स्थित केन्द्र के अध्यक्ष श्री रमणीक एन. शाह और मत्री श्री सिन्हा ने भी आचार्यश्री से भेंट की तथा विभिन्न मसलों पर बातचीत की। साधना केन्द्र मे विशेष व्यक्तियो का आचार्यवर से संपर्क कराने मे समाज के वरिष्ठ श्रावक श्री शिवचंदराय डाबड़ीवाल का विशेष योग रहा। वे एक संघनिष्ठ श्रावक हैं। अपने ज्येष्ठ भ्राता स्वर्गीय समाजभूषण श्री प्रभुदयाल डाबड़ीवाल

की भांति वे भी समाज के उत्कर्ष हेतु प्रयत्नशील हैं। आचार्यश्री का साधना केन्द्र का उन्नीसदिवसीय प्रवास सम्पर्क की दृष्टि से उल्लेखनीय रहा।

१८ मई को आचार्यवर ने अध्यात्म साधना केन्द्र से विहार किया। मैंसर्स जैना वॉच कम्पनी के श्री प्रेमचंद जैन के अनुरोध पर आचार्यश्री कुतुव-मीनार के निकट पहाड़ी पर नव्य निर्मित अहिंसा स्थल पर पधारे। वहां आचार्यश्री ने अपने प्रवचन मे जैन एकता पर वल दिया।

अणुव्रत भवन में दो दिन

२३ मई/मेहरौली से साकेत, पंचशील, ग्रेटर कैलाश, नेहरू पेलेस, सुखदेव विहार, न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी, सिद्धार्थ एन्कलेव होते हुए आज दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित अणुव्रत भवन पधारे। आचार्यवर इसी स्थान पर २९ जून को चातुर्मास हेतु प्रवेश करेंगे। सिद्धार्थ एन्कलेव में सुप्रसिद्ध साहित्यकार अणुव्रत प्रवक्ता श्री जैनेन्द्रकुमार अपने पुत्र प्रदीपजी के साथ आचार्यवर के दर्शन किये। वे पिछले कुछ अर्से से पक्षाघात से पीड़ित हैं। वे वोल तो नहीं सके पर उन्होंने अपनी वात आंख से जता दी। आचार्यश्री से मिलकर वे प्रसन्नता की अनुभूति कर रहे थे।

अणुव्रत भवन के दो दिनों के प्रवास में अनेक व्यक्ति मिले। जनता पार्टी के नेता व सांसद सैयद शहावुद्दीन २३ मई की रात्रि में आचार्यवर से मिले। आचार्यश्री व शहावुद्दीन के वीच रामजन्मभूमि व देश के विगड़ते सांप्रदायिक माहौल पर लंवी वातचीत हुई। इस वातचीत में पूर्व सांसद श्री रामजीसिंह भी उपस्थित थे। उसी दिन समाज सेविका श्रीमती इन्दु जैन ने आचार्यवर के दर्शन किये, वातचीत की। सर्वोदय नेता श्री कृष्णराज मेहता अपने दामाद श्री रूपनारायण के साथ आचार्यवर से मिले। राष्ट्रपति के निजी सचिव श्री ढिल्लो ने भी आचार्यवर से भेंट की।

अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री मोतीलाल एच. रांका, मंत्री श्रीसोहनलाल गांधी व श्री हंसराज सेठिया हवाई विश्वविद्यालय अमरीका के निमंत्रण पर आज विदेश रवाना हो रहे थे। एक अनायोजित संक्षिप्त समारोह में श्री रांका व श्री गांधी ने अपने विचार रखे। श्री शुभकरण दसाणी ने मंगल भावना व्यक्त की। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यवर ने अणुव्रत की प्रभावना के लिए उनको आशीर्वाद दिया। इनकी यात्रा का उद्देश्य था कि विदेशों में अणुव्रत को किस प्रकार व्यापक वनाया जाए। २४ मई को रविवार होने से नगर के उपनगरों से काफी भाई-वहिन दर्शनार्थ अणुव्रत भवन पहुंचे।

जैनदर्शन पाठ्यक्रम समिति की वैठक

२४ मई/अणुव्रत भवन में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम निर्धारिणी समिति की एक मीटिंग आचार्यश्री व युवाचार्यश्री की सन्निधि में आयोजित हुई, जिसमे डा०

टांटिया, डा० रामजीसिंह, डा० दयानंद भार्गव, डा० गोपाल भारद्वाज व श्री रामस्वरूप सोनी ने भाग लिया। जैनागम के साथ-साथ तर्कयुग के वांगमय तथा शान्ति व अहिंसा पर आधारित द्विदिवसीय विचार-विमर्श के पश्चात् एक विस्तृत पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया, जिनके आठ लिखित व एक मौखिक प्रश्न-पत्र होंगे। प्रत्येक प्रश्न-पत्र के मूल पाठ्यक्रमों के साथ-साथ तद्विषयक तुलनात्मक अध्ययन को समान महत्त्व दिया गया है। बैठक में सर्वसम्मत निर्णय हुआ कि यु.जी.सी. से संपर्क करके जैन विश्व भारती में एक 'प्राकृत उच्च अनुशीलन केन्द्र' की स्थापना कराई जाये। ऐसा केन्द्र भारत में अब तक कहीं नहीं है और जैन विश्व भारती इस हेतु सभी दृष्टियों से उपयुक्त स्थान है। यह भी प्रयास किया जाये कि यु.जी.सी. इस संस्था को 'डीम्ड युनिवर्सिटी' के रूप में मान्यता प्रदान करे।

स्वास्थ्य विहार में

२५ मई/अणुव्रत भवन से विहार कर आचार्यवर यमुना पार स्वास्थ्य विहार पधारे। वहां वी. जैन पब्लिसर्स के मालिक श्री प्रेमनाथ जैन के घर विराजे। स्वास्थ्य विहार के पास गुजरात विहार, प्रीतपुरा आदि अनेक कॉलोनियां हैं जहां काफी संख्या मे जैन लोग रहते हैं। वहां आयोजित स्वागत समारोह मे प्रोफेसर गुप्ता, समाजसेवी श्री शांतिलाल वनमाली सेठ ने अपने विचार रखे। श्री राजेन्द्र मोदी ने गीत प्रस्तुत किया। आचार्यवर ने अपने प्रवचन मे कथनी व करनी के अन्तर को पाटने का आह्वान किया।

विदेशमंत्री का आकस्मिक आगमन

२५ मई/स्वास्थ्य विहार/रात्रि के करीव ११.३० वज रहे थे। आचार्यवर गहरी नीद मे थे। उस समय विदेशमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी अपने निजी सचिव के साथ आचार्यवर के प्रवास-स्थल पहुंचे। आचार्यप्रवर को नमस्कार करते हुए उन्होने कहा—'मैं वहुत दिनो से आपके दर्शनो की इच्छा कर रहा था, किन्तु अत्यधिक व्यस्तता के कारण नही आ सका। कल मुझे मास्को की यात्रा पर रवाना होना है इसीलिए सोचा कि आज अवश्य दर्शन करूंगा। अभी ११ वजे तक हमारी मीटिंग चलती रही। इस मीटिंग से उठकर सीधा आपके पास आ रहा हूं।' आचार्यवर व विदेशमंत्री श्री तिवारी के मध्य अनेक मुद्दों पर महत्त्वपूर्ण वातचीत हुई।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा० प्रभाकर माचवे भी आज स्वास्थ्य विहार में आचार्यवर से मिले। करीव तीस मिनट तक उन्होंने अनेक विषयों पर वार्तालाप किया। डा. माचवे आचार्यवर द्वारा प्रवर्तित प्रवृत्तियों व साहित्य से वहुत प्रभावित हैं।

विवेक विहार में

२६ मई/प्रीत विहार मे दिल्ली जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सोहनलाल जैन तथा विश्वास नगर मे दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के मंत्री श्री विजयराज सुराणा के घर संक्षिप्त प्रवास कर आचार्यवर विवेक विहार पधारे। वहा श्री हनुमानमल बैंद के घर पर विराजे। यमुनापार जो शाहदरा क्षेत्र है वहां सैकडो कॉलोनियां है। वहां काफी संख्या मे श्रद्धालु परिवार रहते है। आचार्यवर के छहदिवसीय प्रवास का पार्श्ववर्ती कॉलोनियो के तेरापंथी ही नही, जैन व जैनेतर लोगों ने भी पूरा लाभ उठाया।

विवेक विहार के प्रवास में भारतीय जनता पार्टी की उपाध्यक्ष राजमाता श्रीमती विजयाराजे सिंधिया तथा सांसद श्री शहाबुद्दीन ने पृथक्-पृथक् आचार्यवर से भेंट की और बातचीत की। बातचीत मे राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव का वातावरण निर्मित किये जाने पर विचार-विमर्श किया गया।

चौधरी चरणसिंह किसानों के मसीहा थे

३० मई/भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरणसिंह का लंबी बीमारी मे निधन हो गया। उनके निधन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए आचार्यश्री ने कहा—'एक नेता मे जो गुण होने चाहिए, उनमे सबसे बड़ा गुण है उसकी प्रामाणिकता। सहनशीलता, स्वार्थवृत्ति का त्याग आदि भी इसी कोटि के गुण है। अपनी पार्टी से भी अधिक महत्त्व राष्ट्र और जनता को देने वाले तथा कुर्सी से अधिक महत्त्व पार्टी को देने वाले नेता को योग्य नेता माना गया है। उसमे अपने विचारो को स्पष्ट रूप मे कहने का साहस भी होना चाहिये। ये नेतृत्व की मूलभूत कसौटियां है। चौधरी साहब इन कसौटियो पर कितने खरे उतरे, यह जनता को समझना है।'

आचार्यवर ने आगे कहा—'चौधरी चरणसिंह किसानों के अच्छे नेता थे। उनकी अपनी महत्वाकांक्षाए थी। उनमे से कुछ महत्वाकांक्षाएं पूरी हुई और कुछ अधूरी रही। फिर भी वे पूरी उम्र पाकर गये हैं। देश की जनता उन्हें जिस रूप मे याद कर रही है वह उनके कर्त्तव्य का प्रतीक है।'

आचार्य देशभूषणजी का समाधिमरण परिपूर्णता का द्योतक

३१ मई/दिगम्बर समाज के प्रमुख आचार्यश्री देशभूषणजी का पिछले दिनो कोथली (कर्नाटक) मे अनशनपूर्वक समाधिमरण हो गया। कोथली उनका जन्म-स्थान भी है। उनके निधन पर अपनी मंगल भावना व्यक्त करते हुए आचार्यश्री ने कहा—'हमारे देखते-देखते आचार्य देशभूषणजी का समाधिमरण हो गया। यह उनकी जीवन यात्रा की परिपूर्णता है और जनता के लिए प्रेरणा है। आचार्यजी प्रकृति से शांत व स्वभाव से सरल थे। दिगम्बर मुनियो

एवं आचार्यों में उनकी अपनी पृथक् ही पहचान थी। उन्होने अपने जीवन मे अनेक यात्राएं की, इससे उनका अनुभव ज्ञान भी समृद्ध था। वे अच्छे लेखक थे। उनके लिखे हुए कुछ ग्रन्थ आज दिगम्बर परम्परा के प्रतिनिधि ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध है।'

आचार्य देशभूषणजी से अपने निकट संपर्क की चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा—'अनेक वार उनसे मिलने का प्रसंग आया। हर प्रसंग सौहार्द से परिपूर्ण रहा। सन् १९६५ मे दिल्ली में उनका चातुर्मास था। हमारा भी वही था। उस समय तीन दिनों तक हमारी विशेष गोष्ठियां हुई। गोष्ठियो मे चर्चा का विपय था—'पर्युषण पर्व की एकता'। आचार्य देशभूषणजी, श्रमण-सघ के आचार्य आनन्दऋषिजी और मैं—तीनों आचार्यो का वह मिलन ऐतिहासिक व अविरल प्रसंग है।'

आचार्यवर ने आगे कहा—'आचार्य देशभूषणजी के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि तभी होगी, जव उनसे जिन-जिन लोगों को प्रेरणा मिली है, वे अपना आध्यात्मिक विकास करें।'

सांप्रदायिक दंगे पागलपन की पराकाष्ठा के प्रतीक

३ जून/पिछले कई दिनो से मेरठ व उसके पार्श्ववर्ती कस्बे सांप्रदायिक दंगों की चपेट मे हैं। उसका असर पुरानी दिल्ली तथा अन्य क्षेत्रो पर भी पड़ा। कई दिनो से ये क्षेत्र कर्फ्यू के अन्तर्गत हैं। अब तक इस साम्प्रदायिकता की ज्वाला मे सैकड़ों जानें भस्म हो चुकी है। ऐसी स्थिति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए आचार्यश्री ने अपने एक विशेप वक्तव्य मे कहा—'देश में यत्र-तत्र होने वाले साम्प्रदायिक दंगे पागलपन की पराकाष्ठा के प्रतीक हैं। पता नही ये दंगे कौन फैलाते है? कौन इन्हें प्रश्रय देते हैं? शायद साम्प्रदायिक कट्टरतावादी लोग हिंसा की आग सुलगाते हैं और असामाजिक तत्त्व उसमें घासलेट छिड़कने का काम करते है। आग सुलगाने वाले दूर सरक जाते हैं और दूसरे लोग इसमें फंस जाते हैं। धर्म के नाम पर यह कैसी विडम्वना है?'

उन्होंने आगे कहा—'कहा जाता है कि सदियो पहले यहां कभी एक महाभारत हुआ था। उसमे एक ही कुटुम्व के लाखों लोग मारे गये थे। क्या आज भी ऐसा ही दूसरा महाभारत नही छिड़ा हुआ है? स्थान-स्थान पर एक ही राष्ट्र के लोग परस्पर लड़ते-झगडते है और मरते हैं। कुछ मतभेद और भ्रान्तियां कुल मिलाकर एक ही देश के लोग खून की होली खेल रहे हैं। उन्होने आगे कहा कि महावीर एवं वुद्ध, दयानन्द एवं गांधी के देश में हिंसा का यह नंगा नृत्य देख, सुनकर मन मे एक त्रासदी उग रही है।'

आचार्यश्री तुलसी ने भारत की सांस्कृतिक एवं भावात्मक एकता के लिए इन दंगो को खतरनाक वताते हुए कहा 'जिस देश में वेगुनाह लोगो को

मारा जाता है, बच्चों एवं महिलाओं को मौत का निशाना बनाया जाता है, वह देश गौरव से सिर ऊंचा कैसे कर सकेगा ? ऐसा करने वाले लोग धार्मिक तो हो नही सकते । वे नास्तिको के भी नास्तिक हैं, जो इतना बड़ा पाप करके भी प्रकम्पित नहीं होते ।

उन्होंने कहा—'किसी भी समस्या का समाधान हिंसा नही हो सकता । शांति एवं अहिंसा की स्थापना से ही समाधान खोजा जा सकता है, अन्यथा हिंसा की परम्परा आगे से आगे बढ़ती जायेगी, जिसकी परिणति दुःख और संत्रास के अतिरिक्त कुछ नही हो सकती ।'

आचार्यश्री ने आगे कहा—'मजहबी मानसिकता से ग्रस्त लोग लड़ते हैं और धर्म को बदनाम करते हैं । "गोहिरे के पाप से पीपल जलता है" इस कहावत के अनुसार मजहब का उन्माद धर्म को लांछित कर रहा है । विष बीजों का वमन कोई करता है और विष-फल किसी को खाने पड़ते हैं । यह स्थिति अत्यन्त भयावह है । समय हाथ से निकल चुका है, अब भी हिंसा का कोई विकल्प नही निकला, तो यह इतिहास का सबसे अधिक काला पृष्ठ होगा ।'

उन्होने देश की जनता को आह्वान करते हुए कहा—'पागलपन का जवाब पागलपन नही होता । पागलपन के नशे को उतार कर शान्ति का रास्ता अपनाएं ।'

विवेक विहार से विहार कर आचार्यवर कबूल नगर, शास्त्री पार्क, सब्जी मंडी, सी. सी. कॉलोनी, स्टेट बैंक कॉलोनी होते हुए ४ जून को शालीमार बाग पधारे । सब्जी मंडी मे कठोतिया भवन मे श्री मोहनलाल कठोतिया व श्री बच्छराज कठोतिया ने आचार्यवर का स्वागत किया । शालीमार बाग मे रिंग रोड स्थित स्वर्गीय श्री विशनदयाल गोयल के पुत्र श्री नरेश गोयल के नवनिर्मित भवन मे आचार्यवर का प्रवास हुआ ।

मधुर मिलन

३ जून/सब्जी मंडी से प्रस्थान कर आचार्यवर जब सी. सी. कॉलोनी जा रहे थे तो स्थानकवासी समुदाय के श्री गिरीश मुनि आदि चार संत मार्ग में ही आचार्यश्री से मिले । चारों मुनि तेरापंथ व उसकी गतिविधियों के बारे मे जानना चाहते थे इसलिए उस गर्मी मे भी वे आचार्यवर के प्रवास-स्थल पर पहुचे । उन्होने जैन विश्व भारती, समण दीक्षा, साहित्य, तेरापंथ-संगठन व व्यवस्था आदि अनेक विषयों पर आचार्यवर से बातचीत की । पुनः प्रस्थान करते वक्त श्री गिरीश मुनि ने कहा—'तेरापथ के साधु-साध्वियां अत्यन्त सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें युगानुरूप व सक्षम नेतृत्व मिला है ।'

तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर का समापन

४ जून/शालीमार बाग में पिछले दस दिनों से मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' के निदेशन मे विद्यार्थियों का तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर चल रहा था। शिविर स्थल था गोयलजी का नवनिर्मित भवन। आचार्यवर की सन्निधि में आज उसका समापन कार्यक्रम था। मास्टर नंदकुमार जैन ने शिविर की विस्तृत रिपोर्ट पेश की। मास्टर नेमीचंद जैन ने शिविर की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। मुनि सुमेरमल ने अपने वक्तव्य में विद्यार्थियों को संस्कारी बनाने के उद्देश्य से शिविरों के समायोजन को एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम बताया।

आचार्यवर ने अपने आशीर्वचन मे कहा—'विद्यार्थियों को संस्कारी बनाने हेतु हम लोग प्राय: ग्रीष्मावकाश का उपयोग करते हैं। इस वर्ष भी यह क्रम चला। विद्यार्थियो को संस्कारी बनाने की दृष्टि से हमारे मुनियो और कुछ अध्यापको ने अच्छा श्रम किया। उसी का ही परिणाम है कि विद्यार्थियों ने अच्छा तत्त्वबोध पाया है।'

दसदिवसीय इस शिविर में दिल्ली व हरियाणा के करीब ९४ छात्रों ने भाग लिया। विद्यार्थियो को प्रशिक्षित करने मे मुनि विजयकुमारजी व उदितकुमारजी का विशेष योग रहा। शिविर के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओ को सुप्रसिद्ध जैन विद्वान् श्री नथमल टाटिया के हाथों पुरस्कार प्रदान किया गया। संयोजन श्री रामचंद्र जैन ने किया।

शिविर आयोजक श्री नरेश गोयल ने कहा—'मेरे पूज्य पिता श्री विशनदयालजी गोयल की यह तीव्र इच्छा थी कि आचार्यवर का अपने घर पदार्पण हो। आज उनकी इच्छा साकार हो रही है। पूज्य गुरुदेव को यही अर्ज है कि गोयल परिवार पर ऐसी ही कृपादृष्टि बनी रहे।'

६ जून/प्रमुख हिन्दी पत्र 'पंजाब केसरी' के सपादक श्री अश्विनीकुमार ने आज प्रात: आचार्यवर से भेंट की। उन्होने तेरापंथ धर्मसंघ, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि की जानकारी प्राप्त की। आचार्यश्री ने श्री अश्विनीकुमार को बताया कि पंजाब यात्रा के दौरान पंजाब केसरी के संस्थापक लाला जगतनारायण से मुलाकात हुई। उन्होने कई बार हमारी सभाओं को संबोधित किया। वे अणुव्रत कार्यक्रम के भी सम्पर्क में थे।

२३ मई को समाज के तीन कार्यकर्त्ता श्री मोतीलाल रांका, श्री हंसराज सेठिया व श्री सोहनलाल गांधी हवाई विश्वविद्यालय अमरीका में विशेष निमंत्रण पर गये थे। आज ६ जून को उन्होंने आचार्यवर के दर्शन किये और वहां के समाचार सुनाए। उनके जाने से जैनधर्म की अच्छी प्रभावना हुई। रात्रि मे शालीमार बाग के कार्यकर्त्ताओ की एक गोष्ठी आचार्यश्री के सान्निध्य मे हुई।

आयारो संगोष्ठी

आचार्यश्री के सान्निध्य व युवाचार्यश्री के निदेशन मे आयारो भाष्य पर शालीमार बाग मे एक विद्वत् संगोष्ठी आयोजित हुई। आयारो भाष्य के लेखक है श्रद्धेय युवाचार्यश्री। इस सगोष्ठी मे डा० नथमल टाटिया, डा० दयानन्द भार्गव, डा० रामजीसिंह, श्री जंवरीमल पारख तथा कुछ अध्ययनशील साधु-साध्वियों ने भाग लिया। यह संगोष्ठी ५ मई से ११ मई तक चली। एक सप्ताह तक भाष्य पर खुलकर चर्चा हुई। प्रतिदिन तीन सत्रो की चर्चा-परिचर्चा से अनेक तथ्य हस्तगत हुए। समय-समय पर अनेक सारपूर्ण जिज्ञासाओं का आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री ने सुन्दर समाधान किया। आज ११ मई को अपराह्न संगोष्ठी समापन के अवसर पर विद्वानों ने सगोष्ठी के निष्कर्ष प्रस्तुत किये तथा यह निश्चय किया गया कि आगामी जैन विद्या परिषद् का विषय आयारो रखा जाये। सभी ने इस सप्ताह को ज्ञान यज्ञ सप्ताह माना। आचार्यश्री ने आगम कार्य को पूर्ण करने का अपना संकल्प दुहराया।

आचार्यवर के शालीमार बाग के आठदिवसीय प्रवास का स्थानीय लोगों के अलावा निकटवर्ती उपनगरो के लोगों ने भी पूरा लाभ उठाया। शालीमार बाग उपनगर मे तेरापंथ के सत्तर से भी ऊपर परिवार रहते है। इसके पार्श्ववर्ती उपनगर अशोक विहार व पीतमपुरा मे भी तेरापथ के काफी परिवार रहते है। शालीमार में हिसार के एक साधक सेवासिंह (जो पिछले एक अर्से से निरन्तर आयंबिल कर रहे है) ने आचार्यवर के दर्शन किये। वह आयंबिल मे केवल सौ ग्राम चना खाता है। १० जून को उत्तर दिल्ली के तेरापंथ समाज के प्रमुख कार्यकर्त्ताओ की एक मीटिंग आचार्यवर की सन्निधि मे हुई। एक माह पूर्व समणी दीक्षा स्वीकार करने वाली लन्दन की समणी जयंतिप्रज्ञा कुमारी होल्मस्ट्रोम) के समण-दीक्षा का ११ जून को आखिरी दिन था। उसने हिंदी मे अपने अनुभव सुनाए। इस अवसर पर साध्वी निर्वाणश्रीजी ने भी अपने विचार रखे। समाजसेविका श्रीमती इन्दु जैन व श्रीराम कॉलेज के प्रिंसीपल श्री दीपचंद संचेती ने आचार्यवर के दर्शन किये। रात्रि में होने वाले कार्यक्रमो मे प्रायः मुनि सुमेरमल 'लाडनं' के प्रवचन हुए।

मुमुक्षु बहिनों का प्रेक्षाध्यान शिविर

जब पारमार्थिक शिक्षण संस्था का नया सत्र प्रारम्भ होता है उस समय आचार्यवर के सान्निध्य व युवाचार्यश्री के निदेशन मे मुमुक्षु व उपासिका बहिनो का शिविर लगता है। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी १२ जून को अशोक विहार मे शिविर का प्रारम्भ हुआ। शिविर के प्रथम पांच दिनों में अशोक विहार व अन्तिम पांच दिनों मे आचार्यवर पीतमपुरा में विराजे। आज २१ को शिविर समापन का कार्यक्रम था। इस दसदिवसीय शिविर में बहिनों को ध्यान, कायोत्सर्ग, आसन आदि का विशेष प्रशिक्षण दिया गया।

मध्याह्न प्रतिदिन जैन दर्शन के विविध विषयों पर युवाचार्यश्री के सारगर्भित प्रवचन हुए। प्रवचनों का अन्य लोगो ने भी पूरा लाभ लिया। समापन समारोह में अनेक वहिनों ने अपने संस्मरण प्रस्तुत किए। मुनि किशनलालजी व प्रो० सुश्री भान के वक्तव्य हुए। तदनन्तर आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्वोधन हुए।

अशोक विहार में आचार्यवर का प्रवास जैन स्थानक मे हुआ। स्थानक काफी विशाल था। अगोक विहार प्रवास के दौरान आचार्यवर सत्यवती कॉलोनी भी पधारे। सांसद व पूर्व मंत्री श्री वालकवि वैरागी आचार्यवर से मिले। पीतमपुरा मे मूर्तिपूजक समाज के श्री किस्तूरीलाल तरसेम जैन की नवनिर्मित कोठी में विराजे। श्री जैन का पूरा परिवार आस्थाशील है।

पीतमपुरा प्रवास में राष्ट्रपति के निजी मचिव श्री ढिल्लो, महावीर जैन विद्यालय तथा श्रमणोपासक जैन विद्यालय के प्रिंसिपल श्री शतवीर जैन, श्री चंद्रकुमार जैन ने आचार्यवर के दर्शन किए। दोनो प्रिंसिपल ने विविध सैद्धातिक प्रश्न किये जिन्हे आचार्यश्री ने समाहित किया। २० जून को श्रमणसंघ की माध्वी आज्ञावतीजी चार साध्वियो के साथ आचार्यवर से मिलने प्रवास-स्थल पहुंची और आचार्यश्री से सक्षिप्त वातचीत की। रात्रि मे केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री पी०वी० नरसिंहराव आचार्यवर से मिले। करीव ४५ मिनट तक वातचीत चली। श्री राव की दिल्ली आगमन के वाद यह चौथी मुलाकात थी।

पीतमपुरा से लोकविहार, जयदेव पार्क, पंजावी वाग होते हुए २२ को कीर्तिनगर पधारे। पंजावी वाग मे श्री स्वरूपचंद वरडिया की कोठी मे थोड़ी देर रुकना हुआ। स्वरुपचदजी की मा श्रीमती रतनीवाई एक आस्थाशील व तत्त्वज्ञ श्राविका है। वह आचार्यवर की उपासना का पूरा लाभ उठाती है। वहां से कीर्तिनगर के रास्ते मे सांसद श्री सज्जनकुमार ने आचार्यवर के दर्शन किये।

कीर्तिनगर में गीता भवन मे आयोजित स्वागत समारोह मे सासद श्रीमती सुदरवती नवलप्रभाकर, दिल्ली प्रदेश भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री मदनलाल खुराना उपस्थित थे। २४ जून को मानसरोवर गार्डन पधारे, वहां भंसाली भवन मे विराजे। राष्ट्रपति पद के विपक्ष के सर्वसम्मत उम्मीदवार पूर्व न्यायमूर्ति श्री कृष्ण अय्यर आचार्यवर से मिले, वातचीत की। हिन्दुस्तान के संवाददाता श्री वीरेन्द्र प्रभाकर ने भी आचार्यवर से भेंट की।

२५ को पुन. कीर्तिनगर पधारे। अपराह्न डा० मित्तल, डा० गुजराल, डा० कार्डियल, डा० ओ० पी० गोयल आचार्यश्री व युवाचार्यश्री से मिले और प्रेक्षाध्यान आदि के वारे मे जानकारी प्राप्त की। रात्रिकालीन प्रवास श्री कन्हैयालाल पटावरी के मकान मे हुआ। श्री पटावरी दिल्ली के वरिष्ठ

कार्यकर्ता, अणुव्रत न्यास के ट्रस्टी व आचार्य तुलसी प्रवास समिति के अर्थमंत्री हैं। वे अन्य अनेक जनकल्याणकारी व शैक्षिक गतिविधियों से भी जुड़े हुए है।

कीर्तिनगर से रणजीत नगर होते हुए राजेन्द्र नगर पधारे। वहां दो दिन का प्रवास हुआ। वहां जैनो का अच्छा संगठन है। सभी ने आचार्यवर के प्रवास का लाभ उठाया। २८ को विहार करते हुए श्री संपतमल सुराणा के घर पर पधारे। वहां कुछ समय विराजना हुआ।

राष्ट्रीय अभिवंदना

२८ जून/दिल्ली चातुर्मास प्रवेश पर तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम मे आचार्यवर का आज राष्ट्रीय अभिवदना समारोह मनाया गया। इस अवसर पर बोलते हुए विदेश मत्री श्री नारायणदत्त तिवारी ने कहा—'आज हमारे समक्ष सबसे वड़ी समस्या है मानवता को बचाने की। विज्ञान द्वारा जो विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है, उसका मनुष्य की भलाई के लिए तभी उपयोग हो सकता है, जबकि मानवीय मूल्यो की रक्षा का प्रयत्न किया जाए। आचार्यश्री तुलसी इसी व्रत को लेकर पिछली अर्द्धशताब्दी मे अथक प्रयास कर रहे है इसलिए उनकी अभिवंदना सार्थक है।'

विदेशमत्री ने आगे कहा—'अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे जहां एक ओर अफ्रीका मे चल रहे रंगभेद के विरोध मे मानवतावादी स्वर मुखर हो रहे है, वहा आचार्य तुलसीजी के द्वारा अणुव्रत के माध्यम से चल रहा अहिंसा और मानवीय एकता का आदोलन उसी स्वर को प्रखर वना रहा है।' उन्होंने कहा—'राष्ट्रहित के साथ मानवहित का समन्वय जब तक नही किया जाएगा, तब तक हम सफलता को प्राप्त नही कर सकते। इस समन्वय के लिए आज पूरी मानव जाति को अणुव्रत की आवश्यकता है।'

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने कहा—'साधु इसलिए अभिवदनीय हैं कि वे समाज से न्यूनतम लेते है और अधिकतम देते हैं। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के रूप मे जो नैतिक उत्थान का आदोलन चलाया हैं, वह देश व मानव समाज की चेतना जगाने के लिए बहुमूल्य योगदान है। आचार्यजी की राष्ट्रीय अभिवंदना उनके त्याग, तप और राष्ट्रीय कल्याणकारी प्रवृत्तियो के कारण की जा रही है।'

युवाचार्यश्री ने कहा—'वर्तमान समाज में अर्थ और काम को महत्व दिया जा रहा है। धर्म और मोक्ष की उपेक्षा की जा रही है। इसका संतुलन किए विना न तो व्यक्ति का श्रेय सध सकता है और न ही समाज का।' साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—'आचार्यश्री तुलसी व्यक्ति के भीतर अंधकार मिटाने वाली प्रकाश किरण है।'

अभिवंदना का प्रत्युत्तर देते हुए आचार्यश्री ने कहा—'हमें धर्म को शुद्ध रूप मे प्रस्तुत करना होगा, जिससे व्यक्ति का चरित्र उन्नत हो। जहां धार्मिकता के साथ ईमानदारी व नैतिकता नही है वहा धर्म का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है। धर्म का जीवन व्यवहार में आना ही अणुव्रत है। दिल्ली चातुर्मास के लिए हम कई वार आए हैं।' आचार्यश्री ने अपना संकल्प दोहराया—'मै एक मानव के रूप मे अपनी सेवाएं मानव समाज को समर्पित करता हूं।'

इस अवसर पर मुनि महेन्द्रकुमारजी, सांसद श्री रामचंद्र विकल, श्री शुभकरण दसाणी, श्री मांगीलाल सेठिया, श्री जसवंतराय जैन, टी० एम० लालाणी, क्रिश्चियन सोसायटी के फादर ज्योर्ज आदि ने अपने विचार रखे। समारोह मे अनेक सांसद, साहित्यकार, विभिन्न धर्मों के नेता भी उपस्थित थे।

इस राष्ट्रीय अभिवंदना समारोह मे राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह व दिल्ली के उपराज्यपाल श्री एच. एल. कपूर भी सम्मिलित होने वाले थे, किन्तु किन्ही अपरिहार्य कारणों से नही आ सके। उनके महत्त्वपूर्ण संदेश मिले, जिनको समारोह में पढकर सुनाया गया। राष्ट्रपति का संदेश इस प्रकार है—

'मुझे वड़ी प्रसन्नता है कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसीजी का कल २९ जून १९८७ को दिल्ली में चातुर्मास प्रवेश हो रहा है। मैंने आज के इस समारोह में सम्मिलित होने की स्वीकृति दी थी, किन्तु किन्ही कारणों वश दिल्ली से वाहर रहने के कारण मैं आज यहां स्वयं उपस्थित नही हो सका जिसका मुझे खेद है।'

'आचार्यश्री तुलसीजी एक महान और पवित्र व्यक्ति हैं। इनके जीवन और कार्यो से सबको प्रेरणा मिलती है। जैनधर्म के एक महान् आचार्य होने के अलावा उच्च कोटि के विद्वान, लेखक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और मानव प्रेमी है।'

'मुझे आचार्यश्री से मिलने का कई बार मौका मिला और हमेशा मैंने यह अनुभव किया कि यह एक निष्ठावान्, राष्ट्रप्रेमी और दुखी मानवता के सच्चे मित्र हैं। समाज की उलझनों और बुराइयो को दूर करने के लिए वे सदा प्रयत्नशील रहे है। इनका सादा और त्यागमय जीवन हम सबके लिए प्रेरणा-दायक है।'

'आज जब संसार मे हिंसा और नफरत की आँधी चल रही है, हमे ऐसे महान् पुरुषो और संतो की जरूरत है, जो दुविधा और घृणा को प्रेम और सद्भावना मे बदल सके। आचार्य तुलसीजी निःसदेह ऐसे महानुभावो मे से हैं जो अपने विचारों और गुणो से झूठ, फरेब और मक्कारी की ज्वाला को शीतल करके मानवप्रेम, सहनशीलता और मित्रता मे परिवर्तित कर सकते है। मैं

आचार्यश्री के दिल्ली चातुर्मास की सफलता और इनकी दीर्घ आयु की कामना करता हूं। यह भी आशा करता हूं कि शीघ्र ही आचार्यजी से पुनः भेंट का अवसर प्राप्त होगा।'

दिल्ली के उपराज्यपाल श्री एच. एल. कपूर ने अंग्रेजी मे संदेश दिया —उसका हिन्दी रूपान्तर इस प्रकार है—

'मैंने आचार्यश्री तुलसी से सम्मान में आयोजित कार्यक्रम मे अध्यक्षता करना स्वीकार किया था, किन्तु कुछ अस्वस्थ हो जाने के कारण तथा मेरा गला खराव होने के कारण मैं कार्यक्रम में भाग नही ले सका, इसका मुझे अत्यन्त खेद है।'

'मैं आचार्यश्री तुलसी के सम्मान में मेरा मस्तक झुकाता हूं, जो जन पुरुप और महान् व्यक्तित्व के धनी हैं। आचार्यजी द्वारा प्रारंभ किया गया आन्दोलन आज अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विशेषतः जवकि अज्ञान ने समस्त दुनिया में अपना अंधकार फैला रखा है. जवकि धार्मिक और नैतिक अराजकता सर्वव्यापी वन चुकी है। भौतिक समृद्धि प्राप्त करने हेतु हम कितनी ही कोशिश क्यों न कर लें जव तक धर्म, करुणा, मैत्री, नैतिकता और आध्यात्मिकता के सिद्धान्त, जो हमे इतने प्रिय है, हमारे लिए प्रकाशस्तम्भ नही वन जाते हैं, आचार्यश्री अपने अणुव्रत आन्दोलन द्वारा हमे पथ दिखला रहे हैं और प्रकाश दे रहे हैं। अणुव्रत वस्तुतः जैन धर्म के रूप में प्रस्तुत मौलिक धार्मिक सत्य है, जो मानवीय एकता और विश्ववधुत्व के लिए एवं ठोस नीव के रूप में हैं और जो समस्त मानव जाति के अस्तित्व को बचाने के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।'

'व्यक्तिशः उपस्थित होकर इस महान् पुरुष को अभिवंदन न कर सकने के कारण मैं अपना खेद प्रकट करता हुआ समारोह की सफलता की कामना करता हूं।'

हार्दिक शुभकामनाओ के साथ—

जर्मन युवक द्वारा समण दीक्षा

राष्ट्रीय अभिवंदना समारोह के साथ एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम ओर जुड़ा हुआ था। हजारो की उपस्थिति मे आचार्यवर ने मंत्रोच्चारण द्वारा चौवीस वर्षीय जर्मन युवक श्री मार्कश एडोलफ मासेनेर को सावधिक (४५ दिन) समण दीक्षा प्रदान की। इस अवसर पर मासनेर, श्री शुभकरण दसाणी ने अपने विचार रखे। मासनेर का नाम परिवर्तित कर समण स्वयंप्रज्ञ रखा गया।

मुनि महेन्द्रकुमारजी ने समण का परिचय देते हुए कहा—'पिछले ११ वर्षों से अहिंसा, शाकाहार आदि मे उसकी रुचि है तथा जैन धर्म के प्रति उसका आकर्षण महात्मा गांधी द्वारा अपनी आत्मकथा मे उल्लिखित उस प्रसग से हुआ।

कि गांधीजी ने अपनी विदेशयात्रा से पूर्व मांसाहार का त्याग करने की प्रेरणा जैन मुनियो से ग्रहण की थी।'

आचार्यश्री ने अपने दीक्षान्त भाषण मे कहा—'एक पाश्चात्य संस्कृति मे पले-पुसे युवक द्वारा संन्यास दीक्षा की साधना के लिए विचार करना इस बात का साक्ष्य है कि त्याग और अहिंसा धर्म के सार्वभौम तत्त्व हैं, जो देश और काल की सीमा से परे है। यद्यपि मासनेर की इच्छा आजीवन मुनि दीक्षा ग्रहण करने की है, फिर भी अभी उसे सावधिक समण दीक्षा दी गई है, उसके पश्चात् आगे के लिए चिंतन किया जाएगा।'

दीक्षा से पूर्व श्री मासनेर ने कहा—'जैन साहित्य के अध्ययन से मुझे अहिंसा का महत्त्व समझ में आया है। अहिंसा व आंतरिक विशुद्धि के उद्देश्य से मैं जैन दीक्षा ग्रहण करना चाहता हूं।' उन्होने कहा—'पाश्चात्य लोग भौतिकवाद का परिणाम भोग चुके है और यह अनुभव कर चुके हैं कि सच्ची शांति के लिए उन्हे अध्यात्मवाद का पथ स्वीकार करना पड़ेगा।'

श्री मासनेर (समण स्वयंप्रज्ञ) जर्मनी मे एक पत्रिका भी निकालता है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 'आयारो' (अंग्रेजी संस्करण) जर्मनी में मासनेर के हाथ लग गया। उसे पढ़कर उसके भीतर जैन धर्म के प्रति प्रगाढ़ आस्था जमी और वैराग्य के अंकुर प्रस्फुटित हुए। जर्मनी से उसने जैन विश्व भारती से पत्र व्यवहार किया और अपना काम काज बंद कर भारत चला आया। पिछले कुछ दिनों से जैन साधना, चर्या व सिद्धान्त का बारीकी से अध्ययन किया। उसका साक्षात् अनुभव करने के लिए श्री मासनेर ने सावधिक समण दीक्षा स्वीकार की।

झुलसाने वाली गर्मी

राष्ट्रीय अभिवन्दना व समण दीक्षा के संयुक्त कार्यक्रम की सम्पन्नता के बाद १२ बज चुके थे। आचार्यश्री तालकटोरा इंडोर स्टेडियम से एक किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित हिन्दू महासभा भवन पधारे। आज से २२ वर्ष पूर्व इसी भवन में आचार्यवर ने चातुर्मास किया था। यह भवन मंदिर मार्ग पर सुप्रसिद्ध बिड़ला मंदिर के निकट है। २८ जून दिल्ली की भीषण गर्मियों का एक दिन था। उस दिन तापमान ४५.४ डिग्री सेंटीग्रेड था। दोपहर के बारह बजे सूर्य आग उगल रहा था, धरती तपे तवे की भांति तप रही थी। उस भयंकर गर्मी मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री व साधु-साध्वीवृंद ने नंगे पैर व नंगे सिर वह एक किलोमीटर का फासला तय किया। हिंदू महासभा भवन तक जाने वाली सीढ़ियों ने तो गर्मी का कमाल ही दिखा दिया। तारकोल पिघली सड़क व महासभा भवन की तपी सीढ़ियो पर चलते साधु-साध्वियों को देखकर भाई-बहिन रोमांचित हो उठे और उनका मस्तक श्रद्धा से झुक गया। साधु

साध्विया 'महाणिज्जरे महापज्जवसाणे' का हेतु समझकर समभाव से सहन कर रहे थे।

अणुव्रत भवन में

२६ जून/हिन्दू महासभा भवन से चातुर्मास प्रवेश हेतु अणुव्रत विहार की ओर आचार्यवर अपने साधु-साध्वी परिवार के साथ प्रस्थित हुए। महासभा भवन से गोल मार्किट, भगतसिंह मार्ग, कनाट प्लेस, बाराखम्भा रोड, हेली रोड, आई० टी० ओ०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग होते हुए अणुव्रत भवन पधारे। उसके निकट एक विशाल प्रवचन पंडाल मे स्वागत समारोह का आयोजन हुआ। हेली रोड पर श्रीमती मधुबेन के निवास पर आचार्यश्री करीब ४५ मिनट रुके।

अणुव्रत भवन मे चातुर्मासार्थ प्रवेश करने पर दिल्ली के श्रावकों द्वारा आचार्यवर का हार्दिक अभिनंदन किया गया। अपनी जन्मभूमि की ओर से साध्वी वर्द्धमानश्रीजी व कुन्दनरेखाजी ने गीत प्रस्तुत किया। आचार्यश्री के अभिनंदन मे जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचद सेठिया, प्रवास समिति के अध्यक्ष श्री मांगीलाल सेठिया, मंत्री श्री टी. एम. लालानी, अणुव्रत न्यास के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री जसवंतराय जैन आदि ने विचार रखे। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के इस अवसर पर विशेष वक्तव्य हुए।

रंग चिकित्सा शिविर

२ जुलाई/अध्यात्म साधना केन्द्र मेहरौली में सप्तदिवसीय रंग चिकित्सा शिविर लगा। केन्द्र के संस्थापक श्री मोहनलाल कठौतिया ने रंग चिकित्सा प्रणाली को काफी विकसित किया है। अलग-अलग रंगो की बोतलों मे रखे पानी व तेल को विभिन्न रोगों के इलाज हेतु उपयोग मे लाया जाता है। आज उस शिविर का समापन कार्यक्रम आचार्यवर के सान्निध्य में आयोजित हुआ। इसमे शामिल १४ शिविरार्थियो मे ३ विदेशी थे। इस अवसर पर श्री कठौतिया, श्री एस. के. जैन, श्री सेवासिंह, श्री रामेश्वरप्रसाद, श्रीमती चड्ढा, मिस् जिलक्रिक व डेविड विन्टर (इंग्लैण्ड), टेरसी वाल्कर (स्काटलैंड) ने अपने संस्मरण सुनाए। संयोजन वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री धर्मानंद ने किया। आचार्यवर का उद्बोधन हुआ।

सीमान्त गांधी से मधुर मिलन

३ जुलाई/भारतीय व्यापार मेला प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री मोहम्मद युनुस के बंगले ३, तुगलक रोड़ पर आचार्यश्री तुलसी व सीमान्त गांधी पख्तून नेता श्री खान अब्दुल गफ्फार खां के बीच राष्ट्र की नैतिक समस्याओं पर विचार विमर्श हुआ। बातचीत करीब ३५ मिनट चली। श्री खान ने

आचार्यश्री से मिलकर वडी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा—'इंसानियत और भाईचारे के लिए आप यहां (हिन्दुस्तान में) काम करें और मैं वहां (पाकिस्तान मे) काम करूं।" आचार्यश्री ने कहा—'पहले इंसान इंसान, फिर हिन्दू या मुसलमान।' युवाचार्यश्री द्वारा लिखित 'धर्मचक्र का प्रवर्तन' (आचार्य श्री की जीवनी) श्री खान को भेंट की गई। इस अवसर पर सांसद श्री रामचन्द्र विकल, श्री केयूरभूपण तथा समाज के श्री शुभकरण दसाणी आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि अठाणुं वर्षीय सीमान्त गांधी वम्वई मे उपचार कराने के वाद नई दिल्ली आए हुए थे।

इस ऐतिहासिक भेंट के वाद आचार्यश्री ने कहा—'सीमान्त गांधी एक मानवतावादी एवं सच्चे अहिंसावादी के रूप मे गांधीयुग के अनुपम प्रतीक है। अव भी उनके दिल मे मानवता और अहिंसा की भावना सर्वोपरि है और इस दृष्टि से वे अणुव्रत-कार्यक्रम को एक अत्यन्त अपेक्षित और सामयिक आदोलन के रूप मे देखते है। सीमान्त गांधी शुरू से ही हिन्दुस्तान-पाकिस्तान वंटवारे के खिलाफ थे।'

भेंट के समय श्री शुभकरण दमाणी ने सीमांत गांधी को अणुव्रत इन्टरनेशनल की ओर से एक लाख रुपये के अहिंसा पुरस्कार का प्रस्ताव रखा। श्री खान ने विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। वाद मे उनके सहयोगी श्री आदिल शहरयार ने कहा कि इस विषय मे और चिंतन करके वे वताएगे कि यह कैसे संभव होगा।

अगले दिन ४ जुलाई को राजधानी के प्रायः सभी प्रमुख पत्रों में मुख्यता से इस मधुर मिलन के समाचार प्रकाशित हुए तथा साथ मे यह भ्रामक समाचार भी पी० टी० आई० के संवाददाता द्वारा प्रकाशित हो गया कि अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने एक लाख का अहिंसा पुरस्कार सीमांत गांधी को देने का प्रस्ताव रखा जिसको उन्होने अस्वीकार कर दिया है।

ज्ञातव्य है कि जैन साधु अपने पास एक पैसा भी नही रखते और न ही उनकी ओर से कोई लेन-देन की प्रवृत्ति होती है। वे पूर्णतः अकिंचन होते हैं। उनका अपना कोई घर नही होता। ऐसी स्थिति मे आचार्यश्री एक लाख रुपये के पुरस्कार का प्रस्ताव कैसे रख सकते हैं। इस भ्रम के निवारणार्थ ५ जुलाई के समाचारपत्रो मे विस्तार से स्पष्टीकरण प्रकाशित हुआ।

१० जुलाई/चातुर्मासिक चतुर्दशी पर आज आचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री के विशेष उद्वोधन हुए। हाजरी का वाचन करते हुए आचार्यवर ने संघीय मर्यादाओं पर विस्तार से उजाला किया। सभी साधु-साध्वियो ने अहिंसा समवसरण मे पंक्तिवद्ध होकर मर्यादा पालन के प्रति जागरूक रहने की शपथ ली। ६ जुलाई को अणुव्रत भवन मे आर० के० पुरम् पब्लिक स्कूल के छात्रो व अध्यापको के वीच आचार्यवर का उद्वोधन हुआ। ८ जुलाई को

आचार्यश्री की सन्निधि मे दक्षिण दिल्ली के कार्यकर्ताओं की एक गोष्ठी आयोजित हुई जिसमे दक्षिणांचल तेरापंथी सभा का गठन किया गया।

तेरापंथ स्थापना दिवस

११ जुलाई/आषाढ़ी पूर्णिमा पर २२८ वें तेरापंथ स्थापना दिवस के प्रथम चरण का शुभारंभ मुनि विजयकुमारजी के गीत से हुआ। साध्वी जिनप्रभाजी ने आचार्य भिक्षु के जीवन व सिद्धांतों पर अपने विचार व्यक्त किए। उटी के प्रमुख श्रावक श्री मूलचंद पारख ने दक्षिण के दो विश्वविद्यालयों को अपनी ओर से संघीय साहित्य देने की घोषणा की।

युवाचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा—'स्वामीजी रूढ़िवादी नहीं थे। वे प्रबलतम क्रांतिकारी व सुधारवादी महापुरुष थे। धर्म के संदर्भ में उन्होंने जो नया चिंतन दिया, सदियों में किसी ने नही दिया। तेरापंथ को समझने व उसका मूल्यांकन करने के लिए आचार्य भिक्षु को पढ़ना परम अपेक्षित है। तेरापंथ का आधार त्याग और संयम है।'

आचार्यश्री ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा—'हम उस परम उपकारी आचार्य भिक्षु के प्रति कृतज्ञ है जिनके उपकार से हमें यह तेरापंथ धर्मसंघ मिला है। स्वामीजी ने अपनी तपस्या, साधना व सहिष्णुता से इस संघ का निर्माण किया, जिसकी शीतल छाया मे हम सब निर्बाध रूप से साधना कर रहे हैं।'

इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति नौ वर्ष के बच्चों व बच्चियो ने आचार्यवर से मंत्रदीक्षा स्वीकार की। कार्यक्रम का संयोजन मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने किया।

राष्ट्रपतिजी का पुनः आगमन

११ जुलाई/राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह आज एक घंटे की अल्प सूचना पर आचार्यवर से मिलने अणुव्रत भवन पहुंचे। दिल्ली पधारने के बाद राष्ट्रपतिजी का दूसरी बार आगमन हुआ। प्रथम बार वे अध्यात्म साधना केन्द्र में आचार्यश्री से मिले थे। राष्ट्रपतिजी को जब यह बताया गया कि आज तेरापंथ स्थापना दिवस का कार्यक्रम था तो उन्होंने सहज भाव से कहा—'मुझे प्रोग्राम मे क्यो नही बुलाया।' जल्दी में निर्धारित कार्यक्रम मे सुरक्षा सम्बन्धी व्यवस्थाओं के कारण यह संभव नही हो सका। आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री ने राष्ट्रपति को आचार्य भिक्षु व तेरापंथ की जानकारी दी। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्रीजी, श्री मांगीलाल सेठिया, श्री शुभकरण दसाणी आदि भी उपस्थित थे। करीब ४५ मिनट की महत्त्वपूर्ण बातचीत के बाद राष्ट्रपति भारी सुरक्षा प्रबंधों के बीच अणुव्रत भवन से प्रस्थित हो गए। राष्ट्रपति के रूप में यह उनकी अंतिम भेंट थी। इससे पूर्व वे सिरियारी व उदयपुर के कार्यक्रम में सम्मिलित हो चुके हैं।

१२ जुलाई/तेरापंथ स्थापना दिवस कार्यक्रम का द्वितीय चरण आज आचार्यवर की सन्निधि में मनाया गया। साध्वियों के अभिवंदना गीत के पश्चात् साध्वी प्रमुखाश्री ने आचार्य भिक्षु के सिद्धांतो की चर्चा करते हुए आचार्यवर की एक सद्य प्रकाशित कृति 'हस्ताक्षर' श्री चरणों मे समर्पित की। अणुव्रत कार्यकर्ता श्री मोहनलाल जैन ने अपनी कविताओ की एक कृति 'कांटों मे फूल' भेंट की। मुनि महेन्द्रकुमारजी, मुनि मदनकुमारजी, समण सिद्धप्रज्ञजी ने अपने विचार रखे।

अग्रेजी दैनिक 'हिंदुस्तान टाइम्स' के पूर्व संपादक व ख्यातिलब्ध पत्रकार सरदार खुशवंतसिंह ने कहा—'मैं जन्म मे सिख हूं, पर कर्म से अपने को जैन मानता हूं। क्योकि अहिंसा, सत्य आदि शाश्वत धर्मो का जो उत्कृष्ट रूप जैन धर्म मे उपलब्ध है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।'

साम्प्रदायिक उन्माद पर उन्होने अपनी पंक्तियां भी कही—

'वह वक्त भी देखा हैं, तवारीख की घड़ियों ने,
लमहों ने खता की थी, सदियों ने सजा पाई।

इस अवसर पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के विशेष उद्बोधन हुए। कार्यक्रम का संयोजन श्री फरजनकुमार जैन ने किया।

मैं प्रेम की भाषा समझती हूं

१४ जुलाई/हंगरी की सुविख्यात चित्रकर्त्री अस्सीवर्षीया कुमारी एलिजावेथ ब्रूनर ने आज आचार्यवर के दर्शन किए और आचार्यश्री का स्वनिर्मित कलात्मक व आकर्षक चित्र आचार्य चरण में समर्पित किया। २८ वर्ष पूर्व वह कलकत्ता मे कई वार दर्शनार्थ आती व बड़ी तन्मयता से आचार्यश्री का प्रवचन सुनती। एक दिन आचार्यश्री ने पूछा कि मैं हिंदी में प्रवचन करता हूं और तुम हिंदी समझती नही, फिर भी तुम प्रवचन के समय स्थिर कैसे बैठी रहती हो। कुमारी एलिजाबेथ ने कहा—'आचार्यश्री! मैं हिंदी नही समझती, किंतु आप प्रेम की भाषा में बोलते हैं जिसको मैं भलीभांति समझती हूं।' आज आचार्यश्री के दर्शन कर कुमारी एलिजावेथ वहुत प्रसन्न हुई।

आचार्यश्री ने वेंगलूर के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री सोहनलाल कटारिया का उल्लेख करते हुए कहा—'ये वेंगलूर में ज्ञानशाला का अच्छी तरह संचालन कर रहे हैं। इन्होने ५६ वर्ष वाद अपना पूरा समय संघ-सेवा मे लगाने का सकल्प कर रखा है। यह दूसरो के लिए अनुकरणीय है।'

१६ जुलाई/प्रातः प्रवचन मे मुनि घासीरामजी का जिक्र करते हुए आचार्यश्री ने कहा—'उनके आचार्य भिक्षु की सैकड़ो गाथाएं कंठस्थ थी। वे हमारे संघ के घासी वावा थे। वे वड़े ही निष्ठाशील मुनि थे।

१८ जुलाई/रात्रिकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत अणुव्रत विचार परिषद्

का आयोजन हुआ, जिसमे डा० नथमल टांटिया, डा० विमलकुमार व श्री बुधमल सामसुखा ने अणुव्रत आंदोलन को गतिशील बनाने पर जोर दिया।

१६ जुलाई/गतवर्ष जैन विद्या परीक्षा मे उत्तीर्ण छात्र-छात्राओ को श्रीमती मांगीलाल डागा ने प्रमाण पत्र वितरित किए। फरीदावाद केन्द्र के विद्यार्थियो को भी प्रमाण पत्र दिए गये। श्रीमती पुष्पा बहिन ने अपने विचार रखे। स्नातकोत्तर लडकियों व युवतियों की एक गोष्ठी साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में आयोजित हुई।

प्रेक्षाध्यान शिविर

२४ जुलाई/आचार्यश्री के सान्निध्य मे आज सप्तदिवसीय शिविर का समापन समारोह था। १६ जुलाई से प्रारंभ यह शिविर युवाचार्यश्री के निदेशन मे चला। शिविर स्थल था—अग्रसेन भवन, अशोक विहार। शिविर मे ६० साधक-साधिकाओ ने भाग लिया। श्री जी० एस० यादव, श्री ज्ञानचंद गुलाटी ने अपने सस्मरण प्रस्तुत किए। मुनि किशनलालजी, श्री शंकरलाल मेहता ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। आचार्यश्री एवं युवाचार्य श्री के प्रभावी उद्बोधन हुए।

३६ वां अणुव्रत अधिवेशन

२५ जुलाई/अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य मे द्विदिवसीय अणुव्रत अधिवेशन का प्रारभ हुआ। साध्वी वृंद के 'अणुव्रत गीत' से अधिवेशन का प्रारभ हुआ। मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने अणुव्रत का परिचय दिया। अ० भा० अणुव्रत समिति के कार्याध्यक्ष श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट ने अणुव्रत की गतिविधियो पर प्रकाश डालते हुए प्राप्त संदेशो का वाचन किया। मत्री श्री शुभकरण सुराणा ने संयोजकीय वक्तव्य देते हुए अणुव्रत की उपादेयता पर बल दिया। अध्यक्ष श्री गिरीश भाई ने अध्यक्षीय वक्तव्य दिया। दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के मंत्री श्री विजयराज सुराणा ने आगंतुक अतिथियों का स्वागत किया। सासद श्री रामचंद्र विकल ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए पूर्व कश्मीर नरेश व केन्द्रीय मंत्री डा० कर्णसिंह ने कहा—'आजादी के चालीस वर्षो मे हमने प्रगति के नये-नये आयाम उद्घाटित किए, पर हमारी प्रगति के साथ नैतिक एवं आध्यात्मिक सामञ्जस्य न हो पाने के कारण अनेक प्रकार की समस्याएं उभरी है। अणुव्रत आंदोलन के द्वारा मानव को मानव बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। इस प्रकार के रचनात्मक उपक्रमो के द्वारा समस्याओं का समाधान संभव है। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आदोलन के द्वारा भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक मूल्यो को अक्षुण्ण रखने का महान् कार्य किया है।'

अधिवेशन के प्रमुख वक्ता दैनिक हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री विनोद

कुमार मिश्र ने कहा—'आज राजनीतिक परिवेश में विषमता से अनेक प्रकार की समस्याएं उभरी है। हिंसा एवं आतंकवाद जैसी जटिल समस्याएं नैतिक ह्रास से उत्पन्न हुई हैं। अणुव्रत आन्दोलन नैतिक मूल्यों को विकसित करने में सक्रिय है। इसी के द्वारा शाति व अहिंसा की स्थापना सभव है।' श्री मिश्र ने अपने भाषण मे विज्ञान द्वारा प्रदत्त सुख-सुविधाओं और अणुव्रत के नैतिक सिद्धांतों मे सामञ्जस्य पर वल दिया।

युवाचार्यश्री ने कहा—'अणुव्रत आंदोलन त्याग का आंदोलन है अतः यह लोगो को अपनी ओर आकर्षित नही करता। यह विज्ञान का युग है जो सुविधावाद का जनक है। सुविधावाद और नैतिकता मे गठवंधन नही हो सकता। सुविधावाद अनैतिकता को जन्म देता है, जवकि अणुव्रत कठोर जीवन यापन की प्रेरणा देता है।' युवाचार्यश्री ने अन्याय और अनैतिकता के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए अणुव्रती कार्यकर्ताओं को जुझारू वनने की प्रेरणा दी।

आचार्यश्री ने अपने संदेश मे कहा—'अणुव्रत आन्दोलन का उद्देश्य मानव को दुर्गति से वचाना है। अणुव्रत के नियमों में सत्यता और शाश्वतता है। यह आदोलन मानव के हित का, जन-जन के हित का आंदोलन है। जो वातें मानव को मानव वनाती है, उन्ही वातो का प्रचार-प्रसार करना अणुव्रत आंदोलन का लक्ष्य है।'

आचार्यश्री ने आगे कहा—'अगर मनुष्य, समाज और राष्ट्र को जीवित रहना है, तो उन्हे नैतिक एवं प्रामाणिक वनना होगा। शस्त्रास्त्र के द्वारा मनुष्य का विनाश कव होगा, निश्चित नही है। लेकिन मनुष्य नैतिक एवं प्रामाणिक नही वना, तो वह स्वय अपने आपकी नजरो से गिर जाएगा, वह स्थिति विनाश से भी ज्यादा खतरनाक होगी।'

अपराह्न अणुव्रत कार्यकर्ताओ की एक अंतरग गोष्ठी हुई, जिसमे कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने क्षेत्रो के अणुव्रत कार्यक्रमों की रिपोर्ट पेश की। श्री राजेन्द्रकुमार जैन ने हरियाणा, श्री मानव मुनि ने मध्यप्रदेश, श्रीमती निर्मला ने पंजाव, श्री सोहनलाल वोहरा ने तमिलनाडु, श्री शंकरलाल मेहता ने लाडनू, श्री विजयराज सुराणा ने दिल्ली, श्री तेजराज सचेती ने वेंगलूर, श्री चांदमल दूगड़ ने आसीद की अणुव्रत समिति के कार्यकलापो की जानकारी दी। रात्रिकालीन गोष्ठी मे अ० भा० अणुव्रत समिति की रिपोर्ट पढ़ी गई।

२६ जुलाई/अधिवेशन के दूसरे दिन का कार्यक्रम मुनि विजयकुमारजी के मगलाचरण से प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात् सैकड़ो लोगों ने अणुव्रत नियमो के पालन करने का संकल्प लिया। मुनि महेन्द्रकुमारजी ने वार्तमानिक समस्याओं के समाधान में अणुव्रत की महत्त्वपूर्ण भूमिका वताई।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति डा० डी० एस० कोठारी ने अणुव्रत आदोलन को अहिंसा एव शाति का उपक्रम वताते हुए कहा—

'अध्यात्म एवं विज्ञान में समन्वय के रूप में अणुव्रत आंदोलन एक आदर्श उदाहरण है।' कार्यक्रम के मुख्यवक्ता साहित्यकार डा० प्रभाकर माचवे ने राष्ट्रीय चरित्र निर्माण एवं साम्प्रदायिक सौहार्द का वातावरण निर्मित करने में आचार्यश्री तुलसी द्वारा किए जा रहे प्रयत्नों को उपयोगी वताया। उन्होंने नई शिक्षा नीति मे अणुव्रत की शिक्षा जोड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने कहा—'अणुव्रत आंदोलन हमारी सांस्कृतिक धरोहर की रक्षा का आंदोलन है। हमारी संस्कृति, सभ्यता पर होने वाले हमलो एवं खतरो की रक्षा अणुव्रती सैनिक ही कर सकते हैं। व्यक्ति के जीवन मे संस्कृति का अवतरण ही अणुव्रत है। अणुव्रत संस्कृति का मौलिक झरना है। यह सूखना नही चाहिए, सतत प्रवहमान होना चाहिए।'

मूडविद्री के भट्टारक श्री चारूकीर्तिजी ने मुख्य अतिथि के रूप मे वोलते हुए कहा—'भारत को आजादी गांधीजी ने अहिंसा के द्वारा दिलाई। अहिंसा अणुव्रत का प्रथम नियम है। मनुष्य को अन्तर्जगत् को देखने की दृष्टि प्रदान करना, उसे आत्मोन्मुख वनाना ही अणुव्रत है।' इस अवसर पर युवाचार्यश्री का प्रेरक उद्‌वोधन व आचार्यश्री का दीक्षांत भाषण हुआ। श्री मांगीलाल सेठिया ने समागत अतिथियो का स्वागत किया। मध्याह्न एवं रात्रि मे विविध अणुव्रत कार्यक्रमो पर चिंतन चला और कई कार्यक्रमों की रूपरेखा सामने आई।

अधिवेशनः एक नजर में

- अणुव्रत आंदोलन को निरन्तर योग एवं गति प्रदान करने वाले प्रमुख पत्रकारो एवं शिक्षासेवियो को प्रशस्ति पत्र, साहित्य समर्पण व शाल ओढ़ाकर व ११०० रुपये प्रदान कर सम्मानित किया। सम्मान प्राप्त करने वाले हैं—श्री मुकुटविहारी वर्मा (पूर्व सपादक, हिन्दुस्तान), श्री शोभालाल गुप्त (पूर्व संपादक, हिन्दुस्तान), श्री पारसदास जैन (उपसंपादक, नवभारत टाइम्स), डा० धर्मेन्द्रनाथ अमन (शिक्षाजीवी)।
- आचार्यवर द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सोहनलाल गांधी 'अणुव्रत प्रवक्ता' के रूप मे संवोधित।
- अणुव्रत प्रवक्ता श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट आगामी तीन वर्षों के लिए अध्यक्ष निर्वाचित; श्री निर्मलकुमार सुराणा महामंत्री वने, पूरी कार्य कारिणी घोषित।
- अणुव्रत युवा समारोह प्रतिवर्ष आयोजित करने का निर्णय, इसके प्रभारी डा० महेन्द्र कर्णावट होंगे।
- अणुव्रत कुल सहोदर परम्परा की स्थापना।

- समिति द्वारा विद्यार्थी उद्वोवन सप्ताह पुनः प्रारम्भ करने का निर्णय ।
- अणुव्रत पाक्षिक के व्यवस्थित प्रकाशन की घोपणा ।
- अणुव्रत शिक्षक संसद, अणुव्रत वाल भारती को पुनरुज्जीवित करने का संकल्प ।
- अ० भा० अणुव्रत परीक्षाओ मे प्रथम रहे चार छात्रो को प्रमाणपत्र व पुरस्कार प्रदान ।
- अणुव्रत सेवी श्री सोहनलाल वोहरा द्वारा आचार्यवर को १२३० नये अणुव्रतियों के संकल्प पत्र समर्पित ।

गांठ गायब हो गई

२९ जुलाई/प्रेक्षाध्यान का प्रभाव अचूक है, यदि उसे सम्यग् विवि व गहन आस्था के साथ करे । अ. भा. अणुव्रत समिति के सदस्य श्री वुवमल सामसुखा के एडी के ऊपर एक गांठ सी उभरी । डाक्टरो को दिखाया गया तो उन्हे ऑप्रेशन कराने की सलाह दी । कई डाक्टरो ने तो केसर का भी सदेह व्यक्त किया । श्री सामसुखा ने इस पर हार नही मानी । उन्होंने गांठ पर प्रेक्षाध्यान व अनुप्रेक्षा का प्रयोग किया और गांठ गायव हो गई । जव डाक्टरो को वताया, तो वे स्तव्घ रह गये ।

कोलम्वो समझोता: अहिंसा की विजय

३१ जुलाई/आल इंडिया फाईन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसाइटी सभागार में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । संगोष्ठी का विषय था- 'जीवन व्यवहार मे अहिंसा' । इसमें विदेशी राजदूत, प्रवुद्धजनों व गणमान्य व्यक्तियो ने भाग लिया ।

यूवाचार्यश्री ने अपने वक्तव्य मे कहा—'शांतिपूर्ण जीवन के लिए अहिंसा अनिवार्य मार्ग है । अहिंसा की वात करने वाले स्वयं यदि शस्त्रास्त्रो के अवार लगाते हैं, तो इससे ज्यादा विसंगति और क्या होगी ?' मुनि महेन्द्रकुमारजी ने इस अवसर पर अग्रेजी भापा मे अपने विचार रखे ।

आचार्यश्री ने अपने उद्वोवन मे कहा—'अहिंसा का प्रयोग एक सार्वभौम उपाय है, जो कठिन से कठिन समस्या को भी हल कर सकता है । कोलम्वो मे हाल ही मे भारत के प्रधानमत्री श्री राजीव गांधी और श्रीलका के राष्ट्रपति श्री जयवर्द्धने के वीच हुआ समझौता इसकी मिसाल है । तमिल व सिंहली समुदाय के मध्य चल रहे हिंसापूर्ण विवाद पर अहिंसा की विजय हैं ।'

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे अहिंसा को सफल एवं प्रभावशाली वनाने हेतु आचार्यश्री ने अहिंसा का त्रिसूत्रात्मक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसमे अहिंसा

पर शोध, अहिंसा का प्रशिक्षण और अहिंसा के प्रयोग पर वल दिया गया।

जर्मन युवक श्री मार्कस एडोल्फ मासनेर जिसने 'समण स्वयंप्रज्ञ' के रूप मे जैन समण दीक्षा स्वीकार की थी, ने अपनी पैंतालीस दिनों की समण दीक्षा के अनुभव सुनाए। उन्होंने कहा —'मैं तनावमुक्त, शातिपूर्ण और सह अस्तित्व का जीवन जीना चाहता था। इसलिए मैंने अहिंसा प्रधान इस समण चर्या का पालन किया। मुझे इससे अद्भुत आत्मतोप प्राप्त हुआ।' समण दीक्षा के आज अन्तिम दिन पर मासनेर ने अपने सस्मरण सुनाए।

इस अवसर पर आयोजित 'जैन कला प्रदर्शनी' का उद्घाटन करते हुए जापान के राजदूत श्री ईनिरो नाडो ने कहा—'भारत से प्रसारित होने वाले अहिंसा और करूणा के सार्वभौमिक संदेश का प्रभाव पूर्वी देश जापान तक फैला और इसी परिणामस्वरूप हमारे दोनो देशो के वीच मैत्री की पहली कडी आज से चौदह शताब्दी पूर्व जुडी।' उन्होने कहा—'जैन दर्शन अहिंसा व करुणा पर वल देने के लिए सुविख्यात है।'

श्री नाडो ने आगे कहा —'जापान और भारत के वीच शीघ्र ही एक महत्त्वपूर्ण पारस्परिक समझौते के अन्तर्गत अगले अक्टूबर माह में भारत मे 'जापान मास और अगले वर्ष जापान मे 'भारत उत्सव' का आयोजन करने का निश्चय किया है।'

सासद श्री रामचंद्र विकल ने अहिंसा की महत्ता की व्याख्या की। आल इडिया फाईन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसायटी के उपाध्यक्ष श्री मनमोहन सेठ ने अतिथियों का स्वागत किया।

आयुर्वेद सम्मेलन

१ अगस्त/जैन विश्व भारती के अन्तर्गत संचालित सेवाभावी कल्याण केन्द्र द्वारा आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय आयुर्वेद संगोष्ठी आचार्यवर के सान्निध्य में आयोजित हुई। संगोष्ठी का विषय था—'अंतः स्रावी ग्रंथियों का मन और शरीर पर प्रभाव'।

सगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए आचार्यश्री ने कहा—'आदमी को स्वस्थ रखने मे अनेक चिकित्सा पद्धतियां सक्रिय है, किंतु मेरी दृष्टि मे आयुर्वेद विशेप है। व्यक्ति अस्वस्थ होने पर औषधि का सेवन करता है। इससे पूर्व वह स्वस्थ ही रहे, उसे औषधिसेवन की अपेक्षा ही न रहे, ऐसा संयमित एवं संतुलित जीवन व्यवहार अपने मे आयुर्वेद ही है।' युवाचार्यश्री ने कहा—'आयुर्वेद का विकास केवल वौद्धिक स्तर पर ही नही हुआ है, वल्कि साधना के आधार पर हुआ है।' समारोह की अध्यक्षता अ. भा. आयुर्वेद सम्मेलन के अध्यक्ष श्री वृहस्पतिदेव त्रिगुणा ने की। सेवाभावी कल्याण केन्द्र के निर्देशक श्री सोहनलाल दाधीच ने कार्यक्रम का संयोजन किया। सांसद श्री रामचद्र विकल, मुनि महेन्द्रकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

भारत सरकार के आयुर्वेद परामर्शदाता श्री शिवकुमार मिश्र, अन्तर्राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के अध्यक्ष श्री जगदीशप्रसाद शर्मा, जामनगर आयुर्वेद विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति श्री मुकुन्दीलाल द्विवेदी, अन्तर्राष्ट्रीय आयुर्वेद सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जगदीशप्रसाद आदि ५० विद्वानों व ख्याति प्राप्त वैद्यो ने भाग लिया। 'अंतः स्रावी ग्रथियो का मन और शरीर पर प्रभाव' विषय पर दो दिनों के छह सत्रो मे गहन चिंतन चला, शोध पत्रों का वाचन हुआ। विषय को गूढ़ और उपयोगी बताते हुए आयुर्वेद के धुरन्धर विद्वानो और वैद्यो ने इस पर नए चिंतन और शोध पर बल दिया।

तेरापंथ निर्देशिका दिल्ली—१९८७

२ अगस्त/प्रातः रविवारीय कार्यक्रम मे श्री मोहनलाल कठौतिया ने 'तेरापथ निर्देशिका दिल्ली—१९८७' आचार्यवर को भेट कर विमोचन किया। निर्देशिका के संपादक श्री फरजनकुमार जैन व प्रबंध संपादक श्री सोहनलाल जैन है। दिल्ली की जनसंख्या ८० लाख है। हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, गुजरात आदि प्रांतो से आकर इस समय करीब ११२५ तेरापंथी परिवार राजधानी मे तथा आसपास रहते है। वे दिल्ली, नई दिल्ली के सैकडो उपनगरो तथा कॉलोनियो मे दूर-दूर तक रहते है। विभिन्न व्यवसायों मे वे अपने आपको नियोजित किये हुए हैं। निर्देशिका मे परिवार के प्रमुख का नाम, मूल गाव का नाम, व्यवसाय, निवास, कार्यालय के पते तथा टेलीफोन नम्बर दिये गये हैं। आचार्यवर ने निर्देशिका निर्माण को काफी श्रमसाध्य बताया। आज व्याख्यान मे दिल्ली दूरदर्शन के उपनिदेशक श्री मधुकर लेले ने भी अणुव्रत, प्रेक्षा-ध्यान के बारे मे अपने विचार रखे। श्री लेले पिछले कई महिनो से प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करते रहे है।

नैतिक शिक्षा व प्रेक्षाध्यान

६ अगस्त/आचार्यवर की सन्निधि मे आज अहिंसा समवसरण मे नैतिक शिक्षा सम्मेलन व प्रेक्षाध्यान शिविर का समापन कार्यक्रम था। नैतिक शिक्षा सम्मेलन के अन्तर्गत कई विद्यालयो के विद्यार्थियो एवं शिक्षको को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा—'विद्यार्थी का अर्थ है – निरतर विद्या की याचना करने वाला। विद्या के अनेक प्रकार हैं। उन प्रकारो मे सर्वश्रेष्ठ है—आत्म-विद्या।' उन्होने आगे कहा— 'अणुव्रत विद्यार्थियो एव शिक्षको के लिए नियमो की एक आचारसंहिता प्रस्तुत करता है, जिस पर चलकर हर शिक्षक, हर विद्यार्थी आदर्श जीवन जी सकता है।'

आचार्यवर से पूर्व मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने अणुव्रत नियमो से विद्यार्थियो को अवगत किया। दिल्ली महानगर परिषद् के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम गोयल ने भी विद्यार्थियो को संबोधित किया। अ. भा. अणुव्रत समिति द्वारा विद्यार्थियो को अणुव्रत संकल्पो के प्लास्टिक के बने पोस्टर वितरित किये गये।

अखिल भारतीय महिला मण्डल द्वारा २ से ६ अगस्त तक मॉडल टाऊन मे युवाचार्यश्री के निदेशन में प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। आज आचार्यवर की सन्निधि मे उसका समापन कार्यक्रम था। पंच दिवसीय इस शिविर में देश के कोने-कोने से समागत १२५ बहिनो ने भाग लिया। श्रीमती मायर बैगानी, श्रीमती मजू बोकडिया, श्रीमती विमलेश सिंघी आदि बहिनो ने शिविर के संस्मरण प्रस्तुत किये। मुनि किशनलालजी, अ. भा. ते. महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सज्जनदेवी चौपड़ा मंत्री श्रीमती शांता पुगलिया ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर आचार्यश्री युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने सारगर्भित प्रवचनो से बहिनों का मार्गदर्शन किया।

एकदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर

६ अगस्त/कोटला लेन स्थित एवान-ए-गालिब ऑडिटोरियम मे एक दिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ। शिविर मे सौ से भी अधिक जनो ने भाग लिया। प्रायः सभी शिविरार्थी बुद्धिजीवी, प्रशासक एव विशिष्ट पदाधिकारी थे। आचार्यवर की सन्निधि एवं युवाचार्यश्री के मार्गदर्शन मे शिविरार्थियो को प्रेक्षाध्यान की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि एवं प्रायोगिक धरातल से अवगत कराया गया। ११ अगस्त को कानपुर से भाई-बहिनों का एक विशाल संघ दर्शनार्थ पहुंचा। वहां इस बार साध्वियों का चातुर्मास है। मध्याह्न नेहरू सेवा केन्द्र मे आयोजित समाजसेवा शिविर के शिविरार्थी अणुव्रत भवन पहुंचे और प्रेक्षाध्यान की जानकारी प्राप्त की। शिविरार्थियों ने अणुव्रत के नियम स्वीकार किये।

प्रेक्षा प्रभाव

सलुम्बर (राजस्थान) मे प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री एस. के. जैन (रोहतक) के निदेशन में प्रेक्षाध्यान शिविर लगा। शिविर मे अन्य शिविरार्थियों के अलावा दिगम्बर मुनि, एलक, क्षुल्लक, माताजी आदि भी थे। सभी ने प्रेक्षा प्रयोग सीखा और उसका अभ्यास किया। शिविर समाप्ति पर उन्होंने कहा—'हम आचार्य तुलसी व युवाचार्य महाप्रज्ञजी के आभारी हैं, जिन्होने प्रेक्षाध्यान विधि विकसित की है। उन्होने ऐसा कर बहुत बड़ा उपकार किया है। इसी तरह मद्रास के प्रेक्षाध्यान शिविर में स्थानकवासी समाज की साध्वियों ने भाग लिया था। उन्होंने भी बिना किसी भेदभाव के मुक्तकंठ से प्रेक्षाध्यान की उपयोगिता स्वीकार की। प्रेक्षाध्यान का यह प्रभाव न केवल तेरापंथ व जैन समाज, वरन् सभी कौमों तक पहुंचा है और इस प्रक्रिया से सभी लाभान्वित हो रहे हैं।

परिस्थितियों को बदलना होगा

१५ अगस्त/भारत की स्वतन्त्रता की ४०वी वर्षगाठ पर प्रदत्त अपने संदेश मे आचार्यश्री ने कहा—'भारत ऋषि-मुनियो का देश कहा जाता है। भारत पूरे विश्व को आध्यात्मिक पथ दिखाने वाला देश था, किन्तु तटस्थता से समालोचना करे तो हम पाएगे कि आज देश की नैतिक प्रतिष्ठा का पतन हो रहा है। स्वतंत्रता के चालीस वर्ष बीत जाने के बाद भी देश चरित्र के दुष्काल मे आतकित है, पीडित है। अभी तो वर्षा का अकाल भी देश मे फन फैलाये बैठा है। देश का काफी बडा हिस्सा सूखे की चपेट मे है। पजाब मे आतक-वादी हिंसा, गोरखालैंड को लेकर क्षेत्रीयतावादी ताकतो की बुलंद आवाजे, पडौसी देशो का भारी फौजी जमाव, आसमान छूती मंहगाई आदि विस्फोटक स्थितिया मुह खोले खडी है। इन परिस्थितियो मे जन-नेताओ की जिम्मेदारी और बढ जाती है। देश को इन परिस्थितियो से उबारना है, तो इनको बदलना होगा। स्वतन्त्रता के इस राष्ट्रीय पर्व पर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः ………।'

मध्याह्न बाल सुधार गृह मे मुनि महेन्द्रकुमारजी का प्रभावी भाषण हुआ। १८ अगस्त को मुनियो का एक दल पूर्व रक्षामत्री श्री विश्वनाथप्रताप सिंह से उनकी कोठी पर मिला। अनेक महत्वपूर्ण विषयो पर वार्तालाप हुआ। लोकसभा की चलती कार्यवाही तथा सफदरजग रोड स्थित शक्ति स्थल (जहा इंदिराजी की गोली मारकर हत्या कर दी थी) का भी अवलोकन किया। उस दिन दोपहर का प्रवास डुप्ले रोड पर सासद श्री रामचंद्र विकल की कोठी पर हुआ।

तेरापंथ बुद्धिजीवी सम्मेलन

समाज मे नए मूल्यो की स्थापना कर उसे सुन्दर शक्ल देने की बडी जिम्मेदारी है प्रबुद्ध वर्ग की। आम आदमी कोई नई लकीर नही खीच सकता। निर्धारित नीतियो पर चलने की आस्था का निर्माण वह कर सकता है, पर कुछ नया करने का साहस उसमे नही होता। इस दृष्टि से यह आवश्यक प्रतीत होता है कि समाज का बुद्धिजीवी वर्ग एकत्रित होकर सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, व्यावसायिक एव राजनैतिक मूल्यो को सवारे और आने वाली पीढी के लिए ठोस धरातल का निर्माण करे।

सामाजिक पहचान बनाने व अपने अस्तित्व को समाज के लिए उपयोगी बनाने के लिए तेरापंथ बुद्धिजीवी मच (इटैलेक्च्युअल फोरम) का गठन हुआ। इस मंच मे सम्मिलित होने की अर्हता है कि कोई भी तेरापंथी व्यक्ति जिनकी शैक्षणिक योग्यता स्नातकोत्तर तथा महिलाओ की स्नातक है। जैसे—चार्टर्ड एकाउण्टेंट, कॉम्ट एकाउण्टेट, कपनी सेक्रेट्री, एम० बी० ए०, एडवोकेट, सोलिसिटर, डॉक्टर, इजीनियर, प्राध्यापक, आर्किटैक्ट, आई. ए. एस,

राजकीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी अथवा अन्य कोई मास्टर डिग्रीधारी व्यक्ति जिनमे शिक्षाशास्त्री, विद्वान्, शोधकर्ता व किसी विषय के विशेषज्ञ।

तेरापथ बुद्धिजीवी मंच द्वारा आयोजित प्रथम द्विदिवसीय अखिल भारतीय सम्मेलन १६ अगस्त १९८७ को प्रातः ९ बजे युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी एवं युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में फिक्की गोल्डन जुबली ऑडीटोरियम, नई दिल्ली मे प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन मे भारत के विभिन्न अचलो से आये ३५० से अधिक प्रतिनिधियो के अतिरिक्त अनेक आमंत्रित गणमान्य अतिथियो ने भाग लिया। सम्मेलन मे भाग लेने की न्यूनतम योग्यता पुरुषो के लिए स्नातकोत्तर तथा महिलाओं के लिए स्नातक होना थी। मच पर श्रद्धेय आचार्य प्रवर, युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखाश्री एवं साधु-साध्वी वृन्द के अतिरिक्त अतिथि, वक्ता व सम्मेलन के आयोजक बैठे थे। पृष्ठभूमि में कलात्मक ढंग से अंकित सम्मेलन का नीति वाक्य "खणं जाणाहि" (समय का मूल्य आंको) मच की शोभा बढा रहा था।

उद्घाटन सत्र का शुभारभ आचार्य प्रवर के नवकार महामंत्र के उच्चारण से हुआ। सम्मेलन के नीति वाक्य को पद्यमय रूप देते हुए बहिनो के मधुर मगलाचरण "जागे शुभ संस्कार समय का अकन हो" ने सारे वातावरण को सरसता प्रदान की।

प्रतिनिधियो का हार्दिक स्वागत करते हुए श्री चैनरूप भसाली ने अपने सयोजकीय वक्तव्य मे सम्मेलन के आयोजन के उद्देश्यो पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं मुख्य रूप से निम्नलिखित तीन उद्देश्यो का वर्णन किया।

१. समाज के बौद्धिक लोगो का पारस्परिक परिचय।

२. सामाजिक दायित्वबोध और कर्त्तव्य निर्वाह में बौद्धिक लोगो की भूमिका।

३. समाज को नई दिशा देने के लिए बौद्धिक क्षमता का उपयोग।

तत्पश्चात् प्रमुख अतिथि के रूप मे विधिवेत्ता डा. लक्ष्मीमल सिंघवी ने अपने वक्तव्य मे कहा—'हमे आधुनिक जीवन के बुद्धिजीवियो की विडम्बनाओ पर विचार करना चाहिए। "बुद्धिजीवी' शब्द पश्चिम के झंझावात से आया है।' उन्होने कहा—'बुद्धिजीवी को वस्तुत. विनयजीवी होना चाहिए, क्योकि विनयजीवी बुद्धि अपने आप मे समर्थ व सार्थक हो सकती है। बुद्धि की भूमिका करूणा के बिना उर्वरा नही हो सकती। बुद्धिजीवी से हमारा मतलब प्रज्ञा या ज्ञान की सम्पूर्णता से है। मनुष्यत्व की साधना ही सबसे बडा धर्म है। बुद्धिजीवी की भूमिका निभाने के लिए हमे विडम्बना से विवेक की तरफ जाना चाहिए। इस यात्रा का पथ है—सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चरित्र।

तत्पश्चात् राजस्थान के मुख्यमंत्री के सचिव श्री देवेन्द्रराज मेहता, श्रीमती इन्दु जैन व मुनि महेन्द्रकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किये

श्री शुभकरण दस्सानी ने अतिथिवक्ता के रूप मे बोलते हुए बुद्धिजीवियों से कुछ चुनौती भरे कार्य करने का आव्हान किया जैसे कि संसद मे प्रतिनिधित्व, दुर्भिक्ष और आतंकवाद का सामना, अपने क्षेत्रो मे शिक्षा, चिकित्सा व राहत कार्यो मे सहायता तथा अन्य संस्थाओ को सहयोग। उन्होने यह भी आशा व्यक्त की कि इस मच मे ऐसे प्रवुद्ध लोग भी भाग ले सकेंगे जिनके पान निर्धारित शैक्षणिक योग्यता तो नही है, पर उन्होने शिक्षा, साहित्य व अन्य क्षेत्रो मे महत्वपूर्ण कार्य किया है।

साध्वी प्रमुखाश्री ने इस सम्मेलन को अपने ढंग का पहला वताते हुए कहा--'सामान्यत. वुद्धि सव मे होती है, पर बुद्धिजीवी वह होता है जिनकी मानसिक चेतना हमेशा सक्रिय रहती है। बुद्धिजीवी का दायित्व है कि वह अपने समय का उपयोग, समाज मे जडता लाने वाले सस्कारो को दूर खदेडने, समाज को कमजोर वनाने वाली प्रवृत्तियो को हतोत्साहित करने तथा अपनी शक्ति को तोड़फोड की वृत्ति से मोड़कर निर्माण की ओर लगाने मे करे।'

युवाचार्यश्री ने कहा—"मैं वुद्धि को खतरनाक मानता हूं। अणुवम या अणुअस्त्र उतने खतरनाक नही है जितनी की उनको बनाने मे प्रयुक्त वुद्धि। उनके अनुसार शुद्ध वुद्धि कामधेनु की तरह है। आज सृजनात्मक विकास की जरूरत है, जो वुद्धि के साथ भावना जुडने से होता है। कोरी वुद्धि आदर्श शून्य होती है। हमे ज्ञान, दर्शन, चरित्र, तप, संयम और अन्त मे महावीर की शरण मे जाना है तभी हम अखंड व्यक्तित्व का निर्माण कर सकेगे। वुद्धिजीवियो से यही अपेक्षा है।'

श्री यशपाल जैन ने इस अनुष्ठान के लिए आचार्य प्रवर को वधाई दी। उन्होने कहा—आचार्यश्री ने समाज के दु.ख दर्द के साथ अपने आपको जोडा है।' अणुव्रत आन्दोलन के वारे मे उन्होने कहा—'आज जहा नैतिक मूल्यो का ह्रास हो रहा है, आतंकवाद वढ रहा है, वहा इस आन्दोलन की महत्ता और वढ गई है।' इसके पश्चात् आचार्य प्रवर द्वारा अखिल भारतीय तेरापथ दिग्दर्शिका का विमोचन हुआ, जिसके निर्माण मे डॉक्टर गणपतलाल जैन तथा श्री निर्मलकुमार सुराणा का उल्लेखनीय योगदान रहा है।

आचार्य प्रवर ने अपने प्रवचन मे कहा—'मुझे प्रसन्नता है कि आज उनका वर्षो का स्वप्न साकार हो रहा है। तेरापथ समाज मे अनेक संस्थाये कार्यरत है, वुद्धिजीवियो को निकट लाकर उन्हे सक्रिय वनाया जाए। इस चिन्तन के लिए सैकडो प्रवुद्ध यहा उपस्थित है। वुद्धिजीवी को धर्मजीवी होना चाहिए। मनुष्य को स्वय के विवेक या अनुभव से ज्ञान करना चाहिए, ऐसा न हो सके तो वह दूसरो के अनुभव व विवेक से ज्ञान प्राप्त करे।'

अन्त मे श्री सम्पतकुमार सुराणा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ उद्घाटन सत्र का समापन हुआ।

इस द्विदिवसीय सम्मेलन की कार्यवाही को पांच सत्रों मे विभाजित किया गया था। प्रत्येक सत्र मे विविध विषयों पर प्रतिनिधियों के शोध पत्रो का वाचन हुआ एवं उन पर विचार विमर्श हुआ। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री ने प्रत्येक सत्र में विविध विषयों पर प्रतिनिधियों के प्रश्नो, शंकाओ एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया।

प्रथम सत्र मे संगठन की सुदृढ़ता, समाज विकास एवं रुढि उन्मूलन आदि विषयो पर चर्चा हुई। सम्मेलन की अध्यक्षता श्री एम. सी. भण्डारी ने की एव संयोजन श्रीमती शांता पुगलिया ने किया। इस सत्र मे डॉ. पदम सिंघवी, श्री यु. सी. अग्रवाल, डॉ. ब्रजलाल महात्मा तथा कुमारी मनीषा जैन ने अपने निबन्धों का सार संक्षेप में प्रस्तुत किया। डॉ. पदम सिंघवी ने अपने पत्र मे युवापीढी की कार्यक्षमता एवं बुजुर्गो के अनुभव के मध्य उचित तालमेल बैठाने की सलाह दी। उन्होने युवावर्ग को सप्ताह मे अपनी चर्या मे से कुछ निश्चित घटे धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में लगाने की बात कही। श्री ब्रजलाल महात्मा ने समाज विकास एवं रुढि उन्मूलन के सम्बन्ध में अपने सुझाव रखे। श्री यु. सी. अग्रवाल ने प्रशासनिक क्षेत्र में मिली उपलब्धियो की चर्चा की। आचार्यश्री एव युवाचार्यश्री ने अपने प्रबुद्ध विचारों से प्रतिनिधियों को प्रेरित किया। श्री पन्नालाल टांटिया ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

मध्याह्न भोज के पश्चात् लगभग ३ बजे दूसरे सत्र की कार्यवाही आरम्भ हुई। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री धर्मचद चोपड़ा ने बहुत ही सूझबूझ एवं दक्षता से की। संयोजक थे डा. गणपतलाल जैन। इस सत्र मे जैन धर्म, तेरापंथ एवं उसकी विभिन्न संस्थाओ के विषय मे चर्चा हुई। इस अवसर पर श्रीमती तारादेवी सुराना-सामाजिक गतिविधियां हमारा दायित्व, रतनचंदजी पारख—विदेश मे प्रचार-प्रसार की संभावनाएं, श्री आर. एम. भडारी-जैन संस्कृति हमारा व्यवहार, मुनि सुमेरमल—हमारी संस्थाएं, साध्वी कल्पलताजी एव साध्वी प्रमुखाजी-हमारी साध्वियां एवं समण श्रेणी पर विषयवद्ध विचार प्रस्तुत किए। इसके पश्चात् धर्म एवं तेरापंथ के सम्बन्ध मे प्रतिनिधियो के प्रश्नो का समाधान युवाचार्यश्री ने बहुत संतोषजनक ढंग से किया। श्री धनराज बैंद ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

दूसरे दिन प्रातः ठीक नौ बजे तृतीय सत्र का प्रारम्भ श्रीमती कल्पना बाठिया की सुमधुर गीतिका के साथ हुआ। स्वच्छ राजनीति, प्रशासन, उच्चस्तरीय शिक्षा, उद्योग एवं व्यापार इस सत्र के मुख्य विषय थे। सभा का संचालन सघ प्रवक्ता श्री चन्दनमल बैंद ने किया। संयोजन कर रही थी श्रीमती सायर बैंगानी। इस सत्र मे समणी कुसुमप्रज्ञा ने अपने लेख में उच्च शिक्षा के लिए मेधावी छात्रों को प्रोत्साहन एव सहयोग देने हेतु अपने मौलिक विचार रखे। श्री रमेश सालेचा ने स्वच्छ राजनीति एव प्रशासनिक क्षेत्र मे बुद्धि-

जीवियों के योगदान की सम्भावनाओं की वात कही। श्रीमती सरोज जैन का लेख उद्योग एवं व्यापार मे महिलाओं की सम्भावना एवं स्वावलम्बन के प्रयास से सम्वन्वित था, जिसे कुमारी हंसा दसाणी ने पढ़ा। मुनि मधुकरजी ने हिन्दी में एवं रश्मि भाई जवेरी ने अंग्रेजी मे उच्च सामाजिक स्तर पर योग्य व्यक्तियों को प्रोत्साहन देने हेतु सुझाव दिये। पूर्व सत्रों की तरह इस सत्र का समापन भी श्रद्धेय आचार्यप्रवर एवं युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्बोधन एवं प्रश्नोत्तर कार्यक्रम के साथ हुआ। श्री नवरत्नमल सुराना ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

चतुर्थ सत्र में अणुव्रत, प्रेक्षा-ध्यान एवं जीवन-विज्ञान से सम्वन्वित विपयो पर लेखों का वाचन हुआ। सत्र के अध्यक्ष थे श्री जेठाभाई जवेरी तथा संचालन किया श्रीमती जया राखेचा ने। मुनि महेन्द्रकुमारजी ने आज की शिक्षा पद्धति मे प्रेक्षाध्यान एवं जीवन-विज्ञान जैसे नैतिक एवं आध्यात्मिक विपयो के समावेश पर वल दिया। श्रीमती सज्जनदेवी चोपडा ने पारिवारिक गोष्ठी की महत्ता पर प्रकाश डाला। श्री अशोक जैन ने अंग्रेजी मे अपने लेख का वाचन करते हुए अणुव्रत के द्वारा सामाजिक बुराइयो के उन्मूलन का सुझाव दिया। श्री पन्नालाल ओसवाल ने औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियो के लिए प्रेक्षाध्यान की उपयोगिता पर विस्तार से चर्चा की। श्री सोहनलाल गांधी ने जीने की कला अणुव्रत तथा विदेशो मे जैन धर्म के प्रचार-प्रसार की व्यापक संभावनाओ की चर्चा की। जेठाभाई जवेरी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे जैन एवं जैनेतर-समाज मे प्रेक्षाध्यान एवं जीवन-विज्ञान की प्रगति की जानकारी दी। प्रतिनिधियो के प्रश्नोत्तर के पश्चात् आचार्य प्रवर एवं युवाचार्यश्री ने सक्षेप मे सबंधित विपयों पर अपने प्रेरक विचारो से प्रतिनिधियो की जिज्ञासाओं का समाधान किया। मुनि किशनलालजी ने तनाव मुक्ति के लिये प्रेक्षाध्यान के प्रयोग सत्र मे उपस्थित व्यक्तियों को कराए। धन्यवाद ज्ञापन किया श्री सुमेरचंद सुराणा ने।

द्विदिवसीय सम्मेलन का पचम एवं समापन सत्र साहित्य एवं कला से सम्वन्धित विपयो पर था। इस सत्र में मुख्य वक्ता थे—मुनिश्री मुदितकुमार, मुनिश्री प्रशान्तकुमार, साध्वी विमलप्रज्ञाजी एवं श्री चन्दनमल चांद, जिनके क्रमशः विपय निम्नोक्त थे—पढ़ने मे रुचि जाग्रत कैसे हो, नियमित स्वाध्याय, घरेलू पुस्तकालय, घर-घर मे प्रचार प्रदर्शनियों द्वारा साहित्यकारों का निर्माण। डा. वी. एल. विनायकिया ने स्लाइड्स के माध्यम मे अपने विपय पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री गुलावचंद चिंडालिया ने की एवं मच का संचालन किया श्रीमती सुनीता जैन ने।

आचार्य प्रवर, युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री के सारगभित समापन भापण हुए। युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने विभिन्न सत्रों मे दिये गये अपने

वक्तव्यों मे बुद्धि के साथ विवेक के संगम को रेखांकित किया। आचार्यश्री ने अपने उद्बोधन से प्रतिनिधियों एवं अतिथियो को विशेष प्रेरणा दी तथा सम्मेलन के आयोजन पर सात्विक प्रसन्नता प्रकट की। श्री सपतकुमार सुराणा ने दो दिन तक शालीनतापूर्वक सम्मेलन की कार्यवाही संपन्न होने के लिए प्रतिनिधियों एवं अतिथियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

पंचम सत्र के समापन के पश्चात् अंत में केवल प्रतिनिधियो के लिए एक अनौपचारिक बैठक रखी गई, जिसमे सम्मेलन के भावी कार्यक्रमो एव योजनाओ पर विस्तार से चिन्तन हुआ। विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधियो ने अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव रखे। इस प्रकार प्रतिनिधियो एव आयोजको के मध्य खुली चर्चा के फलस्वरूप एक सीधा सम्पर्क स्थापित हो जाने मे बहुत ही सौहार्दपूर्ण वातावरण मे द्विदिवसीय सम्मेलन सानन्द सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के लिए लगभग एक सौ लेख प्राप्त हुए। कई सम्मेलन मे पढ़े गये, जिनका उल्लेख ऊपर दिया जा चुका है।'

चलते फिरते विश्वविद्यालय

समणी कुसुमप्रज्ञाजी पर्युषण यात्रा के दौरान आगरा गई। वहां १६ अगस्त को स्थानकवासी संप्रदाय के श्री विजयमुनि शास्त्री से समणीजी का वार्तालाप हुआ। वार्तालाप का सामाचार वहा के श्रावकों द्वारा प्रेषित पत्र से ज्ञात हुआ। पत्र मे लिखा था कि श्री विजयमुनि शास्त्री ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा—

'इस शताब्दी में आचार्यश्री तुलसी जैसे तेजस्वी आचार्य कोई नही हुए। आज जैन संघ मे वे बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। तेरापथ एक संगठित धर्मसघ है। आचार्यश्री मे वह तेज है, जिसकी एक आवाज पर पूरा समाज उनके प्रति समर्पित रहने को तैयार रहता है, इसलिए तेरापथ सघ विकास कर रहा है। आचार्यश्री ने आगम का जो कार्य किया है वह भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। निर्युक्ति और भाष्य के पृथक्करण का जो कार्य हुआ है वह अभूतपूर्व है और ऐसा कार्य आज तक नही हुआ है। हम परम श्रद्धेय आचार्यश्री का अभिनदन करते है कि वे जैन शासन की इतनी सेवा कर रहे है, जिसकी व्याख्या करना सूर्य को छूने के समान है। वे स्वयं एक चलते फिरते विश्वविद्यालय है, जहां भी जाते है ज्ञान की वर्षा स्वयं होती है।'

'युवाचार्यश्री तो अद्वितीय ज्ञान की मूर्ति है। आपने साहित्य के द्वारा जो सेवा जैनशासन को दी है, वह एक अमूल्य निधि है। युवाचार्यश्री ने योग पर बहुत साहित्य लिखा है। योग साहित्य से यहां के श्रावक बहुत ही प्रभावित

---

१. सम्मेलन के लिए प्राप्त कुछ लेख तेरापंथ बुद्धिजीवी सम्मेलन की स्मारिका मे प्रकाशित है। अवशिष्ट लेखो के विषय व लेखक का भी उसमे नामोल्लेख है।

है। मैं भी आपके साहित्य से बहुत प्रभावित हूं तथा उनको गहरी रुचि से पढता हूं।'

पर्युषण महापर्व

जैन धर्म का महत्त्वपूर्ण पर्व पर्युषण विशेष धर्म जागरण व आत्म-आराधना का प्रतीक है। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी यह पर्व विशेष प्रयोगो व अनुष्ठानों के साथ मनाया गया। २२ अगस्त को पर्युषण का नवान्हिक कार्यक्रम आरम्भ हुआ। २६ अगस्त को आचार्यश्री एव युवाचार्य श्री का केशलोच हुआ। रात्रिकालीन कार्यक्रमो मे पहली बार प्रश्नोत्तरो का क्रम चला। भाई-बहिनो से समागत सभी तरह के प्रश्नो का मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने समाधान किया। आचार्यवर ने प्रश्नोत्तरो के इस उपक्रम को सराहा। प्रतिवर्ष की तरह इस बार भी करीब २७५ भाई-बहिनो ने श्रमणो-पासक दीक्षा स्वीकार की। प्रातः एक-एक विषय को लेकर साधु-साध्वियो के सक्षिप्त वक्तव्य होते। अन्त मे आचार्यवर का महत्त्वपूर्ण उद्बोधन होता। दिनाक के क्रम से साधु-साध्वियो के विषयबद्ध प्रवचन इस प्रकार हुए—

२२ अगस्त	सामायिक दिवस	मुनि सुमेरमल 'लाडनू साध्वी श्रुतयशाजी
२३ ,,	स्वाध्याय दिवस	मुनि मुदितकुमारजी साध्वी जिनप्रभाजी
२४ ,,	मौन दिवस	मुनि राजेन्द्रकुमारजी साध्वी विमलप्रज्ञाजी
२५ ,,	खाद्य संयम दिवस	मुनि उदितकुमारजी साध्वी त्रिशलाकुमारीजी
२६ ,,	व्रत दिवस (अणुव्रत, बारहव्रत)	मुनि सुमेरमल "लाडनू" साध्वी शारदाश्रीजी
२७ ,,	जप दिवस	साध्वी मुदितयशाजी
२८ ,,	ध्यान दिवस	मुनि सुमेरमल 'लाडनू' साध्वी शुभ्रयशाजी

पर्युषण पर्व के दौरान श्रमणोपासको तथा अन्य भाई-बहिनो की विशेष दिनचर्या व साधना की दृष्टि से अनेक कार्यक्रम नियोजित किए गए। मध्याह्न समणियां सामूहिक जप कराती। उसके बाद २ से ३ बजे तक आचार्यवर की सन्निधि मे सामूहिक स्वाध्याय चलता व रात्रि मे ध्यान व कायोत्सर्ग का अभ्यास मुनि किशनलालजी कराते। प्रातः आसन प्रयोग डा. मोहनलाल जैन ने कराये। दिनाक २२ को उडीसा के श्री हेमराज जैन ने सपत्नीक शीलव्रत ग्रहण किया। दिनाक २६ को प्रातः प्रवचन मे प्रेक्षा प्रशिक्षिका श्रीमती शाता सिंघी ने

प्रेक्षाध्यान के तमिल अनुवाद की पुस्तक आचार्यवर को भेंट की। २६ को अखंड पाठ चला।

संवत्सरी

२९ अगस्त/जैनो के महापर्व संवत्सरी का कार्यक्रम प्रातः ७.३० बजे प्रारम्भ हुआ। आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्बोधन हुए। मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन', मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', मुनि किशनलालजी, मुनि महेन्द्र कुमारजी, मुनि विजयकुमारजी मुनि उदितकुमारजी, मुनि मुदितकुमारजी, साध्वी सुरजकुमारीजी, निर्वाणश्रीजी के पृथक्-पृथक् विषयों पर महत्वपूर्ण प्रवचन हुए। मुनि मधुकरजी, साध्वी स्वर्णरेखाजी व समणियों ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किए। मद्रास के श्री गणपतराज सुराणा ने ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। श्री विश्वेसरलाल ने एक पुस्तक 'अग्रकथा' आचार्यश्री को भेंट की। इसमें महाराजा अग्रसेन का संक्षिप्त जीवन वृत्तात है। सम्वत्सरी कार्यक्रम ४.१५ पर समाप्त हुआ। आज अणुव्रत विहार व अहिंसा समवसरण आदि निकटस्थ भवनों में काफी पौषध हुए।

सोलह प्रहरी	भाई	२	बहिन	४
अष्ट प्रहरी	,,	१०८	,,	३२५
चार प्रहरी	,	१४५	,,	२३५
कुल	,,	२५५	,,	५६४

क्षमापना समारोह

३० अगस्त/क्षमापना का कार्यक्रम सामान्यत. सूर्योदय के साथ प्रारम्भ हो जाता है, पर दिल्ली महानगर की सुविधा-असुविधा को मद्देनजर रखते हुए कार्यक्रम १० बजे रखा गया। साध्वी स्वर्णरेखाजी व कुन्दनरेखाजी के मैत्री गीत के बाद श्री टी. एम. लालाणी, प्रवास समिति के अध्यक्ष श्री मांगीलाल सेठिया, तेयुप दिल्ली के अध्यक्ष श्री संचियालाल डागा, ते.म.म. दिल्ली की मंत्री श्रीमती प्रेम सेठिया, दिल्ली अणुव्रत समिति के मत्री श्री विजयराज सुराणा, तेरापंथ बुद्धिजीवी मंच के श्री संपतराज सुराणा, प्रवास समिति के उपाध्यक्ष श्री फरजनकुमार, दादाजी श्री मोहनलाल कठोतिया, श्री नरेशकुमार, श्री शुभकरण दसाणी, श्री सलेखचद जैन, श्री डूगरमल सुराणा, श्री लाजपतराय जैन ने चतुर्विध धर्मसंघ से खमत खामना की। मुनि महेन्द्रकुमारजी के वक्तव्य के बाद साध्वी प्रमुखाश्री एवं युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्बोधन हुए। साध्वी प्रमुखाजी ने एक कविता प्रस्तुत की।[1]

आचार्यवर ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा—'क्षमापना महापर्व जिस किसी ने भी प्रारम्भ किया, उसके चरणों मे मैं सविनय वंदना करता

---

१. देखें परिशिष्ट-२।

हूं। यह अनूठा व गांठे खोलने वाला पर्व है। इस पर्व की गरिमा को देखकर मनुष्य हल्का हो जाता है। मैं स्वयं इस दृश्य को देखकर गद्गद् हो जाता हू। यह पर्व क्षमायाचना का नही, खमत खामना का पर्व है। क्षमा के आदान-प्रदान करने का पर्व है और यह क्षमा का आदान-प्रदान तब होता है, जब व्यक्ति अपने मन को ऋजु बनाता है।' आचार्यवर ने इस अवसर पर सर्वप्रथम युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री से खमत-खामना की। तत्पश्चात् साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका समुदाय, बहिर्विहारी साधु-साध्वियो, समणी, मुमुक्षु वृंद, बहिर्भूत व अन्य साधु-साध्वियो से भी खमत खामना की। खमत-खामना का यह दृश्य बड़ा ही नयनाभिराम था।

जीवन-विज्ञान एवं संतुलित शिक्षाप्रणाली

३१ अगस्त/राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एवं तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्त्वावधान मे आचार्यश्री की सन्निधि मे एक संगोष्ठी आयोजित हुई। संगोष्ठी का विषय था—'जीवन-विज्ञान एव संतुलित शिक्षाप्रणाली।'

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष श्री जगन्नाथसिंह मेहता ने कहा—'शिक्षा पद्धति में जब तक नैतिक मूल्यो का समावेश नही होगा, शिक्षा पद्धति की सार्थकता सामने नही आयेगी। जीवन-विज्ञान के प्रयोगो से मुझे लगा कि यह नैतिक शिक्षा के रूप में परिपूर्ण है।' बोर्ड के सचिव श्री बालचंद दोसी, उपसचिव श्री मांगीलाल जैन, मुनि किशनलालजी व मुनि महेन्द्रकुमारजी ने जीवन-विज्ञान के बारे मे प्रकाश डाला।

आचार्यवर ने कहा—'आज की शिक्षा-प्रणाली संतुलित नही है। मात्र बौद्धिक विकास ही संतुलित शिक्षा-प्रणाली नही हो सकती। केवल बौद्धिक विकास अधूरी शिक्षा-प्रणाली का द्योतक है, जब तब मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक विकास नही होगा। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली ने अनेक अच्छे डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, शिक्षक देश को दिए हैं। इस स्थिति में हम कैसे मानें या कहे कि शिक्षा-प्रणाली दोषपूर्ण है, त्रुटिपूर्ण है। शिक्षा-प्रणाली दोषपूर्ण नही, असंतुलित है। इसका कारण है शारीरिक व बौद्धिक विकास के साथ मानसिक व भावनात्मक विकास का उनके समानान्तर न होना। विद्यार्थी के सर्वाङ्गीण विकास के लिए शिक्षा जगत् मे जीवन-विज्ञान एक रचनात्मक प्रयोग है।' युवाचार्यश्री ने जैन विश्व भारती के उच्च शिक्षा के उपक्रमो को विश्वविद्यालय स्तर पर उपलब्ध होने के विषय पर प्रकाश डाला।

पट्टोत्सव : कर्मशील व्यक्तित्व का अभिनंदन

२ सितम्बर/भारत के कोने-कोने से समागत श्रद्धालु लोगों के द्वारा

आज आचार्यश्री तुलसी का उनके ५२ वें पदाभिरोहण दिवस पर सोत्साह अभिनन्दन किया गया। अभिनंदन समारोह के प्रथम चरण में ब्लिट्ज हिंदी साप्ताहिक के संपादक श्री नंदकिशोर नोटियाल, बंबई के प्रसिद्ध साहित्यकार व पूर्व मंत्री श्री राममनोहर त्रिपाठी, दिल्ली महानगर परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री श्यामाचरण गुप्ता उपस्थित थे। मुमुक्षु बहिनो के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वीवृंद व मुनि मधुकरजी ने सुमधुर गीतो मे आराध्य की अभिवंदना की। मुनि महेन्द्रकुमारजी ने आगम-संपादन के कार्य पर प्रकाश डाला। प्रवास समिति के अध्यक्ष श्री मागीलाल सेठिया ने समागत अतिथियो का स्वागत किया। श्री शुभकरण दसाणी ने आचार्यवर का अभिनंदन किया।

श्री नोटियाल ने कहा—'आज हिंसा एव विध्वंश का वातावरण बना हुआ है। अणुव्रत आदोलन के द्वारा ही युद्ध एवं विध्वंश की विभीषिका से मुकावला किया जा सकता है।' उन्होने धन के वेहूदे प्रदर्शन को रोकने की अपील करते हुए कहा—'आचार्यश्री तुलसी ही ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने धन के वेहूदे प्रदर्शन को रोकने के लिए आवाज बुलन्द की है।' श्री श्यामाचरण गुप्ता ने अपने वक्तव्य मे राष्ट्रीय चरित्र निर्माण के क्षेत्र में अणुव्रत को अपूर्व वताया।

श्री त्रिपाठी ने कहा—'आचार्यश्री तुलसी ने जन-जन तक मानवता का संदेश पहुंचाया है, जिसकी आज देश को जरूरत है। देश के नैतिक विकास के लिए पिछली अर्धशताब्दी मे जो अथक श्रम आचार्यश्री ने किया है, उसके लिए सारा देश उनका ऋणी है।' श्री त्रिपाठी ने दीपावली आदि अवसरो पर होने वाली आतिशबाजी की निन्दा करते हुए कहा—'इस फिजूलखर्ची उपक्रम को वंद करने के लिए एक सशक्त आन्दोलन अपेक्षित है।' त्रिपाठी ने इस प्रथा को रोकने के लिए स्वय के आदोलन के साथ जुडने की घोषणा की।

साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने वक्तव्य मे कहा—'आचार्यश्री एक सफल स्वप्न द्रष्टा है। आपने अपने जीवन में अनेक सपनों को देखा ही नही, अपितु इनके समक्ष आकार भी ग्रहण कर लिया। यह इनके पुण्यवान् व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब है।' उन्होने इस मौके पर एक मार्मिक कविता भी प्रस्तुत की।[1]

युवाचार्यश्री ने अपने उद्बोधन में कहा—'अहिंसा के मसीहा के रूप में युग को आचार्यश्री तुलसी की बहुत आवश्यकता है, जिससे बढती हुई हिंसा की अग्नि को शांत किया जा सके। अहिंसा की साधना के लिए पराक्रम, शौर्य और शक्ति की आवश्यकता है।' उन्होंने कहा—'आचार्यश्री तुलसी ने प्रारंभ से व्यक्तिगत भावना का विसर्जन किया एवं सामुदायिक भावना को वल दिया है।'

---

१. देखें परिशिष्ट—२

अभिनंदन के प्रत्युत्तर में आचार्यश्री ने कहा—'तथाकथित धार्मिक विडम्बनाओं के कारण धर्म का शुद्ध स्वरूप ओझल हो गया है। धर्म के नाम पर हिंसा करने वाले, स्वार्थ पोषण करने वाले धर्म के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। अणुव्रत ने इस प्रवृत्ति को रोकने व ईमानदारी, अहिंसा को प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयत्न किया है।' आचार्यश्री ने कहा—'मानवता की सेवा के लिए मेरा जीवन समर्पित है। मैं पुरुषार्थ और आशा में विश्वास करता हूं।'

३ सितम्बर/पट्टोत्सव के द्वितीय चरण का कार्यक्रम मुनि विजयकुमार जी के गीत से प्रारंभ हुआ। समणीवृंद ने गीत, साध्वी कल्पलताजी ने कविता व मुनि मदनकुमारजी व धनराज वैद ने भाषण के द्वारा अपनी भावना व्यक्त की। साध्वी जिनप्रभाजी, कल्पलताजी, विमलप्रज्ञाजी, निर्वाणश्रीजी, शारदाश्री जी, चित्रलेखाजी ने एक आकर्षक परिचर्चा प्रस्तुत की। परिचर्चा का विषय था— समस्याएं आपकी एवं समाधान आचार्यश्री तुलसी के।' अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री मोतीलाल एच० रांका, दिल्ली महिला मंडल की कार्य-कर्त्री श्रीमती पुष्पा पारीक ने अपने विचार व्यक्त किए। आचार्यवर का प्रेरक उद्बोधन हुआ।

४ सितम्बर/पट्टोत्सव के तृतीय चरण के कार्यक्रम मे आज संसद् सदस्य श्री भंवरलाल पवार विशेष रूप से उपस्थित थे। साध्वियो के गीत के बाद नवदीक्षित साध्वियो साध्वी मलयप्रभाजी, श्रुतयशाजी, निर्मलयशाजी, मुदितयशाजी, शुभ्रयशाजी, शीतलयशाजी तथा समणी निर्मलप्रज्ञाजी ने सात भाषाओं में आचार्यवर की अभ्यर्थना की। साध्वी सत्यप्रभाजी, वर्द्धमानश्रीजी, सूरजकुमारीजी ने कविता, सुषमाकुमारीजी ने मुक्तक, विवेकश्रीजी ने गीत प्रस्तुत किया। संगरूर के उत्साही युवक श्री राजकुमार जैन ने २१ दिनों का आयंबिल तप कर आचार्यवर का त्यागमय अभिनंदन किया। आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के विशेष उद्बोधन हुए।

चरमोत्सव

५ सितम्बर/तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु का आज १८५ वां चरमोत्सव आचार्यवर के सान्निध्य मे मनाया गया। समणीवृंद के मंगलाचरण गीत के पश्चात् मुनि किशनलालजी, साध्वी जिनप्रभाजी व निर्मलयशाजी ने आचार्य भिक्षु के जीवन व सिद्धांतो पर प्रकाश डाला। मुमुक्षु बहिनों की एक भावपूर्ण गीतिका हुई। डा० जनार्दन पांडेय ने भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।

भागलपुर विश्वविद्यालय के गांधी दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष श्री रामजीसिंह ने कहा—'आचार्य वह होता है, जिसके जीवन मे श्रेष्ठ आचार व विचार की समन्विति है। अध्यात्म ग्रंथो मे सिद्ध आचार्य का उल्लेख आता

है। उनके तीन गुण बताए गए है-ज्ञान के प्रति लालसा, करुणा व निष्पक्षता। मै आचार्य भिक्षु मे इन तीन विशेषताओं को एक साथ देखता हूं। उनमे दो अतिरिक्त विशेषताए थी—तपस्या व साधना। अठारहवी सदी के उस महान् सत के प्रति मै पूर्णतः प्रणत हूं।'

युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री ने आचार्य भिक्षु को विनम्र भावाञ्जलि अर्पित की। आचार्यवर ने स्वामीजी के जीवन प्रसंगो को रोचकता से प्रस्तुत किया। साथ ही एक भावपूर्ण गीतिका के द्वारा भिक्षु स्वामी को श्रद्धाञ्जलि समर्पित की।[१]

संयुक्त अभिवंदना

६ सितम्बर/आज 'आचार्य भिक्षु व आचार्य तुलसी अभिवंदना समारोह' रखा गया। मुनि विजयकुमारजी के गीत से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। सांसद श्री रघुनंदनलाल भाटिया, श्री रामचंद्र विकल, साहित्यकार व अणुव्रत प्रवक्ता श्री यशपाल जैन, श्री जंवरीमल पोकरना (चिदम्बरम्), श्री शुभकरण दसाणी, श्री मागीलाल सेठिया, श्री टोडरमल लालाणी, हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष श्री चितामणि, श्रीमती जया राखेचा, श्रीमती सायर बैगाणी ने अपने विचार रखे। सुजाता पगारिया, श्री हनूतराज मेहता (जोधपुर), श्री रमेशकुमार (धूरी) ने गीत प्रस्तुत किए। श्री भंवरलाल (आरणी-महाराष्ट्र) ने शीलव्रत ग्रहण किया। इस अवसर पर आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के प्रभावी उद्बोधन हुए।

पांच दिन तक चलने वाले अभिवंदना समारोह मे पाली क्षेत्र के लोगो ने आचार्यवर के चातुर्मास की जोरदार प्रार्थना की। मारवाड में बगडी व हरियाणा मे हिसार व नरवाना क्षेत्रो, राजस्थान मे तारानगर क्षेत्र व दिल्ली क्षेत्र ने आगामी मर्यादा महोत्सव की भावपूर्ण विनती की। आचार्यवर ने सबकी प्रार्थना को ध्यान से सुना और कहा—'समय आने पर इन क्षेत्रो का विशेष ख्याल रखूंगा।'

लगता है तुम्हारे गुरु भगवान् हैं

६ सितम्बर/बोलारम—हैदराबाद के श्री भंवरलाल सुराणा ने सपत्नीक आचार्यवर के दर्शन किए। रास्ते मे उनकी पत्नी श्रीमती सुगनीदेवी की तबीयत बिगड़ गई। दिल्ली मे डाक्टरो को दिखाया तो उन्होने परामर्श दिया कि इनका शीघ्र इलाज कराओ। दिल्ली से लाडनू आचार्यवर की पर्युपासना मे पहुंच गए। वहां कुछ दिन रहने के बाद उन्होंने स्वस्थता का अनुभव किया। लाडनू से वे पुनः हैदराबाद चले गए। कुछ दिनो के बाद उनकी तबीयत फिर खराब हो गई। उनका मेडिकल चेकअप कराने पर पता चला

१. देखें परिशिष्ट—३

कि कैंसर अपनी जड़ें जमा चुका है। दो महिने के सघन उपचार के बावजूद स्वास्थ्य में कोई विशेष सुधार नही हुआ। भंवरलालजी ने अकेले चूरू के निकट एक गाव में आचार्यवर के दर्शन किए और निवेदन किया—'मेरी पत्नी के कैंसर हो गया इसलिए आ नही सकी। आपको उसने वदना अर्ज की है।' आचार्यवर ने तत्काल कहा—'चिता की बात नही, ठीक होने पर दर्शन कराना।' भवरलालजी हैदराबाद चले गए। कुछ ही दिनो मे सुगनी बाई ने काफी स्वस्थता महसूस की। जो स्वस्थता कई महिनो के सघन उपचार से संभव नही हो सकी, वह मात्र कुछ दिनो मे हो गई। इससे डाक्टर बड़े विस्मित हुए। उन्होने कहा—'लगता है तुम्हारे गुरु भगवान् है। उनके आशीर्वाद से ही यह स्वस्थ बन सकी है।' दोनो पति-पत्नी आचार्यवर के वचन को ही स्वस्थता का मुख्य हेतु मानते है।

अणुव्रत छात्र निर्माण सप्ताह

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति प्रतिवर्ष अणुव्रत छात्र निर्माण सप्ताह का कार्यक्रम बनाती और उसकी शाखा समितियां उसका स्थानीय स्तर पर आयोजन करती। पिछले कुछ अर्से से यह क्रम बद हो गया। इस वर्ष समिति ने पुन इस कार्यक्रम को प्रारंभ किया है। इस सप्ताह के दौरान स्कूलो में विद्यार्थियो के बीच साधु-साध्वियो के प्रवचन होते हैं और अधिकाधिक विद्यार्थियो को वर्गीय अणुव्रत सकल्प स्वीकार करने की प्रेरणा दी जाती है। अ० भा० अणुव्रत समिति ने इस वर्ष दिल्ली मे केन्द्रीय स्तर पर इस सप्ताह का आयोजन किया। ७ से १३ सितम्बर तक अलग-अलग स्कूलो मे प्रवचन हुए, उसका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

७ सितम्बर/स्थान—जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय।

साध्वी प्रमुखाश्री ने सप्ताह का उद्घाटन किया। साध्वियों के 'शिक्षा के प्रांगण मे अब व्यापक जीवन-विज्ञान हो, शिक्षा का नव अभियान हो' संगान से सप्ताह का शुभारभ हुआ। प्राचार्य श्री पी० डी० जैन ने आभार ज्ञापन किया।

८ सितम्बर/कमर्शियल सीनियर सैकण्ड्री स्कूल
वक्तव्य—मुनि विजयकुमारजी

९ सितम्बर/एग्लो सस्कृत विद्यालय
वक्तव्य—समणी कुसुमप्रज्ञाजी

१० सितम्बर/रामजस सीनियर सैकण्ड्री स्कूल
वक्तव्य—मुनि किशनलालजी
आभार ज्ञापन—प्राचार्य श्री वी० डी० गुप्ता, श्री जे० डी० जैन

११ सितम्बर/रामजस बालिका विद्यालय
गीत—साध्वी वर्द्धमानश्रीजी, वक्तव्य—साध्वी जिनप्रभाजी

१२ सितम्बर/अहिंसा समवसरण—अभिभावक सम्मेलन
सान्निध्य व आशीर्वचन—आचार्यश्री तुलसी
वक्तव्य—मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'
विषय—अभिभावको का बच्चो के प्रति दायित्व
१४ सितम्बर/डी० ए० वी० हायर सैकण्ड्री स्कूल
वक्तव्य—मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'
गीत—मुनि विजयकुमारजी

इस सप्ताह को सफल बनाने में अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के शिक्षामंत्री व प्रमुख शिक्षाजीवी डा० धर्मेन्द्रनाथ 'अमन', अणुव्रत कार्यकर्ता पंडित ओमप्रकाश कौशिक, श्री हजारीमल सेठिया, श्री विजयसिंह कोठारी, श्री ललित गर्ग का उल्लेखनीय सहयोग रहा। उपरोक्त विद्यालय दरियागंज व उसके पार्श्ववर्ती इलाके में अवस्थित हैं। उन स्कूलों के हजारों विद्यार्थियो ने विद्यार्थी अणुव्रत ग्रहण किए।

विश्व मैत्री एवं क्षमापना समारोह

१३ सितम्बर/बाराखम्भा रोड़ पर स्थित फिक्की गोल्डन जुबली ऑडिटोरियम में जैन महासभा दिल्ली की ओर से विश्व मैत्री एवं क्षमापना समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में जैन समाज के प्रमुख प्रतिनिधि उपस्थित थे। केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री अजीतकुमार पांजा कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि थे।

आचार्यवर ने क्षमा के महत्त्व पर सुन्दर विश्लेषण करते हुए यह आशा प्रकट की—'हम सबके सघन प्रयत्न से जैन धर्म जन धर्म का रूप धारण करे।' मूर्तिपूजक मुनि जयशेखरजी, स्थानकवासी श्रीराम मुनि व भद्र मुनिजी, श्रीमती इन्दु जैन ने क्षमा पर प्रकाश डाला। दिगम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी व तेरापन्थी समाज की ओर से क्रमश: श्री प्रेमचन्द जैन, लाला रामलालजी, श्री ओम्प्रकाश जैन व श्री टोडरमल लालाणी ने इस अवसर पर महत्त्वपूर्ण वक्तव्य दिए। श्री पांजा ने भी अपने महत्त्वपूर्ण विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन जैन सभा के मंत्री प्रो. रतनलाल जैन ने कुशलता से किया। जैन सभा के अध्यक्ष श्री ऋषभचन्द कोठारी ने आभार ज्ञापन किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रेक्षाध्यान

दिल्ली विश्वविद्यालय मे १३ व १४ सितम्बर को दो दिनो का प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित हुआ। शिविर मे बुद्धिजीवी लोग बड़ी तादाद मे उपस्थित थे। युवाचार्यश्री का सान्निध्य व मार्गदर्शन भी सबको उपलब्ध था। दो दिनो तक आठ-आठ घण्टे का कार्यक्रम चला। प्रेक्षाध्यान की विभिन्न पद्धतियो से सौ से भी ऊपर शिक्षक व विद्यार्थी लाभान्वित हुए। यह शिविर

जीवन-विज्ञान की दृष्टि से बहुत उपयोगी रहा। शिक्षको व विद्यार्थियो को प्रेक्षाध्यान के सिद्धान्त व प्रयोगों की व्यवस्थित अवगति दी गई। इस कार्य मे मुनि किशनलालजी, महेन्द्रकुमारजी, प्रेक्षाध्यान प्रवक्ता श्री जेठाभाई जवेरी का योग काफी कार्यकारी रहा। इन दो दिनों का युवाचार्यश्री का प्रवास तिमारपुर मे श्री मांगीलाल सेठिया के मकान मे हुआ। अणुव्रत भवन लौटते वक्त युवाचार्यश्री का सब्जीमंडी स्थित कठोतिया भवन मे कुछ देर विराजना हुआ।

तिमारपुर मे सांसद श्री रामचन्द्र विकल द्वारा सस्थापित 'योग सेन्टर' संस्था की ओर से योग पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम मे मुनि किशनलालजी व धर्मेन्द्रकुमारजी ने योग के विभिन्न प्रयोगो की चर्चा की। समारोह मे कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) श्री कुलानंद भारतीय व अनेक ससद् सदस्य उपस्थित थे।

विशाल होमियोपैथिक सेमिनार

२० सितम्बर/आज मध्याह्न दो सत्रों मे आचार्यवर व युवाचार्य श्री की सन्निधि मे होमियोपैथिक डॉक्टरों का सेमिनार रखा गया। सेमिनार का विषय था—'दिमाग और उसका आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व दार्शनिक पहलू।' अहिंसा समवसरण मे आयोजित इस सेमिनार को सबोधित करते हुए जेल उपमहानिदेशक श्री एच. पी. कुमार (आई. पी. एस.) ने कहा—'केवल वैज्ञानिक तरीको से मस्तिष्क का विकास संभव नही है। आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओ को जीवंत रखकर ही हम दिमाग का सही विकास कर पायेंगे। आचार्यश्री को युगपुरुष मानते हुए श्री कुमार ने 'दिमाग' की नैतिकता एवं चरित्रनिष्ठा को बरकरार रखने के लिए अणुव्रत नियमो को धारण करने पर बल दिया।

सफदरजग हॉस्पीटल के न्यूरोलोजिस्ट डॉ० डी. सी. जैन ने कहा—'कभी-कभी व्यक्ति बैठे-बैठे रोने लगता हैं या अत्यधिक खुशी के अवसर पर रोने लगता है, यह मस्तिष्क की विकृति की स्थिति है। मस्तिष्क के इस असंतुलन में मोहनीय कर्म की शक्ति कार्य करती है। भारतीय प्राचीन आध्यात्मिक विरासत को वर्तमान के संदर्भ मे उजागर कर हम इन विकट स्थितियों से बच सकते हैं। आचार्यश्री तुलसी इस दिशा मे जो कार्य कर रहे है, देश उनका ऋणी रहेगा'

युवाचार्यश्री ने कहा—'माइंड या हृदय क्या है? कहां है? इस संदर्भ मे मैं कहना चाहता हूं कि हृदय भी ब्रेन का एक हिस्सा है। वही से भावधारा पैदा होती है। आत्मा अरूप है। वह इंद्रिय ग्राह्य नही है। भावधारा की चंचलता मन को चंचल बनाती है, इसलिए भाव के स्तर पर सोचने

से सही समस्या का निदान हो सकता है।'

डॉक्टर व साधु की भूमिका को एक बताते हुए आचार्यवर ने कहा—'आप चिकित्सक है, वैसे हम भी चिकित्सक है। आप शरीर की चिकित्सा करते हैं। हम मन व भाव के चिकित्सक है। मैं तो यह कहना चाहूंगा कि हम तो चिकित्सको के चिकित्सक है' उन्होने आगे कहा—'आज की विषमतापूर्ण स्थिति मे व्यक्ति मानसिक तनाव एव कुण्ठा का जीवन जी रहा है। जब तक व्यक्ति का नैतिक एव चारित्रिक विकास नही होगा, स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण नही हो पाएगा। इस दृष्टि से अणुव्रत पिछले लबे अर्से से काफी प्रयत्नशील है।'

इस अवसर पर विज्ञान व तकनीकी विभाग के सलाहकार डॉ० आर. त्यागराजन, ऑल इडिया मेडिकल इस्टीट्यूट के न्यूरो सर्जन डॉ० पी० एन० टंडन, वैद्य भगवानदास, डॉ० सुनील मित्तल, सासद रामचंद्र विकल, मुनि किशनलालजी, मुनि महेन्द्रकुमारजी, डॉ. दिवान हरीशचद्र, सी. सी. आर. एच. के निदेशक डॉ. डी. पी. रस्तोगी, राष्ट्रपति के चिकित्सक डॉ. के. जी सक्सेना, डॉ. के. एस. बख्सी, होमियोपैथिक उपसलाहकार डॉ. वी. टी. आगस्तीन, एन. एच. एम. कॉलेज व हॉस्पीटल के प्रिंसिपल डॉ. वी. के. गुप्ता, सी. सी. एच. के रजिस्ट्रार डॉ. पी. एल. वर्मा आदि ने 'दिमाग' के विभिन्न स्वरूपो व अवस्थाओ पर अपने विचार रखे।

सेमिनार मे करीब ८०० डॉक्टरो ने भाग लिया। होम्योपैथिक साहित्य की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। सेमिनार का आयोजक थी बी. जैन पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड। इसके मालिक श्री प्रेमनाथ जैन जो काफी समय से इस सेमिनार की समायोजना मे लगे हुए थे, ने आभार ज्ञापन किया। साथ ही उन्होने होमियोपैथिक की एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक आचार्यवर को उपहृत की, जो भारत मे पहली बार इनके द्वारा छपी है। पुस्तक का विदेश मे मूल्य ५००० रुपये है, किंतु इस संस्थान द्वारा मात्र ५०० रुपये मूल्य रखा गया है।

..........मैं पद पर नहीं रहूंगा

२० सितम्बर/कर्नाटक मे हिरीयूर क्षेत्र के श्रावक श्री घनराज तातेड़ जो स्थानीय रोटरी क्लब के अध्यक्ष है, ने बताया—'हिरीयूर रोटरी क्लब का सम्मेलन था। सम्मेलन मे सामिष व निरामिष दोनो प्रकार के भोजन बनने की वर्षों से परम्परा चली आ रही थी। मैंने दृढ़ता के साथ सामिष भोजन बंद कर दिया। इसका रोटेरियनो की ओर से भारी विरोध हुआ। मैंने स्पष्ट कर दिया कि दो तरह का भोजन बनेगा तो मैं इस पद पर नही रहूंगा। मैं त्यागपत्र देता हू। सबने मेरी बात को गभीरता से लिया, फलतः सर्वसम्मति

से सामिप भोजन बंद कर दिया गया।'

२० सितम्बर/दिल्ली मे स्थानकवासी समाज के युवको का एक सम्मेलन था। उनमे कुछ युवको ने रात्रि मे अणुव्रत भवन मे आचार्यश्री के दर्शन किए। उन्होने आचार्यवर की शिक्षा को बड़े गौर से सुना। आचार्यश्री ने युवको को कुछ सूत्र रूप मे अपनी बात कही—

- सभी जैनो की सवत्सरी एक हो।
- अपने नाम के साथ जैन लगाएं।
- जैन दर्शन का ज्ञान करे।
- मंडनात्मक नीति को ही प्रोत्साहन दिया जाए।
- चरित्र शुद्धि व नैतिकता का विशेष ध्यान रखा जाए।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

अणुव्रत आदोलन के अन्तर्गत 'अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह' पिछले कई वर्षों से प्रतिवर्ष मनाया जाता रहा है। यह सप्ताह अखिल भारतीय स्तर पर मनाया जाता है। इस वर्ष यह २६ सितम्बर से २ अक्टूबर तक आचार्यवर के सान्निध्य मे प्रात.काल अहिंसा समवसरण मे आयोजित हुआ।

उद्घाटन समारोह/अहिंसा सार्वभौम दिवस

२६ सितम्बर/मुख्य अतिथि के रूप मे बोलते हुए दिल्ली महानगर परिषद् के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम गोयल ने कहा—'आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन के माध्यम से जनता मे नैतिक एव चारित्रिक मूल्यो को स्थापित किया है।' श्री गोयल ने आगे कहा—'विश्व शान्ति एव अहिंसा की स्थापना के लिये भगवान महावीर के अपरिग्रह एवं सहअस्तित्व के सिद्धात को उजागर किया जाना आवश्यक है।'

अपने अध्यक्षीय भाषण में टाइम्स ऑफ इण्डिया के महाप्रबन्धक साहु श्री रमेशचन्द जैन ने कहा—'नैतिक आचरण एवं संयम का मूल ही अहिंसा है। भारतीय दर्शन मे अहिंसा के अन्तर्गत उसके व्यापक प्रयोग हुए है। अहिंसा जीवन का आधार है। इसको एक अस्त्र के रूप मे प्रयोग किया गया है। आवश्यकता है अहिंसा एवं शान्ति स्थापना के क्षेत्र मे हो रहे प्रयोगो को प्रसारित करने मे प्रचार माध्यमो के सहयोग करने की।'

साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—'आज अहिंसा से व्यक्ति का विश्वास उठता जा रहा है। हिंसा के आधार पर व्यक्ति हिंसा के क्षेत्र मे सफल हो सकता है, शान्ति के क्षेत्र मे सफल नही हो सकता। अहिंसा के प्रति आस्था कायम रखकर ही अहिंसा के क्षेत्र मे सफल हुआ जा सकता है। अणुव्रत आन्दोलन अहिंसा का एक प्रयोग है।'

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने कहा—'आज सम्पूर्ण विश्व

में हिंसा एवं आतकवाद का वातावरण बना हुआ है। जगह-जगह हिंसा के प्रयोग एव प्रशिक्षण हो रहे है। भय एवं अशान्ति के बीच व्यक्ति का जीवन अन्धकारमय बना हुआ है। ऐसे विषम क्षणो में शान्ति स्थापना के लिए अहिंसा के व्यापक स्तर पर प्रयोग एव प्रशिक्षण की आवश्यकता है' उन्होने आगे कहा—'भगवान महावीर, राम, बुद्ध एवं महात्मा गांधी जैसे महा पुरुषो ने अपने प्रयत्नों से हिंसा को जडमूल से समाप्त नही कर सके, तो हम हिंसा को समाप्त कर ही देगे, यह कहना अतिवाद होगा। हम चाहते है कि हिंसा और अहिंसा का जब मुकाबला हो, तो अहिंसा का पलडा भारी रहे, ऐसी जागृति जन-जन मे आए।'

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के महामंत्री श्री निर्मलकुमार सुराणा ने अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा राष्ट्रव्यापी चलाई जा रही विभिन्न रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रवृत्तियो की जानकारी देते हुए कहा—'महात्मा गांधी के बाद आचार्यश्री तुलसी ऐसे व्यक्ति है, जिन्होने नैतिक एव चरित्र-निर्माण के लिए रचनात्मक सस्थाओ का जाल सा बिछा दिया है।' कार्यक्रम का सयोजन श्री विजयराज सुराणा ने किया। अणुव्रत इन्टरनेशनल के अध्यक्ष श्री शुभकरण दसाणी ने अतिथियो को साहित्य भेंट किया।

भावात्मक एकता दिवस

२६ सितम्बर/मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्रीमती कमला रत्नम् ने हिन्दी मे अपने विचार प्रकट करते हुए कहा—'हमारा देश सदा से विविध-ताओ मे जीता रहा है। देश की आजादी के बाद भी हम भावात्मक एकता के स्वप्न को पूरी तरह से साकार नही कर पाएं है। इसका एक उदाहरण भाषा का है। अंग्रेजी शासन के चले जाने के बाद भी अग्रेजी का प्रभाव हमारे पर ज्यो का त्यो है और हमारी मूल भाषा प्राकृत, सस्कृत आदि को तो न जाने किस अधकूप मे डाल दिया गया है। आचार्यश्री तुलसी जैसे संत पुरुष ही अनेकता मे एकता की राह दिखा सकते है।'

मुनि विजयकुमारजी, श्रीमती कुसुम दशाणी एव श्री रणजीत सेठिया ने भावात्मक एकता से सम्बन्धित गीतिका प्रस्तुत की। आचार्यवर का प्रभावी उद्बोधन हुआ।

दहेज उन्मूलन दिवस

२८ सितम्बर/कार्यक्रम का शुभारभ साध्वी कुन्दनरेखाजी एवं साध्वी विवेकश्रीजी के मंगलाचरण से हुआ। साध्वी जिनप्रभाजी ने विषय की प्राथमिक प्रस्तुति दी। अ० भा० अणुव्रत समिति के शिक्षामत्री डा० धर्मेन्द्रनाथ व बेगम लतीफ फातिमा ने अपने विचार रखे।

नवभारत टाइम्स के सहसम्पादक श्री पारसदास जैन ने कहा—'अणुव्रत के माध्यम से समाज-सुधार के लिये आचार्य तुलसी ने वहुत विस्तृत कार्य प्रारम्भ किया है। वे एक के वाद एक समस्या का समाधान खोजने के लिए सदैव तत्पर रहते है। दहेज की समस्या को समाहित करने की पहली शर्त है मानसिक बदलाव। मै चाहता हूं कि महिलाएं स्वयं इससे जूझने के लिये आगे आएं। अपनी आत्मनिर्भरता को बढाकर वे इस सकल्प को दोहराएं कि किसी भी स्थिति में उन्हें दहेज लेने वालो के घर नही जाना है। हमारा समाज पुरुषप्रधान है। पर इसका यह अर्थ कदापि नही कि वह नारी जाति का मान हनन करे।"

व्यसनमुक्ति दिवस

२९ सितम्बर/कार्यक्रम का प्रारम्भ साध्वी विवेकश्रीजी, कुन्दनरेखाजी के गीत से हुआ। मुनि विजयकुमारजी ने विपय की भूमिका पर प्रकाश डाला। साप्ताहिक हिन्दुस्तान के सम्पादक एवं प्रबुद्ध विचारक श्री राजेन्द्र अवस्थी ने कहा—'एक धर्मपरायण देश होते हुए भी विदेशों में भारत की छवि वहुत अच्छी नही है। देशवासियों के अनैतिक व्यवहार को लेकर कभी वड़ी कडी टिप्पणी कर देते है विदेशी लोग। पर वस्तुतः हमारे देश की सस्कृति गावो में है। ग्रामीण लोगो का जीवन आज भी काफी अश तक अविकृत है। इसका मुख्य कारण है कि उन्हें हमारे ऋषि-मुनियो से सदा स्वस्थ और सयमित जीवन जीने की सीख मिली। आचार्यश्री तुलसी इस अवस्था में भी गाव-गाव, पांव-पाव घूमकर यही नैतिकता और व्यसनमुक्ति की अलख जन-जन मे जगा रहे है।'

नवभारत टाइम्स के विशेप प्रतिनिधि श्री रतनसिंह शांडिल्य ने कहा —'पाश्चात्य सस्कृति के रंग मे रगते हुए आज हम किस तरह अपने खान-पान, रहन-सहन आदि को विकृत बना रहे है, यह बताने की आवश्यकता नही है। व्यक्ति व्यसन के रास्ते पर तब बढता है, जब स्वय अशान्ति और बेचैनी का अनुभव करता है। भारत की प्राचीन सस्कृति एवं आध्यात्मिक परम्परा के दर्शन तभी हो सकते है जब आचार्यश्री तुलसी जैसे संस्कृतिपुरुष के बताए मार्ग पर चलें।'

मिलावट निरोध दिवस

३० सितम्बर/कार्यक्रम का शुभारभ मुनिश्री श्रेयांसकुमार के मगलाचरण से हुआ। मुख्य वक्ता के रूप मे पूर्व जिला व सत्र न्यायाधीश श्री सोहनराज कोठारी, डा० मदनमोहन मालवीय, सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री यशपाल जैन ने अपने विचार रखे। आचार्यश्री ने मिलावट को घोर अपराध मानते हुए कहा—'इससे न केवल भौतिक, बल्कि आध्यात्मिक जगत् का भी

पतन होता है।' कार्यक्रम का संयोजन श्री विजयसिंह कोठारी ने किया।

अस्पृश्यता निवारण दिवस

१ अक्टूबर/नवभारत टाइम्स के सम्पादक श्री राजेन्द्र माथुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—'जो कुरीतियां एक बार चर्चा के लिये गांधीजी के समय समाप्त हो गई थी, लगता है उन पर पुनः चर्चा की जरूरत है। राजस्थान मे हुआ सतीकाण्ड हो या छुआछूत जैसी प्रथा, इन सब कुरीतियो को समाज एवं राष्ट्र से दूर करने के लिये व्यापक चर्चा एवं जन-आन्दोलन की अपेक्षा है।' उन्होने आगे कहा—'हमारे ऋषि-मुनियों के विचार हजारों वर्ष पुराने है। उस समय समाज की परिस्थितियां भिन्न थी। उन विचारों को आधुनिक परिवेश के अनुरूप उजागर करना होगा। आधुनिक विज्ञान एवं औद्योगिक प्रगति ने समाज एवं राष्ट्र मे समता के नियम को सम्भव बनाया है। जबकि अतीत में हमारा समाज असमानता की गिरफ्त मे था।'

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए स्वामी राम ने कहा—'वर्तमान शिक्षा पद्धति मे आध्यात्मिक मूल्यो का समावेश करके ही समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर किया जा सकता है। मैंने उत्तरप्रदेश विधानसभा मे आपका भाषण सुना था, तब से आपके प्रति मेरे मन मे विशेष आदर के भाव है।' आचार्यवर का इस अवसर पर प्रभावी उद्बोधन हुआ।

इस अवसर पर पंजाबी साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री के. एस. दुग्गल, अ. भा. हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष श्री चिन्तामणि, श्री शुभकरण दसाणी, प्रमुख विचारक डा० विमलकुमार जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। आचार्यश्री तुलसी दिल्ली प्रवास समिति के अध्यक्ष श्री मांगीलाल सेठिया ने अतिथियो को साहित्य भेंट किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री निर्मलकुमार सुराणा ने किया।

समापन समारोह/प्रदूषण विरोधी दिवस

२ अक्टुबर/पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने कहा—'हमे दिल और दिमाग को दुरुस्त रखकर ही आतंकवाद, जातिवाद और साम्प्रदायिकता का मुकाबला करना होगा।' उन्होने किसी प्रान्त विशेष का नाम लिए बिना कहा—'आतंकवाद की समस्या लाठी और गोली से हल नही हो सकती। आतंकवाद को समाप्त करने के लिए वहां के निवासियों को समाप्त करने की बजाय उनकी समस्याओं को हल करना होगा।'

ज्ञानीजी ने भारतीय संस्कृति के आदर्शों को अक्षुण्ण बनाए रखने पर बल देते हुए कहा—'हमे महापुरुषो और ऋषि-मुनियो के बताए हुए मार्ग पर चलना चाहिए। भारत की आध्यात्मिक व सांस्कृतिक परम्परा कायम रखकर ही हम सही मायने में प्रगति कर पायेंगे।' उन्होने आगे कहा—'देश के

नैतिक स्तर को ऊपर उठाने के लिए आचार्यश्री तुलसी द्वारा जो कार्य हो रहा है, वह बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।'

इस अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने अपने उद्‌बोधन मे कहा—'आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि व्यक्ति का निर्माण हो। अणुव्रत आन्दोलन ने इन्सान को इन्सान बनाने का प्रयत्न किया है।'

उन्होने आगे कहा—'आज सबसे बड़ी कठिनाई यह कि व्यक्ति सुनना नही चाहता। अगर सुनना चाहता है, तो ग्रहण करना नहीं चाहता। ग्रहण भी कर लेता है, तो उसे आचरण में नही लाना चाहता। यही कारण है कि धार्मिक होने का दम भरने वाले ही सबसे अधिक अधार्मिक है। जब तक व्यक्ति की कथनी और करनी मे समानता नही आएगी, समस्याएं सुलझने के बजाय उलझती जाएंगी।'

आचार्यश्री तुलसी ने राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान मे राजनेताओं एवं धार्मिक नेताओ के सयुक्त प्रयत्नों की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा—'धर्म और राजनीति का मिलना उचित नही है। पर राजनेता यदि धर्मगुरुओं के पास आकर मार्गदर्शन ले, तो यह राज्यसत्ता के परिष्कार के लिए आवश्यक है।'

इस अवसर पर ज्ञानी जैलसिंह ने अ. भा. अणुव्रत समिति द्वारा प्रकाशित अणुव्रत कलैण्डर का विमोचन किया। यह कलैण्डर अ. भा. अणुव्रत समिति के महामंत्री श्री निर्मलकुमार सुराणा ने आचार्यश्री को समर्पित किया। श्री केसरीमल सुराणा ने ज्ञानीजी को एलबम भेंट किया, जिसमें भिक्षु चरमोत्सव पर सिरियारी मे राष्ट्रपति के रूप मे समागत ज्ञानीजी की फोटुओं का सकलन है। ज्ञानीजी ने श्री चन्दनराज मेहता की पुस्तक 'लौ जलती रहे' का भी विमोचन किया। संयोजन श्री निर्मलकुमार जैन ने किया।

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह की आयोजना से जन-चेतना मे नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यो के प्रति आस्था जगी, वही आज समाज एव राष्ट्र मे व्याप्त विविध बुराइयो पर विस्तृत चर्चा का एक वातावरण बना। इस सप्ताह को सफल बनाने में अणुव्रती कार्यकर्त्ताओ का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

ऐसे गुरु के शिष्यो के यहां क्या मिलेगा

२६ सितम्बर/तारानगर के श्री प्रेमराज डागा की कलकत्ता मे कपड़े की दुकान है। सुबह दुकान खोली। प्रेमराजजी अभी तक पहुचे नहीं थे। उनका पुत्र कमल दुकान पर था। कस्टम विभाग के अधिकारी समेत १३ व्यक्ति अचानक दुकान पर आ धमके। उनमे तीन व्यक्ति दुकान व शेष दस व्यक्ति गोदाम का निरीक्षण करने लगे। दुकान पर एक फोटो टगा हुआ था, जिसमे

आचार्यश्री स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से बात कर रहे हैं। कस्टम ऑफिसर द्वारा फोटू के बारे में पूछे जाने पर कमल ने कहा—'यह फोटो हमारे गुरु आचार्यश्री तुलसी का है, जिन्होंने देश की नैतिक व चारित्रिक उन्नति के लिए अणुव्रत आन्दोलन प्रारभ किया है।' कमल ने आचार्यश्री का संक्षिप्त परिचय दिया। परिचय पाकर अधिकारी प्रभावित हुआ। गोदाम से जांचरत दस व्यक्ति दुकान पर आ गए। उन्हें कुछ भी 'कुछ' नही मिला। इतने में प्रेमराजजी दुकान पर आए। अधिकारी ने उन्हे खड़े होकर सम्मान दिया। अधिकारी ने कहा—'ऐसे गुरु के शिष्यो के यहां क्या मिलेगा।' कागजी कार्यवाही पूरी कर वे सभी चले गये। प्रेमराजजी ने आज यह सारा वृत्तांत बताया।

बैंगलूर ज्ञानशाला के बच्चे राजधानी में

कर्नाटक की राजधानी बैंगलूर मे काफी लंबे अर्से से ज्ञानशाला व्यवस्थित चल रही है। ज्ञानशाला मे सौ-सौ, दो-दो सौ, कभी-कभी चार सौ लडके-लड़कियां शामिल होते है और धार्मिक ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस ज्ञानशाला से सैकडों विद्यार्थी ऐसे निकले है, जिनको पच्चीस बोल, प्रतिक्रमण, भक्तामर आदि कंठस्थ है। समाज का सहयोग, लडके-लड़कियो की लगन, अभि-भावकों की रुचि व कार्यकर्त्ताओ की कर्मठता का ही परिणाम है कि बैंगलूर ज्ञानशाला व्यवस्थित चल रही है। ज्ञानशाला के संयोजक उत्साही कार्यकर्त्ता श्री सोहनलाल कटारिया है। ज्ञानशाला के अन्य शिक्षक श्री तेजराज सचेती, प्रेमराज कोठारी, अमीचन्द वैद, मोतीलाल जागड़ आदि हैं। ज्ञानशाला के ६१ सदस्यो का सघ राजधानी में आचार्यवर के दर्शनार्थ पहुंचा। इसमे पूर्व यह दल आमेट आया था। अपने सप्तदिवसीय राजधानी प्रवास में बच्चो ने अनेक आकर्षक परिसवाद व सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इसके साथ सायं सामायिकयुक्त सविधि प्रतिक्रमण किया। आचार्यवर ने उनके कंठस्थ ज्ञान की परीक्षा ली व अन्य तात्त्विक तथ्यों की जानकारी प्रदान की।

प्रेक्षाध्यान शिविर

५ अक्टूबर/युवाचार्यश्री के निदेशन मे ग्रीनपार्क मे २६ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक तुलसी अध्यात्म नीडम् के तत्त्वावधान मे दसदिवसीय प्रेक्षा-ध्यान शिविर का आयोजन हुआ। उसका समापन समारोह अहिंसा समवसरण मे आचार्यवर की सन्निधि मे मनाया गया। कुल ८५ शिविरार्थियों में अनेक उच्च शिक्षा प्राप्त थे। मनश्चिकित्सक डॉ० मनमोहन, श्री डी० एन० राजू, श्री अविनाश ठाकुर, श्री महावीर जैन, श्री नवनीतकुमार जैन, श्री धर्मचद सेठिया ने अपने अनुभव सुनाए। मुनि किशनलालजी व महेन्द्रकुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन करते हुए नीडम् के निदेशक श्री शंकरलाल मेहता ने शिविर की रिपोर्ट पेश की। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री

के प्रेरक उद्‌बोधन हुए ।

दिल्ली महिला मंडल का वार्षिकोत्सव

८ अक्टूबर/आचार्यवर की सन्निधि में दिल्ली महिला मंडल का वार्षिकोत्सव आयोजित हुआ । कार्यक्रम की मुख्य अतिथि लेखिका संघ की महामंत्री पत्रकार श्रीमती शुभा वर्मा, अध्यक्ष बाल सुधार समिति की सयोजक बेगम लतीफ फातिमा थी । मंडल की अध्यक्ष श्रीमती ललिता जैन ने मंडल की भावी योजनाएं प्रस्तुत की । मंत्री श्रीमती प्रेम सेठिया ने गत वर्ष मंडल द्वारा कृत कार्यो का विवरण प्रस्तुत किया । अ० भा० तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व मंत्री श्रीमती सायर बैगानी ने अपने विचार रखे ।

श्रीमती वर्मा ने आचार्यश्री के नारी जागृति के कार्यक्रमों मे पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया । बेगम फातिमा ने अपने वक्तव्य मे देश के निर्माण मे माताओ के दायित्व का स्मरण कराया । महिला समाज को ऊर्जा व शक्ति का प्रतीक बताते हुए साध्वी प्रमुखाश्री ने महिलाओं से अपील की कि वे अपनी शक्ति का उपयोग करे । आचार्यवर ने महिलाओ से अपनी मूल थाती को सुरक्षित रखने का आह्वान किया । संयोजन श्रीमती सुनीता जैन ने किया । मध्याह्नकालीन सम्मेलन मे महिलाओ के बीच युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य हुआ ।

जैन विद्या परिषद्

आचार्यवर की सन्निधि मे ९ से ११ अक्टूबर तक जैन विद्या परिषद् की आयोजना हुई । परिषद् मे युवाचार्यश्री का सतत मार्गदर्शन प्राप्त था । परिषद् का विषय था --'आयारो आगम ।' इसके विभिन्न आध्यात्मिक, वैज्ञानिक व अन्य महत्त्वपूर्ण सूत्रो का समागत विद्वानों, साधु-साध्वियो व समणियो ने विविध कोणो से विश्लेषण व विवेचन प्रस्तुत किया ।

समणीवृंद के गीत के बाद परिषद् का उद्‌घाटन करते हुए सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति डा० व्यंकटाचलम् ने कहा—'आचारांग सूत्र उदात्त भारतीय चिंतन का एक उत्कृष्ट ग्रथरत्न है, जिसका सदेश संत्रस्त मानव-जीवन का त्राण बन सकता है ।' जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति डा० डी० एस० कोठारी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा—'विश्व मे व्याप्त समस्याओ का समाधान भारतीय आचार-मूलक चिन्तन से ही हो सकता है ।'

आचार्यवर ने कहा—'सब धर्मो का सार यही है मानव अपना आचरण उन्नत बनाए । भगवान् महावीर ने अपने जीवन मे यह आदर्श चरितार्थ करके विश्व को धर्म का सार प्राप्त करने की प्रेरणा दी ।' आचाराग का मूल नाम 'बभचेर' बताते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'इसका अपर नाम सामायिक है । बाद मे इसका नाम 'आयारो' हो गया । यह आचार एव ध्यान

का सूत्र है।' साध्वी प्रमुखाश्री ने साधक को सुलभवोधि, सम्यक्त्वी, देशव्रती, महाव्रती, वीतरागी, अयोगी—इन छह श्रेणियों में विभक्त करते हुए आयारो को एक प्रेरक आगम वताया।

अनेकांत शोधपीठ के निदेशक डा० नथमल टाटिया ने परिषद् का परिचय दिया। जैन विश्व भारती के मंत्री श्री श्रीचंद वैंगानी ने समागत विद्वानों का स्वागत किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा० आर० मी० पाडे थे। उद्घाटन सत्र का संयोजन श्री वच्छराज दूगड ने किया।

उद्घाटन व समापन सत्र के अतिरिक्त कुल सात सत्रों में विद्वान भाइयो, सुधी साधु-साध्वियो व समणियो ने अपने शोध प्रवंध पढे। प्रत्येक शोध प्रवंध के वाद प्रश्नोत्तरो का कार्यक्रम चलता, जिसे समाहित करते शोध प्रवंधकर्ता व विवेचन-विश्लेषण प्रस्तुत करते श्रद्धेय युवाचार्यश्री। आचार्यवर का प्रत्येक सत्र के अंत मे आशीर्वचन होता। प्रतिदिन तीन सत्र चलते। प्रातःकालीन सत्र ९ से १२, मध्याह्नकालीन २ से ४.३० व रात्रिकालीन ८ से ९.३० वजे तक चलता। प्रत्येक सत्र का विवरण इस का प्रकार है—

- प्रथम सत्र—अध्यक्ष—डा० के० के० मित्तल।
  डा० विमलप्रकाश जैन—आयारो के प्रथम दो अध्ययनो मे प्रयुक्त त्रिष्टुभ छदों का अध्ययन।
  समणी मंगलप्रज्ञाजी—धुत अध्ययन : एक परिशीलन।
- द्वितीय सत्र-अध्यक्ष—डा० महेश तिवाडी।
  मुनि महेन्द्रकुमारजी—आचारांग के परिप्रेक्ष्य मे क्या षड्जीवनिकायवाद मूलत: आदिमकालीन अवधारणा है?
  मुनि मुदितकुमारजी—आचारांग भाष्य की नवीन व्याख्याएं।
  समणी मल्लिप्रज्ञाजी—आयारो मे भावना योग।
- तृतीय सत्र—अध्यक्ष—डा० संघसेन।
  डा० भागचंद जैन—आयारो और पालि त्रिपिटक।
- चतुर्थ सत्र—अध्यक्ष—डा० भागचंद जैन।
  डा० दयानद भार्गव—आयारो मे ज्ञानाचार।
  डा० प्रेमसुमन जैन—आयारो के व्याख्या साहित्य मे वर्णित कथाए।
  मुनि राजेन्द्रकुमारजी—लोक विजय अथवा लोक-विचय।
  डा० फूलचंद जैन—आचारांग मे शस्त्र परिज्ञा अध्ययन मे प्रतिपादित षड्जीवनिकाय सवंधी अहिंसा।
- पंचम सत्र—अध्यक्ष—डा० विमलप्रकाश जैन।
  डा० महावीरराज गेलडा—आयारो और विज्ञान।
  साध्वी निर्वाणश्रीजी—आयारो प्रथम श्रुतस्कन्ध के जैकोवीकृत भाषान्तर का समीक्षात्मक अध्ययन।

श्री बुधमल सामसुखा—आयारो मे पुनर्जन्म सिद्धान्त: आधुनिक परामनोविज्ञान के संदर्भ मे।

० षष्ठम सत्र—अध्यक्ष—डा. दयानद भार्गव।

मुनि धनञ्जयकुमारजी—धुतवाद: निर्जरा के प्रयोग।

० सप्तम सत्र—अध्यक्ष— डा० महावीरराज गेलडा।

साध्वी विमलप्रज्ञाजी—आयारो : आचार्य भिक्षु की अहिंसा की कसौटी।

मुनि उदितकुमारजी—आचारांग के संदर्भ मे सुप्त और जागृत की चिन्तनधारा।

डा० आर० के चद्रा—आचारांग का भाषागत वैज्ञानिक अध्ययन

मुनि प्रशान्तकुमारजी—आचाराग मे आत्मा का स्वरूप।

० समापन सत्र—अध्यक्ष—डा० नथमल टाटिया।

डा० टाटिया ने जैन विद्या परिषद् के कार्यों का विशद वर्णन किया तथा जैन विश्व भारती द्वारा किए जा रहे शोध प्रकाशनो का एक सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया।

डा० भार्गव ने परिषद् का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री के प्रेरक प्रवचन हुए। श्री श्रीचंद बेंगानी ने आभार प्रकट किया।

परिषद् मे साधु-साध्वियों व समणीवृंद द्वारा प्रस्तुत शोध निबंधो से प्रभावित होकर समागत विद्वानो ने आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के दिशा-दर्शन की प्रशसा की। साथ ही जैन विश्व भारती द्वारा संचालित शोध कार्यो को भी सराहा। परिषद् ने दस प्रस्ताव भी पारित किए।[1]

जैन समाज के प्रमुखों की बैठक

११ अक्टूबर/रात्रि मे जैन समाज के प्रमुख व्यक्तियो की एक बैठक आचार्यश्री की सन्निधि मे हुई, जिसमे एक सवत्सरी, एक पंचांग आदि के निर्णय के संदर्भ में विचार-विमर्श हुआ। वर्ष मे एक बार 'अहिंसा दिवस' मनाने व उस दिन सरकार से छुट्टी घोषित कराने पर भी चिंतन चला। बैठक मे भारत जैन महामडल के अध्यक्ष श्री नृपराज जैन, एक संवत्सरी संयोजन समिति के सयोजक श्री किशोरचद एम. वर्धन, स्थानकवासी कान्फ्रेन्स के महामंत्री श्री पुखराज लूकड, दिल्ली स्था· कान्फ्रेन्स के महामंत्री श्री अजितराज सुराणा, कान्फ्रेन्स के वरिष्ठ सदस्य व भारत जैन महामंडल के उपाध्यक्ष श्री हीरालाल जैन आदि उपस्थित थे। ये सभी दिल्ली मे आयोजित अ. भा. स्थानकवासी

---

१. दस प्रस्ताव व परिपद् मे पढे गए शोध प्रबंध देखें—जैन विश्व भारती का प्रकाशन 'तुलसी प्रज्ञा' (त्रैमासिक) दिसम्बर १९८७ एव मार्च १९८८ का 'आयारो संगोष्ठी विशेषांक'।

कान्फ्रेन्स के अधिवेशन के सिलसिले मे आए हुए थे।

प्रेक्षा प्रशिक्षण शिविर

१२ अक्टूबर/युवाचार्यश्री के निदेशन मे ६ अक्टूवर को प्रारंभ प्रेक्षा प्रशिक्षण शिविर का आज आचार्यवर की सन्निधि मे समापन हुआ। मुनि किशनलालजी, महेन्द्रकुमारजी, साध्वी जिनप्रभाजी, समण स्थितप्रज्ञजी ने अपने विचारो की अभिव्यक्ति दी। आचार्यवर, युवाचार्यश्री के सारगर्भित प्रवचन हुए।

खेडब्रह्मा से समागत प्रेमानंदजी आदिवासी क्षेत्रों मे काम कर रहे हैं। स्वामी शरणानदजी के सम्पर्क से इनका आध्यात्मिक जीवन प्रारंभ हुआ। वे खेडब्रह्मा व निकटवर्ती इलाकों में हजारों वच्चो के वीच ध्यान के प्रयोग करा रहे हैं। प्रेमानंदजी ने अपने आपको समर्पित करते हुए कहा—'प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में आचार्यश्री मुझे जहां भी नियोजित करेगे, वहां मै तैयार हूं।'

श्री एस. आर. दत्ता वंगाली है, किंतु साधना की दृष्टि से हरिद्वार रहते है। वे मूलतः वैदिक परम्परा के हैं। जैनों के संपर्क मे लाने का श्रेय श्रीमती सूरज दूगड को है। वह प्रेक्षाध्यान में अच्छी रुचि लेती है। श्री दत्ता वहुत कम बोलते हैं, वहुत कम सोते और खाते हैं। उनके चेहरे की सौम्यता से उनके साधनाशील व्यक्तित्व का आभास होता है। एक दिन साधु-साध्वियों की एक गोष्ठी आचार्यश्री की सन्निधि मे आयोजित थी। श्री दत्ता उसमें उपस्थित थे। दत्ताजी को लक्षित कर आचार्यवर ने कहा—'ये साधु नही, गृहस्थ हैं। फिर भी साधु से कम जागरूकता नही है। साधना के प्रति समर्पित हैं। अहंकार व ममकार से काफी मुक्त वने हैं। ऐसे साधनाशील व्यक्ति से साधु-साध्वियों को प्रेरणा लेनी चाहिये।'

आचार्य विद्यानंदजी से मधुर मिलन

१९ अक्टूबर/दिगम्बर परम्परा के वरिष्ठ आचार्य विद्यानंदजी का आज अणुव्रत भवन में आचार्य तुलसी के साथ मधुर मिलन हुआ। मध्याह्न करीव २ वजे अणुव्रत भवन के मुख्य द्वार पर युवाचार्यश्री से मिलते ही आचार्य विद्यानंदजी ने कहा—'युवाचार्य वनने के वाद आज प्रथम मिलन पर मुझे वहुत खुशी है।' आचार्यजी के साथ टाइम्स ऑफ इंडिया के प्रबन्धक साहु रमेशकुमार, साहु अशोककुमार, श्री सतीश जैन आदि प्रमुख व्यक्ति थे।

आचार्य वनने के वाद उनका पहली वार आचार्यवर व युवाचार्यश्री से मिलन हुआ। करीव ६० मिनट तक आचार्यद्वय व युवाचार्यश्री के वीच वड़े ही आत्मीय माहौल मे वातचीत हुई। वातचीत मे प्रेक्षाध्यान व जैन साध्वाचार मुख्य विषय थे।[1]

---

१. वातचीत का कुछ अंश पढ़ें—प्रेक्षाध्यान (मासिक) जून १९८८।

दूसरे दिन २० अक्टू. को प्रातः करीब ६.५० बजे आचार्य विद्यानंदजी का पुनः आगमन हुआ। करीब १५० मिनट तक विद्यानंदजी व युवाचार्यश्री के बीच विभिन्न विषयो पर खुली बातचीत हुई। बाद में आचार्यवर भी पधार गए।

९.१५ बजे अहिंसा समवसरण में आयोजित संक्षिप्त समारोह मे बोलते हुए आचार्य विद्यानंदजी ने कहा—'आचार्यश्री तुलसी करुणा की प्रतिमूर्ति हैं। आपके स्नेह को मैं विस्मृत नही कर सकता। युवाचार्य महाप्रज्ञ श्रुत की जो साधना कर रहे है, वह अपूर्व है। सन् १९७४ से हमारा आत्मीय सम्बन्ध क्रमशः बढता जा रहा है। आचार्यश्री ने समण-समणी परम्परा स्थापित कर एक ऐतिहासिक कार्य किया है। ये जैन धर्म का प्रचार-प्रसार भलीभांति कर पाएंगी। मैं इस परम्परा की सफलता की कामना करता हूं।'

युवाचार्यश्री ने कहा- 'आचार्य विद्यानंदजी से दो दिनो से बातचीत करने पर मुझे सन् ७४ की स्मृति ताजा हो गई। भगवान महावीर की निर्वाण शताब्दी पर मुनिजनो की सगीतियो के माध्यम जो वातावरण बना था, वह आज पुनः साकार हो गया। वर्तमान युग के सदर्भ मे ज्वलंत समस्याओं पर जैनाचार्यों को विचार करना आवश्यक है, जिससे जागरूक बनकर हम पहरा दे सके।'

आचार्यवर ने आचार्य विद्यानंदजी के साथ अपने मधुर सम्बन्धों को याद करते हुए जैन धर्म के मूलभूत सिद्धान्तो पर प्रकाश डाला।

आचार्य तुलसी जन्म दिवस

२४ अक्टूबर/अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी का ७४ वां जन्म दिन मनाया गया। प्रातः ब्रह्म मुहूर्त मे युवाचार्यश्री आचार्यवर के पास पधारे और जन्म दिन पर अपनी व पूरे धर्मसंघ की ओर से मंगल भावना व्यक्त की। उस समय प्राय. सभी साधु पहुंच चुके थे। पूरे संघ की मगल भावना स्वीकारते हुए आचार्यवर ने कहा—'मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि मुझे भैक्षव शासन मिला। कालूगणी जैसे समर्थ व पुण्यवान् गुरु मिले और समर्पित व सुयोग्य धर्मसंघ मिला। संघ की चहुंमुखी उन्नति के मेरे प्रयत्नों में सर्वाधिक कार्यकारी योग रहा है महाप्रज्ञजी का। मैंने जो भी निर्णय लिया, वही इनकी कार्यशाला व प्रयोगशाला बन गई। साध्वियों की ओर से भी मुझे सहयोग मिला है। साध्वी प्रमुखा झमकूजी भाग्यशालिनी सती थीं। लाडाजी ने बहुत श्रम किया। कनकप्रभाजी का निरन्तर सहयोग मिल ही रहा है। श्रावक व श्राविका समाज का समर्पण बेजोड़ है।'

मध्याह्न करीब १.४५ बजे विज्ञान भवन मे जन्म दिन के कार्यक्रम का प्रारंभ समणीवृंद के सुमधुर गीत से हुआ। जन्म दिन का कार्यक्रम भावात्मक एकता दिवस के रूप मे मनाया गया। दिल्ली जैन सभा के मंत्री प्रो० रतन

जैन ने आचार्यश्री तुलसी को मानवता की सेवा में रत महान् तपस्वी बताया। सांसद श्री रामचंद्र विकल ने आचार्यश्री के शतायु होने की कामना की। सासद श्री भंवरलाल पंवार ने आचार्यश्री को सांप्रदायिक व जातीय संकीर्णता से ऊपर एक महान् व्यक्तित्व बताया। संसद् सदस्य श्री सुभाष बागडोदिया ने कहा—'मेरा आपसे प्रथम संपर्क कलकत्ता मे हुआ। मैंने उस समय व्यसनमुक्त जीवन जीने का संकल्प लिया। मेरा यह संकल्प मेरे जीवन-निर्माण मे बहुत मददगार बना। आचार्यश्री तुलसी हमारे देश के महावीर, बुद्ध, गांधी जैसे महान् पुरुषो की शृंखला मे हैं, जिन्होने मानवता को मार्ग-दर्शन दिया है।' पूर्व कांग्रेस महासचिव व सांसद श्री रघुनंदनलाल भाटिया ने आज के युद्ध, हिंसा आदि के विषम वातावरण मे अणुव्रत को एक सजीवन बताया।

मुमुक्षु बहिनो ने गीत के माध्यम से अपने आराध्य का अभिनदन किया। श्री टी. एम. लालाणी ने संयोजकीय वक्तव्य दिया। श्री मांगीलाल सेठिया ने अतिथियो का स्वागत किया। श्री जसवतराय जैन ने स्वरचित गीत से आराध्य की अभ्यर्थना की। समण स्थितप्रज्ञजी ने अपने विचार रखे।

युवाचार्यश्री ने परिग्रह को सब समस्याओ की जड बताते हुए कहा—'जैन धर्म का घोष है—'अहिंसा परमो धर्मः'। भगवान महावीर के २५०० वर्ष बाद आचार्यश्री ने नया स्वर दिया—'अपरिग्रह परमो धर्मः'। सारी हिंसा के मूल मे परिग्रह ही है। परिग्रह की निष्पत्ति है हिंसा।' युवाचार्यश्री ने आचार्यवर द्वारा प्रदत्त विसर्जन सूत्र की विस्तार से चर्चा की। साध्वी प्रमुखाजी ने आचार्यवर को जीवत व्यक्तित्व बताया।

ढेर सारी शुभकामनाओ को स्वीकार करते हुए आचार्यवर ने कहा—'हमारी भारतीय सस्कृति मे अच्छे जीवन की परिभाषा है, जो शात, तुष्ट, पवित्र और आनन्दपूर्ण हो, वही जीवन है। संयम से ही शांति मिल सकती है। आतंकवादी को कभी शाति नही मिल सकती। स्वतत्रता से ही तोष मिलता है, परतंत्र कभी तुष्ट नही हो सकता। साधन शुद्धि से पवित्र हो सकता है। स्वस्थ ही आनन्द प्राप्त कर सकता है। जो अपने आप मे रहता है, वही स्वस्थ है। इन चार तत्त्वों को स्वीकार करने से ही मनुष्य अच्छा जीवन जी सकेगा।'

आचार्यश्री ने आगे कहा—'अत्यधिक प्रशसा और विरोध के बीच मैंने जीवन जीया है, पर उस द्वन्द्व मे मैंने स्थितप्रज्ञ बनने का ही प्रयत्न किया है। मैंने अपने जीवन मे विनम्रता का गुण उतार कर देखा कि इससे आदमी को सफलता मिल सकती है।'

श्री सी० सुब्रमण्यम को अणुव्रत पुरस्कार

जय तुलसी फाउंडेशन के उपाध्यक्ष श्री मागीलाल सेठिया ने विज्ञान

भवन मे सन् १९८७ का एक लाख रुपये का अणुव्रत पुरस्कार श्री सी. सुब्रमण्यम को प्रदान करने की घोषणा की। श्री सी. सुब्रमण्यम केन्द्र मे वित्त मंत्री व रक्षा मंत्री रह चुके हैं।

अणुव्रत पुरस्कार उसी व्यक्ति को दिया जाता है, जिसने मानवीय एकता मे पूर्ण आस्था रखते हुए उसे व्यावहारिक रूप से सक्रियता से निभाया हो तथा चारित्रिक मूल्यो की प्रतिष्ठा मे अपने जीवन के अधिकांश समय का योगदान कर प्रामाणिक जीवन की साधना के द्वारा स्वयं को संपृक्त किया हो। सन् १९८१ से अब तक यह पुरस्कार लगातार प्रदान किया जा रहा है।

पुरस्कार की घोषणा के बाद श्री शुभकरण दसाणी ने श्री सी. सुब्रमण्यम का परिचय दिया। श्री सुब्रमण्यम ने पुरस्कार के लिए आभार ज्ञापित करते हुए नैतिक आस्था की जागृति के लिए स्वयं के योगदान की इच्छा व्यक्त की।

अवशिष्ट कार्यक्रम

२ अक्टूबर/जन्मदिन का अवशिष्ट कार्यक्रम आज अहिंसा समवसरण मे आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सी. सुब्रमण्यम ने की। मुख्य अतिथि थे सुप्रसिद्ध बांग्ला उपन्यासकार श्री विमल मित्र तथा हवाई युनिवर्सिटी अमेरिका के प्रो० ग्लेन डी पेज। श्री सुब्रमण्यम, श्री उत्तमचन्द सेठिया, अणुव्रत प्रवक्ता श्री सीताशरण शर्मा, श्री मोहनलाल जैन व श्री कन्हैयालाल फूलफगर ने अपने विचार रखे। दिल्ली महिला मण्डल का सुमधुर गीत हुआ।

श्री विमल मित्र ने कहा—'विगत तीस वर्षो से मैं आपका भक्त हूं। आपके व युवाचार्यजी के साहित्य को पढ़कर मुझे लगा कि आपने केवल सत्य का कथन ही नही किया, अपितु सत्य का जीवन जीया है। आचार्यश्री तुलसी इस युग के मसीहा है। आपका जीवन आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देता रहेगा।' प्रो. ग्लेन डी पेज ने कहा—'आचार्य श्री तुलसी विश्व शांति के मसीहा हैं। आपकी केवल भारत को ही नही, पूरे विश्व को जरूरत है। मैं अपने जीवन को अहिंसा-व शांति के लिए समर्पित करता हूं।'

साहित्यकार, अणुव्रत प्रवक्ता श्री यशपाल जैन, हरियाणा के राजकवि श्री उदयभानु 'हंस', श्री मोतीलाल एच. रांका, श्री सोहनलाल गांधी, प्रो० भटनागर ने अपने विचार व्यक्त किए। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचंद सेठिया, वरिष्ठ श्रावक श्री हनुमानमल बेंगानी ने योगक्षेम वर्ष लाडनू मे मनाने का भावपूर्ण निवेदन किया। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मागीलाल सेठिया, श्री कन्हैयालाल पटावरी ने आगामी मर्यादा महोत्सव

दिल्ली में करने की विनती की। अनेक क्षेत्रों के लोगों ने मर्यादा महोत्सव की प्रार्थना की।

श्री खेमचंद सेठिया ने जैन विश्व भारती के नये प्रकाशन तेरापंथ दिग्दर्शन १९८६-८७, जीवन-विज्ञान, संबोधि के पथ पर पुस्तक आचार्यवर को भेंट की। श्री रतनलाल सामसुखा (गंगाशहर) ने 'मुनि गंगारामजी का जीवन चरित्र' पुस्तक भेंट की। श्री जेसराज सेखानी ने दिल्ली चातुर्मास की एक वीडियो कैसेट तैयार की है, जिसे महासभा के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल छाजेड़ ने समाज के सामने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आचार्यश्री, युवाचार्य श्री के महत्त्वपूर्ण उद्बोधन हुए। २६ को भी जन्मदिन का अवशिष्ट कार्यक्रम चला।

झलकियां

- जन्मदिन का कार्यक्रम तीन चरण में आयोजित।
- सन् १९८९ मे आयोजित होने वाला योगक्षेम वर्ष जैन विश्व भारती लाडनूं में।
- आगामी मर्यादा महोत्सव दिल्ली में।
- सन् १९८८ का चातुर्मास का निर्णय आगामी मर्यादा महोत्सव पर होने की घोषणा।
- सन् १९८८ का अणुव्रत पुरस्कार श्री सी. सुब्रमण्यम को।
- श्रीमती मनोहरीदेवी डागा (सरदारशहर) समाज-सेवा पुरस्कार श्री राणमल जीरावला को।
- अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा व शांति पुरस्कार श्री ग्लेन डी पेज को।
- आगामी मर्यादा महोत्सव पर किसी भी सिंघाड़े को न बुलाने का निर्णय; सूखे की स्थिति को देखते हुए कुछ विशेष निर्दिष्ट सिंघाड़ों के अतिरिक्त सभी सिंघाड़ों को आसपास के क्षेत्रो में विचरण करने का आदेश।
- विज्ञान भवन में आयोजित कार्यक्रम में काफी लोग शामिल नहीं हो सके। सीमित सीटें व ठीक समय पर सुरक्षाकर्मियों द्वारा गेट बंद कर देने से यह स्थिति बनी, इसलिए कुछ लोगों के मन मे असंतोष भी रहा। व्यवस्थापको ने बड़ी विनम्रता के साथ इस गलती के लिए क्षमायाचना की।
- तेयुप दिल्ली द्वारा 'गीतों भरी शाम' का आयोजन।

२८ अक्टूबर/प्रातः प्रवचन के समय विनयपुरम् (मेवाड) की अणुव्रत विद्यापीठ की छात्राओं व अध्यापिकाओ ने अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। वहां के विधायक श्री बिहारीलाल पारीक ने अणुव्रत विद्यापीठ की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। आचार्यवर ने कहा—'देश की कन्याओ के निर्माण का अर्थ है

देश के भविष्य का निर्माण करना। इस वर्ष विनयपुरम् मे मुनि सुखलालजी ने अच्छा श्रम किया है।' अणुव्रत कार्यकर्त्ता श्री गणेशकुमार ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

अणुव्रत संगोष्ठी में पूर्व उपराष्ट्रपति श्री जत्ती

२९ अक्टूबर/भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री वी. डी. जत्ती आज अणुव्रत भवन में आचार्यश्री से मिले। वे कुछ महीनों के लिए कार्यवाहक राष्ट्रपति भी रह चुके है। उन्होने राष्ट्र की वर्तमान समस्याओ के सन्दर्भ में आचार्यवर से वातचीत की।

अहिंसा समवसरण में आयोजित अणुव्रत संगोष्ठी मे अपने विचार रखते हुए श्री जत्ती ने कहा—'आज देश अपूर्व चारित्रिक संकट से गुजर रहा है। हिंसा एवं घृणा का चारो ओर वोलवाला है। जव तक वैयक्तिक चरित्र नही सुधरेगा, देश में हिंसा, आतंक एवं घृणा का वातावरण वना रहेगा। आचार्य श्री तुलसी अणुव्रत आन्दोलन के द्वारा मनुष्य की आन्तरिक चेतना को जागृत करने का महत्त्वपूर्ण अभियान चला रहे हैं।'

आचार्यश्री के साथ अपने सम्वन्धो की चर्चा करते हुए श्री जत्ती ने कहा—'सन् १९५१ से मेरा आचार्यश्री से परिचय है। तव मैं महाराष्ट्र मे उपमंत्री था। उस समय मैंने महाराष्ट्र सरकार की ओर से आपका स्वागत किया था। उसके वाद समय-समय पर मैं आपसे मिलता रहा हूं। मैं आपके द्वारा जनहित के लिए प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन से वहुत प्रभावित हूं।'

आचार्यवर ने कहा—'अणुव्रत के द्वारा व्यक्ति को नैतिक व ईमानदार वनाने का प्रयत्न किया गया है। जव व्यक्ति का जीवन उन्नत वनेगा, नैतिकता एवं प्रामाणिकता की भावना उसमें रहेगी, तव ही राष्ट्र का विकास होगा।' आचार्यश्री ने श्री जत्ती को दक्षिण का विशिष्ट व्यक्तित्व वताते हुए उनके नैतिक मूल्यो के प्रति प्रगाढ़ निष्ठा एवं उनके निर्भीक जीवन की प्रशसा की।

अ. भा. अणुव्रत समिति के महामंत्री श्री निर्मलकुमार सुराणा ने श्री जत्ती का स्वागत किया। श्री सीताशरण शर्मा ने परिचय दिया। श्री सोहनलाल गांधी ने श्री जत्ती के अग्रेजी भाषण का हिन्दी मे अनुवाद किया। आभार ज्ञापन श्री मोतीलाल राका ने किया। श्री वच्छराज सेठिया ने साहित्य भेट किया। कार्यक्रम के अनन्तर आचार्यवर व श्री जत्ती के वीच वातचीत हुई।

आक्षेपात्मक प्रसंग निकाल लेने चाहिए

३० अक्टूबर/मध्याह्न स्थानकवासी समाज के कुछ मुखिया लोग सम्मिलित होकर आचार्यवर की सन्निधि मे पहुचे। उन्होने 'भिक्खु दृष्टान्त' पुस्तक में समागत कुछ शब्दो पर अपनी आपत्ति व्यक्त की। आचार्यवर ने उन शब्दो का स्पष्टीकरण दिया और कहा—'सन् १९६१ मे एक समझौता दोनों

समाजो के मध्य हुआ था, जिसमे यह निर्णय लिया गया कि कोई भी आक्षेपात्मक पुस्तक दोनो पक्षों की ओर से प्रकाशित नही की जायेगी। हमारी ओर से आक्षेपात्मक साहित्य न पहले कभी छपा और न वाद में छपा, पर अन्य जैन समाजो ने इसका पालन नही किया। उन्होने कई पुस्तकों में तेरापंथ के वारे में वेहूदी वातें लिखी है, अनर्गल प्रलाप किया है। 'भिक्खू दृष्टान्त' में मुझे ऐसा कोई शब्द नही लगता, जो किसी समुदाय की भावना को ठेस पहुचाता हो। फिर भी आपने जिन शब्दों पर आपत्ति उठाई है, उस पर मैं चिंतन करूंगा। आपको भी अपनी पुस्तकों से वे आक्षेपात्मक प्रसंग निकाल लेने चाहिए।' वातचीत मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने भी भाग लिया।

नशाबंदी सम्मेलन

कासी ट्युसन क्लब मे भारत निर्माण संस्था की ओर से एक नशाबंदी कार्यक्रम आयोजित था। कार्यक्रम मे साध्वी प्रमुखाश्री का विशेष रूप मे सान्निध्य प्राप्त था। उन्होंने अपने वक्तव्य में मद्यपान के कारण व निवारण पर महत्त्वपूर्ण दिशादर्शन दिया। समणीजी के भाषण के वाद केन्द्रीय संसदीय राज्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने भी अपने विचार रखे। भारत निर्माण के संयोजक श्री एम. सी. भडारी ने आभार ज्ञापन किया।

दिगम्बर-श्वेताम्बर का इतना नैकट्य पहली वार

१ नवम्वर/वेदवाडा चांदनी चौक मे आज मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' व मुनि उदितकुमारजी दिगम्बर आचार्य विद्यानन्दजी से मिले। मुनि सुमेरमल ने आचार्यजी को आचार्यश्री तुलसी का एक विशेष संदेश प्रदान किया। संदेश पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होने आचार्यश्री के साथ अपने आत्मीय संबंधो की चर्चा की। तमिल पुस्तक 'तिरुक्कुरल' की हिंदी मे अनुदित पुस्तक देते हुए विद्यानन्दजी ने कहा—'आपके वहां वड़े-वड़े ग्रंथ तैयार हो रहे हैं। हमारी ओर से यह पुस्तक कुन्दकुन्द भारती द्वारा प्रकाशित है।'

मुनि सुमेरमल ने वताया—'ज्ञात इतिहास मे दिगम्वर-श्वेताम्वर के वीच इतनी निकटता पहली वार आई है। इसका श्रेय मुख्य रूप से आपको व आचार्यश्री तुलसी को है। अन्य आचार्य भी निमित्त वने हैं। यह इतिहास की विरल घटना है।'

आचार्य विद्यानन्दजी ने कहा—'आचार्यों का उदार चिंतन व उचित मार्गदर्शन ही योगभूत वना है।' आचार्य विद्यानन्दजी से वातचीत वडे ही सौहार्दपूर्ण वातावरण मे हुई। वातचीत के समय दिगम्वर समाज के कई वरिष्ठ व्यक्ति भी उपस्थित थे। वे दिल्ली से प्रस्थान कर कर्नाटक जा रहे थे। आचार्यवर द्वारा प्रदत्त संदेश इस प्रकार है—

अर्हम्

आचार्य विद्यानन्दजी !

इस बार दिल्ली चातुर्मास होने पर भी हम लोगों का मिलन नहीं हो सका, इसका मन मे विचार था। पर आपने इसकी पूर्ति की और मिलन हुआ। मिलन हुआ तो ऐसा हुआ कि एक स्मृति बन गया। विचारो की एकता क्षेत्रीय दूरी से विस्मृत नही हो सकती।

आप साउथ में जा रहे हैं। हम इधर रहेंगे, पर समय-समय पर विचारों का आदान-प्रदान होता रहेगा और जैन शासन की प्रभावना मे सम्मिलित योगभूत बनते रहेंगे, इसी विश्वास के साथ। यात्रा के लिए मंगलकामना !

१ नवम्बर, १९८७ — आचार्य तुलसी

अणुव्रत भवन, नई दिल्ली

प्रेक्षा ध्यान शिविर का समापन

३ नवम्बर/युवाचार्यश्री के निदेशन में २५ अक्टूबर से ३ नवम्बर तक दसदिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। शिविर स्थल था अध्यात्म साधना केन्द्र, मेहरौली। आज अहिंसा समवसरण में आचार्यवर की सन्निधि में समापन कार्यक्रम था। शिविर मे हवाई युनिवर्सिटी के प्रो० ग्लेनपेज भी सम्मिलित थे। श्री पेज ने अपने भाषण मे प्रेक्षाध्यान पद्धति के पूरे विश्व मे प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर बल दिया। हालैण्ड के भारतीय मूल के निवासी डा० दर्शनसिंह गिल आलवुड (इंगलैंड), एन. केनावन (आयरलैंड), इरेना उपनीत (कनाडा), ने शिविर के अनुभव सुनाए। श्री जयवीरसिंह जैन, श्री जेठमल चौरड़िया, श्री अविनाश भाई ठक्कर ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री नवनीतभाई पटेल (प्रमुख स्थानकवासी श्रावक) ने युवाचार्यश्री की पुस्तक 'एसो पंच णमुक्कारो' के गुजराती अनुवाद की पुस्तक भेंट की। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्बोधन हुए।

चातुर्मास का अन्तिम दिन

५ नवम्बर/आज चातुर्मास का अंतिम दिन था। प्रातःकालीन प्रवचन मे आचार्यवर ने कहा—'चातुर्मास के समय ज्ञान, ध्यान का अच्छा क्रम चला। दिल्ली मे हमारे प्रवास एवं व्याख्यान के लिए बहुत शांत स्थल मिला। बाहर से आने वाले यात्रियो को भी उपासना का अच्छा अवसर मिला। व्यवस्था की दृष्टि से भी सभी को सतोष रहा।' रात्रि मे स्थानीय श्रावकों का श्रावक सम्मेलन आयोजित हुआ।

जैन विद्या प्रशिक्षण कक्षा

प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष प्रति रविवार जैन विद्या प्रशिक्षण कक्षा का समायोजन हुआ। इसमे पचास से अधिक युवक-युवतियों ने भाग लिया।

जैन विद्या प्रशिक्षण की दृष्टि से पत्राचार पाठमाला के पत्रों को लिया गया, जो जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित है। पत्रों मे पृथक्-पृथक् विषयों का विवेचन है। पत्रो का विश्लेपण व विवेचन मुनि सुमेरमल 'लाडनू' करते। श्री फरजनकुमार जैन का भी इसमे व्यवस्था की दृष्टि से योग रहा। इन पत्रों की चार परीक्षाएं हुईं। परीक्षा मे प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले भाई-बहिनो को पुरस्कार प्रदान किया गया। साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे स्थानीय महिला मण्डल की बहिनों की प्रति बृहस्पतिवार को एक विशेप कक्षा आयोजित होती। उसमें सम्मिलित होने वाली बहिनो को साध्वी प्रमुखाश्री जैन दर्शन का विशेप अध्ययन कराती थी।

चातुर्मास : एक झलक में

- भारत की राजधानी दिल्ली में चातुर्मास।
- आचार्यवर का प्रवास स्थल—अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२
- प्रवचन स्थल — अहिंसा समवसरण, कोटला लेन
- साधु—३१, साध्वी-२८, कुल-५९
- साध्वी प्रमुखाश्री का प्रवास स्थल—२२, कोटला लेन; अणुव्रत भवन से करीब ६०० मीटर दूर।
- प्रात: प्रवचन से पूर्व उपदेश—मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' व मुनि विजयराजजी।
- प्रवचन मे आचार्यवर द्वारा समवाओ का वाचन, कार्यक्रमो की प्रधानता तथा समय-समय पर विपयबद्ध प्रवचन।
- रात्रि मे प्रश्नोत्तरों का सुंदर क्रम, यह क्रम पर्युपण-प्रारभ के साथ शुरू हुआ, भाई-बहिनों द्वारा प्रस्तुत प्रश्नों को आचार्यवर की सन्निधि मे मुनि सुमेरमल 'लाडनू' समाहित करते। प्रश्नोत्तरों का क्रम बहुत ही व्यवस्थित चला।
- कार्यक्रमो का संयोजन-मुख्य रूप से मुनि सुमेरमल 'लाडनू', श्री टी. एम. लालाणी
- साध्वी प्रमुखाश्री की सन्निधि मे अनेक महिला गोष्ठियां आयोजित।
- रात्रि कार्यक्रमों मे मुख्यत: मुनि विजयकुमारजी द्वारा सुमधुर भजनों की प्रस्तुति, यदा कदा मुनि श्रेयासकुमारजी द्वारा क्षीणे स्वर मे गीत प्रस्तुत।
- साधु-साध्वियों की कृतियो का संयोजन करने वाली साहित्य समिति की चार बैठक हुई, जिसमें समिति के पांचो सदस्य उपस्थित थे। उसमें आचार्यश्री, युवाचार्यश्री का भी सान्निध्य प्राप्त था। समिति ने

कई निर्णय भी लिए।

- मद्रास के श्री नेमीचंद वोहरा की धर्मपत्नी १४ माह से वेले-वेले तप कर रही थी। आचार्यवर को तप के पारणे पर दान देकर वह अतिशय प्रफुल्लित हुई।
- २२ सितम्बर को आचार्यश्री की सन्निधि में स्थानीय तेरापंथी सभा की मीटिंग।
- सम्वत्सरी के वाद देश के विभिन्न भागों से कई संघ उपासनार्थ पहुंचे। उनमे पंजाव, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात व सुदूरवर्ती क्षेत्रों के सैकड़ों भाई-वहिन थे।
- एशिया महाद्वीप का रोटरी क्लव का एक वृहद् कार्यक्रम दिल्ली मे आयोजित था, उसमें सम्मिलित होने वाले सैकड़ों रोटेरियन आचार्यवर से मिले, वातचीत की।
- श्री भेरूंलाल धाकड़ द्वारा 'मेवाड़ यात्रा वर्णन' पुस्तक आचार्यवर को भेंट।

अणुव्रत भवन से विहार

६ नवम्बर/ अणुव्रत भवन से प्रस्थान कर आचार्यवर लाजपतनगर पधारे। वहां हनुमान मंदिर मे स्थानीय जनता द्वारा भावभीना स्वागत हुआ। मंदिर के ट्रस्टी श्री चौपड़ा ने आचार्यश्री का अभिनंदन किया। आचार्यवर का उद्वोधन हुआ। संयोजन श्री पुखराज सेठिया ने किया।

विश्व-धर्म प्रार्थना सभा में जैन प्रतिनिधि

२८,२९ अक्टूवर को इटली मे आयोजित विश्व-धर्म प्रार्थना सभा में जैन प्रतिनिधि के रूप मे एक आमंत्रणपत्र सेंट कम्युनिटी की तरफ से आचार्य प्रवर के नाम प्राप्त हुआ। आचार्यवर के संदेश को लेकर उस प्रार्थना सभा मे समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, समणी स्मितप्रज्ञाजी, धर्म संदेशवाहक श्री शुभकरण दसाणी एवं कुमारी राजप्रभा दसाणी उपस्थित हुए। ईसाइयों के सर्वोच्च गुरु पोप पाल द्वितीय की सन्निधि में आयोजित कोरोनेशन डे पर लगभग सात हजार व्यक्ति उपस्थित थे। विभिन्न देशो के प्रतिनिधियो ने पोप के प्रति भावाञ्जलि अर्पित की। पोप से व्यक्तिशः वातचीत हुई। आचार्यवर के संदेश को सुनकर वे प्रसन्न हुए। दसाणीजी अपनी राजस्थानी वेशभूषा—धोती, कुर्ता व पगड़ी के कारण वहां के लोगो मे आकर्षण का केन्द्र वने रहे।

६ नवम्बर को आचार्यवर की सन्निधि मे यात्रा की परिसम्पन्नता पर आयोजित एक कार्यक्रम मे समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी ने कहा—'वहां का आयोजन वहुत सुदर व व्यवस्थित था। क्रिश्चियन भिक्षुणी के साथ हमे वहां

रहने का अवसर मिला। उन्होंने हम लोगों के साथ आत्मीयतापूर्ण व्यवहार किया। जैन मुनि की आचार संहिता को सुनकर उन्हें आश्चर्य हुआ।'

समणी स्मितप्रज्ञाजी ने कहा—'इटली में अधिकांश लोग जैन धर्म के नाम तक से अपरिचित थे। २८ अक्टूबर को हमने अर्हत् वंदना समुच्चारित की। तत्पश्चात् जैन धर्म, तेरापंथ, आचार्यश्री तुलसी, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान आदि विषयों पर संक्षिप्त चर्चा की। दूसरे दिन विशेष कर युवक-युवतियों की एक संगोष्ठी समायोजित हुई, जिसमें प्रेक्षाध्यान के अन्तर्गत श्वास प्रेक्षा का प्रयोग कराया तथा उनकी जिज्ञासाओं को समाहित किया।

आचार्यवर ने कहा—'हमारी समणिया और श्रावक विदेशों में जाकर जैन धर्म की कितनी प्रभावना कर रहे है। थोड़े से प्रवास में इन लोगों का अच्छा स्वागत हुआ और विचारो का समादर हुआ।'

फरीदाबाद में

१० नवम्बर/हरियाणा के औद्योगिक नगर फरीदाबाद टाउन में आचार्यवर का नागरिक अभिनंदन किया गया। कार्यक्रम में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री विजय अग्रवाल, उपायुक्त श्री आर. के. सिंह (आई. ए. एस.), हरियाणा विधानसभा सदस्य श्री कुदनलाल भाटिया उपस्थित थे। फरीदाबाद जैन संघ के अध्यक्ष श्री वी. एन. जैन, उपाध्यक्ष श्री आर. के. जैन ने आचार्यवर का अभिनंदन किया। श्री वी. आर. चिडालिया ने आचार्यश्री परिचय दिया।

श्रीमती पद्मा जैन व श्यामजी ने संयुक्त स्वर लहरियो से अभिनंदन किया। शायर श्री मजबूर ने उर्दू की शायरी पेश की। श्री आर. के. सिंह ने कहा—'आज के भौतिकताप्रधान युग में आचार्यश्री का कठोर व परिश्रमी जीवन हम सबके लिए एक प्रेरणा है।' इस अवसर पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एवं साध्वी प्रमुखाश्री के प्रवचन हुए। श्री यू. एम. जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन श्री धनराज वैद ने किया। समारोह का आयोजन नीलम बाटा रोड स्थित वैश्य धर्मशाला में हुआ।

विशेष संगोष्ठी

११ नवम्बर/रात्रि ७.३० बजे फरीदाबाद लायन्स एवं रोटरी क्लब द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित संगोष्ठी मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के विशेष वक्तव्य हुए। संगोष्ठी का विषय था—'राष्ट्र चरित्र निर्माण में अणुव्रत का योगदान।' मुनि महेन्द्रकुमारजी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए।

शिक्षक संगोष्ठी

१२ नवम्बर/ रात्रि ७.३० बजे शिक्षक संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमे काफी संख्या मे शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थी। संगोष्ठी का विषय था—

'शिक्षा का प्रायोगिक स्वरूप।' युवाचार्यश्री ने अपने संबोधन में कहा—'शिक्षा के मूलभूत चार आधार है—शिक्षा,शिक्षक, शिक्षार्थी और अभिभावक। शिक्षा प्रणाली के द्वारा आज जो कुछ सिखाया जा रहा है, वह व्यक्ति को मात्र बौद्धिक बना रहा है। इससे व्यक्ति और समाज के बीच असंतुलन बढ़ता जा रहा है। संतुलन को प्रस्थापित करने के लिए अणुव्रत व जीवन-विज्ञान की शिक्षा अत्यन्त उपयोगी है।' आचार्यवर ने कहा—'बालक के चरित्र-निर्माण के लिए अध्यापक और अभिभावक का चरित्र-निर्माण आवश्यक है।' इस अवसर पर मुनि किशनलालजी ने अपने विचार रखे।

मजदूर सम्मेलन

१३ नवम्बर/रात्रि मे आयोजित मजदूर सगोष्ठी मे काफी संख्या मे मजदूर व मालिक उपस्थित थे। इसका विषय था—'मालिक और मजदूर का पारस्परिक दायित्व।' आचार्यवर ने अपने उद्बोधन में कहा—'आज हिन्दुस्तान के लोगो मे मानवीयता, राष्ट्रीयता और धार्मिकता की कुछ कमी महसूस हो रही है। इसके लिए मैं सबसे अधिक जिम्मेदार मानता हूं धर्म को। क्योकि उसने मनुष्य को परमात्मा से जोड़ने की बात तो कही, पर मनुष्य से जुड़ने की बात बहुत कम सिखाई। मै आपसे एक ही बात कहना चाहता हूं कि वे अणुव्रत के माध्यम से नीतिमय जीवन जीने का अभ्यास करें।'

युवाचार्यश्री ने कहा—'सामाजिक जीवन सम्बन्ध का जीवन है। जहां सम्बन्ध है, वहां टकराव की स्थिति को भी नकारा नही जा सकता। आज के संबंध मस्तिष्क के है, हृदय के नही। इसलिए पदार्थ की उपलब्धि को लेकर मालिक व मजदूर के बीच कोई अंतर नहीं है। मानवीय संवेदना की अनुभूति द्वारा इस अतर को पाटा जा सकता है।' इस अवसर पर मुनि महेन्द्रकुमारजी का भी वक्तव्य हुआ।

मध्याह्न महिला मंडल की एक गोष्ठी आयोजित हुई। १४ को रात्रि में साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे साध्वियो ने अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया। साध्वी त्रिशलाकुमारीजी, विवेकश्रीजी ने गीत, सुषमाकुमारीजी ने मुक्तक व स्वर्णरेखाजी ने क्षणिकाएं पेश की। साध्वी निर्वाणश्रीजी ने अणुव्रत पर प्रकाश डाला। साध्वी सूरजकुमारीजी ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी कल्पलताजी ने किया। अंत मे साध्वी प्रमुखाश्री का विशेष उद्बोधन हुआ।

बुद्धिजीवी प्रेक्षाध्यान शिविर

५ नवम्बर/युवाचार्यश्री के निदेशन में लगे बुद्धिजीवी प्रेक्षाध्यान शिविर का आज समापन था। इस शिविर की यह विशेषता थी कि इसमें भाग लेने वाले अधिकांश शिविरार्थी शैक्षणिक दृष्टि से विशेष योग्यता सम्पन्न थे।

इस अवसर पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के वक्तव्य हुए। समापन कार्यक्रम के साथ विदाई कार्यक्रम भी जुड़ा हुआ था। अनेक भाई-बहिनों ने अपने गीत व भाषणो से अपनी भावनाएं रखी।

फरीदाबाद क्षेत्र कई किलोमीटर क्षेत्र मे फैला हुआ है। दूर-दूर तक फैले श्रद्धालु परिवारो से व्यक्तिगत परिचय के लिए आचार्यवर ने पूरा समय दिया। प्रातःकालीन प्रवचन में लोगों की अच्छी उपस्थिति होती थी। रात्रिकालीन कार्यक्रमों मे सभी वर्गो व कौमों के लोगों ने सोत्साह भाग लिया।

फरीदाबाद से बदरपुर, सुखदेव विहार, न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी, महारानी बाग, सिद्धार्थ एन्कलेव होते हुए आज आचार्यवर पुनः अणुव्रत भवन पधार गए।

मुनि सुमेरमल राष्ट्रपति भवन में

४ दिसम्बर/मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' एव अणुव्रत कार्यकर्त्ताओं के एक प्रतिनिधिमण्डल ने राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमण से भेंट की। मुनि सुमेरमल ने राष्ट्रपति को आचार्यश्री तुलसी एवं अणुव्रत कार्यक्रमो की जानकारी देते हुए बताया—'राष्ट्रीय एकता एवं भावात्मक विकास के लिए आचार्यश्री तुलसी प्रयत्नशील हैं। नैतिक व चारित्रिक मूल्यों को विकसित करने के लिए अणुव्रत आन्दोलन गत चार दशको से सक्रिय है।

राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरमण ने आचार्यश्री तुलसी द्वारा राष्ट्र के नैतिक उत्थान हेतु किए जा रहे प्रयासों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा—'आज नैतिक मूल्यो के गिरावट के माहौल मे देश के आध्यात्मिक संस्कारों को उजागर करना होगा। जब तक हम महापुरुषों के बताए मार्ग पर नही चलेंगे, समस्याओ से समाधान नहीं मिल पाएगा। अणुव्रत आन्दोलन नैतिक मूल्यो को विकसित करने का कार्य कर रहा है, इसकी मुझे प्रसन्नता है।'

प्रतिनिधिमंडल मे मुनि विजयकुमारजी, मुनि उदितकुमारजी, सांसद श्री रामचंद्र विकल, उत्साही कार्यकर्त्ता श्री अमरचन्द कुण्डलिया, अणुव्रत कार्यकर्त्ता पंडित ओमप्रकाश कौशिक भी राष्ट्रपति भवन मे साथ थे। श्री कुण्डलिया ने राष्ट्रपतिजी को अणुव्रत साहित्य भेंट किया।

प्रधानमंत्री आचार्यश्री तुलसी से मिले

भारतीय संस्कृति मे ऋषि-मुनियों व सत्ताधीशों के गरिमापूर्ण सम्बन्ध रहे है। जब-जब राजाओ, राजनेताओ को दिशादर्शन की अपेक्षा हुई, ऋषि-मुनियो ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आचार्यश्री तुलसी सत परम्परा के प्रमुख आचार्य है। देश के चारित्रिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए व नैतिक मूल्यो की स्थापना और व्यापकता प्रदान करने के लिए राजनेता, विचारक, साहित्यकार, पत्रकार आचार्यश्री से दिशादर्शन,

प्राप्त करते हैं। भारत के प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू से लेकर श्री लाल-बहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री मोरारजी देसाई तक सभी ने समय-समय पर आचार्यश्री के महत्वपूर्ण मार्गदर्शन का लाभ उठाया है।

इसी शृंखला मे वर्तमान प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने ५ दिसम्बर को अणुव्रत भवन मे आचार्यश्री से भेंट की। ठीक १०.०७ बजे पर प्रधानमंत्री ने हाथ जोड़कर आचार्यश्री को प्रणाम किया और वहां उपस्थित एक-एक व्यक्ति के आत्मीय अभिवादन को बड़ी शालीनता के साथ स्वीकार किया। प्रधानमत्री पास मे रखी कुर्सी पर बैठने लगे, इतने मे उन्होंने सहज स्वर में कहा—'आपके सामने ऊपर बैठना अजीब सा लगता है। मैं नीचे ही बैठूंगा।' इतना कहकर बड़ी स्फूर्ति के साथ नीचे बिछे कालीन पर बैठ गए।

अणुव्रत भवन में समवेत भाई-बहिनों को सबोधित करते हुए प्रधान मत्री श्री राजीव गांधी ने कहा—'आज मुझे आचार्यजी से मिलने व बात करने का एक अवसर मिला है, इसकी मुझे बहुत खुशी है। इससे पहले मैं बीकानेर मे आपसे मिला था। उस समय जो बात हुई थी, मैं आज भी उसी रास्ते पर चल रहा हूं। देश में यद्यपि समस्याएं बहुत हैं, किन्तु मेरे दिमाग पर उनका बोझ नही है। बोझ है तो केवल एक समस्या का, वह समस्या है भारत की असली व अंदरुनी शक्ति कमजोर हो रही है। वह शक्ति है धार्मिकता की। वह ऐसी शक्ति है, जो मनुष्य को अपने उसूलो, सिद्धान्तो से हटने नही देती है।'

भारत की आध्यात्मिक संपदा से अभिभूत होकर प्रधानमंत्री ने आगे कहा—'इतिहास साक्षी है भारत से हर समय एक रोशनी मिलती रही है। यहां से नए विचार और नई भावनाएं दुनिया भर मे पहुची है। आज भी वे विचार व आवाज उठे और पूरे विश्व में फैल जाए, यह आवश्यकता है। हमारी विदेश नीति मानवीय दृष्टिकोण के आधार पर टिकी हुई है। इस दृष्टि के बिना न शाति की स्थापना हो सकती है और न ही विकास हो सकता है।'

टेक्नोलॉजी और साइंस का विकास मानवता के हित मे कैसे हो? इस पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा 'यह तभी संभव है जब धर्म और विज्ञान के बीच संतुलन हो। सरकार साधन दे सकती है, संस्थान दे सकती है, पर संतुलन कायम नही कर सकती। यह काम धार्मिक लोगों का है। वे हमारा मार्गदर्शन करें और इसके प्रति सजग रहें, तो देश को दिशा मिल सकती है। आचार्यजी संतुलन बनाने का काम कर रहे है, इस बात की प्रसन्नता है। आज जो मुझे मौका मिला है, उसके लिए मैं बहुत आभारी हूं।'

युवाचार्यश्री ने कहा—'समाज हो और समस्या न हो, यह कभी

संभव नहीं है। एक से दो होने का अर्थ ही है समस्या को निमन्त्रण। समस्या हो और उसका समाधान न हो, यह भी संभव नहीं है। हर समस्या का समाधान है अनेकांत दृष्टिकोण। केवल राजनीति, समाजनीति या धर्मनीति से समस्या का समाधान नहीं मिलेगा। तीनों क्षेत्रों के लोग मिलजुलकर प्रयत्न करें, तो सहज रूप मे समाधान निकल आएगा। आचार्यश्री ने इसके लिए अणुव्रत की बात कही है। इसके द्वारा हम समन्वित प्रयास करें, तो एक निष्कर्ष तक पहुंच सकते हैं।'

राष्ट्रीय समस्याओं के संदर्भ में बोलते हुए आचार्यवर ने कहा—'आज राष्ट्र समस्या से संकुल है। प्रधानमन्त्री राष्ट्र के कण-कण को जानते है। हम भी जानने का प्रयत्न कर रहे हैं। हमारी दृष्टि मे समस्याओं का उत्स राष्ट्रीय नहीं, मानवीय है। इनका समाधान संकीर्ण दायरे से नहीं, व्यापक दायरे से उभरेगा। व्यापक दृष्टि का निर्माण करने के लिए हमे अपने दृष्टिकोण को भी मानवीय बनाना होगा। कम्युनिस्ट हो या कांग्रेसी, हिंदू हो या मुसलमान, सिख हो या जैन, संकीर्ण दृष्टि से समस्या का समाधान नहीं होगा। इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे सोच की मूलभूत बुनियाद मानवीय हो।'

राजीव गांधी जब कांग्रेस के महासचिव थे, तब बीकानेर में वे आचार्यवर से मिले थे। उनकी आचार्यवर ने चर्चा की। श्री गांधी के नाना पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ हुए प्रथम मिलन का प्रसंग आचार्यवर ने बताया। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने विचार रखे। श्री टी. एम. लालाणी ने तेरापंथ समाज की ओर से प्रधानमन्त्री का स्वागत किया। लगभग पच्चीस मिनट तक चला यह कार्यक्रम बड़ा ही शांत, भव्य और हृदयग्राही था। इस अवसर पर श्री जसवंतराय जैन ने साहित्य, श्री नरेश गोयल ने आचार्यश्री का एक बृहद् चित्र प्रधानमन्त्री को भेंट किया।

इस प्रभावी कार्यक्रम के बाद आचार्यवर प्रधानमन्त्री के साथ भीतरी कक्ष मे पधार गए। वहां लगभग ४५ मिनट तक दो महान् व्यक्तियों में राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय और मानवीय मसलों पर गंभीर मंत्रणा हुई। वह मंत्रणा इतिहास का एक दुर्लभ दस्तावेज है।[1] इस प्रकार सित्तर मिनट अणुव्रत भवन में बिताकर प्रधानमंत्री वहां से विदा हुए।

पिलानी से छात्राओं का एक दल अणुव्रत भवन में आज आचार्यश्री से मिला। आचार्यश्री ने उन्हें उद्बोधन प्रदान किया।

आचार्य तुलसी दीक्षा दिवस

१० दिसम्बर/आचार्यवर का आज ६३ वां दीक्षा दिवस बड़े ही हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया। साध्वियों के समूह गीत से कार्यक्रम का

---

१. विस्तृत बातचीत देखें—'अणुव्रत' पत्र में, अंक १०, १० अप्रैल १९८८

प्रारम्भ हुआ। साध्वी शीतलयशाजी व साध्वी सुषमाकुमारीजी ने कविता तथा युवा मुनियों ने अभ्यर्थना गीत प्रस्तुत किया। साध्वी वर्द्धमानश्रीजी ने स्व-निर्मित आचार्यवर का चित्र भेंट किया। मुनि मदनकुमारजी व साध्वी कल्पलताजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाजी ने आचार्यवर की लोक कल्याणकारी प्रवृत्तियों व तेरापंथ को उनके द्वारा मिले अवदानो की चर्चा की। आचार्यवर ने अपनी दीक्षा के समय की घटनाओ का सजीव वर्णन किया।

समण स्थितप्रज्ञजी, सिद्धप्रज्ञजी, श्रुतप्रज्ञजी ने पिछले वर्ष एक वर्ष की सावधिक समण दीक्षा स्वीकार की थी। उसकी पूर्णता पर अगले तीन वर्षो के लिए पुनः समण दीक्षा हेतु तीनो समणो ने आचार्यवर से प्रार्थना की। आचार्यवर ने इस अवसर पर तीनो समणों को तीन वर्ष के लिए समण दीक्षा प्रदान की।

१३ दिसम्बर/आचार्यश्री के दीक्षा दिवस का द्वितीय चरण आज दिल्लीवासियों की सुविधानुसार रविवार को आयोजित हुआ। इस अवसर पर अनेक भाई-बहिनो ने अपने गीत व विचारो से आचार्यवर का गुणगान किया।

१३ दिसम्बर को साय आचार्यवर अणुव्रत भवन से विहार कर नया बाजार पधारे। वहां विरधीचन्द जैन स्मृति भवन मे रात्रिकालीन प्रवास हुआ। दूसरे दिन प्रातः आचार्यवर सब्जी मण्डी मे कठोतिया भवन पधारे।

जैन आगम साहित्य भारतीय संस्कृति की धरोहर

१४ दिसम्बर/दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय में जैन आगम भेट समारोह का आयोजन हुआ। समारोह का आयोजन जैन आगमों के समालोचनात्मक संपादन के उपलक्ष में किया गया था। जैन विश्व भारती, लाडनू की ओर से प्रकाशित ये जैन आगम आचार्यश्री तुलसी के वाचना प्रमुखत्व व युवाचार्यश्री के संपादन मे चल रही आगम-वाचना का परिणाम है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष डा० के. सच्चिदानन्द मूर्ति, दिल्ली विश्वविद्यालय के कार्यवाहक उपकुलपति डा० गंगराड़े, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति डा. डी. एस. कोठारी कार्यक्रम मे उपस्थित थे।

डॉ० मूर्ति ने कहा—'जैन आगमो का इसलिए महत्त्व है कि इससे हमे अनाग्रह दृष्टि का बोध मिलता हैं। यह वैदिक, बौद्ध और जैन दर्शन के बीच आर्य और द्रविड़ संस्कृति व उत्तरी व दक्षिणी भारत के बीच समन्वय का एक महान् बोध देती है।' डॉ० मूर्ति ने सुझाव दिया—'जैन साहित्य और आदर्शो के महत्त्व को देखते हुए दिल्ली के किसी विश्वविद्यालय मे 'जैन अध्ययन विभाग' खोला जाना चाहिए। जैन विश्व भारती को भी विश्वविद्यालय का

दर्जा दिया जाना चाहिए।'

डॉ० डी. एस. कोठारी ने कहा—'विश्व को अहिंसा के जिस महान् सिद्धान्त की जरूरत है, वह हमें जैन आगमों में वैज्ञानिक रूप मे मिलता है।' उन्होंने दिल्ली में समस्त विश्वविद्यालयों द्वारा अहिंसा और विज्ञान के समन्वित अध्ययन पर एक सयुक्त केन्द्र स्थापित किये जाने की आवश्यकता पर वल दिया।

आगम मर्मज्ञ व व्याख्याता युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा—'हमारे प्राचीनतम आगम ग्रन्थो में ज्ञान-विज्ञान की ऐसी गूढ़ पहेलियां हैं, जिन तक हमारा आधुनिक विज्ञान पहुंच ही नहीं पाया है। पर हमारा यह दुर्भाग्य है कि आज हमने अपने ज्ञान को केवल पिछली चार शताब्दियो तक सीमित कर दिया है। इसलिये इस अनमोल थाती से हम स्वयं वंचित होते जा रहे हैं। आचार्यश्री के नेतृत्व मे अनेक अभूतपूर्व कार्य हुए हैं। उनमें से हम केवल आगम कार्य को लें, तो वह भी वर्तमान विद्वानों की दृष्टि में एक स्मारक के रूप मे है।'

आगमों के वाचना प्रमुख आचार्यश्री तुलसी ने कहा—'जैन आगम साहित्य भारतीय संस्कृति की धरोहर है। जैन आगम मानवजाति को वे संस्कार दे सकते हैं, जिनसे विश्व मे शान्ति और अहिंसा की स्थापना की जा सके। जैन परम्परा मे भी जैन आगम साहित्य का वही स्थान है, जो वैदिक साहित्य में वेदों का है।' आगम कार्य के प्रकाशन को पूरी तरह असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण से जुडा प्रयास वताते हुए आचार्यश्री ने कहा—'आगम रूपी इस फूल की सुगन्ध को फैलाना अब विद्वानो का काम है।'

प्रो. गंगराड़े, विज्ञान संगठन के अध्यक्ष प्रो० सी. एल. तलेसरा, भागलपुर वि. वि. के गांधी दर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो० रामजीसिंह, जैन विश्व भारती के कुलपति श्री श्रीचन्द रामपुरिया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन मुनि महेन्द्रकुमारजी ने किया। प्रकाशित आगम साहित्य को श्री खेमचंद सेठिया ने दिल्ली विश्वविद्यालय को भेंट किया।

कार्यक्रम के पश्चात् आचार्य प्रवर का प्रवास तिमारपुर रोड़ स्थित श्री मांगीलाल सेठिया के निवास स्थान पर हुआ। श्री सेठिया आचार्य तुलसी प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष व वरिष्ठ कार्यकर्त्ता हैं। १५ दिसम्बर को मॉडल टाऊन स्थित श्री लाभचन्द पुगलिया के मकान मे तथा १६ को गुलावी वाग में नजरकंवर सुराणा आई होस्पिटल में आचार्यवर विराजे। यह अस्पताल चूरू के वरिष्ठ श्रावक श्री डूगरमल सुराणा का है। वहां से सदर थाना रोड़ होते हुए १७ दिस० को सायं अणुव्रत भवन पधार गये।

जापानी दल प्रशिक्षित

जापान के 'ओकी डी योग आश्रम' के २५ व्यक्तियों के एक दल ने

आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के मार्गदर्शन में पंचदिवसीय प्रशिक्षण शिविर में जैन धर्म का ज्ञान व प्रेक्षाध्यान का अभ्यास किया। दल के सभी सदस्य प्रेक्षाध्यान के प्रयोग हेतु लाडनूं भी गए। वहां के चारदिवसीय प्रवास के बाद पुनः दिल्ली पहुंच गए। जापानी दल आज स्वदेश रवाना हो रहा था। १९ दिसम्बर को समापन कार्यक्रम मे दल के नेता श्री मोरीकोनूसू ने कहा—'भारत के बारे में जो ख्याति सुन रखी थी, उससे अधिक ही यहां देखने को मिली है। बुद्ध और महावीर ने भारत जैसे महान् देश में जन्म लिया और उन्ही की बदौलत यहां हमें अहिंसा और शांति का उपदेश ही नही, क्रियात्मक स्वरूप देखने को मिला।' उन्होंने कहा—'हम जापान में अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान के संदेश को फैलाने का प्रयास करेंगे।'

युवाचार्यश्री ने कहा—'जापान के लोग अहिंसा, त्याग, संयम के संपर्क मे आए हैं। यह संदेश न केवल जापान में फैलाया जाए, बल्कि पश्चिमी देशों के साथ अमेरिका और युरोप तक इस संदेश को फैलाया जाए।'

आचार्यश्री ने कहा—'जापान बहुत दृष्टियों से विकसित है। वहां भौतिक समृद्धि चरम सीमा पर है। जापानी परिश्रमी एवं राष्ट्रीयता की भावना से भरे हुए हैं, फिर भी मानसिक तनाव बढ़ रहा है, आत्महत्याएं बढ़ रही हैं।' उन्होंने कहा—'जापान के लोग आध्यात्मिक सिद्धान्तों को अपनाकर अपने आपमे शांति का अनुभव करें।'

इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्री, बाल भवन की निदेशक श्रीमती सेठ ने अपने विचार रखे। जैन विश्व भारती की ओर से जापानी प्रशिक्षणार्थियो को प्रमाणपत्र दिए गए। कार्यक्रम का संचालन बाबूजी श्री शंकरलाल मेहता ने किया।

विकलांगों को जयपुर पांव

२० दिसम्बर/अहिंसा समवसरण मे आचार्यश्री की सन्निधि में दिल्ली तेरापंथ महिला मंडल द्वारा ३१ विकलांगों को 'जयपुर पांव' प्रदान किये गए। २१ विकलांगों ने शराब व मास का सेवन न करने का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर का इस अवसर पर उद्बोधन हुआ। महावीर विकलांग सहायता समिति दिल्ली के चेयरमैन श्री सिंघवी ने विकलांग भाइयो को 'जयपुर पांव' दिए जाने के कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

वाकई में रामदास था

२३ दिसम्बर/कालू (बीकानेर) के श्री जयराज नाहटा ने आज पुनः आचार्यश्री के दर्शन किए। आज उसका चेहरा मायूस था। यह स्वाभाविक था, क्योंकि तीस हजार रुपये का सामान एक तिपहिया स्कूटर में भूल गया था। उस स्कूटर से वह रेलवे स्टेशन पहुचा था। जयराज वहां से ट्रेन

पकड़कर कालू चला गया।

उस तिपहिया स्कूटर के चालक रामदास ने उस थैले को देखा, तो उसको समझते देर न लगी कि यह थैला उस यात्री का है। वह ढूंढ़ता-ढूंढ़ता अणुव्रत भवन पहुचा और वहां के अधिकारियों को वह थैला ज्यों का त्यों सभला दिया। अधिकारियों ने उसकी ईमानदारी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए रामदास को ५५ रु. ईनाम के रुप में दिए। आज भी भारत में ईमानदारी का पूर्ण अकाल नही पड़ा है। अभी भी रामदास जैसे व्यक्ति भारत की मूल थाती को सुरक्षित रखे हुए हैं। जयराज के पुनः दिल्ली आने पर उसे वह थैला उसी रूप मे मिल गया। जयराज रामदास से मिला नही था, किन्तु इस घटना के वाद उसके मुंह से ये शब्द निकल पड़े—'रामदास वाकई में रामदास था।'

जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों की वैठक

२३ २४ दिसम्बर को जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों की एक विशेष मीटिंग आयोजित हुई। दो दिन की पांच वैठकों मे जैन विश्व भारती को डीम्ड युनिवर्सिटी (मान्य विश्वविद्यालय) वनाने, शैक्षणिक व सांस्कृतिक विकास तथा योगक्षेम वर्ष—इन तीन विषयों पर चिंतन किया गया। अधिकारियों ने इस वात के लिए सहमति दी कि जैन विश्व भारती को डीम्ड युनिवर्सिटी वनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। इसके चार प्रकोष्ठ हैं—प्राकृत, जैन विद्या, अहिंसा एवं विश्वशांति, जीवन-विज्ञान व प्रेक्षाध्यान।

स्थान स्थान पर अणुव्रत विद्यालय को चलाने का गहरा चिंतन हुआ। विश्व भारती के अन्तर्गत एक समिति की स्थापना का निर्णय लिया गया। समिति का नाम रहेगा 'अणुव्रत शिक्षा संकाय। प्राथमिक विद्यालय का नाम 'अणुव्रत वाल भारती' सैकेण्डरी स्कूल का 'अणुव्रत विद्यालय' व कॉलेज का 'अणुव्रत महाविद्यालय' नाम निर्णीत हुआ। वैठक में काफी अधिकारी उपस्थित थे।

संयुक्त अधिवेशन

उद्घाटन समारोह

२५ दिसम्बर/तेरापंथ की दो संगठनमूलक संस्थाओं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का संयुक्त वार्षिक अधिवेशन अहिंसा समवसरण में आचार्यश्री के सान्निध्य में आज प्रातः ९.३० वजे प्रारम्भ हुआ। मुनि मधुकरजी ने त्रिपदी वंदना करवाई। तेरापंथ महिला मंडल, नई दिल्ली की श्रीमती सुनीता जैन ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री श्रीमती शान्ता पुगलिया ने संयोजकीय वक्तव्य दिया।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा—

'आचार्य प्रवर की सूझबूझ से युवा एवं महिला शक्ति ने करवट बदली है, इतिहास की धारा को मोड़ा है तथा युग के साथ चलने का संकल्प लिया है। इन दोनो संस्थाओं का कार्य एक है, मजिल एक है, रास्ता एक है। लेकिन दोनो संस्थाओ की यात्रा अलग-अलग जा रही थी। वह क्षण उपस्थित हुआ है, जब एक ही मजिल के रास्ते मे चलने वाले दो संस्थान संयुक्त अधिवेशन के माध्यम से प्रस्तुत हुए हैं।'

इस अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री पदमचंद पटावरी ने कहा—'दोनों संस्थाएं अपने-अपने स्वतत्र अस्तित्व के साथ पिछले कुछ वर्षो मे सफल यात्रा करते हुए आज इस पडाव पर उपस्थित हुई है।' उन्होने कहा—'आचार्यश्री जिस गति से परिवर्तन चाहते है, उसके लिए हम हमारी क्षमताएं जागृत करें और अपने आपको उस रूप में प्रस्तुत करें।'

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सज्जनदेवी चौपडा ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे कहा—'किसी भी समाज के लिए युवक संगठन और महिला समाज का संयुक्त अधिवेशन होना गौरव का विषय है। यह अधिवेशन कोई एग्रीमेट नही, बल्कि एक चुनौती है। इस अधिवेशन पर हम सोचने के ढग को बदलें। सडी-गली, अर्थहीन व रूढ परम्पराओ को बदलें। आशा है यह अधिवेशन एक नई क्रांति के साथ समाज को गति देगा।'

महिला मण्डल एवं तेयुप के सदस्यो के सामूहिक सगान के बाद अभातेयुप के मंत्री श्री भंवरलाल डागा ने परिषद् का तथा अभातेमम की मंत्री श्रीमती शान्ता पुगलिया ने मंडल का वार्षिक प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। इसी क्रम मे साहित्य समर्पण का कार्यक्रम भी रखा गया, जिसमे तेयुप प्रकाशन की पुस्तकें, युवादृष्टि व तेयुप समाचार आचार्य प्रवर को भेंट किया गया।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने उद्बोधन मे कहा—'आध्यात्मिक चेतना और सामाजिक चेतना दोनों का एक साथ विकास हो। अगर केवल सामाजिक चेतना का ही विकास होता है, तो वह खतरनाक और केवल आध्यात्मिक चेतना का विकास हो, तो समाज नही चलता। इसलिए यह जरूरी है कि दोनों का एक साथ विकास हो। आध्यात्मिक व्यक्ति अपने मे सिकुड जाता है और सामाजिक व्यक्ति बढ़ता जाता है। इसी प्रकार अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् और अखिल भारतीय तेरापथ महिला मंडल का सदस्य वही रह सकता है, जिसमें सामाजिक चेतना व आध्यात्मिक चेतना एक साथ जागृत हो। तेयुप संगठन व महिला मंडल का यथोचित विस्तार हुआ है और आगे यह जरूरी है कि वे काम अधिक व राजनीति कम करें। इस पर गहराई से विचार करना जरूरी है।'

आचार्यश्री ने अपने मंगल उद्बोधन मे कहा—'महिलाएं एवं युवक अपनी प्राथमिकता निर्धारित करें। युवा शक्ति एक ऐसी शक्ति है, जिसकी

हमको एवं समाज को ही नही वल्कि संसार को अपेक्षा है। युवा शक्ति के विना काम नही हो सकता। दिमाग वहुत गहरा चिंतन कर सकता है, परन्तु चल नही सकता। युवा शक्ति उपयोगी वने, यह अपेक्षा है। युवा शक्ति सक्षम रहे, स्वावलम्वी वने, अमीरी-गरीवी दोनों से ऊपर उठे, पंचशील को कभी न भूले, धर्मशील वनी रहे। जो व्यक्ति धर्मशील होगा, वह व्यक्ति उत्तरोत्तर गति करेगा, वह सच्चा अमीर वन जायेगा, यह मेरा विश्वास है।'

संयुक्त अधिवेशन का द्वितीय चरण दोपहर १.३० वजे अणुव्रत भवन के प्रांगण में आचार्यश्री के सान्निध्य में प्रारम्भ हुआ। इस गोष्ठी का विपय था —'सगठन सक्रिय कैसे हो तथा योगक्षेम वर्प में युवक और महिलाएं किस प्रकार अपना योगदान दे। अभातेयुप के संगठन मंत्री श्री पन्नालाल टाटिया ने संयोजकीय वक्तव्य दिया।

साध्वी कल्पलताजी, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचंद सेठिया, श्री पटावरी, श्रीमती चौपडा, वम्वई परिपद् के मंत्री श्री राजकुमार चपलोत, महिला मंडल कलकत्ता की श्रीमती मंजूदेवी सुराणा एव तेरापंथ वुद्धिजीवी मंच के सयोजक श्री चैनरूप भसाली ने अपने विचार रखे। आचार्यवर का उद्वोधन हुआ।

प्रथम दिन के तीसरे चरण के कार्यक्रम मे अभातेयुप एव अभातेममं के अध्यक्षीय कक्ष मे अलग-अलग आंचलिक वैठकें आयोजित की गई।

चतुर्थ चरण में सायं ३.३० वजे अणुव्रत भवन मे आचार्यश्री के सान्निध्य में प्रतिनिधियो की परिचय गोष्ठी रखी गई। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिपद् एवं अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के सदस्यो के परिचय के पश्चात् आचार्य प्रवर ने उद्वोधन दिया।

पंचम चरण का कार्यक्रम अन्तरंग गोष्ठियों के रूप में रखा गया। महिला मंडल की अंतरंग गोष्ठी साध्वी प्रमुखाश्री के प्रवास-स्थल पर रखी गई तथा युवक परिषद् की अंतरंग गोष्ठी संघ परामर्शक मुनि मधुकरजी के सान्निध्य मे अहिंसा समवसरण मे रखी गई।

द्वितीय दिवस

२६ दिसम्वर/आज प्रातःकालीन कार्यक्रम दिल्ली महिला मंडल के गीतसे प्रारम्भ हुआ। आज का विषय था—'सामाजिक समस्याएं एवं हमारा दायित्व।' अभातेयुप के व्यसनमुक्ति प्रकोष्ठ के संयोजक श्री हंसराज वेताला, श्री लक्ष्मण सिंह कर्णावट (उदयपुर), वंवई तेमम अध्यक्ष श्रीमती मीना सुराणा, श्रीमती कमला चौपड़ा (मद्रास) ने विषय पर अपने विचार रखे। साध्वियों के गीत के वाद साध्वी जिनप्रभाजी ने दहेज उन्मूलन व समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी ने संस्कार निर्माण विषय पर अपने महत्त्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। सरदार

शहर तेयुप अध्यक्ष श्री अशोक नाहटा ने सरदारशहर दिग्दर्शिका भेट की। आचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री के इस अवसर पर उद्बोधन हुए। कार्यक्रम का संयोजन श्री पन्नालाल टांटिया ने किया।

मध्याह्नकालीन सामूहिक संगोष्ठी का विषय था—'हमारी भावी योजनाएं'। विषय पर श्रीमती सरोज बरमेचा (लाडनूं), श्री छाया कोठारी (राजनादगांव), श्री अभातेयुप के उपाध्यक्ष श्री सुभाष सुराणा (ईडवा); सहमंत्री श्री सुरेन्द्र जैन (भिवानी), श्री मूलचन्द डागा (कलकत्ता) ने अपने उपयोगी विचार रखे। संयोजन अभातेमम की उपाध्यक्ष श्रीमती तारादेवी सुराणा ने किया। अन्त मे आचार्यश्री का उद्बोधन हुआ।

अंतिम बैठक

२७ दिसम्बर/सरदारशहर महिला मंडल की युवति बहिनों के गीत से संयुक्त अधिवेशन की अतिम बैठक का प्रारम्भ हुआ। मंच का संचालन श्रीमती शांता पुगलिया ने किया। मुनि दिनेशकुमारजी ने सुमधुर गीत व साध्वी निर्वाणश्रीजी ने अपने विचार रखे।

मुनि मधुकरजी ने प्रतिनिधियों को सबोधित करते हुए कहा—'परिषद् की हर शाखा कार्यकर्ताओ के निर्माण को अपने हाथ मे ले। एक-एक कार्यकर्ता यह संकल्प करे कि वह पांच-पांच कार्यकर्ता तैयार करेगा। कार्यकर्ता के मन में कार्य के प्रति निष्ठा अधिक और प्रदर्शन की भावना कम हो। वह नीव का पत्थर बनने की कोशिश करे, गुबद बनने की नही।'

साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—'संगठन मे शक्ति होती है और जहां शक्ति होती है, वहा असंभव भी संभव में परिवर्तित हो जाता है। किसी भी अवरोध के समय मुह नही मोडना चाहिए, अपितु हर स्थिति का साहस के साथ सामना करना चाहिए।'

युवाचार्यश्री ने कहा—'हमारे सामने दूसरी श्रेणी के कार्यकर्ता बहुत है, पर मैं चाहता हूं कि अब प्रथम श्रेणी के कार्यकर्ताओ का भी उदय हो। जीवनदानी कार्यकर्ता प्रथम श्रेणी के कार्यकर्ता कहे जाते है। हमारी दूसरी अपेक्षा है कि समाज मे गृहस्थ जैन विद्वानो का निर्माण हो। योगक्षेम वर्ष तक कम से कम ७५ छात्रो को इस दिशा मे अवश्य सक्रिय होना चाहिए।'

आचार्यश्री ने कहा—'परिषद् व मंडल से जुडा हर सदस्य अपने संघ की गतिविधियो की प्रारंभिक जानकारी अवश्य रखे। इसके लिए एक सामूहिक प्रयत्न करना चाहिए। मै समझता हूं कि इस सम्मेलन मे भाग लेने वाले प्रतिनिधि जैन धर्म, तेरापंथ, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान व विसर्जन को अच्छी तरह समझे।' इस प्रकार 'त्रिदिवसीय संयुक्त अधिवेशन

अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

अधिवेशन : एक नजर में

- अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् व अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का प्रथम बार संयुक्त अधिवेशन।
- श्री सोहनराज तातेड़ 'युवकरत्न' अलकरण से अलकृत। मूलत: जसोलवासी श्री तातेड सम्प्रति जलप्रदाय विभाग, राजस्थान के अधिशासी अभियता है।
- श्रीमती मोहनीदेवी तातेड़ 'नारीरत्न' अलंकरण से सुशोभित, रतनगढवासी स्वर्गीय श्री भीवराज तातेड की वह धर्मपत्नी है।
- एक भाई व चार वहिनों को विशेप अलकरण।
- सर्वसम्मति से कुछ महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पारित।
- दोनो सस्थाओ का इस वर्प का संयुक्त घोप—'दोनों हाथ: एक साथ।'
- सगठन, सामाजिक सेवा, सस्कार-निर्माण, प्रकाशन, शिविर आदि का प्रमुख रूप से कार्य करने वाली शाखा परिषदे पुरस्कृत।
- परिपद् द्वारा पुरस्कृत व्यक्ति श्री पन्नालाल बांठिया, श्री ईश्वरचन्द वैद, श्री रतनलाल चोपड़ा, श्री लूणकरण छाजेड, श्री प्रेमनाथ जैन।
- अधिवेशन मे महिला मंडल की ५३ केन्द्रों की १४८ प्रतिनिधि वहिनें व युवक परिपद् की ५६ शाखाओ के १६८ प्रतिनिधि युवक सम्मिलित थे।

श्री भगत अणुव्रत भवन में

२८ दिसम्बर/केन्द्रीय ससदीयकार्य मत्री श्री हरकिशनलाल भगत आज अणुव्रत भवन मे आचार्यश्री से मिले। उन्होने आचार्यश्री से करीवन एक घटे वातचीत की। श्री भगत ने कहा—'आज के परिप्रेक्ष्य मे भारत के आध्यात्मिक संस्कारो को उजागर करना जरूरी है। जैन समाज के पास महावीर के दिए सिद्धान्त है। यही एक ऐसा धर्म है, जो दूसरो के वारे में सोचता है एव परोपकार की भावना पर कार्य करता है।'

श्री भगत ने आचार्यश्री को क्रांतिकारी सत बताते हुए कहा—'कई वर्प पूर्व शाहदरा मे मैंने आपका प्रवचन सुना था। आपके मुख से जो मैंने धर्म की परिभापा व स्वरूप सुना, उससे मैं बहुत प्रभावित हूं। मेरा विश्वास है कि ऋपि-मुनि ही मनुष्य के दिल और दिमाग को बदल सकते है।'

आचार्यश्री ने कहा—'आज धर्म क्रियाकांड व आडम्बर मे उलझ गया है। जब तक मानवीय दृप्टिकोण से व्यक्ति का आचरण नही होगा, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारो मे जाना निरर्थक है।' आचार्यश्री ने धर्म के क्षेत्र मे व्याप्त विसंगतियों को समाप्त करने की दृप्टि से धर्मक्रांति की आवश्यकता पर वल

दिया ।

युवाचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान को तनाव एव मानसिक विकारो से मुक्ति का माध्यम एवं नशे की आदत से मुक्ति के लिए इसे अमोघ औषध बताया । प्रारंभ में श्री मांगीलाल सेठिया, श्री कन्हैयालाल पटावरी ने श्री भगत का स्वागत किया ।

२९ दिसम्बर को केन्द्रीय शिक्षा एवं संस्कृति राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णा शाही ने नई शिक्षा नीति पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री से विस्तृत बातचीत की ।

मानवीय मूल्यों की समस्या

१ जनवरी/फिक्की सभागार मे आज अपराह्न २.३० बजे एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया । दिगम्बर समाज के स्व० लाला पी० एस० जैन के जन्म दिवस के उपलक्ष मे आयोजित इस सगोष्ठी का विषय था 'मानवीय मूल्यो की समस्या ।' सभी समुदायो के लोगो से खचाखच भरे सभागार मे आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के सारगर्भित प्रवचन हुए । श्रोताओं के द्वारा समागत प्रश्नो का युवाचार्यश्री ने सटीक उत्तर दिया । पी० एस० जैन फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री रमेशचद्र जैन ने आभार ज्ञापन किया ।

वक्तृत्वकला का विकास

साधु-साध्वियां शिक्षा, साधना आदि सभी क्षेत्रो मे विकास करे, इसके लिए आचार्यश्री सदैव प्रयत्नशील रहते हैं । उन्होने अपने सघ में उन्नति के नए-नए आयाम खोले है । उसी का परिणाम है कि तेरापथ मे आज प्रखर वक्ता, कुशल लेखक, सूक्ष्म कलाकार, विशिष्ट साधनाशील व्यक्तित्व तैयार हुए है ।

३० दिसम्बर ८७ से १३ जनवरी ८८ तक पश्चिम रात्रि मे आचार्यवर ने वक्तृत्वकला-विकास के लिए एक उपक्रम प्रारंभ किया । बोलने के लिए छह विषय निर्धारित थे— जैन धर्म, तेरापंथ, अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान, विसर्जन । आचार्यवर के द्वारा उपरोक्त छह विषयो मे तत्काल प्रदत्त विषय पर साधुओ ने अपने विचार रखे । इस क्रम मे कनिष्ठ व ज्येष्ठ मुनियो की दो श्रेणिया निर्मित की गई । निर्णायको ने वक्ता मुनियो के भाषणो की समीक्षा की व अको के आधार पर उनका प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान के लिए निर्धारण किया ।

साधुओ ने केवल हिन्दी मे ही नही, अपितु संस्कृत व अंग्रेजी भाषा मे भी विचार रखे । जिस दिन अग्रेजी मे छह मुनियो ने अपने विचार रखे, उस दिन श्री शुभकरण दसाणी ने अग्रेजी मे कैसे बोलना चाहिए, इस पर महत्त्वपूर्ण सुझाव दिए । कई दिन तक चले इन वक्तृत्वकला-विकास के उपक्रमो में

जो प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पर रहे, उन्हे क्रमशः आचार्यवर ने ९, ७ व ५ कल्याणक से पुरस्कृत किया। साध्वियो में भी यह क्रम व्यवस्थित चला।

इसी संदर्भ मे १६ जनवरी को प्रातःकालीन कार्यक्रमों में साधु-साध्वियों की वादविवाद प्रतियोगिता रखी गई। प्रतियोगियो को ए तथा वी इन दो दलों मे विभक्त किया गया। 'ए' ग्रुप में चार साधुओं व पांच साध्वियो ने भाग लिया। विपय था—'युगीन समस्याओ का समाधान अहिंसा।' परिणाम इस प्रकार रहा—

प्रथम	मुनि लोकप्रकाशजी
द्वितीय	साध्वी कल्पलताजी
तृतीय	साध्वी शारदाश्रीजी

ग्रुप 'वी' मे आठ साधुओ व दस साध्वियों ने भाग लिया। विपय था—'विज्ञान धर्म का उपकारी है।' परिणाम इस प्रकार रहा—

प्रथम	मुनि प्रशान्तकुमारजी
द्वितीय	मुनि दिनेशकुमारजी साध्वी त्रिशलाकुमारीजी
तृतीय	साध्वी मुदितयशाजी

आचार्यवर ने कृपा करके प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वालो को क्रमशः २५१, २०१ व १५१ गाथाओं से पुरस्कृत किया। दोनो श्रेणियो मे मुनियो ने प्रथम स्थान प्राप्त करके अपने वाक्कौशल का परिचय दिया।

केन्द्रीय शिक्षा सचिव के साथ मंत्रणा

५ जनवरी/केन्द्रीय शिक्षा सचिव श्री अनिल वोरदिया आज आचार्यश्री से मिले। उन्होने वातचीत मे कहा—'जव तक शिक्षा मे आध्यात्मिक और सास्कृतिक मूल्यों का समावेश नहो होगा, वांछित परिणाम नही आ सकेगा। इस संवध मे अनेक लोग दिमागी व्यायाम कर रहे है। कुछ सन्यासी टाइप के लोग चमत्कार की वात भी करते है, पर अव तक कोई सही समाधान नही मिला।'

आचार्यवर ने उनकी चिन्ता का औचित्य स्वीकार करते हुए कहा—'हमारे पास न तो कोई बहुत वड़ी योजना है और न चमत्कार है। हम तो छोटे-छोटे प्रयोग जानते है। जीवन-विज्ञान के ये प्रयोग विद्यार्थियो में नकारात्मक भावो को समाप्त कर अभय, सहिष्णुता, आत्मविश्वास आदि विधायक भावो का विकास करते है।' युवाचार्यश्री ने कहा—'यह प्रक्रिया नाडी संस्थान व ग्रन्थि तत्र के इलेक्ट्रिकल एवं केमिकल परिवर्तन द्वारा घटित होती है।'

करीव साठ मिनट की वातचीत मे जीवन-विज्ञान संवंधी साहित्य से श्री वोरदिया को अवगत कराया। अणुव्रत के द्वारा चरित्र निर्माण व नैतिक

उत्थान की दिशा में किए जा रहे कार्यक्रमों की भी जानकारी दी।

नैतिक व आध्यात्मिक मार्गदर्शन जरूरी

९ जनवरी/केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री श्री नरसिंह राव आज आचार्य श्री से मिले। उन्होंने शिक्षा, राष्ट्र में व्याप्त समस्याओं व जीवन-विज्ञान पर आचार्यश्री व युवाचार्यश्री से गंभीर विचार विमर्श किया। श्री राव ने कहा—'जब तक शिक्षा के साथ मानवीय मूल्यों को प्रोत्साहन नही दिया जाएगा, शिक्षा की उपयोगिता सामने नही आयेगी।' उन्होंने कहा—'राष्ट्र मे व्याप्त समस्याओं के समाधान में नैतिक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शन जरूरी है।'

मंत्री ने बताया—'कुछ दिनो पूर्व हम सरिस्का अभयारण्य में २४ घंटे रहे। हमने २४ घंटो मे १४ घंटे काम किया। प्रधानमंत्री के साथ बैठकर हमने गंभीर चिंतन किया। चिंतन का मुद्दा एक नये भारत की परिकल्पना था। चिंतन के इस क्रम मे हमें अपना रास्ता सही लगा, दिशा सही लगी। हो सकता है काम करने के तरीके मे कोई अन्तर हो। हम अपनी कल्पना का भारत तभी बना पायेंगे, जब पूरी तरह से सही ढंग से काम कर पायेंगे।'

आचार्यश्री ने उनको एक नया रास्ता सुझाते हुए कहा—'आप यह मानकर चलेंगे कि राजनैतिक लोग सब कुछ कर लेंगे, आपको सफलता नहीं मिलेगी। क्योंकि राजनीति में रहने वालो के भी अपने स्वार्थ हैं। आप एक साझे चिंतन का क्रम बनायें।' अपनी बात को अधिक स्पष्ट करते हुए आचार्य श्री ने कहा—'कुछ व्यक्ति राजनीति के जिनकी छवि साफ हो, कुछ साईकॉलोजी मे निष्णात लोग, कुछ धर्म के व्यक्ति और कुछ प्रबुद्ध चिंतनशील मिल बैठकर सोचें और ऐसे निष्कर्ष निकालें, जिससे देश का ढांचा मजबूत हो सके और नये भारत के निर्माण की आपकी कल्पना आकार ले सके।'

युवाचार्यश्री ने जीवन-विज्ञान की विस्तार से चर्चा की। करीब ९० मिनट चली इस बातचीत मे श्री राव ने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री को बड़े गौर से सुना। लौटते वक्त श्री राव श्री शुभकरण दसाणी से मिले। श्री दसाणी पिछले दो दिनों मे बीमार थे।

सिविल लाईन्स में

१३ जनवरी/प्रातः अणुव्रत भवन से आचार्यवर चान्दनी चौक पधारे। वहां प्रमुख श्रावक लाला बालचन्द जैन के मकान मे करीब १ घंटे विराजना हुआ। चांदनी चौक से सिविल लाइंस स्थित श्री उमरावसिंह बेगानी के बंगले में विराजना हुआ। महिला मण्डल की वरिष्ठ कार्यकर्त्री व प्रबुद्ध महिला श्रीमती सायर बेगाणी ने अपने घर पधारने पर आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। मध्याह्न आचार्यश्री के सान्निध्य में प्रेक्षाध्यान के संदर्भ में

बुद्धिजीवियो की एक संगोष्ठी आयोजित हुई। इस अवसर पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री के वक्तव्य हुए। श्रीमती सायर वेंगानी ने आचार्यवर का परिचय दिया। संगोष्ठी में श्री यशपाल जैन व शुभा वर्मा, रीता ओसवाल, आभा माहेश्वरी आदि प्रबुद्ध महिलाएं उपस्थित थी। अंत में मुनि महेन्द्रकुमारजी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये। श्रीमती वेंगानी ने आगन्तुक अतिथियो का स्वागत किया।

आचार्य तुलसी आज भी प्रासंगिक

सिविल लाइन्स मे रात्री में अनेक प्रबुद्ध व्यक्ति आचार्यवर से मिले। श्री झाझु भी उन प्रबुद्ध व्यक्तियो मे एक थे। वे मूलत: पीसांगन-राजस्थान के निवासी है। वे एक अच्छे विचारक व सत्संगप्रेमी व्यक्ति है। विड़ला आदि औद्यो गिक घरानो से उनके मधुर सम्बन्ध है श्री झाझु भी एक बडे उद्योगपति है। वातचीत के दौरान श्री झाझ ने कहा—'आचार्यजी! मैं पिछले चालीस वर्षो से देख रहा हूं कि जव से आप अणुव्रत के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र मे उतरे है, आप अपनी उपयोगिता व प्रासंगिकता वनाये हुए हैं। यह मै कम महत्त्व की वात नही मानता। इतिहास में आप जैसे व्यक्तित्व विरल ही मिलेगे। सामान्यत: आदमी ५-१० वर्षो मे ही अप्रासंगिक वन जाता है। आपका व्यक्तित्व, कर्तृत्व व कार्यक्रम वाकई मे कालजयी है।'

१४ जनवरी/अणुव्रत भवन लौटते वक्त श्री सागरमल वेंगाणी, वाग दिवारवाले श्री वृद्धिचद जैन के घरों मे चरणस्पर्श करते हुए प्रमुख श्रावक लाला लाजपतराय जैन के घर पधारे। वहां करीव एक घंटा विराजे।

विश्व शान्ति के लिए पदयात्रा

'फ्रैन्ड्स ऑफ आल' (सवके दोस्त) नामक एक चैरिटेवल संस्था ने विश्व एकता, प्यार व शान्ति, एक दूसरे की संस्कृति को समझने तथा अनेक ध्येयो को लेकर जन-जागरण हेतु पदयात्रा का आयोजन किया। इस पदयात्रा में १३ देशों के ५१ विदेशी तथा ७५ भारतीय भाई-वहिनों ने भाग लिया। ये लोग गांधी आश्रम सावरमती, अहमदावाद से २७ नवम्वर १९८७ से चले और १४ जनवरी १९८८ तक राजघाट, नई दिल्ली पहुंच कर अपनी पदयात्रा सम्पन्न की।

यात्रा की परिसंपन्नता पर वे विश्व एकता व शान्ति के सन्देश-वाहक आचार्यश्री तुलसी से अणुव्रत भवन मे मिले। मुनि सुमेरमल, मुनि महेन्द्रकुमारजी व श्री शुभकरण दसाणी ने उनको सम्वोधित किया। आचार्य श्री व युवाचार्यश्री के वक्तव्य हुए। मुनि महेन्द्रकुमारजी ने उनका अंग्रेजी मे अनुवाद किया व आचार्यश्री का परिचय दिया। कार्यक्रम के अनन्तर सभी शान्तियात्रियो को प्रेक्षाध्यान करवाया। मध्याह्न में यात्रियो द्वारा प्रस्तुत प्रश्नो को मुनि महेन्द्रकुमारजी ने समाहित किया।

१७ जनवरी/आचार्यवर की सन्निधि मे आज श्रावक सम्मेलन का आयोजन हुआ। आचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री के विशेष वक्तव्य हुए। साध्वी प्रमुखाश्री का आज चयन दिवस था। पूरे संघ की ओर से उन्हे मंगल भावना समर्पित की गई। श्री धनराज वैद ने फरीदाबाद की तेरापंथ डाईरेक्ट्री व श्री सम्पतमल सुराणा ने बुद्धिजीवी मंच की स्मारिका भेंट की।

आदर्श साहित्य संघ पंचम दशक प्रवेश समारोह

२० जनवरी/तेरापंथ साहित्य को सर्वप्रथम प्रकाश मे लाने वाली संस्था आदर्श साहित्य सघ है। पिछले चार दशक से यह संस्थान निरन्तर साहित्य की सेवा का सृजनात्मक कार्य कर रहा है। आचार्यवर की सन्निधि मे आयोजित इस कार्यक्रम मे सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री प्रभाकर माचवे, जीवन साहित्य के संपादक अणुव्रत प्रवक्ता श्री यशपाल जैन, टाइम्स ऑफ इन्डिया ग्रुप के प्रबन्धक साहू रमेशचंद जैन आदि मुख्य अतिथि के रूप मे उपस्थित थे।

सघ के मत्री श्री विजयसिंह सुराणा ने उसकी समस्त गतिविधियो की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।[1] श्री रणजीतमल भन्डारी ने विज्ञप्ति विशेषांक आचार्यश्री को समर्पित किया। सघ के ट्रस्टी कर्मठ कार्यकर्ता श्री बच्छराज कठोतिया ने नौ पुस्तको का एक सेट भेट किया। श्री प्रभाकर माचवे, श्री रमेशचन्द जैन, श्री यशपाल जैन, मुनि सुमेरमल 'लाडनू', साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर, सघ के अध्यक्ष श्री मोहनलाल कठोतिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

श्री कठोतिया ने इस अवसर पर संघ के प्रबन्धक श्री कमलेश चतुर्वेदी को ११,१११ रुपये, प्रशस्तिपत्र तथा एक शाल भेट किया। श्री जयचंद चौधरी को एक शाल, नकद राशि व प्रशस्तिपत्र भेट किया। श्री केशवप्रसाद शर्मा व श्री छगनलाल सांखला को भी नकद राशि व प्रशस्तिपत्र से उपहृत किया।

साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने वक्तव्य मे कहा – 'साहित्य अन्तर्दृष्टि का उद्घाटक है, राष्ट्र और सस्कृति की अनमोल धरोहर है। आज साहित्य की सरिता अबाध गति से बह रही है, पर उसमे व्यक्ति को ऊंचाई प्रदान करने वाले साहित्य का लगभग अभाव दृष्टिगत हो रहा है। आदर्श साहित्य संघ ने अपने प्रकाशन के द्वारा इस क्षेत्र में एक कीर्तिमान प्रस्तुत किया है। मैं आशा करती हूं कि यह सस्थान अपनी कर्मजा शक्ति को और अधिक गति एवं निखार देता हुआ आधी शती के अवसर पर और भी भव्य रूप में सामने आयेगा।'

युवाचार्यश्री ने कहा—'वैचारिक, असाम्प्रदायिक और वैज्ञानिक साहित्य के प्रस्तुतीकरण मे आदर्श साहित्य सघ भारत का अग्रणी प्रकाशन संस्थान है। इसके प्रकाशन को देखकर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी आदि अतीत के

---

१. देखें विज्ञप्ति सं. ८७८

विद्वान एवं आज के न जाने कितने विद्वान प्रभावित हुए। यद्यपि प्रकाशन के क्षेत्र मे संघ ने बहुत महत्त्वपूर्ण काम किया है, पर उसके प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अपने आपको उतना योजित नही किया। मैं चाहता हूं कि आगामी दशक मे आदर्श साहित्य संघ साहित्य के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से और गतिशील बने।'

आचार्यवर ने अपने उद्बोधन में कहा—'हणूतमलजी सुराणा, जयचंद लालजी दफ्तरी एवं सुगनचंदजी आंचलिया के विशेष श्रम व सहयोग से यह संस्थान उभर कर समाज के समक्ष आया। इसकी बडी विशेषता यह रही कि समाज के उदार व्यक्तियो का इसे सहयोग मिला और इनकी आत्मनिर्भरता मे कभी कमी नही आई। हमारी वैचारिक क्रान्ति को जन-जन तक फैलाने मे सदैव इस सस्थान ने अत्यन्त विनम्र वृत्ति से काम किया। मैं चाहता हूं कि विद्वानों द्वारा प्राप्त सुझावों पर विचार करने के बाद यह संस्थान अपने कार्य को और भी व्यापक बनाए, जिससे आगामी दशक में पिछले सारे कीर्तिमानों से बढकर उसके काम सामने आये।"

रात्रि मे जैन समाज के विशिष्ट व्यक्तियो की एक विशेष गोष्ठी अणुव्रत भवन मे आचार्यश्री की सन्निधि मे आयोजित हुई। पूरा जैन समाज एक अहिंसा दिवस का प्रतिवर्ष आयोजन करे, इस दृष्टि से इसके प्रारूप पर चिन्तन किया गया। ऐसी ही एक गोष्ठी आगे निकट भविष्य मे पुन: आयोजित करने का निर्णय किया गया।

तेरापंथ अमृत संसद : द्वितीय अधिवेशन

२२ जनवरी/आचार्यवर की सन्निधि में तेरापंथ अमृत संसद का द्वितीय अधिवेशन आयोजित हुआ। साध्वीवृंद के गीत से संसद के प्रथम सत्र का प्रारंभ हुआ। गत अधिवेशन के पश्चात् जो साधु-साध्विया देवलोक हो गए तथा जिन श्रावक-श्राविकाओं ने संथारा स्वीकार कर मृत्यु का वरण किया, उन दिवंगत आत्माओ के प्रति संसद ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल छाजेड ने भाग लेने वाले सभी सांसदो को शपथ दिलाई। संयोजक श्री धरमचन्द चोपड़ा ने लाडनूं मे सम्पन्न संसद के प्रथम अधिवेशन की जानकारी दी तथा समुपस्थित सांसदों का हार्दिक स्वागत किया।

युवाचार्यश्री ने संसद की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा—'तेरापंथ में अनेक जातियो का मिश्रण है। ५० से ज्यादा जातियों के लोग तेरापंथ के प्रति आस्था रखते हैं। श्रद्धेय आचार्य प्रवर का निर्देश सबको मान्य होता है। अमृत संसद के सांसदो को विशेष दायित्व का बोध करना है। हमारे धर्मसघ का मूल सूत्र अध्यात्मपरक व्यावहारिक रहा है। हम मौलिक

समस्याओ पर विचार करेंगे, जिसमे सभी सांसदों के सुझाव मूल्यांकित होगे ।'

साध्वी प्रमुखाश्री ने कहा—'तेरापंथ अमृत संसद के माध्यम से अनेक प्रकार के विचार हमारे सामने आ रहे हैं। इस बात की प्रसन्नता है कि हमारे समाज का एक-एक सदस्य कितना जागरूक है। समाज का हर व्यक्ति अपने मन की आवाज को समाज के सामने प्रस्तुत कर सकता है। अमृत संसद में जो भी निर्णय लिये जाते हैं, उन्हे बहुत अच्छे ढंग से अपने-अपने क्षेत्रों मे जाकर प्रस्तुत करना है। यह सबका लक्ष्य हो कि हमारा समाज संगठित हो, सशक्त हो।'

आचार्यवर ने अपने उद्‌बोधन में कहा—'मुझे प्रसन्नता है कि हमारे सासद काफी प्रबुद्ध हैं। वे पंचशील वाले होने चाहिए, सहनशील व श्रद्धाशील होने चाहिए।' उन्होने आगे कहा—'इतने बड़े समाज के लिए काम करना कोई जादू का डंडा नहीं है, जो फेर दिया और ठीक हो गया। प्रत्येक व्यक्ति के दिल मे बैठकर काम करना चाहिए। मैं समझता हूं संसद की आवाज इतनी सक्षम हो कि हर व्यक्ति उसकी अवहेलना करने की न सोच सके।' आचार्यश्री ने समाज की महिलाओं के विकास की भी चर्चा की।

प्रथम सत्र मे श्री धरमचन्द चौपड़ा ने संसद के समक्ष चार विषय प्रस्तुत किए—

- भावीपीढी और संस्कार निर्माण
- धार्मिक आयोजन और व्यवस्थाओ का सरलीकरण
- भावीपीढी और तत्त्वज्ञान
- हमारा संगठन

लगभग एक घन्टा तक इन विषयो पर सांसदो की ओर से सुझाव आते रहे। सदन की शालीनता व समय की सीमा को ध्यान मे रखते हुए सभी ने अतिसक्षिप्त शैली में अपने विचारो को अभिव्यक्ति दी। उनके द्वारा प्रस्तुत सभी सुझावों पर गहरे विचार विमर्श के लिए उसी समय सात सदस्यो की एक उपसमिति गठित की गई। समिति का गठन सांसदो द्वारा किया गया।

संस्थाओं को प्रदत्त दायित्व की रिपोर्ट

रात्रि ७.३० बजे संसद का द्वितीय सत्र प्रारम्भ हुआ। कानोड़ श्रावक सम्मेलन के अवसर पर पारित प्रस्तावों पर कुछ केन्द्रीय सस्थाओ को जो दायित्व दिये गये थे, उनकी रिपोर्ट तत्संबंधी सस्थाओं के अध्यक्ष या मंत्री द्वारा प्रस्तुत की गई। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचन्द सेठिया, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री कन्हैयालाल छाजेड़, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री पदमचन्द पटावरी,

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सज्जनदेवी चोपडा, जय तुलसी फाउन्डेशन व नियोजन मंडल के संयोजक श्री धरमचन्द चोपड़ा ने अपनी-अपनी संस्थाओ की रिपोर्ट सदन के पटल पर रखी तथा अपनी संस्थाओं से सबंधित सांसदों के प्रश्नो को समाहित भी किया ।

योगक्षेम वर्ष

२३ जनवरी/संसद का तृतीय सत्र दोपहर १ बजे प्रारम्भ हुआ। विषय था—योगक्षेम वर्ष । विषय पर साध्वी कल्पलताजी, श्री खेमचन्द सेठिया, श्री कन्हैयालाल छाजेड ने प्रकाश डाला । इस संबंध में कई सांसदों ने अपने विचार, जिज्ञासाएं व प्रश्न रखे, जिनका समुचित उत्तर आचार्यश्री, युवाचार्य श्री व सयोजक श्री धरमचन्द चोपड़ा ने दिया ।

आचार्यवर का ७५ वा वर्ष योगक्षेम वर्ष के रूप मे मनाया जाएगा । इस वर्ष की अपनी गरिमा हो, इसमे तेरापंथ धर्मसंघ का हर सदस्य लाभान्वित हो, इस दृष्टि से इसका महत्त्व है । युवाचार्यश्री ने संसद को योगक्षेम वर्ष की विस्तृत जानकारी दी ।

'योगक्षेम' शब्द की चर्चा करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'योग और क्षेम ये दो शब्द है । योग अर्थात् जो प्राप्त नही है उसे प्राप्त करना । क्षेम—जो प्राप्त है, उसे सुरक्षित रखना । हमे जो परम्पराएं और विशेषताएं मिली है, उसे सुरक्षित रखना है । आज तक जो नही पाया है, उसे पाना है । पाने के लिए बहुत बडा क्षेत्र है । और बहुत कुछ पाया जा सकता है ।' आचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री ने योगक्षेम वर्ष के कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला ।

संसद का चतुर्थ सत्र 'शून्यकाल' के रूप में रखा गया । शून्यकाल मे कुछ सांसदो ने अपने सुझाव व प्रश्न रखे । उनका समाधान श्री चोपड़ा ने किया । चार सत्रो मे समायोजित तेरापंथ अमृत संसद का द्वितीय अधिवेशन सानन्द सम्पन्न हुआ ।[1] अधिवेशन मे देश भर से आये कुल २५४ सासदों ने भाग लिया, जिसमे १९१ प्रतिनिधि, ५ मनोनीत व ५८ विशेष आमन्त्रित थे ।

संसद में पारित प्रस्ताव

१. कानोड़ सम्मेलन के प्रस्ताव संख्या ३—'भोजन एव आवास व्यवस्था' की धारा प्रथम को और अधिक स्पष्ट करने की दृष्टि से सदन सर्वसम्मति से इस धारा को निम्न रूप से परिभाषित करता है—

'संघीय आयोजनो पर सामूहिक भोजन व्यवस्था मे कोई भी तेरापंथी निःशुल्क भोजन नही करेगा और न करायेगा ।'

१. विस्तृत विवरण देखे—नियोजन मंडल द्वारा प्रकाशित 'तेरापंथ अमृत ससद रिपोर्ट' ।

नोट—(अ) तेरापंथी भाई-बहिनो के अतिरिक्त अन्य महानुभावों को आतिथ्य प्रदान करने पर यह प्रतिबन्ध नही है ।

(ब) संघीय आयोजनो से तात्पर्य है—चारित्रात्माओं के सान्निध्य मे होने वाले आयोजन ।

२. तेरापंथ धर्मसंघ और सघपति के प्रति पत्र-पत्रिकाओ आदि में कभी-कभी मिथ्या और भ्रामक प्रचार होता है । उसका तेरापंथी सासद, सभी संघीय सस्थाए और कार्यकर्ता जागरूकता मे तत्काल समुचित प्रतिकार करे । साथ ही संघ की प्रभावना बढाने वाले कार्यक्रमो का प्रचार-प्रसार करने वाले माध्यमो को साधुवाद प्रेषित किया जाए ।

३. तेरापंथी श्रावक की पहचान क्या हो ? इसके लिए न्यूनतम शब्दो के एक वाक्य के चयन के लिए नियोजन मण्डल एक प्रतियोगिता का आयोजन करे । सर्वोत्तम वाक्य प्रेषित करने वाले महानुभाव को सम्मानित किया जाए ।

सदन सर्वसम्मति से तेरापंथ अमृत संसद के सदस्यो के लिए निम्नलिखित अर्हताए और उनके लिए आचार संहिता निर्धारित करता है ।

अर्हताएं—१. उसकी आयु २५ वर्ष से कम न हो ।

२. वह स्नातक हो और उसे तेरापंथ से सम्बन्धित संस्थाओं मे कार्य करने का कम से कम एक वर्ष का अनुभव हो या वह तेरापथ की किसी भी संस्था से कम से कम ३ वर्ष तक सम्बन्धित रहा हो ।

(उपरोक्त अर्हताएं वर्तमान सांसद पर लागू नही होगी)

आचार संहिता—१. वह संघ और संघपति के प्रति समर्पित होगा ।

२. वह मादक द्रव्यों का सेवन नही करेगा ।

(मादक द्रव्यों से तात्पर्य है—मद्यपान, हिरोइन, ब्राउन शुगर आदि)

३. वह पंचशील—श्रद्धाशील, सहनशील, विचारशील, कर्मशील एवं चरित्रशील बनने का अभ्यास करेगा ।

१२४ वां मर्यादा महोत्सव समारोह

२३ जनवरी/मर्यादा महोत्सव के संदर्भ मे एक विशेष प्रवचन सभा आयोजित हुई । इस अवसर पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखा श्री के सारगर्भित वक्तव्य हुए ।

२४ जनवरी/मर्यादा महोत्सव का प्रथम चरण दोपहर १२.३० बजे समणीवृंद के गीत से प्रारम्भ हुआ । बम्बईवासी श्री रावतमल बांठिया ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार कर मंगलमय कार्यक्रम मे एक मगल और जोड़ दिया । दिल्ली प्रवास व्यवस्था समिति की ओर से श्री टी. एम. लालाणी ने समागत अतिथियों का स्वागत किया । मुनि सुमेरमल ने त्रिपदी वंदना कराई । मुनि विजयकुमारजी व श्री अलायचंद ने समवेत स्वर मे गीत प्रस्तुत किया ।

साध्वी अनुशासनाश्रीजी ने आचार्य भिक्षु की अभ्यर्थना की। मुमुक्षु वहिनो के सुमधुर गीत के बाद साधु-साध्वियो के विषयवद्ध वक्तव्य हुए।

- ० मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'—तेरापंथ की प्रारम्भिक परिस्थिति
- ० मुनि किशनलालजी—तेरापंथ का इतिहास
- ० मुनि महेन्द्रकुमारजी—मर्यादा महोत्सव व २१ वी शताब्दी
- ० साध्वी कल्पलताजी—संगठन की रीढ: अनुशासन

श्री करणीदान सेठिया ने तेरापंथ, आचार्य तुलसी व महाप्रज्ञ शब्द की मांत्रिक दृष्टि से व्याख्या की। साध्वीवृंद ने एक भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचन्द सेठिया ने उवंगसुत्ताणि, अनुप्रेक्षा, अमूर्त्त चिंतन व जय तिथि पत्रक पुस्तको की पहली प्रति आचार्यश्री को भेंट की। इस अवसर पर आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के प्रेरक उद्‌वोधन हुए। कार्यक्रम का संयोजन मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ने किया।

'आचार्य तुलसी चित्रकथा' प्रकाशित

मर्यादा महोत्सव : प्रथम चरण के कार्यक्रम मे 'आचार्य तुलसी चित्र-कथा' का विमोचन हुआ। इस चित्रकथा में आचार्यश्री का जीवन व विविधमुखी प्रवृत्तियो की संक्षिप्त झलक है। तेरापंथ धर्मसंघ का इस विधा में प्रथम प्रवेश है। इस चित्रकथा के लेखक मुनि विजयकुमारजी ने इसका परिचय दिया।

युवाचार्यश्री ने यह चित्रकथा आचार्यवर को भेंट की और कहा—'वाल साहित्य में चित्रकथा की विधा में यह पहला प्रयास है। प्रारम्भ अच्छा है और मुनि विजयकुमार ने अच्छा श्रम किया है।' आचार्यवर ने पुस्तक का विमोचन करते हुए कहा—'चित्रों के साथ इसमें जीवनवृत्त दिया गया है, इसलिए यह वच्चों के लिए उपयोगी है। इसका अच्छा उपयोग होना चाहिए। मुनि विजयकुमार इस दिशा में अच्छा श्रम कर रहा है। वह इस कार्य को और आगे वढाए।'

'जैन रत्नम्' अलंकरण समारोह

२४ जनवरी/मर्यादा महोत्सव: प्रथम चरण कार्यक्रम के अनन्तर २.३० वजे 'जैन रत्नम्' अलंकरण समारोह शुरू हुआ। आचार्यश्री की सान्निधि में यह कार्यक्रम जैन विश्व भारती द्वारा आयोजित था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष श्री वलराम जाखड़ व मुख्य वक्ता पूर्व केंद्रीय मंत्री डा० कर्णसिंह तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के चेयरमैन श्री यशपाल थे। जिन पाच व्यक्तियो को 'जैन रत्नम्' अलंकरण प्रदान किया गया, उनके नाम इस प्रकार है—

- ० साहू श्री श्रेयांसप्रसाद जैन

- श्री श्रीचंद रामपुरिया
- श्री श्रेणिक कस्तुरभाई
- श्री जेठाभाई जवेरी
- डा० लक्ष्मीमल सिंघवी

अलक्कृत महानुभावों के प्रशस्तिपत्र का वाचन क्रमशः श्री मांगीलाल सुराणा, साहू रमेशचन्द जैन, साहू रमेशचन्द जैन, श्री राजकुमार जैन व श्री धर्मचन्द चौपड़ा ने किया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ साध्वियों के गीत से हुआ। नवभारत टाइम्स के पूर्व सम्पादक श्री अक्षयकुमार जैन ने कार्यक्रम का परिचय दिया। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचन्द सेठिया ने सबका स्वागत किया। जैन रत्नम् अलंकरण से अलंकृत महानुभावों ने भी अपने विचार रखे।

श्री बलराम जाखड ने कहा—'राष्ट्र और समाज के लिए काम करने वालो का सम्मान करना बहुत ही सराहनीय कार्य है। इससे सभी को प्रेरणा मिलती है। आज जिन व्यक्तियों को सम्मानित किया गया है, वे जैन समाज के ही नही, देश के रत्न हैं। इनके कार्यो से सारा देश गौरवान्वित है। देश उन्ही को याद रखता है, जो अच्छे काम करते हैं।' उन्होने आचार्यश्री तुलसी के मानवतापरक कार्यक्रमो की सराहना की और कहा—'हमारी सस्कृति ने सारे संसार की मंगल कामना की है, लेकिन हमारे देश में आज बाहरी तत्त्व हिंसा भडका रहे हैं। इन पर हमें काबू पाना होगा'। लोकसभा अध्यक्ष ने अणुव्रत आन्दोलन की चर्चा करते हुए इसे राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण एवं नैतिक उत्थान के लिए आवश्यक माना।

युवाचार्यश्री ने कहा—'जैन समाज के चारों सम्प्रदायों के शीर्ष नेताओ को एक मंच पर लाकर सामाजिक एकता का नया सूत्रपात हो रहा है। इससे उदार दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलेगा और जैन समाज मे एक नई शक्ति का उदय होगा।'

आचार्यश्री ने कहा—'हमारा लक्ष्य प्राणीमात्र के प्रति मैत्री भावना का है। हमारे सभी मित्र है, कोई वैरी नही। इस भावना को जन-जन तक पहुचाना होगा। जैन धर्म इस दृष्टि से जैन धर्म है। लेकिन इसके प्रचार के लिए हमें उस साहित्य की रचना करनी होगी, जो सबको सुलभ हों।'

उन्होने आगे कहा—'जैन समाज ने सदैव अपने ऊंचे आचार एवं मानव सेवा के मूल्यों को चरितार्थ कर दिखाया है। राष्ट्र की धारा में जो योगदान जैन समाज द्वारा मिला है, वह हर वर्ग व समाज के लिए अनुकरणीय रहेगा।' आचार्यश्री ने प्राकृत और संस्कृत भाषा के समुचित विकास और प्रशिक्षण पर बल दिया।

प्रो० यशपाल ने शिक्षा को मानवता के प्रति समर्पित होने की

आवश्यकता पर बल दिया। डा० कर्णसिंह ने कहा—'भारतीय संस्कृति ने अनेकता का जो संदेश मानव जाति को दिया है, उसमें जैन धर्म का बहुत बड़ा अवदान रहा है।' कार्यक्रम का कुशल संयोजन श्री एल० एल० आच्छा ने किया।

मर्यादा महोत्सव का मुख्य कार्यक्रम

२५ जनवरी/दोपहर १२.३० बजे आचार्यवर की सन्निधि में १२४वें मर्यादा महोत्सव का भव्य समारोह शुरू हुआ। त्रिपदी वंदना के बाद श्री सूरजभान ने सपत्नीक शीलव्रत स्वीकार किया। आगामी चातुर्मास व अन्य समारोह के लिए अनेक क्षेत्रों ने भावपूर्ण प्रार्थना की। चातुर्मास के लिए दो उम्मीदवार थे पाली व श्रीडूंगरगढ़। इनके प्रतिनिधि क्रमशः श्री हनुमानमल चिण्डालिया व श्री कन्हैयालाल छाजेड़ ने पुरजोर प्रार्थना की। श्री विजयराज सुराना ने महावीर जयंती चूरू, श्री गुलाबचंद बोथरा ने तारानगर तथा श्री हनुमानमल बैंगानी व खेमचंद सेठिया ने अक्षय तृतीया लाडनूं करवाने की जोरदार अर्ज की।

दिल्ली तेयुप व तेमम के युवक, युवतियों ने समवेत स्वर मे गीत पेश किया। समण स्थितप्रज्ञजी, सिद्धप्रज्ञजी व श्रुतप्रज्ञजी ने प्रभावी शब्दचित्र प्रस्तुत किया। मुनि मुदितकुमारजी ने अंग्रेजी मे अपने विचार रखे। मुनि मधुकरजी व समणीवृंद के सुमधुर गीत हुए। सांसद श्री संतोषकुमार बागड़ोदिया ने अपने वक्तव्य में आचार्यश्री को एक मानवतावादी व्यक्तित्व बताया। अणुव्रत न्यास के न्यासी श्री कन्हैयालाल पटावरी ने हाल ही मे एक विशाल विद्यालय भवन खरीदा है। उसे नया रूप देने तथा सद्संस्कारों को बढ़ावा देने वाली शिक्षा जोड़ने के संदर्भ में श्री पटावरी ने अपने विचार रखे। श्री डी. पी. मिश्र ने अपनी पुस्तक 'जैन पुराणों का सांस्कृतिक अध्ययन' आचार्यवर को भेंट की।

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट ने अणुव्रत पाक्षिक का नया अंक आचार्यवर को भेंट किया। अणुव्रत के सम्पादक श्री धर्मचंद चौपड़ा भी इस अवसर पर उपस्थित थे। अणुव्रत नई साज-सज्जा व नये परिवेश मे प्रस्तुत हो रहा है। यह चोपड़ाजी की सूझबूझ व कार्य कुशलता का परिणाम है। आचार्यवर ने अणुव्रत पत्र की सामग्री को पठनीय बताया।

साध्वी प्रमुखाजी ने कहा—'मर्यादा महोत्सव में तेरापंथ की संस्कृति जीवन है। तेरापंथ का २२७ वर्षों का इतिहास है। इस अवधि में संघ ने अनेक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। आज के दिन यह संकल्प करें कि आने वाले भविष्य में और अधिक उपलब्धियां हासिल करेंगे।'

उन्होने कहा—'आचार्य भिक्षु व्यक्ति नही, जीवंत दर्शन एवं परम्परा के प्रतीक वन गए हैं। उन्होने मर्यादा, व्यवस्था और अनुशासन के शाश्वत मूल्य दिए, जिनके आधार पर आज तेरापंथ धर्मसंघ प्राणवान् है, सुसंगठित और तेजस्वी है।'

युवाचार्यश्री ने अपने उद्बोधन मे कहा—'हमारा धर्मसंघ एक मर्यादानिष्ठ धर्मसंघ है, इसलिए हमे मर्यादा महोत्सव मनाने का अधिकार है। और हम इसे अधिकारपूर्वक मना रहे हैं। आचार्य भिक्षु ने मर्यादाओ का निर्माण किया, फलतः एक धार्मिक सगठन वना।'

कानून और मर्यादा के अंतर को स्पष्ट करते हुए युवाचार्यश्री ने कहा—'जब कोई कानून बनता है, तो बुराई मिटती कम है भूमिगत ज्यादा होती है। मर्यादा वह है जिससे बुराई भूमिगत नही होती, बाहर निकल आती है और समाप्त हो जाती है। यह तब संभव है, जब उन मर्यादाओ को आध्यात्मिक आधार मिले।'

युवाचार्यश्री ने आगे कहा—'जयाचार्य ने संगठन की समस्याओ पर विचार किया। समस्याए बहुत है।' युवाचार्यश्री ने मुख्य रूप से सात समस्याओं पर विस्तृत चर्चा की, वे समस्याएं हैं—ममता अर्थात् भाई-भतीजावाद, स्वार्थ, आग्रह, संगठन, उद्दंडता या उच्छृंखलता, असहिष्णुता व सेवा विमुखता।'

आचार्यवर ने अपने मगल प्रवचन मे कहा—'मर्यादाओ के आविष्कारक आचार्य भिक्षु एक विलक्षण भिक्षु थे। भगवद् गीता के शब्दो में वे स्थितप्रज्ञ थे। दशवैकालिक सूत्र के शब्दो मे वे आत्मस्थ थे। वे वीतराग पथ के सच्चे पथिक थे। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे निंदा और प्रशंसा में सम रहते थे। यह स्थितप्रज्ञता व आत्मस्थता का लक्षण है।' आचार्यवर ने आचार्य भिक्षु के जीवन तथा मर्यादा महोत्सव की उपादेयता पर विस्तृत चर्चा की तथा एक सुमधुर व प्रेरक गीत के माध्यम से आचार्य भिक्षु व तेरापंथ की विशेषताओ पर प्रकाश डाला।[1]

तीन संस्थाएं मैत्री के धागे में बंधी

मर्यादा महोत्सव के ऐतिहासिक अवसर पर रोम की धार्मिक सस्था कम्युनिटी ऑफ सेंटर एडीजीओ के प्रतिनिधि दल की ओर से आचार्यश्री का अभिवादन किया गया और विश्व शांति के लिए सभी धर्मो की ओर से सयुक्त प्रयास पर वल दिया। प्रतिनिधि दल मे प्रो. एगोस्टीनो गीयोवाग्लोली, जो कम्युनिटी के उपाध्यक्ष है तथा फ्रासेस्को वान्सीको, जो नेपल्स मे कम्युनिटी के प्रतिनिधि है, सम्मिलित थे।

२८/२९ नवम्बर को वेटिकन सीटी में सर्वधर्म प्रार्थना सभा में

---

१. देखें परिशिष्ट—४

आचार्यवर का प्रतिनिधित्व किया था समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, समणी स्मितप्रज्ञाजी, श्री शुभकरण दसाणी तथा सुश्री राजप्रभा दसाणी ने। श्री दसाणी ने वहां के प्रतिनिधियों को मर्यादा महोत्सव के मौके पर आने का निमत्रण दिया था। उस निमंत्रण पर वे इस समारोह में शामिल हुए। श्री दसाणी ने उनका परिचय दिया। उनके प्रयत्नों से कम्युनिटी, अभातेयुप व बुद्धिजीवी मंच— ये तीनों संस्थाएं एक सूत्र में आवद्ध हो गईं, परस्पर मित्र बन गईं। ये तीनो एक-दूसरे के कार्य में सहभागी बनेंगी। कम्युनिटी के उपाध्यक्ष प्रो. एगोरटीगो, मच के संयोजक श्री चैनरूप भंसाली, अभातेयुप के मंत्री श्री भंवरलाल डागा ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए तीनो सस्थाओं की मैत्री को महत्त्वपूर्ण वताया।

मर्यादा महोत्सव के भव्य व आकर्षक कार्यक्रम के बीच कुछ क्षणों के लिए व्यवधान भी उपस्थित हो गया। कुछ युवको ने मच के पीछे व बाईं ओर से शोरगुल करना शुरू कर दिया। उनके विरोध का आशय था कि श्री शुभकरण दसाणी मंच पर क्यों गए? अब वे उनको तुरन्त स्टेज से नीचे उतरने का आग्रह करने लगे। तथ्य यह था कि दसाणीजी स्वेच्छा से मंच पर नही गये, वलिक संयोजक ने उन्हे मंच पर आने व अतिथियो का परिचय देने के लिए आमंत्रित किया था। मंच पर बुलाने, बैठाने व बोलाने का दायित्व संयोजक का है। इसमे और किसी का हस्तक्षेप मान्य नहीं है। होहल्ला व अनुचित तरीको से अपनी माग कम से कम तेरापंथ के मच से नही हो सकती और न ही वह स्वीकृत की जा सकती।

हमारे धर्मसंघ की यह स्वस्थ परम्परा रही है कि जो बात स्वयं को न जचे, उसे उस संवद्ध व्यक्ति या आचार्य को निवेदित कर दे, किंतु उसे प्रचारित न करे। छोटी-सी बात का बतंगड़ न बनाएं तिल का ताड़ न बनाएं। इस अवसर पर युवाचार्यश्री का एक संतुलित, सारगर्भित एव ओजस्वी वक्तव्य हुआ। उस वक्तव्य से उन मनचले युवको की गलत हरकत का असर एक झटके मे समाप्त हो गया। संघ प्रवक्ता व पूर्व मंत्री श्री चन्दनमल वैद तथा आचार्यवर के भी वक्तव्य हुए। युवाचार्यप्रवर के आज के वक्तव्य को सुनकर सभी तेरापंथी भाइयो को यह बोध हो गया कि युवाचार्यश्री की प्रशासनिक क्षमता कम नहीं है।

व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मांगीलाल सेठिया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' व श्री टी. एम. लालाणी ने किया। कार्यक्रम की समाप्ति के कुछ क्षण पूर्व हरियाणा के उपमुख्यमंत्री श्री बनारसीदास गुप्ता पहुंच गए। उन्होने भी अपने विचार रखे।

मर्यादा महोत्सव : तृतीय दिवस

२६ जनवरी/समण स्थितप्रज्ञजी के गीत से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।

मुनि मदनकुमारजी, साध्वी सुषमाकुमारीजी ने अपने विचार रखे। साध्वीवृंद, मुमुक्षु परिवार व श्रीडूगरगढ़-कन्या मण्डल के सुमधुर गीत हुए। समणी कुसुमप्रज्ञाजी ने व्यवहार भाष्य पर कृत कार्य की प्रतिलिपि आचार्यवर को भेंट की। श्री शांतिलाल चपलोत ने राकेश मुनि की पुस्तक 'भारतीय दर्शन के प्रमुख वाद' भेंट की।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यक्ष श्री राणमल जीरावला का हिरीयूर (कर्नाटक) मे अभिनन्दन किया गया था। श्री जीरावला का दक्षिण प्रदेश व्यापारिक व कार्यक्षेत्र रहा है। अभिनन्दन के अवशिष्ट कार्यक्रम मे आज सोहनलालजी चिंडालिया व श्री रावतमल गोठी ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री हरखलाल पालगोता ने श्री जीरावला को एक लाख इकतीस हजार की थैली भेंट की। राणमलजी जीरावला ने अपने अभिनन्दन के लिए आभार ज्ञापित किया। जीरावलाजी ने प्राप्त राशि मे से अस्सी हजार रुपये उत्तरीय कर्नाटक सभा को व शेष इक्यावन हजार रुपये अमृतायन के लिए जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचन्द सेठिया को दिए।

इस अवसर पर आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के उद्बोधन हुए। रात्रि मे मुनि मधुकरजी के सान्निध्य मे कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। संयोजन मुनि लोकप्रकाशजी ने किया। २७ जनवरी को महोत्सव का अवशिष्ट कार्यक्रम चला। इस अवसर पर मुनि विजयराजजी, अणुव्रत इन्टरनेशनल के सचिव श्री सोहनलाल गांधी, अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष श्री मोती लाल राका, मत्री श्री मोहनलाल जैन ने अपने विचार रखे। छापर के उत्साही कार्यकर्त्ता श्री कन्हैयालाल चोरड़िया ने आगामी मर्यादा महोत्सव छापर में कराने की पुरजोर प्रार्थना की।

मर्यादा महोत्सव : एक दृष्टि में

- मर्यादा महोत्सव के पावन प्रसंग पर उपस्थित साधु ३१, साध्वियां २८, कुल ५९; भाई-बहिन-करीब १० हजार।
- आचार्यवर के शासनकाल मे मर्यादा महोत्सव पर साधु-साध्वियों की यह न्यूनतम उपस्थिति थी।
- चातुर्मास मे जितने व जो साधु-साध्वियां थी, वे ही मर्यादा महोत्सव पर उपस्थित थे।
- महोत्सव स्थल—अहिंसा समवसरण, कोटला लेन।
- आचार्यवर का सन् १९८८ का चातुर्मास श्रीडूगरगढ में घोषित।
- आचार्यवर का सन् १९८९ का चातुर्मास लाडनू मे निर्णीत।
- आचार्यवर का सन् १९९० का चातुर्मास पाली में निश्चित।
- आगामी होली चौमासा नरवाना मे घोषित।

- आगामी महावीर जयन्ति तारानगर में घोषित।
- आगामी अक्षय तृतीया मोमासर मे घोषित।
- अक्षय तृतीया के तत्काल बाद लाडनू जैन विश्व भारती पधारने की घोषणा।
- एक वर्ष तक लाडनू मे आयोजित होने वाले योगक्षेम वर्ष के अन्तर्गत सभी कार्यक्रम 'प्रज्ञापर्व समारोह' के रूप मे मनाए जाने की घोषणा।
- देश के प्राय: सभी प्रान्तों व प्रमुख नगरों में काफी साधु-साध्वियो के चातुर्मासो की घोषणा।
- वसन्त पचमी पर परम्परागत रूप से सेवाकेंद्र के लिए निर्णीत होने वाले चातुर्मास इस बार मर्यादा महोत्सव के मुख्य समारोह में घोषित।
- रतनगढ़ में जय तुलसी फाउण्डेशन द्वारा श्री मोहनलाल कठोतिया को अणुव्रत पुरस्कार मे जो एक लाख रुपये मिले थे; उसमे कठोतियाजी ने पच्चीस हजार रुपये और मिलाकर सवा लाख रुपये का न्यास बना दिया। उस न्यास द्वारा प्रतिवर्ष ११ हजार रुपये का प्रेक्षा पुरस्कार किसी साधक को दिया जाएगा। न्यास का प्रथम प्रेक्षा पुरस्कार आगामी अक्षय तृतीया के अवसर पर मोमासर मे विशिष्ट साधक श्री नगीन भाई शाह (बम्बई) को प्रदान किया जाएगा।
- योगक्षेम वर्ष के व्यवस्था पक्ष के लिए एक प्रज्ञापर्व समिति गठित, श्री उत्तमचद सेठिया अध्यक्ष व श्री चैनरूप भसाली मत्री बने।
- श्री कन्हैयालाल छाजेड़ जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के पुनः निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित।
- श्रीमती शान्ति छाजेड (सरदारशहर) व मुमुक्षु झमकू (टापरा) को साधु प्रतिक्रमण सीखने व मुमुक्षु गुलाब (सरदारशहर) को दीक्षा का आदेश।

विज्ञान और धर्म विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

३० जनवरी/भारत निर्माण संस्था द्वारा 'विज्ञान और धर्म' विषय पर तीनदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें देश-विदेश के अनेक विशिष्ट व्यक्तियो ने भाग लिया। भाग लेने वालो मे प्रमुख थे अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के अध्यक्ष डॉ. नगेन्द्रसिंह, भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता श्रीमती अमृता प्रीतम, योगी अमृत देसाई, अमेरिका से मां ज्योतिपानन्द सरस्वती, भविष्यवक्ता डॉ. बी. वी रामन, अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री एस. एस. उबान, सांसद श्री नरेशचद चतुर्वेदी, मा योगशक्ति,

डा. प्रभाकर माचवे, श्री किरीट जोशी आदि । कार्यक्रम के संयोजक श्री एम. सी. भण्डारी ने आगन्तुक विद्वानो का स्वागत किया । डॉ. नगेन्द्रसिंह ने स्वागत भापण किया । श्रीमती अमृता प्रीतम ने कविता के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये । मुनि महेन्द्रकुमारजी ने विपय का विश्लेपण किया ।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सासद श्री नरेशचंद्र चतुर्वेदी ने कहा कि—'धर्म और विज्ञान का लक्ष्य सत्य को पाना हैं। धर्म सम्प्रदाय की संकीर्ण दीवारो मे बंदी नही होता । वह सम्प्रदायरहित होता है । धर्म सार्वभौम सत्य है । इसको कभी नकारा नही जा सकता । विज्ञान का भी अपना महत्त्व है । विज्ञान का उपयोग निर्माण कार्य मे न कर ध्वंस में करें, तो विज्ञान का कोई दोप नही, प्रयोक्ता का दोप माना जायेगा । धर्म और विज्ञान की सयुक्त उपयोगिता को नकारा नही जा सकता ।'

श्री किरीट जोशी ने कहा—'भारत के पास अनन्त शक्ति है। उस शक्ति को जागृत करने का उपाय है विज्ञान और धर्म का समन्वय । धर्म का अर्थ है आध्यात्मिकता । आजकल लोग धर्म के वास्तविक रूप को भुलाकर धर्म का उपयोग कर रहे हैं । धर्म के नाम पर लड़ रहे हैं और उसके नाम पर भ्रष्टाचार फैला रहे है, लोगो मे नफरत की भावना उत्पन्न कर रहे है । समाज मे आध्यात्मिकता को पुन प्रतिष्ठित करके ही हम विज्ञान को अधिक उपयोगी सिद्ध कर पायेंगे ।'

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी ने कहा —एक समय धर्म और विज्ञान छत्तीस के अंक की तरह था । धार्मिक समझते है विज्ञान नास्तिक है । यह आत्मा और परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकार नही करता । वैज्ञानिको की मान्यता थी कि धर्म तर्क और युक्ति को महत्त्व नही देता । रूढ परम्पराओ से जकडा हुआ है । समय ने करवट ली । आज छत्तीस का अंक तिरेसठ का अंक बन गया है । दोनो एक दूसरे के आमने-सामने है, फिर भी दोनो के कार्यक्षेत्र और उद्देश्य भिन्न-भिन्न है दोनो को एक नही किया जा सकता । गेहूं और कंकर अपनी-अपनी जगह उपयोगी है । दोनो को मिलाकर पीस दिया जाये, तो रोटी का स्वाद खत्म हो जायेगा । हर चीज का मिश्रण विवेकपूर्वक होना चाहिए । धर्म शब्द के अनेक अर्थ किए जाते है—स्वभाव, मजहब, उपासना, रीति-रिवाज आदि । धर्म के साम्प्रदायिक रूप ने युवा वर्ग को धर्म से विमुख कर दिया है ।'

तीन दिन तक चले इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन मे आचार्यश्री, युवाचार्य श्री के महत्वपूर्ण उद्बोधन हुए । अन्य विद्वानो ने भी अपने विचार व्यक्त किए ।

राजस्थान के मुख्यमंत्री माथुर की आचार्यश्री से भेंट

१ फरवरी/राजस्थान के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर आचार्यश्री से मिले। वे अपना मुख्यमंत्री का पदभार संभालने के तत्काल बाद ही दिल्ली आए थे। अणुव्रत भवन मे आचार्यश्री से लम्बे समय तक बातचीत की। अकाल राहत मंत्री श्री माधोसिंह दीवान भी उनके साथ थे। भारत निर्माण द्वारा आयोजित धर्म और विज्ञान विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन को भी उन्होने सम्बोधित किया।

माथुर ने राजस्थान की अकाल एवं सूखे की स्थिति से निबटने हेतु जन सहयोग की अपील करते हुए कहा—'जब तक आम जनता में इस विकराल स्थिति से निबटने की तैयारी नही होगी, केवल सरकार के बल पर इस समस्या का समाधान नही हो पायेगा।'

उन्होने आगे कहा—'धर्म और विज्ञान का समन्वय उपयोगी है। विज्ञान की प्रगति के साथ आध्यात्मिकता का जुड़ाव होगा, तो यह प्रगति विनाश की स्थिति से उबार सकेगी।' उन्होने आचार्यश्री तुलसी द्वारा किए जा रहे राष्ट्रीय चरित्र निर्माण एवं नैतिक उत्थान के कार्यक्रमो की सराहना करते हुए कहा-'आज देश मे शान्ति एवं अहिंसा की स्थापना के लिए आध्यात्मिक महापुरुषो के बताए मार्ग पर चलने की जरूरत है।'

इस अवसर पर आचार्यश्री ने कहा—'प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति समाज के पथ पर अग्रसर होता हुआ अध्यात्म के प्रति भी जागरूक रहे।' श्री शुभकरण दसाणी ने श्री शिवचरण माथुर को उनके मुख्यमंत्री बनने पर बधाई दी। कार्यक्रम का संयोजन श्री एम. सी. भण्डारी ने किया।

रात्रि मे जैन समाज के प्रमुख कार्यकर्त्ताओ की एक मीटिंग अणुव्रत भवन मे आचार्यवर की सन्निधि मे हुई। मीटिंग में 'अहिंसा दिवस' पर चिन्तन चला। इसका एक प्रारूप तैयार कर सर्वत्र भेजने का निर्णय लिया। यह कार्य जैन सभा दिल्ली के तत्त्वावधान मे होगा। गंगापुर से समागत विशिष्ट कार्यकर्ताओ की भी एक बैठक आचार्यवर के सान्निध्य में हुई।

२ फरवरी/दोपहर १२.१५ बजे आचार्यवर ने अणुव्रत भवन से विहार किया। सागर अपार्टमेन्ट मे श्री राजेन्द्र जैन के घर पर कुछ क्षण ठहरकर आचार्यवर पृथ्वीराज चौहान मार्ग पर स्थित जिन्दल हाउस पधारे। वहां मुख्य गेट पर श्री ओ. पी. जिन्दल ने आचार्यवर का स्वागत किया। पूरे जिन्दल परिवार ने उपासना का अच्छा लाभ लिया। हरियाणा के पूर्व उद्योग मंत्री सेठ किशनदासजी आचार्यश्री से मिले व बातचीत की।

पूर्व राष्ट्रपति की कोठी पर

३ फरवरी/पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह आचार्यवर के प्रति गहरी

आस्था रखते है। राष्ट्रपतिकाल मे व उसके बाद भी समय-समय पर ज्ञानीजी आचार्यवर से मिलते रहे है। कुछ दिनों पूर्व वे बीमार हो गए, इसलिए उनकी सक्रियता मे कुछ कमी आई।

आज ज्ञानीजी से मिलने उनके निवास स्थान पर आचार्यश्री पधारे। मकान के बाहर आकर ज्ञानीजी ने आचार्यश्री की अगवानी की। वे आचार्य श्री को अपने स्वागत कक्ष मे ले गए। ज्ञानीजी ने कहा—'आचार्यश्री! मेरी बडी तमन्ना रहती है आपके कार्यक्रमो में आने के लिए, किन्तु इधर मे कुछ दिनो से अस्वस्थता के कारण ऐसा सम्भव नही हो सका।'

पंजाब समस्या की चर्चा करते हुए पूर्व राष्ट्रपति जैलसिंह ने कहा—'भारत माता के शरीर मे कही जख्म होता है, तो उसकी सन्तान का यह कर्त्तव्य है कि उसका तुरन्त इलाज करे। इस देश मे भौतिक समृद्धि की कमी हो सकती है किंतु अध्यात्म की नही है। अपेक्षा है उसे जन-जन मे फैलाने की।' उन्होने आगे कहा—'आज देश में बडी बेचैनी है, किन्तु उसे मिटाने के लिए वैसा प्रयास नही हो रहा है। दोषी बच रहे है, निर्दोष सजा पा रहे है।'

आचार्यश्री ने औपचारिक बातचीत के अनन्तर कहा—'विभिन्न भागो मे हमारे साधु-साध्वियां लोगो मे नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था जागृत करने का कार्य कर रहे हैं। इससे जन-चेतना मे नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों के प्रति आस्था जागृत हुई है।' इस अवसर पर युवाचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोग ज्ञानीजी को करवाए, जिनसे मानसिक शान्ति एव स्वास्थ्य का सन्तुलन रखा जा सके।

आचार्यश्री को विदा देने के लिए ज्ञानीजी गेट से बाहर तक आए। आभार प्रकट करते हुए वे बड़े गद्गद् हो गए। ज्ञानीजी से मिलने के बाद आचार्यश्री गुलमोर पार्क स्थित किशनलालजी दूगड़ के मकान पर कुछ देर विराजे।

अणुव्रत पुरस्कार प्रदान समारोह

३ फरवरी/राजधानी के विशाल सिरीफोर्ट सभागृह मे अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य मे वर्ष १९८७ का 'अणुव्रत-पुरस्कार' भारत के उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने भारत के पूर्व वित्त एव रक्षा मंत्री श्री सी. सुब्रमण्यम को प्रदान किया। अणुव्रत पुरस्कार के रूप मे एक लाख रुपयो का चैक तथा प्रशस्ति पत्र भेंट किया गया। जय तुलसी फाउण्डेशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री मागीलाल सेठिया ने श्री सुब्रमण्यम का परिचय एव प्रशस्ति पत्र का वाचन किया।

फाउण्डेशन के अध्यक्ष एव समारोह के संचालक श्री धर्मचन्द चोपडा

ने 'अणुव्रत पुरस्कार' की जानकारी देते हुए उसके उद्देश्यो पर प्रकाश डाला। समारोह का शुभारंभ मुनिश्री श्रेयांसकुमार, मुनिश्री दिनेशकुमार की गीतिका से हुआ। पुरस्कार चयन मण्डल के सदस्य श्री शुभकरण दशाणी ने श्री सुब्रमण्यम के जीवन पर प्रकाश डाला।

उपराष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा ने श्री सुब्रमण्यम को अणुव्रत पुरस्कार प्रदान करने के पश्चात् अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—'चरित्र, आचरण और नैतिकता का मूल्य 'आचार्य' ही बता सकते है। आचार्य स्वयं के आचरण से शिक्षा देते है। आचार्यश्री तुलसी ने देश को यह मार्ग दिखाया है। उन्होने कहा—'बहुत चाहते हुए भी मैं आचार्यश्री के प्रवासकाल में दर्शन नही कर सका। आज इस समारोह मे आकर मै हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हु।'

डा. शर्मा ने कहा—'चरित्र का पुरस्कार सभी को प्रेरित करने वाला है। पण्डित नेहरू ने भी आर्थिक विकास को चरित्र-विकास के अभाव मे व्यर्थ माना था।' उन्होने आगे कहा—'राष्ट्रीय चरित्र निर्माण एवं नैतिक उत्थान जैसे महत्वपूर्ण कार्य के लिए आचार्यश्री तुलसी का अणुव्रत आन्दोलन आवश्यक है।'

डा. शर्मा ने आगे कहा—'जय तुलसी फाउण्डेशन द्वारा अणुव्रत पुरस्कार के लिये बिल्कुल उपयुक्त व्यक्ति का चुनाव किया है। मेरी श्री सुब्रमण्यमजी से बहुत वर्षो का सम्पर्क रहा है। उनका जीवन उच्च चरित्र का आदर्श उदाहरण है। आज इन्हे स्वयं अपने हाथ से पुरस्कार देकर मै अपने को सौभाग्यशाली मानता हूं।'

युवाचार्यश्री ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—'यह अणुव्रत पुरस्कार का समारोह है। मैं मानता हूं कि चरित्र अपने आपमे स्वयं एक पुरस्कार हैं। ऐसी स्थिति मे चरित्र को चरित्र के लिये पुरस्कार देना वैसा ही लगता है, जैसे नमक को नमकीन बनाना या फिर घी को घी से चुपड़ना। आवश्यकता क्यो हुई इस पुरस्कार की? शायद इसलिये कि नमक का स्वाद पहले जैसा नही रहा, घी मे पहले जैसी चिकनाहट नहीं रही। चरित्र की समस्या इसलिए खडी हो गई कि स्वार्थ की वृत्ति बड़ी सघन बन गई। ऐसे समय मे आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत के द्वारा ऐसी लौ प्रज्ज्वलित की, जो इस अन्धकार को भेद सके। आचार्यश्री तुलसी द्वारा प्रदत्त यह अवदान सबके लिये कल्याणकारी हो, यह मेरी मंगल कामना है।'

श्री सी. सुब्रमण्यम ने पुरस्कार प्राप्त कर अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होने कहा—'देश मे आर्थिक विकास की अपेक्षा चरित्र निर्माण की अधिक आवश्यकता है। अणुव्रत आन्दोलन से मैं पिछले तीस वर्षों से जुड़ा हुआ हूं। और मैं मानता हूं कि आचार्यश्री तुलसी के मार्गदर्शन मे ऐसे आन्दोलन के

द्वारा ही देश मे चरित्र निर्माण एवं नैतिक उत्थान का कार्य सफलतापूर्वक संचालन कर सकते हैं।'

श्री सुब्रमण्यम ने अपने जीवन के निर्माण में स्वामी शिवानन्द के शिष्य श्री चिद्भवानन्दजी, कांचीकामकोटि पीठ के शंकराचार्यजी, महात्मा गांधी एवं जवाहरलाल नेहरू आदि का योगदान माना। उन्होंने आगे कहा—'मैं राष्ट्र-सेवा एवं समाज-सेवा के लिये आगे भी सतत प्रयत्नशील रहूंगा।'

आचार्यश्री ने अपने आशीर्वचन मे कहा—'देश में कला, शिक्षा और विज्ञान आदि का मूल्यांकन हो रहा है, पर सबसे अधिक अपेक्षा चरित्र के मूल्यांकन की है।' उन्होने कहा—'अणुव्रत के छोटे व्रत मनुष्य को अनेक विघ्नो से उबार सकते हैं। यह मूच्छित मानवता के लिये संजीवनी है।'

आचार्यश्री ने आगे कहा—'धर्म का आचरणात्मक रूप अणुव्रत द्वारा आम आदमी के लिये प्रस्तुत किया गया है।' उन्होंने कहा—'सुब्रमण्यमजी दक्षिण भारत की हमारी पदयात्रा मे सम्पर्क में आए और तब से लगातार वे नैतिक नवनिर्माण के कार्य मे योगदान दे रहे है। वे एक नीतिनिष्ठ व्यक्ति है।'

आचार्यश्री ने कहा—'यह दुर्भाग्य है कि देश मे चरित्र निर्माण के प्रति ध्यान नहीं दिया जा रहा है, पर हमें निराश नही होना है। अणुव्रत का प्रयोगात्मक रूप प्रेक्षाध्यान है और शिक्षा के क्षेत्र मे जीवन-विज्ञान है। हम आशान्वित हैं कि इससे देश मे निश्चित ही सुधार होगा।'

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। केन्द्रीय गृहराज्य मंत्री श्री पी. चिदम्बरम् ने वर्तमान समस्याओं के समाधान हेतु नैतिक एव चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया। मुनिश्री महेन्द्र-कुमार ने अणुव्रत आन्दोलन के गत चार दशकों के इतिहास पर प्रकाश डाला। श्री गुलाबचंद चिण्डालिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया। अणुव्रत-पुरस्कार प्रदान समारोह अत्यन्त शांत एवं सौम्य वातावरण मे सम्पन्न हुआ।

श्री सी. सुब्रमण्यम : एक परिचय

अणुव्रत पुरस्कार विजेता श्री सी. सुब्रमण्यम का जन्म ३० जनवरी १९१० को तमिलनाडु के कोयम्बतूर जिले के पोलाची नामक गांव में हुआ था। उनका प्रारभिक अध्ययन पोलाची तथा उच्च अध्ययन मद्रास मे हुआ। सन् १९३२ में उन्होंने मद्रास विश्वविद्यालय से विधि स्नातक की उपाधि प्राप्त की, किन्तु वकालात की शुरूआत सन् १९३६ मे कोयम्बतूर मे की। क्योंकि उतने समय तक वे स्वतंत्रता आन्दोलन मे सक्रिय हिस्सा ले रहे थे और विधि-स्नातक बनने के वर्ष मे ही उन्हे जेल जाना पड़ा। उनकी रुचि राजनैतिक कार्यों में गहराती गई और उन्हे पुनः सन् १९४१ मे जेल में बंद

कर दिया गया। पुनः १९४२ मे भारत छोड़ो आन्दोलन मे उन्हें जेल हुई। फिर वे कोयम्बतूर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष और प्रान्तीय कांग्रेस समिति की कार्यकारिणी के सदस्य के रूप मे चुने गए। फिर वे भारत की संविधान परिषद् (कास्टीट्यूशन एसेम्बली) के सदस्य चुने गए तथा १९५२ में हमारे गणराज्य के संविधान बनाने मे उनका हाथ रहा। उन्होंने फिर राज्य विधान-सभा के चुनाव को सफलतापूर्वक जीता और वे राज्य मंत्रीमंडल के सदस्य बने। राज्य विधानसभा मे सदन के नेता के रूप मे उन्होने सन् १९५२ से १९६२ तक दस वर्ष तक कार्य किया। इसी के साथ-साथ वे वित्त, शिक्षा और विधि मत्रालय का दायित्व भी दस वर्ष तक लगातार संभालते रहे और उनके इन महत्त्वपूर्ण पदो के सफल सचालकत्व में राज्य शिक्षा के क्षेत्र मे निरन्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ा तथा समग्र राज्य में सर्वतोमुखी विकास हुआ। तमिलनाडु की गणना उन इने-गिने राज्यों मे हुई, जहां सभी बच्चों के लिए निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा मिलती हो।

सन् १९६२ मे सुब्रमण्यम लोकसभा के सदस्य चुने गए एवं मंत्रीमंडल मे कैबिनेट स्तर के मंत्री के रूप मे वे इस्पात मंत्रालय(सन् ६३-६४) इस्पात, खान एवं भारी अभियान्त्रिकी मंत्रालय (सन् ६३-६४) खाद्य और कृषि मंत्रालय (सन् ६४-६६) तथा खाद्य, कृषि, समाज-विकास और सहकारिता मत्रालय (६६-६७) को सभालते रहे। सन् १९६७ के बीच श्री सी. सुब्रमण्यम एरोनोटिक्स उद्योग के लिए भारत सरकार द्वारा गठित समिति के अध्यक्ष रहे। राजनैतिक के रूप मे फिर वे सक्रिय हुए और जुलाई-दिसम्बर, १९६९ के कठिन समय के दौरान वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के स्थानापन्न अध्यक्ष बने। फिर राष्ट्रीय कांग्रेस की कार्यकारिणी एवं दल के केन्द्रीय ससदीय बोर्ड के सदस्य बने रहे।

अगस्त १९७० मे उन्हे कृषि के राष्ट्रीय आयोग का अध्यक्ष बनाया गया। चुनावो के पश्चात् उन्हे केन्द्रीय मंत्रीमंडल मे योजना मंत्री के रूप मे तथा योजना आयोग के उपसभापति के रूप मे आमंत्रित किया गया। बाद मे उन्हे विज्ञान, प्रौद्योगिकी विभाग का दायित्व और सौंपा गया। अगस्त १९७१ मे नब्बे प्रतिशत वोट प्राप्त कर वे लोकसभा के लिए तमिलनाडु से निर्वाचित हुए। जुलाई १९७२ मे योजना मत्रालय को छोडकर उन्होंने औद्योगिक विकास मंत्रालय का दायित्व संभाला किन्तु विज्ञान-प्रौद्योगिकी भी साथ-साथ संभालते रहे। जुलाई १९७४ से उन्हे कृषि मंत्रालय भी दिया गया। बाद मे ११ अक्टूबर १९७५ से मार्च १९७७ तक वे वित्त मंत्री रहे। मार्च १९७७ मे वे पलानी निर्वाचन क्षेत्र से भारी बहुमत के साथ लोकसभा के लिए चुने गए। जुलाई १९७९ से जनवरी १९८० तक श्री चरणसिंह के मंत्रीमंडल मे रक्षा मंत्री बने।

विकासमान देशो मे छोटे बच्चों के पौष्टिक आहार के स्तर को सुधारने के लिए चले कार्यक्रम के प्रति श्री सी. सुब्रमण्यम चिर समर्पित रहे हैं। सन् १९७० में संयुक्त राष्ट्र सघ के महामत्री के आमंत्रण पर उन्होंने विकासशील राष्ट्रो मे व्याप्त प्रोटीन की कमी की समस्या को सुसमाहित करने के लिए रणनीति का विधान तैयार किया। मई १९७१ में उन्होने विशेषज्ञों के उस पैनल की अध्यक्षता की, जिसके द्वारा संयुक्त राष्ट्रसंघ की महासभा की क्रियान्विति के विषय में अनुशंसाएं की गई थी।

श्री सी. सुब्रमण्यम ने व्यापक यात्राएं की हैं एवं वे अनेक पुस्तकों के लेखक हैं। उनका नवीनतम ग्रंथ है— न्यू स्ट्रेटेजी इन इण्डियन एग्रीकल्चर। कृषि विकास संबंधी नीतियों और कार्यक्रमो की समस्याओं में उनकी रुचि और इस सम्बंध मे उनके अवदान के परिप्रेक्ष्य मे उन्हे व्यक्तिगत रूप से अन्तर्राष्ट्रीय चावल शोध संस्थान, मनीला तथा अंतर्राष्ट्रीय मक्का और गेहूं अनुसधान सस्थान मेक्सिको के गवर्नर मंडल के सदस्य के रूप मे चुना गया था। इस पद पर वे ६ वर्ष तक रहे।

टेनिस, क्रिकेट आदि खेल-कूद मे रुचि रखने के कारण उन्हे अखिल भारतीय लॉन टेनिस एसोसियेशन के अध्यक्ष के रूप मे सन् १९७६ से १९८० तक चुना गया। इंटरनेशनल सेण्टर फॉर पब्लिक एण्टरप्राइसेज युगोस्लेविया के अध्यक्ष है। भारतीय विद्या भवन, बम्बई के उपाध्यक्ष हैं। भवस इटर-नेशनल के अध्यक्ष है। वोलण्टरी हेल्थ सरविसेज मद्रास के अध्यक्ष है।

ध्यानकक्ष का उद्घाटन

अणुव्रत पुरस्कार प्रदान समारोह के बाद आचार्यवर ग्रीन पार्क पधारे। वहा श्री महेन्द्र जैन के मकान के पास बनी आशीर्वाद बिल्डिंग मे आचार्यवर का प्रवास हुआ। ४ फरवरी को प्रातः पंचशील स्थित श्री कुन्दनमल डावडीवाल के घर पर कुछ देर विराजे। वहां से अध्यात्म साधना केन्द्र, महरोली पधारे। वहां योगक्षेम ध्यानकक्ष का उद्घाटन था। इस कक्ष का निर्माण श्री सुरेश, नरेश व रमेश जैन इन तीन भाइयो ने बनाया है। उद्घाटन समारोह मे आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के उद्बोधन हुए। साधना केन्द्र के प्राण श्री मोहनलाल कठोतिया, आद्या कात्यायनी मन्दिर के पुजारी श्री देवीसिंह व श्री सुरेश जैन ने अपने विचार व्यक्त किए। संयोजन धर्मानन्दजी ने किया।

कुन्दकुन्द भारती में

५ नवम्बर/अध्यात्म साधना केन्द्र से विहार कर आचार्यश्री महरौली गांव मे श्री प्रसन्नचन्द कोठारी के घर पर करीब ४० मिनट विराजे। श्री कोठारी एक सेवाभावी श्रावक है। वहां से कुन्दकुन्द भारती पधारे। दिगम्बर समाज के इस नवनिर्मित भवन मे आचार्यवर के पदार्पण पर श्री अक्षयकुमार जैन, श्री

रमेशचन्द जैन, श्री सतीश जैन आदि प्रमुख व्यक्तियों ने उनका स्वागत किया। कुन्दकुन्द भारती मे आयोजित संक्षिप्त समारोह में आचार्यश्री का उद्‌बोधन हुआ। युवाचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कराए। इसी स्थान पर आचार्य विद्यानन्दजी ने अपना वर्षावास विताया था। कुन्दकुन्द भारती से आचार्यवर आनन्द निकेतन उपनगर पधार गए। इटली मे समागत विशेप प्रतिनिधि ने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री से विशेप वातचीत की।

राजधानी से भावभीनी विदाई

६ फरवरी/प्रातः आचार्यवर हरिनगर होते हुए जनकपुरी पधारे। वहा श्री कन्हैयालाल पटावरी द्वारा संचालित आदर्श पब्लिक स्कूल मे आचार्यवर का प्रवास हुआ। दोपहर 'मूल्यपरक शिक्षा' विपय पर एक संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमे स्कूल के प्राचार्य, अध्यापक व अन्य बुद्धिजीवी उपस्थित थे। आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के सारगर्भित उद्‌बोधन हुए।

कार्यक्रम के अनन्तर विदाई समारोह का आयोजन था। आज दिल्लीवासियो की ओर से आचार्यवर को भावभीनी विदाई दी गई। विदाई कार्यक्रम मे दिल्ली के कोने-कोने से समागत श्रद्धालु लोग वड़ी संख्या मे उपस्थित थे। इस अवसर पर सांसद श्री रामचन्द्र विकल, श्रीमती सुशीला पटावरी, पुष्प पटावरी, श्री डूगरमल कोठारी, श्री सुमेरमल चोरड़िया, श्री लाजपतराय जैन, श्री सम्पतकुमार सुराणा, श्रीमती सुनीता जैन आदि ने विभिन्न संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए आचार्यवर को भावपूर्ण विदाई दी।

मुनि किशनलालजी का वक्तव्य हुआ। पब्लिक स्कूल के संस्थापक व संचालक श्री कन्हैयालाल पटावरी ने अपने विचार रखे। आचार्य तुलसी प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मांगीलाल सेठिया ने पूरे दिल्ली समाज की ओर से आचार्यवर को विदाई देते हुए मंगलमय यात्रा की कामना की। जिन लोगो व संस्थाओं ने व्यवस्था कार्य मे अपना सक्रिय सहयोग दिया, उन सबके प्रति सेठियाजी ने आभार ज्ञापित किया।

मुख्य कार्यकारी पार्षद श्री जगप्रवेशचन्द्र ने कहा—'आचार्य तुलसीजी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन सभी वर्गो व कौमो में सद्‌संस्कार भरने में सफल रहा है। उनका यह आन्दोलन पूर्णतया अहिंसा पर टिका हुआ है। आचार्यजी मानवता की अहर्निश सेवा कर रहे हैं।' उन्होने नई शिक्षानीति पर भी अपने विचार रखे।

आचार्यवर ने अपने उद्‌वोधन मे कहा—'नजफगढ मे दिल्ली वालो ने हमारा स्वागत किया था और आज जनकपुरी मे वे हमे विदा करने के लिए उपस्थित है। हमारा यह प्रवास वहुत सुखद रहा। दिल्ली का प्रवास स्थानीय जनता की दृप्टि से तो हितप्रद था ही, यहां से पूरी मानव जाति के विकास मे

भी अच्छा कार्यक्रम चला। यद्यपि हमारी जीवनचर्या को देखते हुए शहरी वातावरण के कारण साधु-साध्वियो को कुछ कठिनाइयां भी रही, पर सभी ने उन्हे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया। दिल्ली के लोगो ने सभी प्रकार की व्यवस्थाओ को संभालने मे काफी श्रम किया, फिर भी उनकी व्यवस्था को एकान्ततः चुस्त नही कहा जा सकता। कही-कही कुछ सुस्ती भी रही। भविष्य मे इस सुस्ती को मिटाकर वे और अधिक तत्परता से अपने दायित्व का निर्वाह करेंगे, ऐसी आशा करता हूं।'

७ फरवरी/जनकपुरी से विहार कर आचार्यवर मीराबाग होते हुए सुन्दर विहार पधारे। वहां श्री भरतसिंह जैन के घर कुछ समय विराजे। मार्ग मे राजेन्द्र जैन व राकेश जैन के 'जैन टावर' मे आचार्यश्री ने चरणस्पर्श किए। सुन्दर विहार से पश्चिम विहार पधारे। दोनो स्थानो मे महती उपस्थिति मे आचार्यवर के उद्बोधन हुए। सायं आचार्यवर नांगलोई पधार गये। यह आचार्यश्री के राजधानी-प्रवास का अंतिम क्षेत्र था।

राजधानी में लम्बा प्रवास

आचार्यवर ने २६ अप्रैल १९८७ को राजधानी दिल्ली मे प्रवेश किया और ८ फरवरी १९८८ को वहां से प्रस्थित हो गए। इस प्रकार दिल्ली मे कुल २८८ दिनो (करीब ६९१२ घन्टे) का लम्बा प्रवास हुआ। कुल २८८ दिनो मे २०३ दिन आचार्यवर अणुव्रत भवन विराजे। यह प्रवास पाच बार मे हुआ। बाहर से आने वाले यात्रियो के लिए तीन स्थानो पर अस्थायी कुटीरो का निर्माण किया गया। मिन्टो रोड पर नवनिर्मित बहुमंजिली इमारत मे काफी फ्लेट्स भी उपलब्ध थे। मर्यादा महोत्सव के समय निर्माणाधीन माता सुन्दरी कॉलेज भी यात्रियो का प्रवास स्थल बना। शहरी दुविधाओ को देखते हुए इतनी माकूल व्यवस्था करना चुनौतीभरा कार्य है। पर आचार्य तुलसी प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष, अन्य पदाधिकारियो व कार्यकर्ताओ के संगठित प्रयास, आपसी मेलजोल व सही समझ ने हर दृष्टि से सुचारू व्यवस्था करने मे कोई कसर नही छोड़ी।

विशिष्ट व्यक्तियों से सम्पर्क

आचार्यवर आज राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर एक वहुर्चाचित आचार्य है। उनके द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आन्दोलन से उनकी असाम्प्रदायिक व्यक्तित्व के रूप में छवि उभरी है। वे एक राष्ट्रसंत व मानवतामूलक कार्य-क्रमों को लेकर चलने वाले आचार्य है। तभी सभी वर्गो व क्षेत्रो के लोग विना किसी सकोच के उनसे मिलते है और विभिन्न मसलों पर वातचीत करते है। इस वार अणुव्रत भवन मे चातुर्मास प्रवेश से लेकर दिल्ली से प्रस्थित होने तक के प्रवास मे राष्ट्र के शीर्षस्थ नेता, मूर्धन्य साहित्यकार, पत्रकार तथा समाज-सेवी कार्यकर्त्ता आचार्यश्री व युवाचार्यश्री से विशेप प्रेरणा, मंत्रणा, सलाह व आध्यात्मिक सवल लेने आए। अधिकांश अणुव्रत भवन के प्रवास मे आचार्यवर से मिले थे। उनका संक्षेप मे विवरण इस प्रकार है—

- १ जुलाई—पूर्व सूचना व प्रसारण मंत्री, राज्यसभा सदस्य श्री एन. के. पी. साल्वे; न्यायाधीश श्री पी. एल. जैन आचार्यवर से मिले।
- २ जुलाई— पत्रकार श्री समन्तभद्र; नवभारत टाइम्स के पत्रकार श्री रत्नसिंह शाण्डिल्य; जनसत्ता के संवाददाता श्री सुधीर जैन ने सम-सामयिक विषयो पर चर्चा की।
- ३ जुलाई—केन्द्रीय सतर्कता आयोग के अध्यक्ष श्री उदयचंद अग्रवाल, सांसद श्री केयुरभूषण, सांसद श्री रामचंद्र विकल मिले।
- ४ जुलाई—सर्वोदय नेता श्री कृष्णराज मेहता; पंजावी साहित्य समाज के अध्यक्ष, साहित्यकार श्री के. एल. दुग्गल ने आचार्यवर से पंजाव समस्या पर वातचीत की।
- ५ जुलाई—साहित्यकार श्री के. एल. दुग्गल (सपत्नीक); भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजमाता श्रीमती विजयाराजे सिंधिया ने आचार्यश्री से विभिन्न मसलो पर वातचीत की।
- ६ जुलाई—राजमाता सिंधिया प्रातः व सायं दो वार आचार्यवर से पुनः मिलीं व अनेक विषयो पर वातचीत की।
- ७ जुलाई—स्पेन के दम्पति श्री कारलेस व मिसेज करीना ने जैनधर्म की जानकारी प्राप्त की; सांसद श्री रामचंद्र विकल; 'ऑफ्टर डे' के संपादक श्री रामानन्द भट्ट तथा पत्रकार श्री हरिभाई ने आचार्यश्री से साक्षात्कार लिया।
- ८ जुलाई—नवभारत टाइम्स के उपसंपादक श्री पारसदास जैन ने

साक्षात्कार लिया।

- ९ जुलाई—अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव श्री रघुनन्दनलाल भाटिया ने आचार्यवर से एकान्त में वातचीत की। विहार के सांसद श्री पृथ्वीचंद्र आचार्यवर से मिले और अणुव्रत आन्दोलन से प्रभावित होकर अणुव्रती वने।
- १० जुलाई— उद्योगपति साहू श्री श्रेयासप्रसाद जैन, नवभारत टाइम्स के पूर्व संपादक श्री अक्षयकुमार जैन ने आचार्यश्री के दर्शन किये व महावीर मेमोरियल पर वातचीत की।
- १२ जुलाई—रक्षा राज्यमत्री श्री शिवराज पाटिल ने आचार्यप्रवर से अणुव्रत व अणुव्रत ससदीय मच के वारे मे विस्तार से जानकारी प्राप्त की।
- १३ जुलाई—'स्वस्थ जीवन' के सपादक श्री जगदीशचद्र जौहर; नोवल पुरस्कार विजेता मदर टेरेसा की प्रतिनिधि कुमारी मणिका घोप आचार्यवर से मिली।
- १४ जुलाई—वरिष्ठ पत्रकार सरदार खुशवन्तसिंह ने आचार्यवर से साहित्य पर वातचीत की और तेरापंथ के साहित्य को वड़े गौर से देखा; प्रसिद्ध उद्योगपति श्री अशोक साहनी (सपत्नीक) आए।
- १५ जुलाई—अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव श्री नवलकिशोर शर्मा; कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री वलभद्र हूजा; भागलपुर विश्वविद्यालय के गाधी दर्शन विभाग के अध्यक्ष श्री रामजीसिंह; अनेकान्त शोधपीठ, लाडनूं के निदेशक श्री नथमल टाटिया; जम्मू विश्वविद्यालय के सस्कृत विभाग की अध्यक्ष श्रीमती कौशल्या वल्ली ने आचार्यवर से विस्तार से वातचीत की।
- २० जुलाई—जनसत्ता के प्रतिनिधि श्री सुधीर जैन आचार्यवर से मिले।
- २१ जुलाई—वीर अर्जुन के संवाददाता श्री सुशील अग्रवाल ने आचार्यवर से वातचीत की। श्री अग्रवाल आचार्यवर के कार्यक्रमों से काफी प्रभावित हैं।
- २२ जुलाई—नवभारत टाइम्स की प्रतिनिधि माया शर्मा ने साक्षात्-कार लिया।
- २३ जुलाई—मूडविद्री (कर्नाटक) के भट्टारक श्री चारुकीर्ति महाराज आचार्यवर से मिले, वातचीत की।
- २ अगस्त—दिल्ली दूरदर्शन के उपमहानिदेशक श्री मधुकर लेले आए व वड़ी श्रद्धा से वातचीत की।
- ३ अगस्त—दिल्ली दूरदर्शन के उपमहानिदेशक (कार्यक्रम प्रसारण

विभाग) सरदार अलवेलसिंह ग्रेवाल; दिल्ली महानगर परिपद् के अध्यक्ष श्री पुरुपोत्तम गोयल ने वातचीत की।

- ८ अगस्त— सुप्रसिद्ध दन्त चिकित्सक श्री रवीन्द्र सचदेवा, तमिलनाडु कांग्रेस (इ) सांसद श्री वालसुब्रमण्यम आए।
- १२ अगस्त—सुप्रसिद्ध नर्तकी यामिनी कृष्णमूर्ति ने आचार्यवर के दर्शन किये। ३२ वर्ष पूर्व अपने पिता श्री जी. कृष्णमूर्ति के साथ भीलवाड़ा मे आचार्यवर से मिली थी। यामिनी ने शादी नही की। वह नृत्यकला मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है। उन्होने जैनमंत्रो व तत्त्वो को भी नृत्यमय वनाने की भावना व्यक्त की।
- १३ अगस्त—राजस्थान के पूर्व विधि मंत्री श्री अहमद वक्स सिंधी ने आचार्यवर के दर्शन किए। मूलत: जोधपुर निवासी श्री सिंधी सन् १९४८ से आचार्यवर के सम्पर्क में है; वीर अर्जुन के सवाददाता श्री सतीश अग्रवाल ने दर्शन किए।
- १४ अगस्त—सांसद श्रीमती रेणुका चौधरी अणुव्रत भवन आई।
- १८ अगस्त—हिन्दुस्तान के मुख्य संवाददाता श्री अशोक शर्मा ने साक्षात्कार लिया।
- १९ अगस्त—विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उपाध्यक्ष श्री सच्चिदानंद मूर्ति; वाल अपराध कोर्ट की मजिस्ट्रेट वेगम फातिमा उपस्थित हुई।
- २० अगस्त—जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति श्री डी.एस. कोठारी; जम्मू और कश्मीर की प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती पद्मा सचदेवा ने वातचीत की।
- २१ अगस्त—दिल्ली महानगर परिषद् के कार्यकारी पार्पद (शिक्षा) श्री कुलानन्द भारतीय ने आचार्यश्री से नैतिक शिक्षा पर वातचीत की; राजस्थान विधानसभा के उपाध्यक्ष श्री किशन मोटवानी आचार्यश्री से मिले।
- २२ अगस्त—पंजावी साहित्य समाज के अध्यक्ष श्री के. एस. दुग्गल ने साहित्य के विकास पर वात की है।
- २३ अगस्त—पूर्व रक्षामत्री श्री वी. पी. सिंह आचार्यवर से मिले। काफी व्यस्त होते हुए भी समय निकालकर आए और कई विषयों पर वातचीत की। दो दिन पूर्व मुनियो का एक दल उनकी कोठी पर उनसे मिला था। उस समय श्री सिंह ने २३ को आचार्यवर से मिलने की वात कही थी।
- ३ सितम्बर—तमिल साहित्यकार श्री पलणी ने आचार्यवर के दर्शन किए। वे आचार्यश्री के जीवन पर लिख रहे है। उनमे उभरने वाली

जिज्ञासाओं का समाधान मुनि सुमेरमल 'लाडनू' ने किया।

- ४ सितम्बर—अ. भा. कांग्रेस के महासचिव श्री रघुनन्दनलाल भाटिया; राज्यसभा सदस्य श्री भंवरलाल पंवार ने दर्शन किए।
- ५ सितम्बर—दिल्ली दूरदर्शन की वरिष्ठ अधिकारी श्रीमती जयाचन्दीराम ने आचार्यश्री से बात की।
- ६ सितम्बर—पत्रकार श्री समन्तभद्र ने दर्शन किये।
- ८ सितम्बर—समाज सेविका श्रीमती इन्दु जैन, जैना वॉच कपनी के मालिक श्री प्रेमचन्द जैन आदि अणुव्रत भवन आए।
- १० सितम्बर—रेवेन्यू डिपार्टमेन्ट के चेयरमैन श्री टिक्कू (सपत्नीक) ने दर्शन किए।
- १२ सितम्बर—दूरदर्शन केन्द्र के निदेशक श्री राजमणीराय ने बातचीत की।
- १४ सितम्बर—अ. भा. आयुर्वेद महासम्मेलन के अध्यक्ष राजवैद्य वृहस्पतिदेव त्रिगुणा; राजस्थान के पूर्व वित्तमंत्री संघ प्रवक्ता श्री चन्दनमल वैद, दिल्ली हाऊसिंग बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारी श्री अरोडा अपने मित्रो के साथ आए।
- १६ सितम्बर—पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री राव वीरेन्द्रसिंह ने अहिंसा समवसरण में दर्शन किए।
- १८ सितम्बर—रक्षा राज्यमंत्री श्री शिवराज पाटिल (सपत्नीक) ने दर्शन किए।
- २० सितम्बर—पूर्व सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री वी. एन. गाडगिल ने करीब ३० मिनट आचार्यश्री व युवाचार्यश्री से बातचीत की। जनसत्ता के प्रतिनिधि श्री सुधीर ने विभिन्न मसलो पर आचार्यवर का साक्षात्कार लिया।
- २१ सितम्बर—भारतीय जनता पार्टी के नेता व पूर्व विदेश मंत्री श्री अटलबिहारी वाजपेयी आचार्यवर से मिले। अनेक मसलों पर बातचीत हुई। साम्प्रदायिक सद्भाव कैसे बढ़े ? इस पर काफी विचार-विमर्श हुआ।
- २२ सितम्बर—राजस्थान की पूर्व विधायक व साहित्यकार लक्ष्मीकुमारी चुंडावत ने दर्शन किए।
- २३ सितम्बर—पूर्व केन्द्रीय वित्त मंत्री श्री सी. सुब्रमण्यम दो दिन वहां रहे। उनकी आचार्यवर से विभिन्न मसलों पर तीन दौर मे बातचीत हुई।
- २७ सितम्बर—उद्योगपति श्री गंगाप्रसाद बिड़ला आचार्यवर से मिले और उन्होने जयपुर पधारने का आग्रह किया।

- ३० सितम्बर—'वामा' पत्रिका की पूर्व संपादक सुश्री मृणाल पाण्डे ने आचार्यवर से अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान पर बातचीत की।
- १ अक्टूबर—नवभारत टाइम्स के संपादक श्री राजेन्द्र माथुर मिले व समसामयिक विषयों पर वार्तालाप किया।
- २ अक्टूबर—थाइलैण्ड के राजदूत मिले।
- ३ अक्टूबर—युग निर्माण योजना के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता पूर्व कर्नल श्री त्रिवेदी (सपत्नीक) आये, कुछ सांस्कृतिक स्टीकर भेंट किये।
- ४ अक्टूबर—कर्नाटक के युवा व खेल मंत्री श्री ए. वी शकरन्, नवभारत टाइम्स के समाचार संपादक श्री पारसदास जैन ने आचार्यवर से बातचीत की व प्रवचन सुना, अ. भा. कांग्रेस कमेटी के महासचिव श्री नरेशचन्द चतुर्वेदी ने दर्शन किए।
- ५ अक्टूबर—राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री जसराज चौपड़ा, अ. भा. कांग्रेस के महासचिव श्री नरेशचन्द चतुर्वेदी ने बातचीत की।
- ६ अक्टूबर—साप्ताहिक हिन्दुस्तान की सहसंपादक श्रीमती शुभारानी ने दर्शन किये।
- ७ अक्टूबर—आस्ट्रेलिया के राजदूत व सांस्कृतिक सचिव आये, बातचीत की।
- १२ अक्टूबर—'जागरण' दैनिक पत्र के संपादक मित्रों के साथ आये।
- १५ अक्टूबर—नवभारत टाइम्स के उपसंपादक श्री पारसदास जैन (सपत्नीक) आये।
- १९ अक्टूबर—केन्द्रीय संसदीय राज्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित ने आचार्यवर से बातचीत की। साधु-साध्वियों द्वारा निर्मित कलात्मक वस्तुओं को देखकर वह बहुत प्रसन्न हुई।
- २६ अक्टूबर—पूर्व कर्नल त्रिवेदी ने आचार्यवर से बात की। उन्होंने युग निर्माण योजना का साहित्य दिया।
- २८ अक्टूबर—राजस्थान विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आर. पी. भटनागर, राजस्थान के मांडल क्षेत्र के विधायक श्री बिहारीलाल पारीक ने दर्शन किये। अणुव्रत पर वे पूरी निष्ठा रखते हैं। अपने क्षेत्र (वाकली) विनयपुरम् में अणुव्रत महिला विद्यापीठ का निर्माण करा रहे है।
- ३० अक्टूबर—कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल श्री गोविन्द नारायणसिंह ने दर्शन किये।
- २ नवम्बर—वयोवृद्ध अध्यापक श्री अक्षयचंद शर्मा, जिन्होंने लाडनू मे

कई वर्ष तक अध्यापन कार्य किया । अभी वे कलकत्ता में हैं । माहेश्वरी व अग्रवाल समाज में काफी प्रतिष्ठित हैं, आये, बातचीत की ।

- ३ नवम्बर—केन्द्रीय समाज कल्याण राज्यमंत्री श्रीमती राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी ने आचार्यवर से नशाबंदी पर बातचीत की, उपन्यासकार श्री कन्हैयालाल ओझा मिले; पत्रकार श्री गणेश ललवाणी विशेष रूप से उपस्थित हुए । तेरापंथ की अंतरंग गतिविधि की जानकारी की । श्री ललवाणी कुछ भ्रमित थे । उन्होंने तीर्थंकर पत्र में विरोध मे लेख भी लिखा । श्रीचंदजी रामपुरिया के साथ वे यहां से जैन विश्व भारती गये ।
- २२ नवम्बर—फिल्म निर्माता श्री कृष्णास्वामी व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मोहना ने आचार्यवर से बातचीत की । हाल ही मे श्री कृष्णा स्वामी ने महर्षि रमण पर एक फिल्म बनाई थी ।
- २३ नवम्बर—पूर्व वित्तमंत्री श्री. सी. सुब्रमण्यम ने दर्शन किये ।
- २४ नवम्बर—प्राचार्य छाया भट्टाचार्य ने शिक्षा के संदर्भ में बात की।
- २५ नवम्बर—राजस्थान के पूर्व ग्रामीण विकास मंत्री श्री रामपाल उपाध्याय व पूर्व सिंचाई मंत्री श्री रामप्रसाद लड्ढा ने दर्शन किए ।
- २७ नवम्बर—सुप्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी श्री नंदलाल टाटिया, श्री सावरमल मोर, सांसद श्री केयूरभूषण ने संपर्क साधा ।
- २९ नवम्बर—बंधुआ मजदूर मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता स्वामी अग्निवेश आचार्यवर से मिले । रूढिमुक्त समाज, महिला जागृति, दिवराला सती कांड पर विस्तार से चर्चा हुई ।
- ४ दिसम्बर—बेंगलोर के उच्च शिक्षा व शोध विभाग में अनुवाद विभाग के अध्यक्ष एस. एम. रामचंद्र स्वामी; मैसूर विश्वविद्यालय मे हिन्दी के प्रोफेसर, अंतर्भारतीय सारस्वत पीठ मैसूर के प्रधान श्री राजेश्वरैया ने आचार्यवर के दर्शन किए । इसके पीछे मुख्य प्रेरणा अणुव्रत प्रवक्ता श्री सीताशरण शर्मा की रही । आचार्यवर के कर्नाटक मे हिन्दी विरोध के बारे मे पूछे जाने पर श्री राजेश्वरैया ने कहा—'बिलकुल नही । हमारे यहां कन्नड़ भाषा के अनेक विशिष्ट ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद हो रहा है ।' श्री राजेश्वरैया ने अणुव्रत आचार सहिता देखी और फार्म भरकर अणुव्रती बन गए ।
- ६ दिसम्बर—रक्षा राज्यमंत्री श्री शिवराज पाटिल, सांसद श्री संतोष बागडोदिया, पूर्व कांग्रेस महासचिव व सासद श्री रघुनंदनलाल भाटिया, सासद श्री तरुणकांत घोष आचार्यवर से मिले, अनेक विषयो पर

बातचीत की। श्री घोष आनंद बाजार पत्रिका प्रतिष्ठान के मालिक श्री तुषारकांत घोष के सुपुत्र है।

- ९ दिसम्बर—इस्लामिया विश्वविद्यालय, श्रीनगर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ. निजामुद्दीन ने आचार्यवर से भेंट की। आचार्यश्री से मिलने का यह उनका प्रथम अवसर था। वैसे वे आचार्यवर के व्यक्तित्व व कृतित्व से पहले से परिचित है। उन्होंने आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के साहित्य को बड़ी गंभीरता से पढ़ा है और कई लेख भी लिखे हैं। डॉ. निजामुद्दीन ने आचार्यश्री व युवाचार्यश्री से अनेक विषयों पर वार्तालाप किया।
- ११ दिसम्बर—विश्व हिन्दू परिषद् के अध्यक्ष व नेपाल के पूर्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र रिजाल आज आचार्यवर से मिले और उन्हें २५ से २८ मार्च ८८ तक नेपाल में आयोजित होने वाले विश्व हिन्दू सम्मेलन में भाग लेने का अनुरोध किया। विश्व मे एक मात्र हिन्दू राष्ट्र नेपाल मे पांच वर्ष पूर्व आयोजित विश्व हिन्दू सम्मेलन की याद दिलाते हुए आचार्यवर ने कहा—'उस समय समणियों ने हमारा प्रतिनिधित्व किया था। इस बार भी हमारा कोई प्रतिनिधि जा सकता है।' श्री रिजाल की भावना थी कि आचार्यश्री, युवाचार्यश्री पधारे।

  जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति श्री डी. एस. कोठारी ने आगम साहित्य व हिन्दुस्तान पब्लिक स्कूल एसोसियेशन के चैयरमैन डॉ. सुशान्त भट्टाचार्य ने शिक्षा पर आचार्यवर से बातचीत की। उच्चतम न्यायालय के पूर्व मुख्यन्यायाधीश श्री पी. एन. भगवती आचार्यश्री से मिले और अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान पर विस्तार से बातचीत की।
- १७ दिसम्बर—रक्षामंत्री श्री शिवराज पाटिल ने दर्शन किये।
- १९ दिसम्बर—भारतीय विद्याभवन के निदेशक एवं नवोदय विद्यालयों के परामर्शक डॉ. एम. पी. छाया ने नई शिक्षा नीति पर आचार्यश्री व युवाचार्यश्री से बातचीत की।
- २३ दिसम्बर—नवोदय विद्यालयों के परामर्शक डॉ. एम. पी. छाया ने आचार्यश्री, युवाचार्यश्री से डीम्ड युनिवर्सिटी के बारे में बातचीत की। उन्होंने कहा—'हेड, हार्ट, हेंड—ये तीन नई शिक्षा नीति के मुख्य अंग है। टीचर, पेरेन्ट, सोसाइटी—इन तीनों को शिक्षित करना है।'
- २८ दिसम्बर—एन. सी. ई. आर. टी. के प्रोफेसर श्री मुल्कराज ने शिक्षा के संदर्भ में बातचीत की।
- १ जनवरी १९८८—'जनसत्ता' के संपादक श्री प्रभाष जोशी आज सायं

आचार्यवर से मिले। इससे पूर्व श्री जोशी जसोल मर्यादा महोत्सव पर मिले थे। आचार्यवर व श्री जोशी के बीच पंजाब समस्या, बढ़ती हिंसा पर चर्चा हुई। श्री जोशी ने बातचीत के पश्चात् आगम साहित्य तथा अन्य साहित्य को भी देखा। पुस्तक-समीक्षा के माध्यम से जनता साहित्य से परिचित हो, इसलिए उन्होने दैनिक पत्रो मे पुस्तक समीक्षाए आए, यह सुझाव भी दिया। जोशी युवक रत्न श्री नवरत्न मल दूगड के साथ आए थे। श्री दूगड़ वर्षो तक 'इण्डियन एक्सप्रेस' के जनरल मैनेजर रहे हैं। आज भी उनके एक्सप्रेस ग्रुप से अच्छे सम्बन्ध है। श्री दूगड़ एक श्रद्धालु युवक है।

- ५ जनवरी—दिल्ली महानगर परिषद् के अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तम गोयल ने आचार्यवर से बातचीत की।
- ६ जनवरी—दिल्ली विश्वविद्यालय के रीडर श्री सी. एल. तलेसरा; राजस्थान कॉलेज शिक्षा के संयुक्त निदेशक श्री महावीरराज गेलडा ने दर्शन किये।
- १६ जनवरी—केन्द्रीय नागर विमानन राज्यमंत्री श्री जगदीश टाईटलर; सांसद श्री आर. एल. भाटिया; दूरदर्शन अधिकारी श्री कैलाश वाजपेयी ने दर्शन किए।
- १८ जनवरी—प्रमुख होमियोपैथिक चिकित्सक श्री जुगलकिशोर ने बात की।
- २० जनवरी—इण्डियन एक्सप्रेस ग्रुप के मालिक श्री रामनाथ गोयनका ने आचार्यवर से मंत्रण की।
- २६ जनवरी—राजस्थान के विधायक श्री बिहारीलाल पारीक, इन्कमटेक्स रेड कमेटी के चेयरमैन श्री टीकू शाह आए।
- ३० जनवरी—दरभंगा विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति श्री आर. के. शर्मा आचार्यश्री से मिले व विविध विषयो पर बातचीत की। उन्होंने अपनी पुस्तक 'संध्या' आचार्यवर को भेंट की।
- ३१ जनवरी—दूरदर्शन अधिकारी श्री कैलाश वाजपेयी; डा. श्रीवास्तव; जनसत्ता के प्रतिनिधि श्री सुधीर जैन आदि विद्वान आए।
- ५ फरवरी—पूर्व केन्द्रीय विधिमंत्री श्री जगन्नाथ कौशल ने विभिन्न मसलो पर आचार्यवर से बातचीत की।

  उपरोक्त का दिनांक के साथ विवरण दिया गया है। अन्य विशिष्ट व्यक्ति जो आचार्यवर से मिले और विभिन्न विषयो पर चिंतन मंथन किया, वे है—

- लेखक श्री राजेन्द्र यादव आचार्यवर से मिले।
- उद्योगपति श्री सत्यनारायण बिड़ला व श्री वीरेन्द्रकुमार डालमिया ने

दर्शन किए

- पत्रकार श्री वीरेन्द्र प्रभाकर ने आचार्यश्री को 'यादें और उम्मीदें' चित्रावली भेट की, जिसमे नेहरूजी से राजीवजी तक महत्त्वपूर्ण चित्र हैं।
- दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा. आर. के. शर्मा ने शिक्षा के संदर्भ मे बात की।
- योग प्रशिक्षक श्री कृष्णकांत मेहता व श्रीमती उषा बहिन मेहता ने योग पर चर्चा की।
- उद्योगपति श्री देवीसहाय जिन्दल ने आचार्यश्री के दर्शन किए।
- एडवोकेट श्री अरविन्द जैन ने जैन दीक्षा पद्धति पर आचार्यवर से खुलकर बात की। ज्ञातव्य है कि श्री अरविन्द ने श्वेताम्बर दीक्षा के विरुद्ध सुप्रीम कोर्ट मे एक याचिका दायर कर रखी है।
- दिल्ली पब्लिक स्कूल के प्राचार्य श्री रामस्वरूप मिगलानी ने बच्चों में सत्संस्कार कैसे आए ? इस पर बातचीत की।
- हवाई युनिवर्सिटी के प्रोफेसर एवं जैन बुद्धिज्म अन्तर्राष्ट्रीय ध्यान केन्द्र के अध्यक्ष श्री थिक थॉग हाई आचार्यवर से मिले। मूलतः वियतनामी श्री हाई को अहिंसा मे विशेष रुझान होने के कारण कठिन स्थितियों से गुजरना पड़ा। तीन वर्ष तक हवालात में बन्द रहने पर भी उनकी आस्था परिवर्तित नही हुई। उन्होने बातचीत मे बौद्ध व जैनों के कोई संयुक्त ध्यान केन्द्र की आवश्यकता पर बल दिया।

वैराग्य विकास

तेरापंथ धर्मसंघ आचार्य केन्द्रित धर्मसंघ है । वहां आचार्य जो इंगित, दृष्टि, निर्देश व कार्यक्रम देते है, उनका पूरा साधु-साध्वी समुदाय उस कार्य की संपूर्णता के लिए जुट जाता है । तेरापंथ धर्मसंघ में विविध प्रवृत्तियां संचालित है । उनके प्रमुख हमारे श्रद्धेय आचार्यश्री तुलसी हैं । वे धर्मसंघ में चल रही प्रवृत्तियो से लगातार संपर्क मे रहते हैं । उन प्रवृत्तियों के सुव्यवस्थित संचालन हेतु उन्हें विकेन्द्रित कर अनेक साधु-साध्वियों को जिम्मेवारी सौपी गई है । वे साधु-साध्विया बडी दायित्वबुद्धि व जागरूकता के साथ उन प्रवृत्तियों को संपादित करते रहते है ।

आचार्यवर स्वयं प्रातः चार बजे बिस्तर त्याग देते हैं । रात्रि सोने का समय नियत नही है । सामान्यत दस से बारह बजे के बीच सोते है । इस बीच अपने 'तिन्नाणं तारयाणं' इस आदर्श वाक्य को चरितार्थ करते हुए अहर्निश इस कार्य में संलग्न बने रहते है । आचार्यवर एक प्रयोगधर्मा व्यक्तित्व हैं । वे अपने पार्श्व मे अमीरी (सुख-सुविधा) को फटकने तक नही देते । उनके खाद्य-संयम पर नजर डालें, तो महान् आश्चर्य होता है कि वे चीनी व उससे मिली किसी भी वस्तु का प्रयोग नही करते । यह क्रम उनके पिछले कई वर्षों से चल रहा है । चातुर्मास मे खाद्य संयम के विशेष प्रयोग चलते हैं । वे अपने भोजन मे सीमित द्रव्य उपयोग मे लेते है ।

अपने शिष्य-शिष्या परिवार को सभी क्षेत्रों मे अर्हता संपन्न बनाने हेतु दिन-रात प्रयत्नशील रहते है । पृथक्-पृथक् क्षेत्रों मे विशेष कार्यरत साधु-साध्वियो को जहा प्रोत्साहन व पुरस्कार प्रदान करते है, वहां उनमे रही खामियो को दूर करने के लिए भी जागरूक रहते है । आचार्यश्री के सामने आज काफी रचनात्मक प्रवृत्तियां है । वे इसमे पूर्णतया व्यस्त रहते है, फिर भी उन व्यस्त क्षणों मे से कुछ समय साधु-साध्वियों के लिए निकालते हैं । उस समय जो पाथेय पूज्य गुरुदेव से मिलता है, वह किसी संजीवनी घूटी से

अवगत कराते । चातुर्मास मे मुनियो को जैन सिद्धात दीपिका का वाचन व विश्लेषण कराया ।

आदर्श साहित्य संघ से प्रकाशित साप्ताहिक विज्ञप्ति में एक स्थायी स्तम्भ है 'दिशादर्शन' । इसके लेखक है आचार्यश्री तुलसी । समसामयिक घटनाओ व प्रसंगो पर प्रदत्त आचार्यप्रवर के मौलिक विचारों की प्रस्तुति करता है यह 'दिशादर्शन' स्तम्भ । यह स्तम्भ लोगों के द्वारा गहरी रुचि के साथ पढ़ा जा रहा है ।

रतनगढ़ मर्यादा महोत्सव पर यह निर्णय हुआ था कि यह वर्ष 'स्वाध्याय वर्ष' के रूप मे मनाया जायेगा । इसके तहत् एक मुहूर्त जितने समय के 'स्वाध्याय योग' की परिकल्पना थी । इस समय मे आगम व तत्संवधी ग्रथों के वाचन का क्रम रखा गया । मध्याह्न आचार्यवर की सन्निधि व साधु-साध्वियो की अनिवार्य उपस्थिति मे उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन चला । इसके मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, टिप्पण, भाषा विमर्श आदि पर श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने मार्मिक विवेचन किया । श्रद्धेय आचार्यवर की समसामयिक टिप्पणी प्रत्येक के अन्तस् को छूने वाली थी । इस क्रम में उत्तराध्ययन के बाईस अध्ययनो का वाचन चला । कुछ समय के लिए संवोधि (४ अध्याय) का भी वाचन हुआ ।

आचार्यश्री के वाचना प्रमुखत्व मे वर्षो से आगम-संपादन का मौलिक कार्य चल रहा है, जिसका विद्वत् समाज मे समादर हुआ है । इस कार्य मे बहुत कुछ श्रेय युवाचार्यश्री को है ।

भाष्यकारों की परम्परा में युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्रद्धेय युवाचार्यश्री ने 'आयारो सूत्र' पर भाष्य लिख कर भाष्यकारों की श्रृंखला मे एक नया नाम जोडा है । यह तेरापंथ धर्मसंघ के लिए गौरव का विषय है । हमारे प्राचीन भाष्य प्राकृत मे है और यह 'आयारो भाष्य' संस्कृत भाषा मे लिखा गया है । 'आयारो' जैसे गंभीर और आचार-शास्त्रीय सूत्र पर आधुनिक संदर्भो के साथ भाष्य लिखना एक दुरुह कार्य था, पर आचार्यवर का निर्देश मिलते ही युवाचार्यश्री कठिन से कठिन काम को सहजता से संपादित कर लेते है । युवाचार्यश्री ने जिस सहज और सरल भाषा मे प्राचीन व अर्वाचीन-परम्परा के गहन रहस्यों का उद्घाटन किया है वह उनकी बहुश्रुत मेधा का प्रतीक है ।

आषाढ़ी पूर्णिमा (११ जुलाई) के ऐतिहासिक अवसर पर 'आयारो भाष्य' सम्पन्न हो गया और उसी दिन भगवती सूत्र पर कार्य प्रारभ हो गया । भगवती सूत्र 'अंगसुत्ताणि (भाग २)' नाम से मूलपाठ के रूप मे पहले से प्रकाशित हो चुका है । अव उसके साथ सस्कृत छाया, हिन्दी अनुवाद व

टिप्पण लिखे जायेंगे।

युवाचार्यश्री के निदेशन में होने वाले प्रेक्षाध्यान शिविरो से सैकड़ों-सैकड़ो लोगो की आदतों, संस्कारों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ है, कर्मजा-शक्ति बढ़ी है। डाक्टरों, वैद्यो के पास चक्कर-पर-चक्कर लगाने वाले तथा इलाज के लिए हजारों-लाखों रुपये पानी की तरह बहाने वाले रोगियों ने मात्र दसदिवसीय शिविर साधना से आशातीत सफलता पाई है। उसी से उत्प्रेरित होकर वे आगे आयोजित होने वाले शिविरों मे सम्मिलित होने का लोभ संवरण नही कर पा रहे हैं। शिविर मे शामिल साधकों के अनुभव बड़े ही रोमांचक होते हैं।

युवाचार्यश्री के अलग-अलग शिविरों मे दिये गए प्रवचन संपादित होकर आज जनता के सामने आ रहे हैं। वह योग साहित्य न केवल तेरापंथी, जैन, बल्कि पूरे भारतीय मानस के अन्तर् तक पैठा है। अब उस साहित्य का अंग्रेजी व अन्यान्य भारतीय भाषाओं में भी प्रकाशन हो रहा है। साहित्य की उस पवित्र व अविरल धारा से साहित्य, कला व अपने-अपने क्षेत्रो के महारथी लोग निरंतर संपर्क मे आ रहे हैं।

युवाचार्यश्री की योग सम्बन्धी कई पुस्तको का गुजराती भाषा मे अनुवाद हुआ है। 'अनेकांत : तीसरा नेत्र' पुस्तक की गुजरात टाइम्स में, 'किसने कहा मन चंचल है' व 'मन के जीते जीत' पुस्तक की जय हिन्द पत्र में विस्तृत समीक्षा प्रकाशित हुई। ये पुस्तकें पूरे गुजराती समाज मे बहुत समादृत हुई हैं।

सभी गुरुतर दायित्वों का बखूबी निर्वहन करते हुए अपनी निजी साधना व चर्या के प्रति वे क्षण-क्षण जागरुक हैं। विद्यार्थी मुनियों, समणियो व मुमुक्षु बहिनों को उन्होने आगम व दर्शन का तलस्पर्शी अध्ययन कराया। विद्यार्थी मुनियों को इस वर्ष पंचास्तिकाय व सुप्रसिद्ध जैन विद्वान श्री सात-कोडी मुखर्जी द्वारा लिखित कुछ महत्त्वपूर्ण शोध प्रबंधो जो तर्क, दर्शन से सम्बन्धित हैं, का वाचन कराया। उनका हिन्दी अनुवाद श्री दयानंद भार्गव ने किया है।

गुरुकुल मे साधु-साध्वियां आचार्यश्री के इंगित से अलग-अलग कार्यो में पूरी तल्लीनता से जुटे हुए हैं। वे अपनी साधना व चर्या के साथ संघ प्रभावना के उपक्रमों मे भी अपना योगदान करते रहते हैं। गुरुकुल मे रह रहे मुनियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

१. मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन'

आगम कार्य मे संलग्न, शब्द कोश का प्रुफ निरीक्षण

विशेष—कुछ महीने आचार्यवर से पूर्व उपदेश दिया।

२. मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'

तपस्या $\frac{1}{8}$, वाचन—६०० पृ०
विशेष—अणुव्रत पत्र के स्थायी स्तम्भ 'भीड में उभरता हुआ आदमी' के लेखक
साहित्य प्रकाशन
१. परीलोक-प्रकाशक—बी. जैन पब्लिसर्स, दिल्ली (चतुर्थ संस्करण)
२. नीतिलोक ,, (,,)
३. उपकार ,, (,,)
४. तेरापंथ दिग्दर्शन १९८६-८७ जैन विश्व भारती
५. जय तिथि पत्रक—२०४५ ,, (संपादन)

३. मुनि बालचंदजी

तपस्या $\frac{1}{30}$, $\frac{2}{3}$, स्वा० ३०० गाथा, वाचन—५०० पृ०

४. मुनि मधुकरजी

तपस्या—$\frac{1}{5}$, एकांतर—१ माह, एकासन—५०
वाचन-आगम—५०० पृ०, संघीय व अन्य साहित्य—२००० पृ०
अध्यापन—संस्कृत व जैन विद्या
संपादन—भिक्खु दृष्टांत (प्रकाशित), प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध (प्रेस मे)
साहित्य प्रकाशन
१. गूंजन, प्रकाशक—अभातेयुप (चतुर्थ संस्करण)
२. हिवडै रो हेलो ,, (तृतीय ,,)
३. स्वर गूंजे निर्माण के ,, (चतुर्थ ,,)

५. मुनि हंसराजजी

तपस्या—$\frac{1}{20}$, वाचन—९०० पृ०

६. मुनि हीरालालजी

तपस्या—$\frac{1}{32}$ $\frac{2}{2}$ $\frac{3}{1}$ (सावण महीने के एकान्तर शामिल)
स्वा०—५०,००० गाथा
आगम कार्य—उवंग सुत्ताणि (भाग ४, खंड १) की शब्दसूची का प्रुफ निरीक्षण, इस ग्रंथ की शब्दसूची का निर्माण व संयोजना इनके द्वारा ही हुई थी; भगवती टिप्पण लेखन के कार्य मे संलग्न।

७. मुनि श्रीचंदजी 'कमल'

आगम कार्य—उवंग सुत्ताणि (भाग ४, खंड २) के शब्दकोश की सम्पूर्ण व व्यवस्थित संयोजना; इस ग्रंथ के अन्तर्गत इन आगमों का अकारादि क्रम से शब्दकोश है—प्रज्ञापना, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति,

चन्द्रप्रज्ञप्ति, निरयावलिका, कल्पवतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा।

८. मुनि विजयराजजी

तपस्या—$\frac{१}{३२}$ (एकान्तर शामिल), वाचन—३०० पृ०
विशेप—कुछ महीने आचार्यवर से पूर्व उपदेश दिया।

९. मुनि किशनलालजी

तपस्या—$\frac{१}{१५}$ $\frac{२}{१}$ $\frac{३}{१}$; वाचन—१००० पृ. (उत्तराध्ययन, आयारो, दशवैकालिक, सम्वोधि, चौबीसी)
प्रतिदिन १ घंटा नियमित आसन, प्राणायाम
विशेष—प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान के विद्यार्थियो व शिविरों मे शिविरार्थियो को सक्रिय प्रशिक्षण।
साहित्य प्रकाशन
१-२. जीवन-विज्ञान (कक्षा ६ व ७) प्रकाशक—जैन विश्व भारती
३. प्रेक्षाध्यान : आसन और प्राणायाम ,,
(पांचवां व छठा संस्करण)
४. प्रेक्षाध्यान : यौगिक क्रियाएं ,,
(दूसरा संस्करण)
५. प्रियदर्शना (उपन्यास) वी. जैन पब्लिसर्स, दिल्ली ,,
(तृतीय संस्करण)

१०. मुनि महेन्द्रकुमारजी

तपस्या—$\frac{१}{७}$, वाचन-आगम—२०० पृ०, आगमेतर—१००० पृ० स्वा० ९०,००० गा०, ध्यान—३० मि० प्रति०, ५ प्रेक्षाध्यान शिविरों का संचालन; अध्यापन व लेखन में विशेष श्रमदान
दिल्ली मे आचार्यवर के पधारने से पूर्व सम्पर्क कार्य—प्रधानमंत्री कार्यालय, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, केन्द्रीय मंत्रीगण, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली प्रशासन मंत्रीगण, एवं अधिकारीगण, पत्रकार; दूरदर्शन, आकाशवाणी, साहित्यकार, विदेशी दूतावास, धार्मिक नेताओं से सम्पर्क, व अन्य व्यक्ति।
दूरदर्शन पर प्रेक्षाध्यान के चार कार्यक्रमों का प्रति रविवार प्रसारण। कलाकृति, प्रदर्शनी, अवधान, महावीर जयन्ती, संगीत आदि के समय-समय पर कार्यक्रम प्रसारित। जापान, स्वीडन के दूरदर्शन द्वारा अवधान आदि कार्यक्रम अंकित।
राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं मे हिन्दी तथा अंग्रेजी मे संवाद प्रसार तथा लेख आदि।

दिल्ली चातुर्मास मे आचार्यवर के कार्यक्रमों में सक्रिय सहयोग।

साहित्य प्रकाशन

(i) Contemplation through Auto-suggestion
प्रकाशक—जैन विश्व भारती

(ii) Preksha Dhyan-Theory and Practice

संपादित पुस्तकें

(i) प्रेक्षाध्यान : अनुप्रेक्षा
(ii) प्रेक्षाध्यान : आहार विज्ञान
(iii) प्रेक्षाध्यान : सिद्धान्त और प्रयोग
(iv) Human Boby टुडे व टुमारो प्रकाशन
(v) Therapeutic Thinking ,, ,,

आगम कार्य मे सहयोग

आयारो भाष्य व भगवती सूत्र के कार्य मे संलग्न।

११. मुनि धर्मरुचिजी

छह विगय का वर्जन ४ माह से व पांच विगय का निरन्तर परिहार—
जप—३० मि०, कुछ महीने आचार्यवर से पूर्व उपदेश दिया।
साहित्य प्रकाशन–१ सोचो ! समझो !! (प्रवचन संग्रह भाग १, २)
संपादन; लेखक : आचार्यश्री तुलसी

१२. मुनि राजेन्द्रकुमारजी

तपस्या—$^{१}_{४०}$ $^{२}_{१}$ (एकान्तर शामिल) वाचन—३०० पृ०
विशेष—भिक्षु शब्दानुशासन (खंड २) का सपादन (चालू है)
युवाचार्यश्री के सान्निध्य मे चलने वाले विशेप अध्ययन में संलग्न।
जैन विद्या परिषद् मे शोध प्रबंध का वाचन।
अध्यापन—व्याकरण आदि।

१३. मुनि विजयकुमारजी

तपस्या—$^{१}_{२१}$; वाचन—४००० पृ०
साहित्य प्रकाशन
१ झंकार (गीत संग्रह) प्रकाशक—जैन विश्व भारती
२. युगप्रधान आचार्य तुलसी (चित्रकथा)—तेरापथ बुद्धिजीवी मंच।

१४. मुनि श्रेयांसकुमारजी

तपस्या—$^{१}_{२०}$, $^{४}_{१}$ एकान्तर—१ माह

कंठस्थ—२०० गा०; स्वा०—३०० गाथा; जप—३० मि०
वाचन-आगम—२०० पृ; संघीय—१५०० पृ०
आचार्यवर की सन्निधि मे चलने वाले जैन सिद्धान्त दीपिका के वाचन मे संलग्न।

१५. मुनि रणजीतकुमारजी

वाचन—५०० पृ०
कड़ाही विगय का निरन्तर परिहार।

१६. मुनि धर्मेन्द्रकुमारजी

जप व ध्यान—२ घंटा नियमित
आचार्यवर की सन्निधि मे चलने वाले जैन सिद्धान्त दीपिका के वाचन मे संलग्न।
प्रेक्षाध्यान शिविरों में शिविरार्थियों को आसनों का प्रशिक्षण।

१७. मुनि उदितकुमारजी

स्वा० ३०० गाथा; वाचन—८०० पृ०
विशेष—संस्कृत का अध्यापन व अंग्रेजी का अध्ययन।
युवाचार्यश्री के सान्निध्य में चलने वाले विशेष अध्ययन मे संलग्न।
जैन विद्या परिषद् मे शोध प्रबन्ध का वाचन।
प्राय: नियमित पाच विगय का वर्जन (दूध को छोड़कर)।

१८. मुनि मुदितकुमारजी

विशेष—युवाचार्यश्री की सन्निधि मे चलने वाले विशेष अध्ययन मे संलग्न।
अंग्रेजी का विशेष अध्ययन।
अध्यापन—कालु कौमुदी, प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी, गद्य कुसुमाञ्जली, शान्तसुधारस भावना आदि।
युवाचार्यश्री की सन्निधि मे 'आयारो भाष्य' लेखन में प्रमुख सहयोगी।
भगवती टिप्पण लेखन मे संलग्न।
जैन विद्या परिषद् मे शोध-प्रबंध का वाचन।

१९. मुनि अरविन्दकुमारजी

कठस्थ—१०० गा०, वाचन—३०० पृ०
आचार्यवर की सन्निधि में चलने वाले जैन सिद्धान्त दीपिका के वाचन मे संलग्न।

२०. मुनि धनञ्जयकुमारजी

वाचन—५००० पृ०; स्वा० ३०० गाथा प्रतिदिन

विशेष—युवाचार्यश्री की सन्निधि में चलने वाले विशेष अध्ययन में संलग्न ।

'महाप्रज्ञ से साक्षात्कार' पुस्तक का संकलन ।

जैन विद्या परिपद् मे शोध प्रवन्ध का वाचन ।

२१. मुनि जिनदासजी

वाचन—५०० पृ०

२२. मुनि अजितकुमारजी

तपस्या—$\frac{१}{२१}$ $\frac{३}{१}$ $\frac{४}{१}$, वाचन-आगम—२०० पृ०, आगमेतर—५०० पृ.

कंठस्थ—५०० गा०, स्वा०—६०,००० गा०, जप—१ घंटा प्रति०

विशेप—आचार्यवर की सन्निधि मे चलने वाले जैन सिद्धान्त दीपिका के वाचन मे संलग्न ।

कलाकृति मे रुचि, कागज, वांस आदि से अमृत कलश व कल्प, टोपसी का निर्माण ।

२३. मुनि प्रशान्तकुमारजी

कंठस्थ—३०० गाथा, स्वा० ३०० गाथा; वाचन—८०० पृ०

विशेष—युवाचार्यश्री की सन्निधि मे चलने वाले विशेप अध्ययन में संलग्न ।

अंग्रेजी का अध्ययन ।

जैन विद्या परिषद् मे शोधपत्र का वाचन ।

२४. मुनि दिनेशकुमारजी

कंठस्थ—५०० गा०, स्वा—५०० गा०

वाचन—साधु-साध्वियों के पाठ्यक्रम मे संलग्न ।

दीपिका, सिंदूर प्रकर, भक्तामर आदि का वाचन ।

आचार्यवर की सन्निधि मे चलने वाले जैन सिद्धान्त दीपिका के वाचन मे संलग्न ।

२५. मुनि ऋषभकुमारजी

कठस्थ—३०० गाथा; स्वाध्याय ४०० गाथा प्रतिदिन

अध्ययन—मुकुलम्, भक्तामर, जैन सिद्धान्त दीपिका, रचनानुवाद कौमुदी, प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी (३६ पाठ) शातसुधारस (११ गीत) गद्य कुसमांजलि (अपूर्ण) । आचार्यवर की सन्निधि में चलने वाले जैन सिद्धान्त दीपिका के वाचन मे संलग्न ।

२६. मुनि मदनकुमारजी

तपस्या—$\frac{१}{१०}$, वाचन-आगम—१००० पृ०, आगमेतर—१००० पृ०

कंठस्थ—१२०० गा०, स्वा०—६२,००० गा०;
प्रेक्षाध्यान का अभ्यास व प्रशिक्षण।
विशेष—मुनि महेन्द्रकुमारजी के संपर्क कार्य में विशिष्ट सहयोगी। दूरदर्शन, आकाशवाणी के अधिकारियों से संपर्क व उनके कार्यक्रम प्रसारण मे योगदान।
विशिष्ट व्यक्तियों से भेट, इसके लिए आचार्यवर द्वारा चार माह की विगय बख्शीस।
आचार्यवर की सन्निधि मे चलने वाले जैन सिद्धान्त दीपिका के वाचन में संलग्न।

२७. मुनि लोकप्रकाशजी

कंठस्थ—४०० गाथा; वाचन—५०० पृ०
विशेष—अंग्रेजी का अध्ययन
आचार्यवर की सन्निधि मे चलने वाले जैन सिद्धान्त दीपिका के वाचन मे संलग्न।

२८. मुनि धर्मेशकुमारजी

कंठस्थ—७०० गाथा; स्वा० ३०० गाथा प्रतिदिन;
वाचन—२००० पृ०
विशेष—साधु-साध्वियो के पाठ्यक्रम मे द्वितीय वर्ष की परीक्षा मे ७८% अंक प्राप्त कर उस वर्ष व सम्पूर्ण परीक्षा मे प्रथम स्थान प्राप्त किया।
आचार्यवर की सन्निधि मे चलने वाले जैन सिद्धान्त दीपिका के वाचन मे संलग्न।

२९. मुनि वीरेन्द्रकुमारजी

कंठस्थ—२००० गाथा; स्वा०—५०० गाथा प्रतिदिन;
वाचन—२०० पृ०
विशेष—साधु-साध्वियो के पाठ्यक्रम मे प्रथम वर्ष की परीक्षा में ७६% अंक प्राप्त कर उस वर्ष मे प्रथम व संपूर्ण परीक्षा मे द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

साध्वियों का विवरण

महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री द्वारा संपादित पुस्तकें

१. राजपथ की खोज, २. हस्ताक्षर

पुनर्संपादित

१. जैन तत्त्व विद्या, २. अणुव्रत. गति-प्रगति, ३. प्रेक्षा: अनुप्रेक्षा

अध्यापन

रत्नाकरावतारिका, अन्ययोग व्यवच्छेदिका, जैन सिद्धान्त दीपिका, सिन्दूर प्रकर, समवाओ, भिक्खु दृष्टान्त, कर्तव्य षट्त्रिंशिका

अन्तरंग संगोष्ठी

३ नवम्बर/रात्रि के शान्त वातावरण में साध्वी प्रमुखाश्रीजी के सान्निध्य मे साध्वियो की एक संगोष्ठी हुई। पूरे चातुर्मास की जानकारी प्राप्त करते हुए आगे क्या करणीय है, इस दिशा मे महाश्रमणीजी ने प्रेरणा दी।

८ नवम्बर/गुरुद्वारे के शान्त माहौल मे साध्वियो की एक गोष्ठी हुई। साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने योगक्षेम वर्ष का उद्देश्य बताते हुए कहा—'योगक्षेम वर्ष का उद्देश्य है आध्यात्मिक क्षमता को बढ़ाना व प्रयोगात्मक जीवन जीना।' महाश्रमणीजी ने योगक्षेम वर्ष के बारे में विस्तार से चर्चा की।

विशेष संपर्क

भारत की राजधानी दिल्ली मे अनेक विशिष्ट व्यक्तियों व साहित्यकारो का महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री से मिलन व बातचीत हुई, जिनके नाम इस प्रकार है—मृणाल पाण्डे, शुभा वर्मा, आशा वोहरा, गणेश ललवानी, सरोजिनी प्रीतम, डा० निजामुद्दीन, शीला दीक्षित, अटलविहारी वाजपेयी आदि। आचार्यवर की सन्निधि में होने वाली विशिष्ट व्यक्तियों की बातचीत में तो साध्वी प्रमुखाजी प्रायः भाग लेती थीं।

कार्यक्रम

आचार्यवर का जिन-जिन क्षेत्रों में पदार्पण होता है। वहां प्रात.काल आगम पर प्रवचन होता है। रात्रि में भी विविध कार्यक्रम होते है। कभी विषय को लेकर युवाचार्यश्री के विशेष वक्तव्य होते हैं। प्राय. सभी क्षेत्रों मे रात्रि मे एक-दो कार्यक्रम महाश्रमणी साध्वी प्रमुखाश्री के सन्निधि में आयोजित होते है। उन कार्यक्रमो में साध्वियों ने अपनी मार्मिक कविता, सुमधुर गीत, भावोत्प्रेरक भाषण व आकर्षक मुक्तक पेश किए। अन्त मे साध्वी प्रमुखाश्री के सारगर्भित उद्बोधन हुए। इन रात्रिकालीन समारोहो का विवरण दिनांक के क्रम से आचार्यवर की सन्निधि मे सम्पन्न कार्यक्रमों के साथ दिया गया है।

महिला संगोष्ठी

समाज की महिलाएं नैतिक व आध्यात्मिक क्षेत्र मे आगे बढ़े, इस दृष्टि से तेरापंथ समाज विशेष जागरूक है। आचार्यवर के निर्देश से साध्वियां महिलाओं की प्रगति के लिए सदैव सक्रिय रहती हैं। आचार्यवर का जहां पधारना होता है, वहां साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य मे प्रायः महिला

सगोष्ठिया आयोजित होती है। उन संगोष्ठियो मे महिलाओं को महाश्रमणीजी से महत्वपूर्ण दिशादर्शन व प्रेरणा मिलती है।

चूरू मे महिलाओ की एक संगोष्ठी मे महाश्रमणीजी ने कहा—'चूरू एक ऐसा क्षेत्र है, जहां धर्म की स्रोतस्विनी प्रवाहित होती रहती है। यहां की वहिने श्रद्धालु है और क्रियाशील भी है। मैंने सुना है कि वहिनें एक प्रौढ़ शाला चलाती है, जिसमे निरक्षर को अक्षर ज्ञान दिया जाता है। महिला मण्डल की यह रचनात्मक प्रवृत्ति मण्डल के प्रति आस्था और निष्ठा को व्यक्त करती है। चूरू का एक भी परिवार इससे अनजुडा न रहे। महिला मण्डल की वहिनो को अपने वच्चो को संस्कारी वनानें के लिए सप्ताह मे १-२ दिन ज्ञानशाला भी चलानी चाहिए। वहिनों को स्वयं को धार्मिक जानकारी बढ़ानी चाहिए। एक वहिन समझकर तत्वज्ञ वनती है, तो पूरा परिवार उसकी धार्मिक विचारधारा से प्रवाहित होगा।'

हिसार महिला मण्डल की एक संगोष्ठी मे महिलाओ से विशेष अपेक्षा रखते हुए साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने कहा—'महिला मण्डल मे कुछ वहिनें वोलने के क्षेत्र मे विशेष योग्यता प्राप्त करे। एक भजन मण्डली भी तैयार हो। वहिनें अर्थहीन रुढियो को तोडकर आदर्श महिला मण्डल के रूप मे अपनी पहचान कराए।'

१९ अप्रैल को रोहतक मे एक महिला संगोष्ठी मे साध्वी प्रमुखाश्री ने अपने महत्वपूर्ण उद्गार व्यक्त किए। साध्वी कल्पलताजी ने अपने प्राग् वक्तव्य मे महिलाओ को भारतीय सस्कृति की याद दिलाई।

दिल्ली मे तेरापथ समाज के हजारो परिवार रहते है। युवक-युवतियों की काफी संख्या है। स्थानीय दूरी के कारण चारों समय का लाभ वे नही उठा पाते। युवतिया इस प्रवास से कुछ सैद्धान्तिक जानकारी प्राप्त कर सके, इस दृष्टि से हर वृहस्पतिवार को युवतियो की एक क्लास लगती। कक्षा मे जैन तत्त्व विद्या, अमृत कलश का सहजता और सरलता से अध्ययन करवाया जाता। साध्वी प्रमुखाश्रीजी अपनी व्यस्तता मे भी वहिनो को अपना सान्निध्य प्रदान करती। वहिनें वडी उमंग से अध्ययन करती। समय-समय पर परीक्षाएं भी होतीं। वहिनो ने अच्छे अंक प्राप्त कर साध्वी प्रमुखाश्रीजी के श्रम को सार्थक किया। इन दस महीनो के प्रवास का महिला मडल ने अच्छा उपयोग किया।

साध्वियों का व्यक्तिशः विवरण

१. साध्वी कमलूजी

स्वाध्याय—प्रतिदिन $\frac{1}{2}$ घन्टा।

तपस्या—$3\frac{1}{2}$, वाचन—६०० पृ०

२. साध्वी चन्दनबालाजी

वाचन-आगम—५०० पृ०, अन्य—१५०० पृ०
जप—सवा लाख (विघ्न हरण........)
२ घन्टा जप प्रतिदिन

३. साध्वी जिनप्रभाजी

तपस्या—८१/३
वाचन-आगम—८०० पृ०; अन्य—६०० पृ०
स्वाध्याय—३०० गाथा प्रतिदिन

४. साध्वी कल्पलताजी

वाचन—संघीय साहित्य—३०० पृ०; अन्य साहित्य—१००० पृ०
जप—सवा लाख (स्वामीजी व पार्श्वनाथ पृथक्-पृथक्)
सम्पादन—साप्ताहिक विज्ञप्ति
साहित्य प्रकाशन—१. आस्था के चमत्कार—आदर्श साहित्य संघ
२. संस्मरणो का वातायन (संपादन) ,,

५. साध्वी सुषमाकुमारीजी

स्वाध्याय—२५००० गाथा, वाचन—१००० पृ०
जप—सवा लाख ॐ भिक्षु

६. साध्वी विमलप्रज्ञाजी

स्वाध्याय—५०,००० गाथा
वाचन-आगम—१५०० पृ०, अन्य—२००० पृ०
जप—१५ मिनिट प्रतिदिन
लेखन—अणुव्रत का एक स्थायी स्तम्भ
जैन विद्या परिषद् के शोधपत्र का वाचन।

७. साध्वी निर्वाणश्रीजी

वाचन-आगम—१००० पृ०, अंग्रेजी व अन्य—५०० पृ०
लेखन—महासती सुभद्रा (उपन्यास)
सपादन—साप्ताहिक विज्ञप्ति
जैन विद्या परिषद् मे शोध प्रवन्ध का वाचन

८. साध्वी वर्द्धमानश्रीजी

स्वाध्याय—१०,००० गाथा
वाचन—आगम-५०० पृ० ,अंग्रेजी व अन्य—८०० पृ०
जप—१० मिनिट प्रतिदिन

९. साध्वी स्वर्णरेखाजी

तपस्या—$\frac{१}{३०}$, जप—सवा लाख
कण्ठस्थ—३०० गाथा, वाचन—२००० पृ०

१०. साध्वी चित्रलेखाजी

स्वाध्याय—२०,००० गाथा, जप—सवा लाख (ॐ भिक्षु)
वाचन—१००० पृ०, अन्य—२००० पृ०
विशेष—साधु-साध्वियों के पाठ्यक्रम सप्तम वर्ष की परीक्षा मे प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण

११. साध्वी विभाश्रीजी

वाचन-आगम—१००० पृ०, अन्य—२००० पृ०
कण्ठस्थ—३०० गाथा, जप—सवा लाख व प्रतिदिन १५ मिनिट
विशेष—सप्तम वर्ष की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण

१२. साध्वी शारदाश्रीजी

तपस्या—$\frac{१}{२७}$, वाचन-आगम—१००० पृ०, अन्य—२००० पृ०
स्वाध्याय—२००० गाथा, जप—चातुर्मास मे विशेष अनुष्ठान
विशेष—सप्तम वर्ष की परीक्षा मे द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण

१३. साध्वी विवेकश्रीजी

वाचन-आगम—१५०० पृ०, अन्य—१००० पृ०
कण्ठस्थ—५०० गाथा, स्वाध्याय—३०० गाथा
जप—२० मिनिट प्रतिदिन

१४. साध्वी अनुशासनाश्रीजी

तपस्या—$\frac{१}{२५}$, वाचन—१००० पृ०
कण्ठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—३०० गाथा प्रतिदिन
विशेष—द्वितीय वर्ष की परीक्षा मे उत्तीर्ण

१५. साध्वी मलयप्रभाजी

तपस्या—$\frac{१}{२३}$, वाचन—१००० पृ०
कण्ठस्थ—४०० गाथा, स्वाध्याय—५०,००० गाथा
ध्यान—३० मिनिट प्रतिदिन
विशेष—द्वितीय वर्ष की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण

१६. साध्वी रूपमालाजी

तपस्या—$\frac{१}{४०}$, जप—सवा लाख व २० मिनिट प्रतिदिन
स्वाध्याय—२०० पृ०, कण्ठस्थ—२०० गाथा

१७. साध्वी श्रुतयशाजी

वाचन-आगम—१५०० पृ०, अन्य—६०० पृ०
कण्ठस्थ—६०० गाथा, स्वाध्याय—३०,००० गाथा

१८. साध्वी मुदितयशाजी

वाचन-आगम—१५०० पृ०, अन्य—६०० पृ०
कण्ठस्थ—६०० गाथा, स्वाध्याय—५०,००० गाथा
जप—सवा लाख (ॐ भिक्षु)

१९. साध्वी शुभ्रयशाजी

वाचन-आगम—७०० पृ०, अन्य—३०० पृ०
कण्ठस्थ—११०० गाथा, ध्यान—३० मिनिट प्रतिदिन
विशेष—शिविरो मे आसन व जीवन-विज्ञान सम्बन्धी प्रशिक्षण

२०. साध्वी मुक्तियशाजी

तप-आयम्बिल—७, वाचन—६०० पृ०
कण्ठस्थ—८०० गाथा, जप—सवा लाख (ॐ भिक्षु)

२१. साध्वी शीतलयशाजी

तपस्या—३, वाचन—६०० पृ०
कण्ठस्थ—१००० गाथा, स्वाध्याय—१ लाख गाथा
विशेष—द्वितीय वर्ष मे प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण

विविध अलंकरण/सम्मान/उल्लेख

संघ के कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते है, जो अपने-अपने क्षेत्रो मे विशेष अर्हता रखते है। वे जो कुछ भी काम करते हैं, उनमे उनकी कोई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा नही होती। उनका एक मात्र उद्देश्य संघीय विकास व प्रभावना का होता है। उन व्यक्तित्वो का आचार्यवर द्वारा समय-समय पर अंकन किया जाता है। इस वर्ष आचार्यवर द्वारा अलंकृत सम्मानित व विशेष उल्लिखित श्रावक-श्राविकाओ को विवरण निम्नोक्त है.—

- डॉ० मांगीलाल सामसुखा (चूरू) — शासन सेवी

अणुव्रत अधिवेशन पर—

- श्री सोहनलाल गांधी (जयपुर) — अणुव्रत प्रवक्ता

संयुक्त अधिवेशन पर—

- श्री सरदारमल कोठारी (जयपुर) — शासन सेवी
- श्रीमती रतनीदेवी वरड़िया (सरदारशहर) — श्रद्धा की प्रतिमूर्ति
  धर्मपत्नी श्री श्रीचंद वरड़िया
- श्रीमती तारामणि देवी जैन (दिल्ली) — ,,
  धर्मपत्नी श्री सुमेरचंद जैन
- श्रीमती इंदिरादेवी पटावरी (मोमासर) — ,,
  धर्मपत्नी श्री सुमेरमल पटावरी
- श्रीमती चांददेवी वेगानी (वीदासर) — ,,
  धर्मपत्नी श्री चन्दनमल वेगानी

विशेष उल्लेख

- १७ सित० स्वर्गीय—लाला मनोहरलाल (भिवानी) पजाव मे तेरापथ के योगदान के संदर्भ मे
- स्वर्गीय श्री चंदनमल सामसुखा (फाजिल्का) ,,
- लाला झंडुमल (जगराओं)
- २० सित० श्री टीकमचंद सेठिया (गंगाशहर), श्री पन्नालाल चोरड़िया (भुसावल) — तेरापंथ-क्षेत्रो को संगठित करने के उनके प्रयास के लिए
  श्री नारायण भाई (उल्लासनगर) — क्रूर जीवन से सहज जीवन के लिए प्रयाण

जर्मन युवक मारकस एडोल्फ मासनेर	धर्म की प्रभावना के लिए (सावधिक समण स्वयंप्रज्ञ)
० १० अक्टू० श्री मिश्रीमल सुराणा (राणावास)	"पूणिये श्रावक" के रूप मे उल्लेख
० २५ जन० श्री सूरजभान व लिखमाचंद जैन (दिल्ली)	नियमित सतदर्शन के लिए

समाज के गौरव

तेरापंथ समाज का विभिन्न क्षेत्रो मे अपना वर्चस्व है। समाज का युवावर्ग उद्योग, प्रशासन व अन्य क्षेत्रो मे वहुत तेजी से आगे वढ रहा है। उन क्षेत्रो मे युवा प्रतिभाओ ने अपनी अतिशयता का परिचय दिया है। व्यावसायिक प्रगति के साथ उनकी धार्मिक आस्था भी वेजोड़ है। उनमे कुछ युवाओ का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

श्री हुलासचंद गोलछा (काठमांडु)

वरिष्ठ श्रावक श्री गोलछा आगामी वर्ष के लिए 'वाज्मे' के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। 'वाज्मे' एक ऐसी संस्था है, जो लघु एवं मध्यम स्तर के व्यापारिक संस्थानो से सम्वन्धित है। इस संस्था से करीव १५८ देश जुडे हुए है। इसके अध्यक्ष श्री गोलछा व महामंत्री की चक्रधारी अग्रवाल ने आचार्यवर के दर्शन किए। श्री गोलछा का विश्वस्तरीय सस्था के अध्यक्ष रूप में निर्वाचित होना तेरापथ समाज के लिए गौरव की वात है।

श्री अचलचंद वालड़

श्री वालड़ को लघु उद्योग के क्षेत्र मे सर्वश्रेष्ठ उत्पादन के लिए सन् १९८७ का राष्ट्रपति पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार उन्हे १९ मई को प्राप्त हुआ। वे मेसर्स राजस्थान इन्डस्ट्रीज के मालिक है।

श्री अशोककुमार चोरड़िया

जयपुर निवासी श्री अशोककुमार चोरडिया ने रत्न आभूपण निर्यात सवर्धन परिपद्, वम्वई द्वारा प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। श्री चोरडिया को यह पुरस्कार उनके द्वारा की गई वहुमूल्य रत्नो की कटिंग और साइनिंग की विशेपता के लिए दिया गया है। युवक श्री अशोककुमार चोरड़िया जयपुर के प्रतिष्ठित श्रावक श्री राजकुमार चोरडिया के सुपुत्र है। तेरापंथ धर्मसंघ के प्रति भी अशोककुमारजी पूरी तरह निष्ठावान् है। यद्यपि कुछ वर्ष पूर्व जयपुर मे हमारे संघ से कुछ साधु वहिभूत हुए, उस समय इस परिवार के कुछ सदस्य विचलित हो गए। किन्तु श्री राजकुमारजी एवं अशोकजी ने उस समय भी पूरी निष्ठा का परिचय दिया।

श्री कन्हैयालाल पटावरी

दिल्ली निवासी युवक श्री कन्हैयालाल पटावरी समाज के कर्मठ, सेवाभावी और उदार श्रावक है। अभी दिल्ली चातुर्मास व्यवस्था समिति के

वे अर्थ मत्री है। समाज का उनके प्रति गहरा विश्वास है। पटावरीजी के मन मे बहुत वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र मे काम करने की तड़फ थी। अभी उन्होंने दिल्ली जनकपुरी मे एक विशाल भूखंड पर एक बनी बनाई स्कूल का अधिग्रहण किया है। वे इस स्कूल को अणुव्रत विद्यापीठ के रूप मे संचालित करेंगे। कीर्तिनगर मे एक नेत्र चिकित्सालय का भी पटावरीजी ने निर्माण कराया है।

श्री के० एस० वैद

भारत सरकार, उद्योग मत्रालय द्वारा विशिष्ट उद्यमी के रूप में सर्वोत्कृष्ट कार्य-निष्पादन के लिए लघु उद्यमियो को राष्ट्रीय पुरस्कार १९८६ जयपुर के प्रतिष्ठान मेसर्स जयपुर लैम्प कम्पोनेट्स प्रा० लि० को प्रदान किया गया। इस प्रतिष्ठान के मालिक श्री के० एस० वैद है। महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने श्री वैद को पुरस्कारस्वरूप दस हजार रुपए की राशि तथा एक प्रशस्ति पत्र प्रदान किया है। तीसवर्षीय श्री के० एस० वैद मेकेनिकल इन्जीनियर है और उनको १३ वर्षों का तकनीकी अनुभव है। उन्होंने नवीनतम तकनीक का प्रयोग करते हुए निकल और निकल अलाय वायर तथा मोलिकिनम वायर का विनिर्माण करने के लिए जयपुर मे इस इकाई की स्थापना की है। इन तारो का प्रयोग मुख्यत. बिजली के बल्ब बनाने वाले उद्योगो मे होता है। चार वर्ष की अवधि मे इस इकाई ने अपना उत्पादन २ लाख रु० से बढा कर १०० लाख रुपये कर लिया है और मूल्यवान् विदेशी मुद्रा बचाने मे अपना सहयोग दिया है। श्री वैद लाडनूं के है और तेरापंथी है। समाज को ऐसे युवक पर सात्त्विक गौरव का अनुभव होता है।

प्रचार माध्यमों का सहयोग

आज के इस युग मे विज्ञान तेज रफ्तार से बढ रहा है। विज्ञान ने विभिन्न क्षेत्रो मे इतनी खोज व विकास किया है कि वह हमे अचम्भे मे डाल देता है। विज्ञान ने बैलगाडी से वायुयान के युग मे प्रवेश किया। कलम के स्थान पर कम्प्युटर काम करने लगा है। धनुष वाण की जगह मिसाइलो का निर्माण हो गया है। विज्ञान के सामने आज पुराना ढांचा चरमरा गया है।

रेडियो, टी० वी० व अखवारो जैसे सचार व प्रचार माध्यमों ने एक क्रान्ति मचा दी है। घर बैठे पूरे विश्व की घटनाओ को सुन सकते है, देख सकते है व पढ सकते है। प्रचार मीडिया से प्रत्येक व्यक्ति तक पहुचा जा सकता है, इसलिए इनकी उपादेयता बढना लाजिमी है।

आचार्यश्री तुलसी वर्तमान के बहुचर्चित आचार्य है। उन्होने अणुव्रत के माध्यम से मानवतावादी व पंथनिरपेक्ष मार्ग प्रशस्त किया है। इसी कारण उनकी छवि एक राष्ट्रसंत के रूप मे उभरी है। उनके द्वारा कही गई वात को बहुत मूल्यवान् माना जाता है। रेडियो, टी० वी० व अखबार आचार्यश्री के कार्यक्रमो व विचारो को काफी तरजीह देते है। इस बार राजधानी दिल्ली के लम्बे प्रवास मे प्रचार मीडिया का काफी सहयोग मिला।

आकाशवाणी अपने 'समग्र जीवन दर्शन' विभाग के अतर्गत ऐसे व्यक्तित्व का जीवन, सस्मरण, सदेश व भाषणो का ग्रहण करता है, जो अपने-अपने क्षेत्रो मे विशिष्ट पहचान रखते है। आकाशवाणी के इस विभाग के अतर्गत बहुत कम लोगो का जीवन-दर्शन रिकार्ड किया जाता है। चार घटो की इस रिकार्डिग मे आचार्यवर का जीवन, सस्मरण, सदेश, भाषण व गीत को लिया गया है।

रिकार्डिग

दूरदर्शन ने ११ जुलाई को अहिंसा विषय पर युवाचार्यश्री का २० मिनट इन्टरव्यू लिया। ५ सितम्बर को आचार्यश्री का साक्षात्कार लिया। २१ व २५ अगस्त को मुनि महेन्द्रकुमारजी प्रेक्षाध्यान के संदर्भ मे आकाशवाणी भवन गये। १६ अक्टूबर को आकाशवाणी ने बच्चो के लिए साध्वी प्रमुखाश्री का सदेश रिकार्ड किया। ६ व ७ जनवरी को दूरदर्शन ने साधु-साध्वियों की कलात्मक वस्तुओ को फिलमाया। २६ जनवरी को दूरदर्शन ने कला व साहित्य पर अपना कार्यक्रम कवर किया।

प्रसारण

२२ अक्टूबर को महावीर निर्वाण दिवस पर आकाशवाणी दिल्ली द्वारा रात्रि ८-३० बजे युवाचार्यश्री का विशेष वक्तव्य प्रसारित हुआ। विषय था—'आज के संदर्भ में महावीर का उपदेश।' ४ फरवरी १९८८ को प्रातः काल ७-३० बजे दिल्ली से आचार्यश्री के विचार सुनने को मिले। विषय था—'असाम्प्रदायिक चिंतन व मानवीय मूल्यो का विकास।' २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस पर आचार्यश्री द्वारा रचित 'विजय गीत' प्रसारित हुआ। ३० नवम्बर को रात्रि ७-१५ बजे दूरदर्शन पर 'अस्तित्व की खोज' शीर्षक के अंतर्गत युवाचार्यश्री का विशेष इन्टरव्यू प्रसारित हुआ। साक्षात्कार करने वाले थे टी० वी० प्रोड्यूसर श्री कैलाश वाजपेयी।

प्रेक्षाध्यान शृंखला

प्रेक्षाध्यान से संबंधित एक कार्यक्रम को चार भागों में विभक्त कर लगातार चार रविवार को दूरदर्शन पर दिखाया गया। दूरदर्शन के राष्ट्रीय प्रसारण (कुछ राज्यों मे) मे प्रातः ८-३० से ९ के बीच यह कार्यक्रम प्रसारित हुआ। इसका प्रारभ २४ जनवरी को हुआ। इन चारों प्रसारणों मे आचार्यश्री तुलसी, युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ, मुनि महेन्द्रकुमारजी व जेठाभाई जवेरी ने विशेषज्ञ के रूप मे भाग लिया तथा प्रेक्षाध्यान के महत्त्व को भलीभांति दर्शकों तक पहुचाने का सफल प्रयास किया। मुनि मदनकुमारजी आदि ने प्रेक्षाध्यान के अभ्यासो का प्रदर्शन किया। कार्यक्रमो को डा० आलोक दीक्षित ने कम्पेयर किया।

प्रथम कार्यक्रम मे प्रेक्षाध्यान क्या है? इसका ब्यौरा दिया गया है और 'प्रेक्षाध्यान' की कुछ क्रियाओ का प्रदर्शन भी दिखाया गया है। दूसरे कार्यक्रम मे दर्शाया गया है कि 'प्रेक्षाध्यान' स्वास्थ्य, कार्यक्षमता, जीवन एवं पारस्परिक संबधों मे सुधार लाने की दृष्टि से कितना हितकर हो सकता है। तीसरे कार्यक्रम मे दर्शाया गया है कि पहले 'ध्यान' का प्रयोग अधिकतर आध्यात्मिक लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए होता रहा है, विशेषकर 'श्वास' की दृष्टि से। प्रेक्षाध्यान का लक्ष्य भी अध्यात्म है, किन्तु उससे होने वाले शारीरिक लाभो का वर्णन तथा प्रदर्शन किया गया है। चौथे कार्यक्रम मे मानसिक एव शारीरिक लाभो के अलावा सामाजिक दृष्टिकोण से प्रेक्षाध्यान का क्या महत्त्व है तथा यह एक स्वस्थ-समाज के निर्माण मे कैसे सहायक सिद्ध हो सकता है, इस विषय मे चर्चा की गई है।

गीत संकलन

आचार्यश्री के कुछ गीतो का आकाशवाणी व दूरदर्शन ने ग्रहण करने का निर्णय लिया। १८ सितम्बर के पत्र मे दूरदर्शन के निदेशक (कार्यक्रम)

श्री राजमणिराय ने वताया कि आचार्यश्री तुलसी के तीन गीत पहली खेप मे ग्रहण किए है। वे गीत हैं—अनुशासन गीत, विजय गीत, मैत्री गीत। आकाशवाणी के निदेशक (कार्यक्रम) श्री अरुण कुमार दत्त ने अपने २१ जनवरी ८८ के पत्र में लिखा कि आचार्यश्री के गीतो का वंदना कार्यक्रम तथा अन्य कार्यक्रमो मे उपयोग किया जाएगा। आकाशवाणी के केन्द्र निदेशक श्री शिवकुमार शर्मा ने २६ दिसम्बर को प्रेपित अपने पत्र मे यह सूचना दी—'आकाशवाणी केन्द्र तत्काल दो भजन रिकार्ड करना चाहता है, जो इस प्रकार है—

१. जागे शुभ संस्कार, समय का अंकन हो।
पुष्ट वने आधार, समय का अंकन हो।....
२. भावभीनी वंदना भगवान् चरणो मे चढाएं।
शुद्ध ज्योतिर्मय निरामय रूप अपने आप पाएं॥....

आपकी (आचार्यश्री) स्वीकृति मिलने के वाद आपके अन्य भजन भी समय-ममय पर आकाशवाणी से प्रसारित किए जाएंगे।

समन्वयवादी दृष्टिकोण

आचार्यवर के ममन्वयवादी व सम्प्रदायातीत व्यक्तित्व का व्यापक प्रभाव पड़ा है। सभी क्षेत्रो के लोगो का उनके पास वेहिचक आगमन होता है। आचार्यवर के पास आने मे वे गौरव का अनुभव करते है। इस दृष्टि से दूरदर्शन के उपमहानिदेशक श्री मधुकर लेले का एक पत्र उल्लेखनीय है जो २३ नवम्वर को आकाशवाणी के महानिदेशक श्री अमृतराव शिंदे को लिखा गया। वह पठनीय पत्र इस प्रकार है—

'आदरणीय शिंदेजी !

'अभी कुछ रोज पूर्व आचार्यश्री तुलसी से मिलने का सौभाग्य मिला। आजकल वे दिल्ली मे हैं। सप्रदायवादियो के जजाल से अछूता उनका समन्वयवादी और सही अर्थ मे धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण आज के विक्षुब्ध वातावरण मे वहुत ही प्रासगिक है। मुझे जानकर आश्चर्य हुआ है कि आचार्यजी स्वयं काव्य रचना करते हैं और सगीत के ज्ञाता भी है। उनके रचे हुए कुछ गीत भी वहां मैंने युवा-श्रमणो के कंठ से सुने। ऐसे गीत समवेत स्वरो मे आकाशवाणी पर प्रसारित हो, तो उनका काफी प्रभाव होगा, इस आस्था के साथ आपके पास भिजवा रहा हूं। इनके गीत की अवधि को सीमित रखने के लिए शायद कुछ छाट-संशोधन करना पडे।'

'आशा है आप मेरे इस सुझाव पर उचित विचार करेंगे। यदि आकाशवाणी गान-वृंद द्वारा इन गीतो को प्रस्तुत किया जाय, तो दूरदर्शन पर हम इनकी रिकार्डिग कराना चाहेंगे। इस वारे मे पूछताछ मुनि महेन्द्रकुमारजी या मुनि मदनकुमारजी, अणुव्रत भवन २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई

दिल्ली, फोन ३३१६७२८ के जरिए की जा सकती है।'

समाचार पत्रों का योगदान

आचार्यवर के विचारों व कार्यक्रमों की प्रस्तुति मे समाचार पत्रों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। समसामयिक घटनाओं व ज्वलंत प्रश्नों पर पत्रकार उनसे वातचीत व साक्षात्कार लेने आते। उन साक्षात्कारों को अपने-अपने पत्रों मे मुख्यता से प्रकाशित करते। दिल्ली से प्रकाशित होने वाले हिन्दी व अंग्रेजी पत्रों मे तो समय-समय पर समाचार प्रकाशित होते रहे। देश के अन्य शताधिक पत्रों मे भी यदा कदा कार्यक्रमो की गूंज होती रही। दूरदर्शन व आकाशवाणी के समाचार बुलेटिनो में भी समाचार प्रसारित होते रहे।

मिलने वाली अधिकारी

दूरदर्शन व आकाशवाणी के अधिकारी जो आचार्यवर, मुनियो एवं हमारे कार्यक्रमों के संपर्क मे आए, उनमे प्रमुख हैं—

१. श्री मधुकर लेले	उपमहानिदेशक	दूरदर्शन
२. श्री अलबेलसिंह ग्रेवाल	,,	,,
३. श्री शशिकांत कपूर	,,	,,
४. श्री राजमणिराय	निदेशक	,,
५. मीरा देशपांडे	प्रोड्यूसर	,,
६. डी. के आनन्द	,,	,,
७ कैलास वाजपेयी	,,	,,
८. रघुनाथसिंह चौधरी	,,	,,
९. रामदत्त वशिष्ट	,,	,,
१०. जयचंदीराम	निदेशक	,,
११. श्रीमती रुक्मणी	,,	,,
१२. मनमोहन सिंह	चीफ केमरामैन	,,
१३. सतीश भाटिया	म्यूजिक निदेशक	आकाशवाणी
१४. एम. पी. दक्षिणे	,,	,,
१५ महेशचन्द्र शर्मा	प्रोड्यूसर	,,
१६. गंगनाथ चतुर्वेदी	,,	,,
१७. अरुणकुमार दत्त	निदेशक	,,
१८. पी. गुरुराज	,,	,,
१९. के. सी. स्वामी	उपनिदेशक	,,

संपर्क अभियान में मुनियों का योगदान

मुनि महेन्द्रकुमारजी आचार्यवर के पदार्पण से पूर्व दो वर्षों से राजधानी दिल्ली मे प्रवासित थे। इस लम्बे प्रवास से काफी लोगो के साथ

श्री अनिल बोरदिया	केन्द्रीय शिक्षा सचिव
श्री उदयचंद अग्रवाल	मुख्य सतर्कता अधिकारी
श्री केयूरभूषण	संसद सदस्य
श्री एस. सी. मेहता (कर्नल)	सचिव, थल सेनाध्यक्ष
श्री विट्ठल नरहरि गाडगिल	सांसद तथा पूर्व सूचना व प्रसारण मंत्री
श्री राव वीरेन्द्रसिंह	सांसद तथा पूर्व केन्द्रीय कृषि मंत्री
श्रीमती ताजदार बाबर	दिल्ली प्रदेश कांग्रेस की अध्यक्ष
श्री कुलानन्द भारतीय	दिल्ली के कार्यकारी पार्षद (शिक्षा)
श्री पुरुषोत्तम गोयल	दिल्ली महानगर परिषद् के अध्यक्ष
श्री गोपालन	सूचना प्रसारण मंत्री के सचिव
श्री बिरधीचंद जैन	संसद सदस्य
श्री शंकरदयाल शर्मा	उपराष्ट्रपति

अहिंसा पुरस्कार-प्रदान समारोह

२ मई १९८७/प्रातःकाल साढे दस बजे। बिड़ला मातुश्री सभागृह, बम्बई। अहिंसा-पुरस्कार-प्रदान-समारोह का भव्य आयोजन। आयोजक सस्था थी—आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति। सान्निध्य—मुनि राकेश-कुमारजी। इस समिति द्वारा एक लाख रुपये का अहिंसा पुरस्कार भारत के पूर्व प्रधानमत्री श्री मोरारजी देसाई को प्रदान किया गया। कार्यक्रम मे महा-महिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, महाराष्ट्र के राज्यपाल महामहिम डा० शकरदयाल शर्मा, महाराष्ट्र के मुख्यमत्री श्री शंकरराव चह्वाण उपस्थित थे। वातावरण बहुत ही शात एवं शालीन था।

कार्यक्रम का शुभारम्भ राष्ट्रगान से हुआ। मंगलाचरण मुनि सुव्रत-कुमारजी ने प्रस्तुत किया। श्री चन्दनमल 'चाद' ने अपने संयोजकीय वक्तव्य मे आज के कार्यक्रम की सक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की। स्वागताध्यक्ष श्री शान्तिलाल नादेचा ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया।

समाज के प्रमुख कार्यकर्ता श्री भवरलाल डागलिया, श्री पृथ्वीराज कच्छारा, श्री जगदीश उमरिया, श्री मानसिंह वैद, श्री ख्यालीलाल तातेड, श्री रावतमल वांठिया, श्री शान्तिलाल चपलोत, श्री धर्मचन्द मादरेचा आदि ने साहित्य, श्रीफल तथा माल्यार्पण के द्वारा आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया। मुनि हर्षलालजी द्वारा सूक्ष्मलिपि मे लिखित सम्पूर्ण गीता की फोटो प्रति कार्यकर्ताओ ने महामहिम राष्ट्रपति तथा अन्य विशिष्ट व्यक्तियों को भेट की।

आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष श्री शुभ-करण दसाणी ने इस अवसर के लिए विशेप रूप से प्रदत्त परमाराध्य आचार्यप्रवर के संदेश का वाचन किया। आचार्यवर का सदेश इस प्रकार है—'भारत की संस्कृति अध्यात्मप्रधान संस्कृति है। अध्यात्म का अर्थ है—अहिंसा और अहिंसा का अर्थ है—अध्यात्म। भारतीय संस्कृति से यदि अहिंसा के तत्त्व को अलग कर दिया जाए, तो वह धूमिल और सत्त्वहीन सी दिखाई देने लगेगी। अहिंसा का अपना तेज है, वर्चस्व है। यही इस संस्कृति की आभा है। भगवान् महावीर सस्कृति के सूरज है। उन्होने अहिंसा के तत्त्व को जितनी सूक्ष्मता से देखा और जीया, विरल पुरुषो ने देखा होगा।'

'इस युग मे महात्मा गाधी ने अहिंसा की शक्ति को पहचाना। उन्होने युगीन समस्याओ के समाधान में जिस तरह अहिंसा का प्रयोग किया, वह भी एक विरल घटना थी। आज गाधीजी नही रहे, गाधीयुग के व्यक्ति भी

अधिक नही रहे। अगुलियों पर गिने-चुने जो लोग वचे है, मोरारजी भाई उनमे एक है। हमने उनको निकटता से देखा है। उनके जीवन मे भी अहिंसा के प्रति प्रगाढ़ आस्था है। इसी बात को ध्यान मे रखकर हमारे आचार्यकाल के पचास वर्षो की सम्पन्नता को लक्ष्य कर आयोजित अमृत महोत्सव के अवसर पर मोरारजी भाई को 'अहिसा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति की ओर से शुभकरण दसाणी ने उक्त पुरस्कार की घोपणा की। २ मई को राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंहजी वंवई मे अहिसा-पुरस्कार दे रहे है। इस पुरस्कार से मोरारजी भाई ही सम्मानित नही हुए है, भारतीय संस्कृति और अहिंसा भी सम्मानित हुई है। समारोह मे उपस्थित लोग अहिसा की उपयोगिता को समझकर अहिंसाप्रधान जीवन शैली का अनुसरण करे, यही मंगल भावना है।'

साध्वी मजुरेखाजी ने इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा—'आज चारो ओर अशान्ति; अव्यवस्था अनुशासनहीनता का वातावरण है। मनुष्य दुखी है, सन्त्रस्त है। किन्तु जव तक समाज मे हिंसा व्याप्त है, तव तक मनुष्य को शान्ति कैसे मिल सकती है? अगर मनुष्य सुख और शान्ति का जीवन जीना चाहता है, तो अहिसा को स्वीकार करना होगा।'

मुनि राकेशकुमारजी ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में कहा—'हिंसा एवं अराजकता के वातावरण मे अहिसा-पुरस्कार अपना विशिष्ट महत्व रखता है। सभी धर्मो मे अहिसा पर विशेप वल दिया गया है, किन्तु भगवान् महावीर ने सर्वाधिक वल अहिसा पर दिया। अहिसा जैन धर्म का आधारभूत तत्त्व है। इसके द्वारा राष्ट्रीय एकता को भी मजवूत वनाया जा सकता है। अगर संसार को विनाश से वचाना है, तो अहिसा को स्वीकार करना ही होगा। आचार्यश्री तुलसी ने अहिसा को जन-जन तक पहुंचाने के लिए हजारों-हजारो किलोमीटर की पदयात्रा की है। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन-विज्ञान के द्वारा वे वड़ा ही महत्वपूर्ण काम कर रहे है।'

धर्म सदेशवाहक श्री शुभकरण दसाणी ने राष्ट्रपति महोदय को अभि-वादन करते हुए उनसे निवेदन किया कि वे माननीय मोरारजी भाई को अहिसा-पुरस्कार प्रदान करे। राष्ट्रपति महोदय ने एक लाख रुपये की राशि, रजत प्रशस्तिपत्र तथा एक शाल अहिसा-पुरस्कार के रूप मे जिस समय मान-नीय देसाईजी को प्रदान किया; उस समय सम्पूर्ण सभागृह तालियो की गड़गड़ाहट से गूज उठा।

इस अवसर पर अपने मार्मिक विचार प्रकट करते हुए श्री मोरारजी देसाई ने कहा—'आचार्यश्री तुलसी अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति द्वारा आज जो मेरा वहुमान हो रहा है, उसके लिए मैं कहां तक योग्य हूं, कह नही सकता। मेरा विश्वास अहिसा में है। पहले भी अहिसा मे विश्वास करता

और आज भी करता हूं। मैं अहिंसा को परम धर्म मानता हूं। विश्व के सभी धर्मों के संस्थापकों ने अहिंसा को प्रथम स्थान दिया है। हजरत मोहम्मद, ईसा, बुद्ध, महावीर सभी ने अहिंसा को स्वीकार किया है। अतीत मे सभी धर्मों के प्रचारक अहिंसक रहे हैं। मुझे आज भी विश्वास है कि एक दिन अवश्य ऐसा आएगा, जब सभी लोग अहिंसा को स्वीकार करेंगे।'

पूर्व प्रधानमन्त्री ने आगे कहा—'जैनो का मुख्य सिद्धान्त अहिंसा है। भगवान् महावीर ने सबसे अधिक बल अहिंसा पर दिया है। जैनों में आज प्रमुख चार सम्प्रदाय हैं। इन चारो मे भी कभी-कभी झगड़ा हो जाता है। लडने वाला कभी अहिंसक नही होता है, फिर वह जैन हो या और कोई। अहिंसा को स्वीकार करने वाला कभी भयभीत नही होता है। जो भयभीत होता है, वह सच्चा अहिंसक नही है। भय के कारण भी बहुत सी गलतिया होती है। एक अहिंसक को भयमुक्त होकर अपना काम करना चाहिए।'

श्री मोरारजी भाई ने मुस्कराते हुए कहा—'समिति की ओर से अभी राष्ट्रपतिजी ने एक लाख की राशि प्रदान की। इस राशि को मैं गुजरात विद्यापीठ को देने की घोषणा करता हूं। एक बार पुनः आचार्यश्री तुलसी के प्रति, अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति के प्रति तथा आप लोगों के प्रति आभार ज्ञापित करता हूं।'

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री चह्वाण ने कहा—'आचार्यश्री तुलसी देश की उन महान् विभूतियो में है, जिन्होने अपने पांवों से इस देश की धरती को मापा है। पचास हजार से भी अधिक किलोमीटर की पदयात्रा करके आपने जन-जन को अहिंसा का संदेश दिया है। तेरापन्थ का अर्थ होता है—हे प्रभो! यह तेरापन्थ है अर्थात् ईश्वर का पंथ। आचार्य तुलसी के द्वारा मानवता और राष्ट्र की जो सेवा हो रही है, उसे कभी भुलाया नही जा सकता।'

मुख्यमत्री ने आगे कहा—पजाब समस्या को सुलझाने मे आचार्यश्री ने बडी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपने ही संत लोगोवाल को याद किया। आपकी प्रेरणा से ही सत लोगोवाल और भारत सरकार मे समझौता हुआ। पंजाब समझौते के लिए मैं सम्पूर्ण श्रेय आचार्यश्री को ही देना चाहता हूं। मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब समझौते के तत्काल बाद मैं आपके प्रति आभार ज्ञापन करने के लिए आपके पास गया था। आचार्यश्री तुलसी अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति ने श्री मोरारजी भाई को अहिंसा-पुरस्कार देकर एक श्रेष्ठ कार्य किया है।'

महाराष्ट्र के राज्यपाल डॉ० शंकरदयाल शर्मा ने कहा—'आचार्यश्री तुलसी हमारे देश के एक महान् धर्माचार्य है। मैं उनसे कई बार मिल चुका हूं। अणुव्रत के माध्यम से वे देशवासियो को जगाने मे लगे है। नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए आचार्यश्री जो काम कर रहे है, वह बेजोड है।' उन्होंने

आगे कहा—'मोरारजी भाई पूज्य बापू के अनुयायी है। अहिंसा में उनको पूर्ण विश्वास है। अहिंसा पुरस्कार एक योग्य अनुभवी व्यक्ति को प्रदान किया गया है। इसके लिए मैं आचार्यश्री तुलसी तथा अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति को बहुत-बहुत बधाई देता हूं।'

राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह ने कहा—'देश मे कोई भी पद सर्वोच्च नहीं है। सर्वोच्च तो भारत माता है। मैंने संविधान की शपथ ली है। देश की भलाई के लिए मैं निर्भय होकर अपना काम करता रहूंगा। देश को मजबूत बनाने के लिए, देश में भ्रष्टाचार और अनैतिकता को मिटाने के लिए मैं बराबर काम करता रहूंगा। संसार की कोई भी ताकत हिन्दुस्तान को हिला नही सकती है। बुराइयां बढ़ेंगी, तो जख्म जरूर हो सकता है, किन्तु देश को कोई बर्बाद नहीं कर सकता है। देश बुराई मे कलंकित न हो, भ्रष्टाचार और अनैतिकता बढ़े नहीं, इसके लिए सबको सावधान रहना चाहिये। हमें अपनी सैना पर भी पूरा विश्वास है। हमारे पड़ोसी हमे किसी बात में कमजोर नही समझें।'

राष्ट्रपति ने आगे कहा—'मैं आचार्यश्री तुलसी को देश का महान् संत मानता हू और उनके कामो की हृदय से प्रशंसा करता हूं। देश की भलाई के लिए, नैतिक उत्थान के लिए वे बहुत श्रम कर रहे है। हम लोगों को उनके बताए हुए मार्ग पर चलना चाहिए। मैं राष्ट्रीय समिति के प्रति आभार प्रकट करता हू, जिसने मुझे ऐसे कार्यक्रमों मे सम्मिलित होने का अवसर दिया। मोरारजी भाई अहिंसा-पुरस्कार के सर्वथा योग्य हैं। उन्हें यह पुरस्कार देकर समिति ने बहुत अच्छा काम किया है।'

बम्बई के प्रमुख उत्साही कार्यकर्ता श्री पृथ्वीराज कच्छारा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा देश के सभी भाषाओं के दैनिक पत्रो ने कार्यक्रम को बहुत विस्तार व प्रमुखता से प्रचारित व प्रसारित किया। कार्यक्रम इतना भव्य एवं शालीन था कि सभी ने मुक्तकण्ठ से सराहना की।
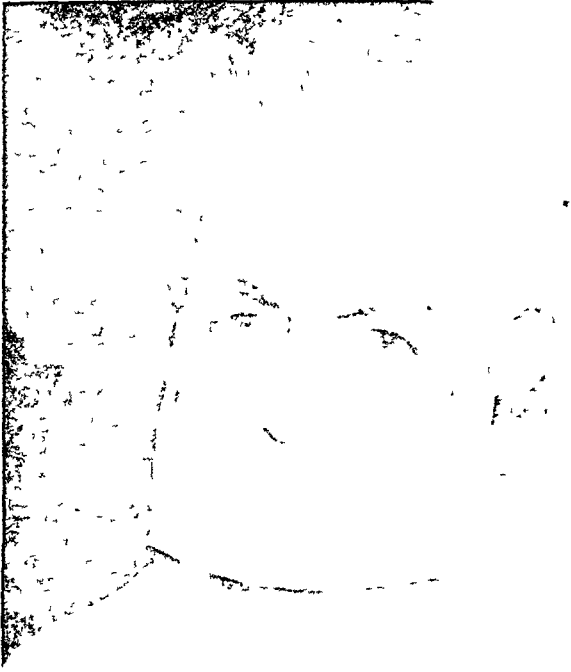
आचार्य तुलसी

युवाचार्य महाप्रज्ञ

साध्वी कनकप्रभा

पूर्व कश्मीर नरेश व केन्द्रीय मन्त्री डॉ. कर्णसिंह आचार्यश्री से मंगलमंत्र सुनते हुए,
मध्य में युवाचार्यश्री
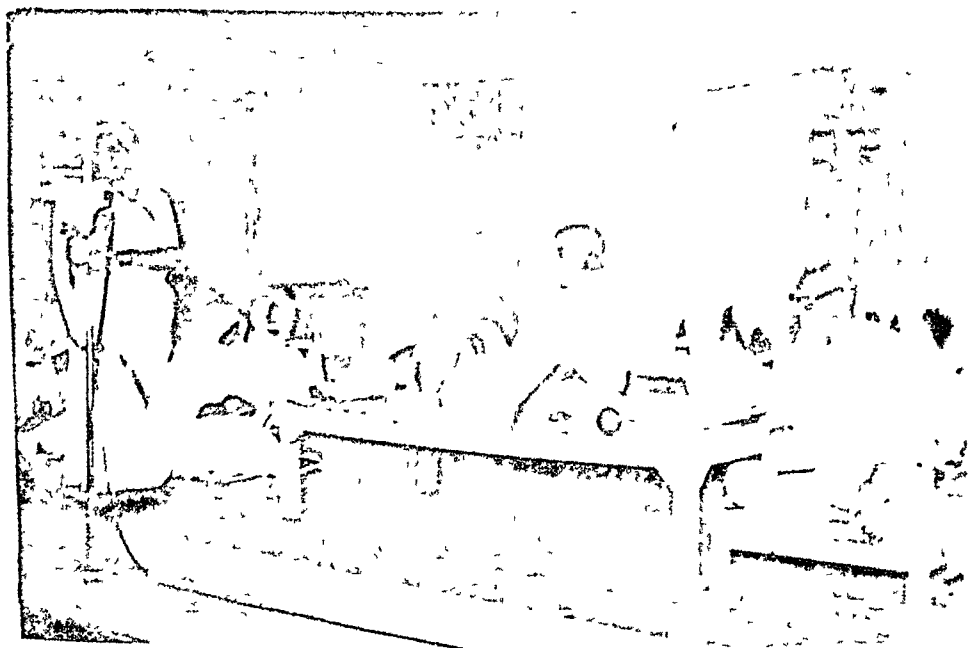
आचार्यश्री व युवाचार्यश्री के सान्निध्य में आयोजित एक समारोह में केन्द्रीय समाज कल्याण
राज्यमंत्री श्रीमती राजेन्द्रकुमारी वाजपेयी।
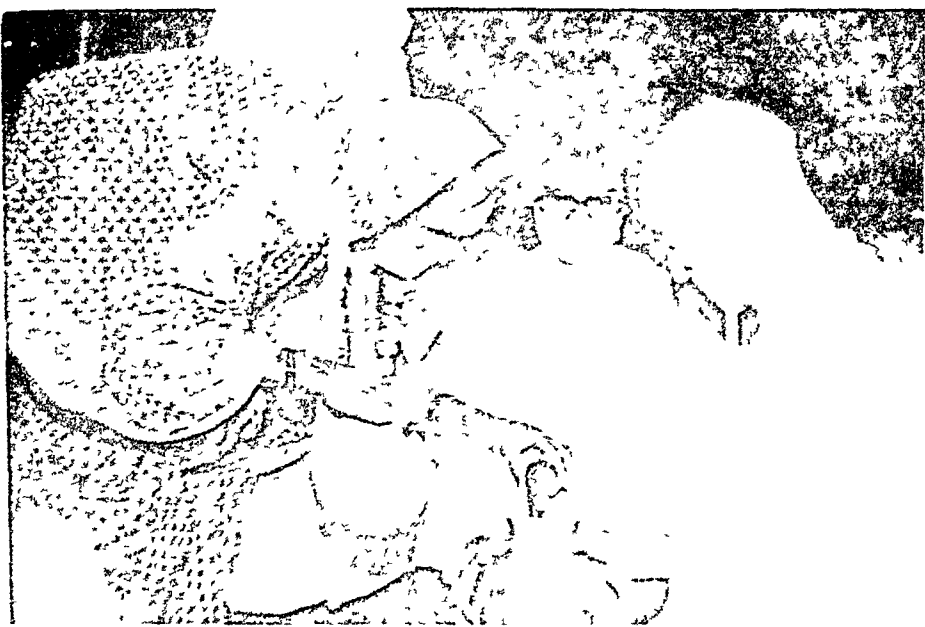
अक्षय तृतीया पर तपस्विनी बहिन के हाथ मे इक्षुरस ग्रहण करते हुए युवाचार्यश्री
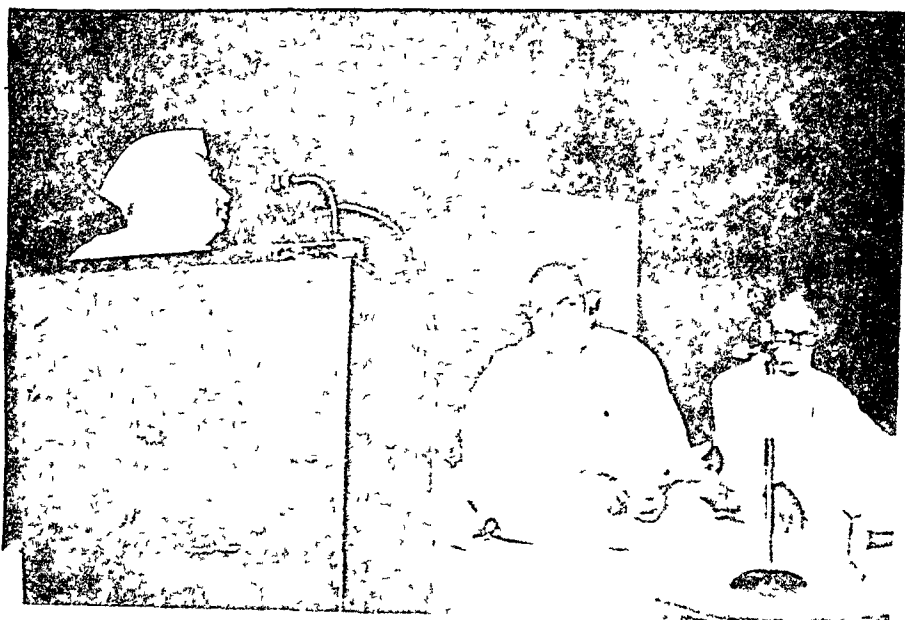
चातुर्मास प्रवेश पर आयोजित राष्ट्रीय अभिवदना समारोह में विदेशमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी।

सुश्री सावित्री होल्मस्ट्रोम आचार्यश्री से सावधिक समण दीक्षा ग्रहण करते हुए।

सीमांत गांधी पख्तून नेता अब्दुल गफ्फार खा के साथ आचार्यश्री।
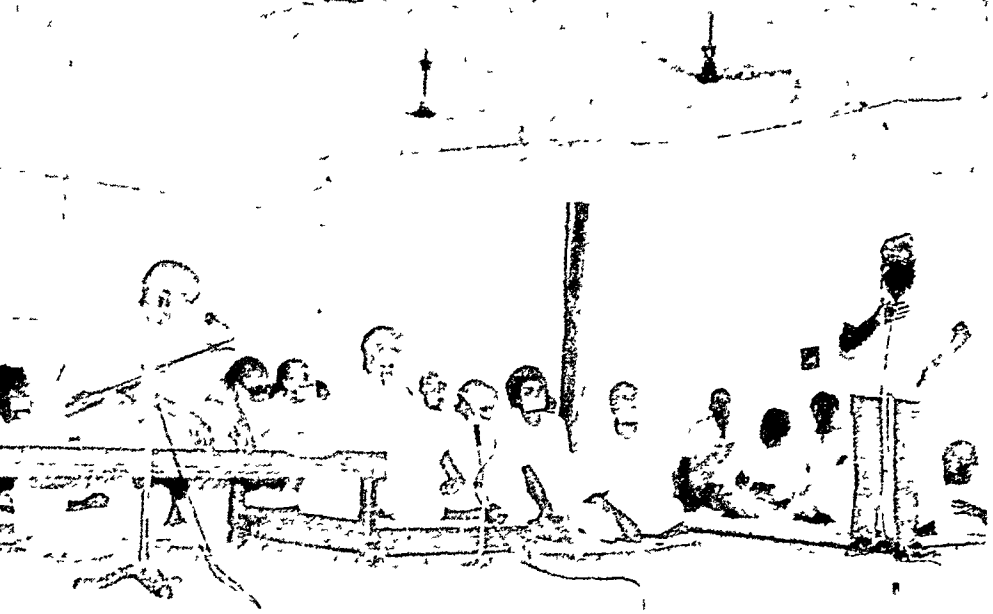
सुप्रसिद्ध पत्रकार सरदार खुशवतसिंह वोलते हुए।

भवन में आचार्यश्री को नमस्कार करते हुए।

आल इंडिया फाईन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स सोसाइटी सभागार में आयोजित एक संगोष्ठी में दाए से बाए युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ, आचार्यश्री तुलसी, समण स्वयप्रज्ञ, जापान के राजदूत श्री ईनिरों नाडो।
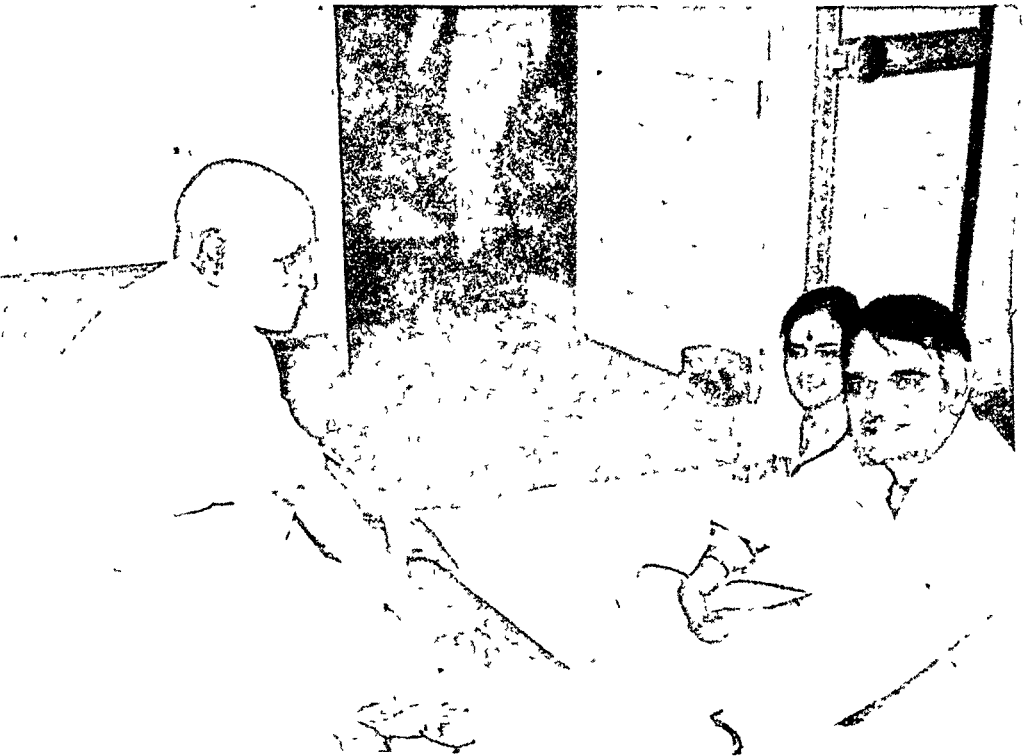
रक्षाराज्यमत्री श्री शिवराज पाटिल सपत्नीक आचार्यश्री से बातचीत करते हुए।
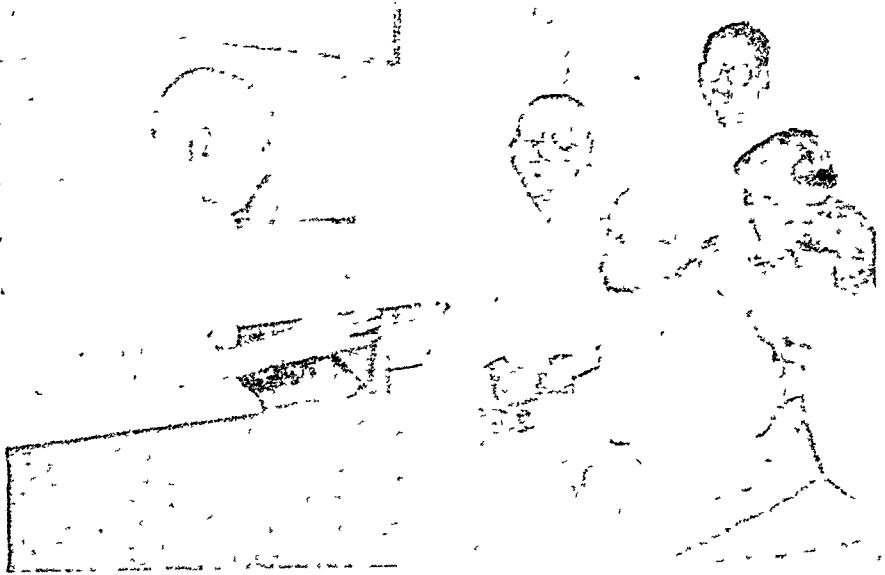
पूर्व उपराष्ट्रपति श्री वी. डी जत्ती आचार्यवर से वार्तालाप करते हुए।
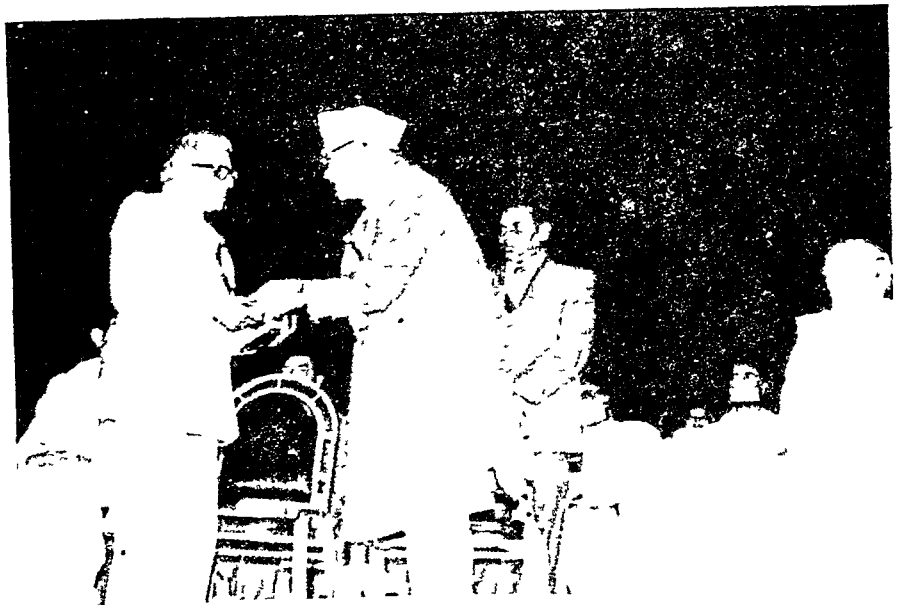
आचार्य श्री के सान्निध्य में उपराष्ट्रपति श्री शकरदयाल शर्मा श्री सी. सुब्रमण्यम को अणुव्रत पुरस्कार प्रदान करते हुए।
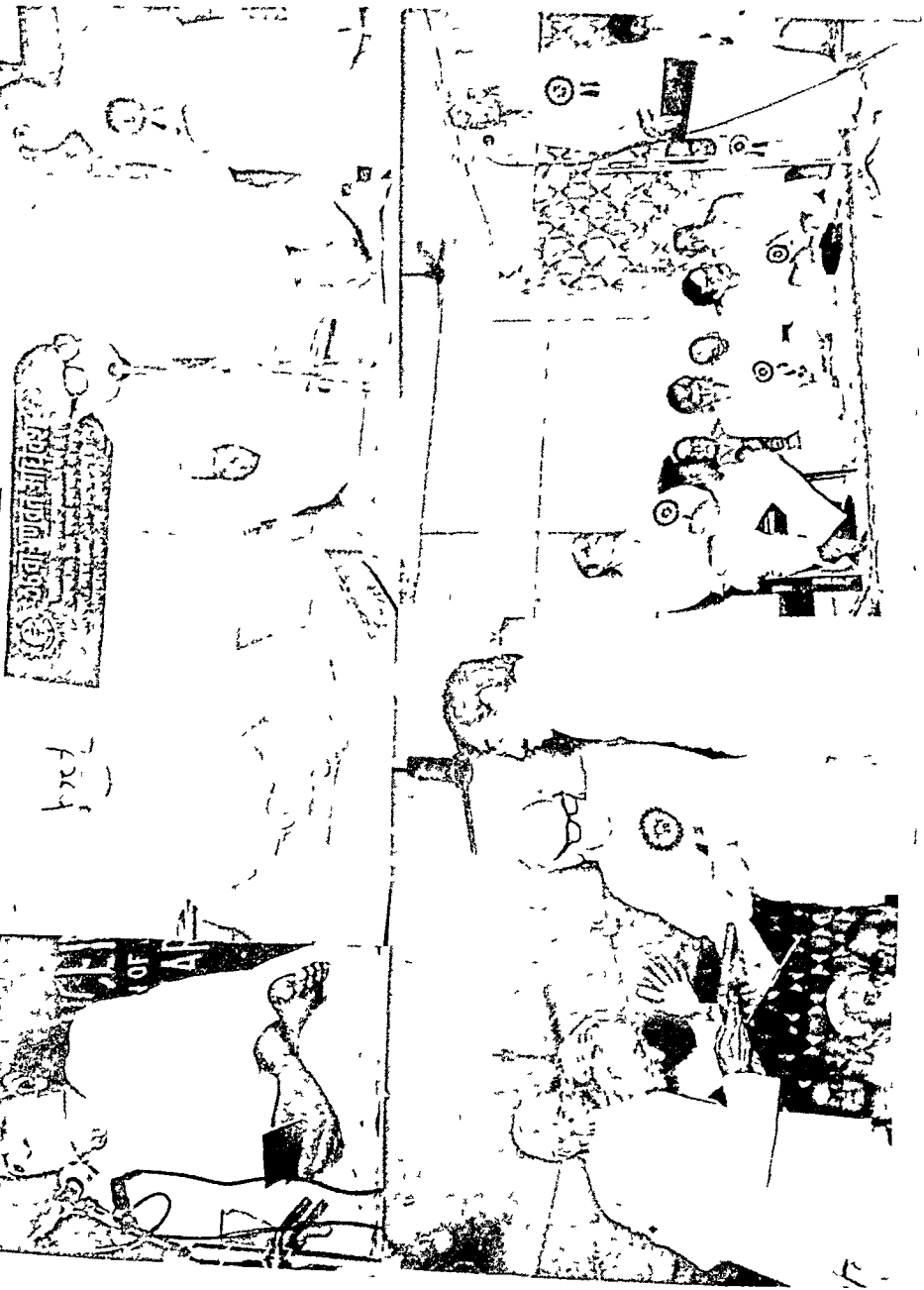
३६वें अणुव्रत अधिवेशन में (ऊपर) बाए से दाए आचार्यश्री, युवाचार्यश्री भट्टारक चारुकीर्तिजी, अ.भा. अणुव्रत समिति के मत्री श्री शुभकरण सुराणा (नीचे) कुलपति डॉ. डी.एस कोठारी को सम्मानित करते हुए, डॉ कर्णसिह, हिन्दुस्तान के सम्पादक श्री विनोदकुमार मिश्र, समिति के अध्यक्ष श्री गिरीश भाई, कार्याध्यक्ष श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट।
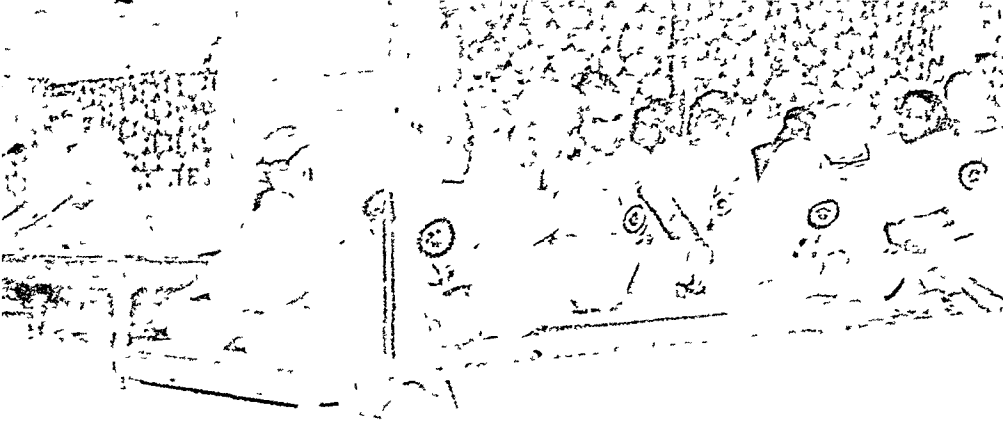
अणुव्रत अधिवेशन में (ऊपर) दाए से वाए मुकुट विहारी वर्मा, शोभालाल गुप्त, पारसराम जैन , डा कोठारी, प्रभाकर माचवे (नीचे) गिरीश भाई, डी एस कोठारी. डॉ धर्मेन्द्रनाथ।

राष्ट्रपति भवन में मुनिश्री सुमेरमलजी "लाडनू" राष्ट्रपति आर वेंकटरमण को अणुव्रत प्रवृत्तियों की जानकारी देते हुए।

अणुव्रत समारोह में अ भा कांग्रेस महासचिव श्री रघुनन्दन लाल भाटिया।
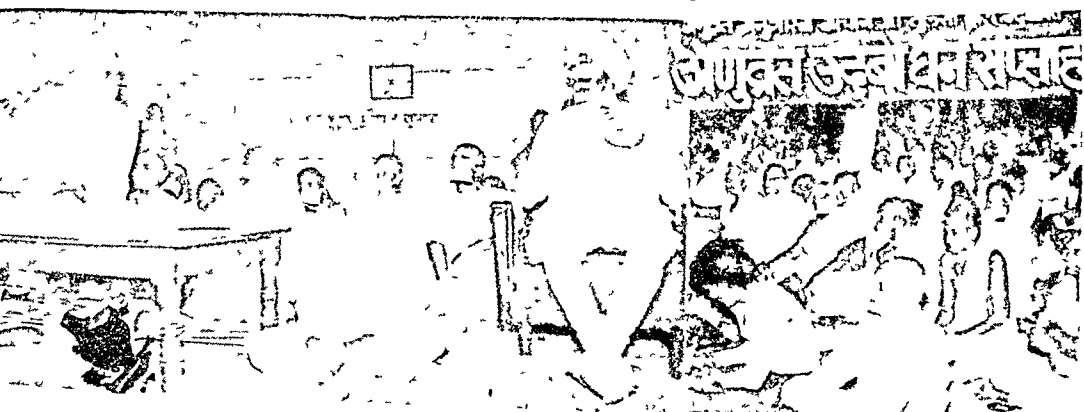
अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह में पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह व जनसमुदाय।
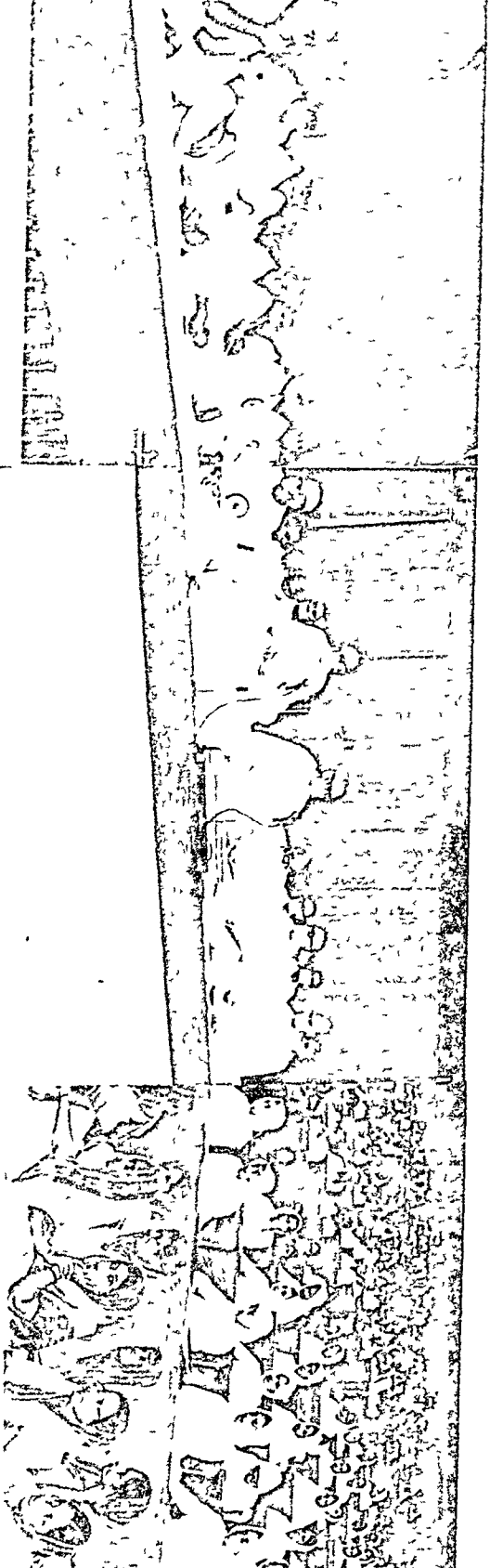
विज्ञान भवन में आचार्य तुलसी जन्म दिवस समारोह में दाए से बाए युवाचार्यश्री, आचार्यश्री सासदश्री सतोष बागडोदिया, सासद श्री भवरलाल पवार, श्री सी. सुब्रमण्यम्, श्री दसाणी, श्री रघुनन्दन लाल भाटिया, श्री यशपाल जैन व सामने जन समुदाय।

इटली में ईसाईयों के सर्वोच्च पोप जान पाल द्वितीय के साथ श्री शुभकरण दसाणी समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञा, समणी स्मिताप्रज्ञा, कुमारी राजप्रभा।

अनशन में मुमुक्ष किरण को दीक्षा प्रदान करते हुए मुनि दुलीचन्दजी "दिनकर", साध्वी किरणयशाजी साध्वियों के साथ (इन्सेट में) मुमुक्ष किरण'

मुनि घेवरचंद जी जिनकी अनशन में दीक्षा हुई।
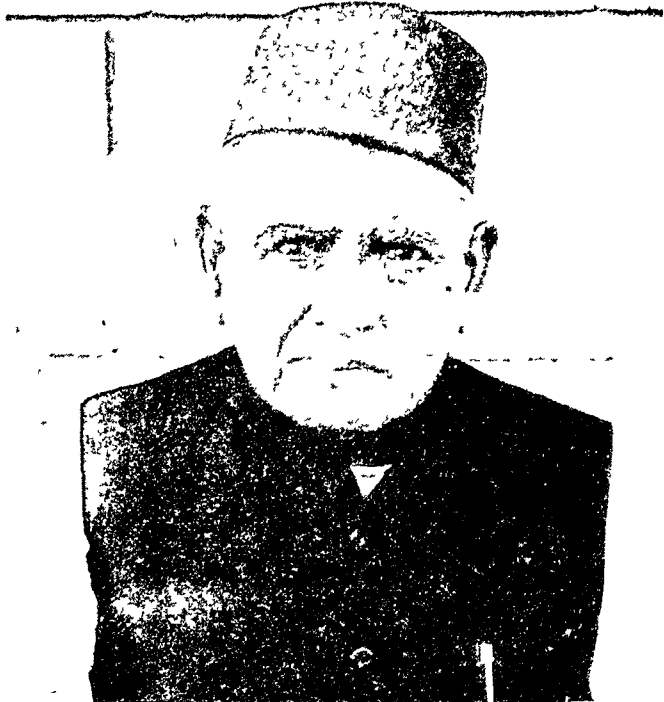
समाज सेवा पुरस्कार से सम्मानित श्री राणमल जीरावला।

खण्ड २

साधुओं का विवरण

परमाराध्य युगप्रधान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी, जैन योग पुनरुद्धारक युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ आदि श्रमण ३१, महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा आदि श्रमणी २८।

चातुर्मास—अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली

श्रमण परिवार

३. मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' ४. सुमेरमलजी (लाडनू) ५. वालचदजी ६. मधुकरजी (गगाशहर) ७. हंसराजजी (लाडनू) ८. हीरालालजी (बीदासर) ९ श्रीचदजी 'कमल' १०. विजयराजजी (राजगढ) ११ किशन-लालजी (मोमासर) १२. महेन्द्रकुमारजी (वंबई) १३. धर्मरुचिजी (मोमासर) १४. राजेन्द्रकुमारजी (हासी) १५. विजयकुमारजी (सुजानगढ) १६. श्रेयासकुमारजी (गगाशहर) १७. रणजीतकुमारजी १८. धर्मेन्द्रकुमारजी (राजलदेसर) १९. उदितकुमारजी २०. मुदितकुमारजी (सरदारशहर) २१. अरविन्दकुमारजी (लाडनू) २२. धनजयकुमारजी (श्रीडूगरगढ़) २३. जिनदासजी (सिसाय) २४. अजितकुमारजी (गगाशहर) २५. प्रशात-कुमारजी (उदासर) २६. दिनेशकुमारजी (टापरा) २७. ऋषभकुमारजी (तारानगर) २८. मदनकुमारजी (समदडी) २९. लोकप्रकाशजी (पचपदरा) ३०. धर्मेशकुमारजी (कांजीवरम्) ३१. वीरेन्द्रकुमारजी (जीन्द)

श्रमणी परिवार

२. साध्वी कमलूजी ३. सूरजकुमारीजी (जयपुर) ४. साध्वी सूरजकुमारीजी (रतननगर) ५ चन्दनवालाजी (दिल्ली) ६. सत्यप्रभाजी (देवगढ) ७. जिनप्रभाजी ८. कल्पलताजी (लाडनू) ९. सुपमाकुमारीजी (सरदारशहर) १०. विमलप्रज्ञाजी (वीदासर) ११. निर्वाणश्रीजी (श्रीडूगर) १२. वर्धमानश्रीजी (दिल्ली) १३. स्वर्णरेखाजी (श्रीडूगर) १४. कुन्दनरेखाजी (हिसार) १५. चित्रलेखाजी (सुजानगढ़) १६. विभाश्रीजी (गंगा०) १७. त्रिशलाकुमारीजी (सुजान०) १८. शारदाश्रीजी (भीनासर) १९ विवेकश्रीजी (चाड़वास) २०. अनुशासनाश्रीजी (गगाशहर) २१. मलयप्रभाजी (गोगुन्दा) २२. रूपमालाजी (गगाशहर) २३. श्रुतयशाजी (लाडनू) २४ निर्मलयशाजी (सरदारशहर) २५. मुदितयशाजी (लाडनू) २६. शुभ्रयशाजी (वीदासर) २७. मुक्तियशाजी २८. शीतल यशाजी (रतनगढ़)।

आचार्यवर, युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री के सान्निध्य में होने

वाले कार्यक्रमों, यात्राओं व अन्य विवरण खंड-१ में सांगोपाग गुम्फित है। बहिर्विहारी मुनि संघाटकों के विवरण का सार-संक्षेप प्रस्तुत है—

१. अग्रगण्य—मुनि ताराचंदजी (रासीसर)

सहयोगी—मुनि मिश्रीमलजी (दिवेर), सुमतिकुमारजी (गंगाशहर)
चातुर्मास—रापर (वागड), जिला-कच्छ, गुजरात
यात्रा—८७५ किलोमीटर; क्षेत्र १५ (तेरापंथ के)
मत्र दीक्षा—५०, सम्यक्त्व दीक्षा—१००, सामान्य तत्त्वज्ञान परीक्षा १००

ताराचंदजी—तपस्या $३^{१}५$, आयंबिल—२
मिश्रीमलजी—$४^{२}७$, $५^{३}१$, $२^{४}$
सुमतिकुमारजी—$३^{१}०$

साधुओं के सामूहिक स्वाध्याय के अन्तर्गत प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध, नव पदारथ, संबोधि आदि ग्रंथो का वाचन हुआ।

कार्यक्रम

- मुनिश्री की सन्निधि मे त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर, निदेशक समण स्थितप्रज्ञजी।
- अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के अतर्गत स्थानीय हाईस्कूल, सुवर्ण टेकरी हाईस्कूल तथा आदिवासी छात्र-छात्राओं के बीच मुनिश्री के प्रवचन हुए।
- कच्छ के वागड इलाके मे अनेक नये क्षेत्रो में विचरण, छह कोटि एव तपः गच्छ सम्प्रदाय की अनेक साध्वियों से सौहार्दपूर्ण वातावरण मे बातचीत हुई।
- रापर क्षेत्र मे तेरापंथ का यह प्रथम चातुर्मास मैत्रीवर्धक व प्रेरणाप्रद रहा।

रापर चातुर्मास के वाद सौराष्ट्र क्षेत्र मे दो माह विचरण हुआ। इस प्रवास मे सैकडो जैन-जैनेतर लोगो ने तेरापथ, प्रेक्षाध्यान, समणश्रेणी आदि की ज़ानकारी प्राप्त की। मुनि मिश्रीमलजी की तपस्या का अच्छा प्रभाव रहा। सौराष्ट्र यात्रा मे श्री वाबूलालभाई खंडोल का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

१२ फरवरी सन् ८७ को रतनगढ से आचार्यवर ने मुनि ताराचंदजी को एक पत्र लिखा, जिसे साध्वी सोनांजी ने उन्हे कच्छ मे प्रदान किया, पत्र में लिखा था—

'मुनि ताराचंदजी आदि संतो से सुखपृच्छा, स्वास्थ्य ठीक होगा। तुम्हारी ध्यान साधना और शासन सेवा दोनो हृदयग्राही है। कच्छ मे अच्छा काम हुआ है। संघ की प्रभावना बढी है। यहा रतनगढ़ मर्यादा महोत्सव सानंद

हुआ है। यह महोत्सव अनेक दृष्टियों से बड़ा महत्त्वपूर्ण रहा। तुम्हारा कच्छ मे रहना आवश्यक था। इस बार स्वाध्याय योग की विशेष व्यवस्था की है। साध्वी सोनाजी तुम्हे बताएगी। और भी समाचार सुन पाओगे। खूब प्रसन्नता से कार्य करना।'

२. अग्रगण्य—मुनि राजकरणजी (गंगा०)

सहयोगी—मुनि पूर्णानंदजी (गगा०) अमितप्रकाशजी (पचपदरा)

चातुर्मास—जगराओं, पंजाब

यात्रा—१०३६ कि० मी०; क्षेत्र—५१

जैन धर्म दीक्षा—२५, व्रत दीक्षा—१, सम्यक्त्व दीक्षा—३००, प्रतिक्रमण—५

मुनि राजकरणजी—१/१८५, २/१, स्वा०—१,२५,००० गाथा, वाचन—२५,००० पृ०

पूर्णानंदजी—१/८८, २/८, ३/४, ४/१; मौन—८१६ घटा कुल; वाचन—१०,००० पृ०

अमितप्रकाशजी—१/४७, २/३, ३/१; स्वा०—१,२५,००० गाथा; वाचन—४००० पृ०

भाई-बहिनो मे—५/१, ८/१ पचरंगी—१, आयं० अठाई—२; सामूहिक आयं०—१००

कार्यक्रम

- संगरूर (पजाब) मे दो हाईस्कूलो मे मुनिश्री के भाषण व एक हाई-स्कूल मे अवधान प्रयोग।
- भवानीगढ व कुरडी (हरियाणा) हाईस्कूल में अणुव्रत प्रवचन।
- गोविन्दगढ (पंजाब) मे पाच हाईस्कूलो मे अलग-अलग भाषण व अवधान-प्रस्तुति; बाहर से प्रशिक्षण पर समागत पचास अध्यापिकाओ के बीच मुनिश्री द्वारा अवधान-प्रयोग।
- जगराओ मे पांच हाईस्कूलो मे पृथक्-पृथक् वक्तव्य, चार स्कूलो मे संयुक्त समारोह मे विद्यार्थियों, अध्यापकों व विशिष्ट व्यक्तियो की उपस्थिति मे मुनिश्री द्वारा अवधान की प्रभावी प्रस्तुति, कार्यक्रम में एस. डी. एम. श्री दर्शनसिंह संधु, म्युनिशिपल कॉरपोरेशन के पूर्व प्रधान श्री शिवप्रसाद उपस्थित थे।
- रोटरी क्लब के सदस्यो व विशिष्ट व्यक्तियो द्वारा प्रस्तुत प्रश्नो का मुनिश्री द्वारा समाधान।

३. अग्रगण्य—मुनि बच्छराजजी (लाडनूं)

सहयोगी—मुनि वालचंदजी (लाडनू), देवेन्द्रकुमारजी (टमकोर)
चातुर्मास—रामपुराफूल, पंजाव
वर्गीय अणुव्रती—१५००, पंचसूत्री संकल्प—३००, गुरुधारणा—२५
वालचंदजी—$\frac{१}{४४}$, $\frac{२}{४}$, $\frac{३}{१}$
देवेन्द्रजी—$\frac{१}{६१}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{३}{२}$, सवा लाख जप

○ पाच स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रम

साहित्य प्रकाशन—ले० मुनि वच्छराजजी
(१) चिनगारी (२) अमृत की घूट (मुक्तक)

४. अग्रगण्य—मुनि रवीन्द्रकुमारजी (गोगुन्दा)

सहयोगी—मुनि मुनिव्रतजी (गगा०) धर्मानंदजी (मरदार)
चातुर्मास—संगरूर, पंजाव
यात्रा—८३९ कि० मी०; क्षेत्र-४३
मत्र दीक्षा—३१; सम्यक्त्व दीक्षा-४९८; श्रमणोपासक दीक्षा-१६
व्यसनमुक्त—५१, वर्गीय अणुव्रती—हजारो

रवीन्दकुमारजी—$\frac{१}{६१}$; एकांतर—४५ दिन तक; $\frac{२}{२}$; मात माह से तीन विगय (चीनी, गुड़ व कड़ाही) का त्याग; ध्यान व जप—१ घंटा; स्वा०—दसवेआलियं, उत्तराध्ययन (नियमित); वाचन—२००० पृ०

मुनिव्रतजी—$\frac{१}{५}$, एकासन—१९३; स्वा०—४०० गाथा प्रति; जप—३० मि०, वाचन—३००० पृ०

धर्मानदजी—$\frac{१}{४०}$ $\frac{२}{१६}$ $\frac{३}{१}$, एकांतर—२ माह; जप-ध्यान—१ घंटा भाई-वहिनो मे सामूहिक आय—४४; श्री राजकुमार जिदल ने एक माह निरतर आयंविल किए।

'ॐ णमो अरहताणं' व 'ॐ शांति' का दो माह जप अनुष्ठान, वीस मिनट सामूहिक प्रेक्षाध्यान का अभ्यास

जाखल मे अक्षय तृतीया पर सामूहिक जप-अनुष्ठान

कार्यक्रम

○ सत्य भवन, हिसार मे स्वामी प्रेमानदजी व उनके प्रमुख शिष्य गौतम जी के साथ सयुक्त प्रवचन कार्यक्रम।
○ हिसार के तेरह मोहल्लो मे सत्संग प्रवचन।
○ धूरी मे तेरापंथ भवन के उद्घाटन समारोह मे मुनिश्री का प्रवचन।
○ 'खवरनामा' पजावी पत्र मे समाचार व रचनाएं प्रकाशित

० **वीस हजार की वचत**—धूरी निवासी श्री सीताराम फलवाले ने मुनि रवीन्द्रकुमारजी से गुरु मंत्र लिया। इससे पूर्व उसका जीवन अनेक व्यसनो से ग्रस्त था। वह प्रसिद्ध शरावी तथा मांसाहारी था। हजार रुपये महीने की शराव चलती थी। सुवह से रात तक शराव के नशे मे धुत्त रहता था। जव से गुरुमत्र ग्रहण किया तव से उसने वैंक मे एक खाता खुलवा दिया। वर्ष भर में हिसाव देखा, तो वैंक मे वीस हजार रुपये जमा निकले। इससे सारे परिवार में ही नही, जिसने भी सुनी वड़ी प्रसन्नता हुई। सीताराम अव सघ के साथ गहरा जुडा है युवक परिषद् तथा समाज के हर कार्य मे अपना तन, मन, धन से पूरा सहयोग करता है। अपने कई साथियो को व्यसनों से मुक्त कराने मे दलाली की। गुरुदेव के दर्शन रतनगढ़ मे प्रथम वार किए, तव से अच्छी लगन लग गई है।

० **अंधकार से प्रकाश की ओर**—धूरी सभा भवन के सामने वर्षो मे रुवेल सिह सरदार रहता है, जो पिछले ४६ वर्षो से शरावी तथा मांसाहारी था। मुनिश्री के सम्पर्क से गुरु धारणा की, खान-पान वदला। पूरे शहर मे सुंदर प्रतिक्रिया हुई। पूरा परिवार अव शाकाहारी है। सरदारजी श्रावक की तरह व्रत, पौषध, सामायिक आदि करते है तथा साधु-सती के दर्शन व प्रवचन का लाभ लेते हैं। पूरा परिवार सुखी हो गया। दीपावली के दिन परिवारवालो ने मुनिश्री के दर्शन करते समय कहा—'आपकी दया से आज ४६ वर्षो के वाद हम घर मे दीपावली मना रहे है। सरदारजी के कारण वडा क्लेश रहता था। गुरु की कृपा से हमे सुखी वना दिया, आप तो भगवान् हैं।' इस प्रकार मानसा निवासी रोशनलाल अग्रवाल, धूरी के श्री प्रेम रेडियोवाला, सुनाम के भगवानसिंह ने मुनिश्री की शिक्षाओ को अपने जीवन मे उतारा और अपने जीवन को सात्त्विक वनाया।

५. अग्रगण्य—मुनि गुलावचन्दजी 'निर्मोही'

सहयोगी—मुनि मृत्युंजयकुमारजी (सरदार.), चैतन्यकुमारजी (गंगा.)
चातुर्मास—निर्मली, विहार
यात्रा—१२२५ कि० मी०; क्षेत्र ६५
मंत्रदीक्षा—१००, सम्यक्त्व दीक्षा—७५; शीलव्रत—८

मुनियो मे संघीय व आगम साहित्य का वाचन नियमित चला तथा श्रावक-श्राविकाओ मे भी तत्त्वज्ञान की कक्षाए चली।

मुनि मृत्युजयकुमारजी ने विभिन्न आकृतियों मे सूक्ष्मलिपि का लेखन किया।

मुनि चैतन्यकुमारजी—२[१]
भाई-वहिनो मे—२५९[१], ५[२], ९५[३], ३[४], ९[५], ९[६], ९[७], ७३[८], ९०[९], ९[१०],

११/२, १५/२, १६/१, १८/१, २१/१, २२/१, ३१/१,

श्रीमती पानादेवी सुराणा ने ३१ दिन की तपस्या की

छह विहारी भाइयो ने अठाई की तपस्या की। उनके नाम है—(१) श्री ओमप्रकाश शाह (अम्विका) (२) श्री सिंहेश्वर पण्डित (३) श्री सुरेशचंद्र मिश्र (४) श्री दुर्गानंद पंडित (५) श्री रामस्वरूप मंडल (६) श्री भुवनेश्वर मंडल

श्री मंगतमल नाहर ने एक ही चातुर्मास मे चार बड़ी तपस्याए (८/२, ९/१, १०/१) सम्पन्न की।

श्रीमती गंगादेवी वैंद ने एक ही चातुर्मास मे चार वडी तपस्याएं (९/१, १०/१, ११/१, १५/१) सम्पन्न की।

श्री वावुलाल सुराणा ने एक ही चातुर्मास तीन वार अठाई की तपस्या की।

किशोर अवस्था मे अठाई की तपस्या करने वालो के उल्लेखनीय नाम है—(१) सुश्री गीमाकुमारी वैंद (२) सुश्री सुमनकुमारी वोथरा (३) सुश्री चंचलकुमारी सिंघी (४) सुश्री गुड्डीकुमारी नाहर (५) सुश्री कुसुमकुमारी कुहाड़

निर्मली मे श्रद्धालुओ के ४५ परिवार है। उनमे अठाई तथा उससे अधिक कुल १०९ तपस्याएं हुई।

कार्यक्रम

- कोकड़ाझाड़ मे राजस्थान युवक परिषद् एवं मर्चेन्ट्स एसोशिएशन के सदस्यों मे प्रभावक प्रवचन हुए। सैकड़ो युवकों ने दहेज का ठहराव न करने एवं शराव न पीने का संकल्प किया।
- मानकाचर मे सर्वप्रथम प्रवास। हिंदू, मुसलमान तथा विभिन्न वर्गों के हजारो व्यक्तियों का संपर्क। इमाम मौलवी तथा अन्य व्यक्तियो की भी नियमित उपस्थिति, व्यसनमुक्ति का व्यापक प्रयोग। जुए का अड्डा समाप्त हुआ।
- वुवड़ी में मर्यादा महोत्सव का आयोजन। ४० क्षेत्रों के लोग सम्मिलित हुए। सेंट्रल जेल मे हृदयग्राही कार्यक्रम।
- गोरीपुर मे सीमा सुरक्षा वल के जवानो मे प्रभावी कार्यक्रम। पानवाड़ी मुख्यालय से पूरी वटालियन कार्यक्रम मे भाग लेने के लिए पहुंची।
- दीनहट्टा में दिगम्वर आर्यिका सुपार्श्वमतीजी के साथ सामूहिक प्रवचन।
- फुंचलिंग (भूटान) आगमन पर भारतीय राजदूतावास द्वारा अभिनंदन।

- धुलावाड़ी में महावीर जयंति का वृहद् आयोजन। ३५ क्षेत्रों के लोग सम्मिलित हुए।
- इस्लामपुर में अक्षय तृतीया का आयोजन। वर्षीतप के पारणों की तरह ४५ तेलों का सामूहिक पारणा हुआ।
- किशनगंज मे जैन एकता सम्मेलन का आयोजन। मर्चेन्ट्स एसोशिएशन मे कार्यक्रम।
- निर्मली मे संघीय कार्यक्रमो के अलावा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओ के बीच 'हमारा देश : हमारी संस्कृति' विषय पर प्रेरक विचार गोष्ठी, जैन हस्तकला प्रदर्शनी का आकर्षक कार्यक्रम।

विशिष्ट व्यक्तियों का संपर्क

- असम के सिंचाई एवं विद्युत् मंत्री श्री जहीरुल इस्लाम
- धुवड़ी जिला के डिप्टी कमिश्नर श्री एस० सी० पांडे
- धुवड़ी के डिस्ट्रीक्ट एव सेसन जज श्री टी० भूइया
- सीमा सुरक्षा बल की १०३ बटालियन के कमांडर श्री थापलियाल
- ,, ,, ,, सहायक ,, श्री अजीत भटनागर
- ,, ,, ,, ,, ,, श्री बालकृष्ण आनंद
- धुवड़ी जिला के विश्व हिंदू परिषद् के अध्यक्ष प्रो० रामप्रसन्न भट्टाचार्य
- धुवड़ी जिला के बार एसोशिएशन के अध्यक्ष श्री ज्योतिन चटर्जी
- धुवडी जिला के बार एसोशिएशन के उपाध्यक्ष श्री अब्दुल गनी सरकार
- आकाशवाणी केन्द्र के प्रतिनिधि प्रो० गिरीन गोस्वामी
- दूरदर्शन केन्द्र के प्रतिनिधि श्री अमूलकांति राय
- नागरिक परिषद् के प्रतिनिधि श्री रवीन्द्रमोहन दत्त
- धुवड़ी लायन्स क्लब के सेक्रेटरी श्री एस० आर० दे
- आयकर विभाग के निरीक्षक श्री गुरुपद मंडल
- आयकर विभाग के अधिकारी श्री आर० नारायण
- पूर्वांचल बैंक के मैनेजर श्री दीपक भौमिका

इनके अतिरिक्त अनेक वकील, डाक्टर, पत्रकार, राजनैतिक, सामाजिक कार्यकर्त्ताओ का समय-समय पर सम्पर्क होता रहा।

नवभारत टाइम्स, आज, जनध्वनि, नेपाल संदेश, पाटलिपुत्र टाइम्स आदि समाचार पत्रों मे समय-समय पर संवाद प्रकाशित होते रहे।

व्यक्तिगत, पारिवारिक एव सामाजिक स्तर पर लगभग १५ विग्रह शमन हुए।

संदेश— ३० अक्टूबर को दिल्ली से आचार्यवर ने एक संदेश प्रदान

किया, वह इस प्रकार है—'विहार मे इस वर्ष तीन चातुर्मास हुए। एक संतों का तथा दो सतियो के। इस वार उत्तर विहार में वर्षा और वाढ़ जोरों से आई, तो तपस्या की वाढ भी जोरों से आई। तीनो क्षेत्रों में वहुत तपस्या हुई। सिर्फ एक निर्मली क्षेत्र मे १०८ अठाइया एवं कई थोकड़े हुए। विहारी लोगो मे भी छह अठाइयां हुईं। मुनि गुलावचंद आदि संतों ने अच्छा काम किया। वहा के श्रावकों ने भी अपनी जिम्मेदारी का अच्छा परिचय दिया। साध्वियो ने भी अपने-अपने क्षेत्रों मे अच्छा काम किया।

विहार भगवान् महावीर का क्षेत्र है। वहां साधु-संतो के जाने से धर्म की वडी प्रभावना हुई है। स्थानीय विहारी लोगो में जैन धर्म के प्रति आस्था बढ़े, इसका प्रयत्न होना चाहिए।'

६. अग्रगण्य—मुनि जौहरीमलजी (बीदासर)

सहयोगी—मुनि जसराजजी (भादरा), निर्मलकुमारजी (राजगढ)
चातुर्मास—इन्दौर, मध्य प्रदेश
मुनिवृंद मे उपवास व तेले की तपस्या हुई।
भाई वहिनो मे—१/५२५, २/२०, ३/२५, ४/१०, ५/१०, ८/६, ९/१, ११/१, १६/१,
वारी के उपवास—१

- इंदौर चातुर्मासिक प्रवेश पर मुनिश्री का भव्य स्वागत, मुख्य अतिथि श्री मानव मुनि।
- 'नमस्कार महामंत्र की महत्ता' विपय पर स्थानकवासी व मूर्तिपूजक मुनियो के साथ मुनिश्री का प्रभावी प्रवचन।
- पर्युषण पर्व मे अखंड जाप।

७. अग्रगण्य—मुनि जयचंदलालजी (लाडनूं)

सहयोगी—मुनि भूपेन्द्रकुमारजी, ज्ञानेन्द्रकुमारजी (लाडनूं)
चातुर्मास—भुसावल, महाराष्ट्र
जयचदलालजी—एकांतर-२ माह
भाई वहिनो मे—१/६००, २/१०, ३/१५, ८/२, ९/४, ११/१, १५/१,

- भुसावल चातुर्मास प्रवेश पर आयोजित मुनिश्री के स्वागत समारोह मे जैन जगत् के संपादक श्री चंदनमल 'चांद', सिख नेता ज्ञानी गुरुवचन सिंह, ईसाई प्रमुख फादर माइकेल, नेता मदनलाल गोधा, आदि उपस्थित थे। पर्युषण पर्व मे अखंड जाप
- सम्वत्सरी महापर्व पर ५५ क्षेत्रो के लोग प्रवचन मे थे।

८. अग्रगण्य—मुनि धर्मचंदजी 'पीयूष' (गंगा०)

सहयोगी—मुनि महेशकुमारजी (गगा), दर्शनकुमारजी (काकरोली)
चातुर्मास—जयसिंहपुर, जि० कोल्हापुर, महाराष्ट्र

यात्रा—१५६१ कि० मि०; क्षेत्र—४५

मंत्रदीक्षा—६०, वर्गीय अणुव्रती—६०००, अणुव्रती—२००, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१ (बेंगलोर मे पचदिवसीय, शिविरार्थी-६५) कुभोजगिरि मे एकदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर।

धर्मचंदजी—$\frac{१}{२०}$, $\frac{३}{१}$

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{४२००}$, $\frac{२}{४०}$, $\frac{३}{४४}$, $\frac{४}{१६}$, $\frac{५}{१९}$, $\frac{६}{६}$, $\frac{७}{९}$, $\frac{८}{२}$, $\frac{९}{४}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{११}{५}$, $\frac{१३}{२}$, $\frac{१५}{९}$, $\frac{१६}{१}$, $\frac{३३}{१}$, तेले-तेले तप—१, वर्षीतप—३, एकांतर—२, उपवास की वारी—३५।

कार्यक्रम—

- २१ व २३ नव०, ८६ को ट्रिप्लीकेन (मद्रास) सभा भवन मे समणी स्थितप्रज्ञाजी आदि समणियों के आगमन प्रसंग पर दो संयुक्त प्रवचन।
- ३० नव० को केन्सर इस्टिट्यूट मद्रास के अतर्गत भ० आदिनाथ जैन काम्प्लेक्स के उद्घाटन प्रसग पर श्रमणसघीय श्री रतनमुनिजी, श्री श्रीपाल जैन (आइ.जी ऑफ पुलिस) डॉ० शाताजी (डायरेक्टर ऑफ सायटिफिक) श्री राघवाचारी (भू० पू० चेयरमेन एन. ई. एस) कॉम्प्लेक्स के लिए १५ लाख रूपये के अनुदानदाता श्री सुगालचंद जैन आदि विशिष्ट जन समेत सात सौ की उपस्थिति मे मुनिश्री का प्रभावक प्रवचन।
- १० दिस० को मद्रास राजभवन मे राज्यपाल महोदय श्री खुराना से वातचीत।
- सी. यू. शाह भवन-पुरुपवाकम-मद्रास मे दूसरी बार पचदिवसीय प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविर, सान्निध्य—मुनिश्री, निदेशक—समणी स्थित प्रज्ञाजी आदि, श्री जेठाभाई जवेरी व नगीनभाई शाह, ७९ श्रावक-श्राविकाओ ने भाग लिया, जिनमे गुजराती स्थानकवासियो ने प्रमुख रूप से भाग लिया, साध्वी डॉ० तरुणलताजी (M.A.,P.H.D) ने विशेष रूप से भाग लिया।
- पल्लावरम् मे विशाल जैन हस्तकला प्रदर्शनी।
- तिरूकलीकुड्रम (पक्षीतीर्थ) मे विराट् मर्यादा महोत्सव, पूर्व सांसद हीराचदजी गोलेच्छा विशेष अतिथि।
- १६ फर० को पाडीचेरी के राज्यपाल त्रिभुवनदास तिवारी से राज्यपाल भवन मे भेंटवार्ता।
- १२ अप्रैल महावीर जयति के पावन प्रसंग पर भ० महावीर वाटर सेटर वी. टी. एस. वस स्टेशन सुभाषनगर बेंगलोर के उद्घाटन निमित्त जैन युवक परिषद् द्वारा रखे कार्यक्रम मे सी. वीरण्णा

(ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर), टी. प्रभाकर (चेअरमैन के.एस.आर.टी.सी.), वी. वी. पुट्टेगौडा (बेंगलोर मेयर) एम.एस. नारायण राव कर्नाटक जनता पार्टी के अध्यक्ष, एन. विश्वनाथन (मैनेजिंग डायरेक्टर के. एस.आर.टी.सी.) उपस्थित थे। वहां महती उपस्थिति में मुनिश्री का प्रवचन, तत्पश्चात् सभा भवन में महावीर जयंति का विराट् आयोजन।

- २६ अप्रैल, हरियुर, के.के.वी. वाफणा कम्पाउण्ड मे अवधान कार्यक्रम में उपस्थित थे—मुन्सिफकोर्ट न्यायाधीश के. नारायण गौडा, रोटरी क्लब अध्यक्ष डॉ० एम.एन श्रीपति, थिओसाफिकल सोसायटी के अध्यक्ष डॉ० आर रंगय्या, अ. भा. पत्रकार संघ के डायरेक्टर श्री जे. रामय्या।
- हुवली मे कर्नाटक प्रांतीय तेयुप के लघु-सम्मेलन का उद्घाटन महापौर पी. एच. पवार द्वारा, विचार चर्चा, उद्बोधन व मौलिक प्रस्तावों का स्वीकरण।
- ३१ मई को अंजुमन-ए-इस्लाम द्वारा नेहरू कॉलेज के प्रागण मे आयोजित ईद मिलन समारोह मे पुलिस उपमहानिरीक्षक (डी.आइ. जी.) आबीद अली, जिलाधीश श्री आर.जी. नांडूर, महापौर पंवार, विधायक वावाजान डडसगेर्गी तथा सैकड़ो हिन्दू-इस्लाम-बुद्धिजीवियों के बीच प्रभावशाली वक्तव्य। रात्रीकालीन प्रवास पार्श्ववर्ती श्री शांतिनाथ हिन्दी हाईस्कूल मे रहा। वहां जिलाधीश, विधायक तथा प्रमुख १५-२० इस्लामी बंधु रात को १० बजे पुनः मुनिश्री के पास आये व शुक्रिया अदा किया।
- ५ जून को प्रातः सभा भवन मे आर.ए. उपाध्ये, प्रधान संपादक, संयुक्त कर्नाटक की अध्यक्षता मे विदाई समारोह।
- एक लाख से ऊपर प्रसार संख्या वाले संयुक्त कर्नाटक दैनिक पत्र के कार्यालय मे ५ जून के मध्याह्न मे समस्त कर्मचारियों के बीच प्रवचन, करीब ३० कर्मचारियों ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरे।
- २८ जून को तेरापंथ सभा भवन मे मिलापचंदजी व नथमल रूणवाल मेमोरियल ट्रस्ट की ओर से मुफ्त 'जयपुर फूट' प्रदान किए गए। विकलागो के बीच मुनिश्री का प्रवचन हुआ। नगराध्यक्ष डॉ० जे. जे. मगदूम आदि विशेष व्यक्ति उपस्थित थे। पांव लेने वाले व उनके पारिवारिक ७५ जनो ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरे।
- ५ अक्टूबर को भारत अर्बन को ऑपरेटिव बैंक लि० जयसिंहपुर के बढ़ाए गये मुख्य कार्यालय की इमारत के उद्घाटन प्रसंग पर मुनिश्री का विशेष प्रवचन। इस समारोह मे वी.एल. जैन, मुख्याधिकारी,

नागरी सहकारी बैंक, बंबई तथा भंवरीलाल जे. मोदी, अध्यक्ष, महाराष्ट्र को-ऑप० बैंक आदि अनेक विशिष्ट जनों की उपस्थिति थी।

६. अग्रगण्य—मुनि राकेशकुमारजी (सुजान०)

सहयोगी—मुनि हर्षलालजी (लाछुड़ा), मुनिसुव्रतजी (बीदासर)

चातुर्मास—मालाड़, बम्बई

मंत्र दीक्षा—१००, त्रिदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१ (३०० छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।)

राकेशकुमारजी—वाचन—२००० पृ० (आगम, दर्शन व योग साहित्य)

हर्षलालजी—$\frac{१}{४}$, $\frac{३}{३}$ आयं—६, स्वा—५०० गाथा प्रति, वाचन—६०० पृ०

मुनि सुव्रतजी—$\frac{१}{५}$, $\frac{३}{१}$, वाचन— २००० पृ० (व्याख्यान साहित्य)

भाई-बहिनों में—अठाई व उससे ऊपर की तपस्या ५० से अधिक, छोटे बालक-बालिकाओं में अठाई—१०

बोरीवली में रंगलालजी डुंगरवाल को संथारा करवाया। संथारा करीब ६ घंटे आया।

कार्यक्रम

- राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंहजी के द्वारा मुनि राकेशकुमारजी के सान्निध्य मे २ मई १९८७ बिडला मातुश्री सभागार में पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई को आचार्य तुलसी अमृत महोत्सव राष्ट्रीय समिति की ओर से अहिंसा पुरस्कार प्रदान किया गया। महाराष्ट्र के राज्यपाल डॉ० शंकरदयाल शर्मा व मुख्यमंत्री श्री शंकरराव चव्हाण के भी इस समारोह में भाषण हुए। कार्यक्रम बडा प्रभावी रहा।[1]
- कांची कामकोटी पीठ के शंकराचार्य के बम्बई आगमन पर षण्मुखानंद हाल मे आयोजित सर्वधर्म संमेलन में जैन धर्म के प्रतिनिधित्व की दृष्टि से मुनि राकेशकुमारजी का प्रभावशाली वक्तव्य हुआ। इस समारोह मे सभी धर्मो के प्रमुख धर्मगुरु व विद्वान उपस्थित थे। राज्यपाल डॉ० शर्मा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। महाराष्ट्र के नागरिक आवास मंत्री श्री सुब्रमण्यम ने स्वागत भाषण किया। सम्मेलन का संयोजन राज्य के राज्यमंत्री श्री श्रीकांत जिचकर ने किया। कार्यक्रम के पश्चात् आयोजित गोष्ठी मे शंकराचार्य ने कहा—'आचार्यश्री तुलसी और उनके शिष्यो के विचार समाज के लिए बहुत उपयोगी है।'

---

१. विस्तृत रिपोर्ट देखे, पृ० १७६

- दक्षिण पश्चिम क्षेत्रीय युवक परिषद् का आंचलिक सम्मेलन मुनिश्री के सान्निध्य मे वडाला (वम्बई) मे आयोजित हुआ। इस अवसर पर विभिन्न राज्यो के परिषद के कार्यकर्ता कार्यक्रम मे सम्मिलित हुए।
- वम्बई की तेरापंथ दिग्दर्शिका का पण्मुखानंद हॉल मे हजारो भाई-बहिनों की उपस्थिति मे मुनिश्री के सान्निध्य मे विमोचन हुआ। इस अवसर पर वम्बई के प्रमुख कार्यकर्ता, समाज सेवक, पत्रकार व राजनेता उपस्थित थे।
- विक्रोली में मुनिश्री के सान्निध्य मे विराट् कवि सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमे बम्बई के अनेक प्रमुख कवियो ने भाग लिया।
- २ अक्टूबर गांधी जयंति के दिन मुनिश्री के सान्निध्य मे 'लोकतंत्र और अनुशासन' विषय पर सगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय विधायक व अन्य सैंकड़ो कार्यकर्त्ताओ ने भाग लिया। इस कार्यक्रम मे मालाड के शिक्षक-शिक्षिकाओ की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। इस आयोजन के पश्चात् अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान की दृष्टि से शिक्षको की अन्य गोष्ठियां भी आयोजित हुई।
- भारत जैन महामंडल की ओर से विश्व मैत्री दिवस का कार्यक्रम अंधेरी के जैन उपाश्रय मे आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुनि राकेशकुमारजी, मदिरमार्गी आचार्य श्री जयानदविजयजी, स्थानकवासी युवाचार्य शिवमुनिजी आदि के भाषण हुए। इस कार्यक्रम मे सभी जैन सम्प्रदायो के व्यक्ति उपस्थित थे। मुनिश्री ने आचार्यश्री की समन्वय नीति पर प्रकाश डाला।

श्रावक सम्मेलन-- वम्वई शहर व उपनगरो मे समय-समय पर श्रावक सम्मेलन आयोजित हुए। समय-समय पर पारिवारिक गोष्ठियो का आयोजन हुआ, जिसमे अनेक पारिवारिक कलहों का समाधान भी हुआ। स्थानकों व उपाश्रयों मे मुनिश्री के प्रवचन हुए। अनेक नई कालोनियों मे मुनिश्री का प्रवास हुआ। अनेक नये परिवार तेरापंथ धर्मसघ के आचार-विचार से परिचित और प्रभावित हुए। मुनि सुव्रतजी के सान्निध्य मे चातुर्मास मे नियमित रूप से ज्ञानशाला चली।

बम्वई से प्रकाशित नवभारत टाइम्स, बम्वई समाचार व जन्मभूमि आदि पत्रो मे धर्मसघ से संबधित समाचार सवाद व निबंध प्रकाशित हुए।

प्रेक्षाध्यान के तीन शिविरों का आयोजन, जिनमें मुनियो के अलावा समण स्थितप्रज्ञजी, श्री नगीन भाईशाह व जेठाभाई जवेरी का मार्गदर्शन व निदेशन रहा। छात्र-छात्राओ के बीच प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित हुआ, जिसमे १८० छात्र-छात्राओ ने भाग लिया।

० साहित्य—आदर्श साहित्य सघ की ओर से मुनि राकेशकुमारजी की निम्न पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

(१) साक्षात्कार (२) शतदल (३) नवनीत (४) स्वर्ग-नरक।

१०. अग्रगण्य—मुनि रोशनलालजी (सरदार०)

सहयोगी—मुनि चारित्ररुचिजी (राजनगर) सभवकुमारजी (गगा०)

चातुर्मास—औरंगाबाद, महाराष्ट्र

यात्रा—१२१२ कि० मि०; क्षेत्र ३३

सम्यक्त्व दीक्षा—१०८, गुरुधारणा-४, शीलव्रत—१ (उत्तमचदजी सेठिया) तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२ (एक ३ दिन दूसरा ५ दिन, जिसमे क्रमश २९ व २५ बच्चो ने भाग लिया); प्रेक्षाध्यान शिविर—१ (पचदिवसीय, शिविरार्थी-३३)

रोशनलालजी—$\frac{१}{५}$ वाचन—७००० पृ०; स्वा० ८५, ५२५ गाथा

चारित्ररुचिजी—$\frac{१}{६}$, $\frac{२}{५}$, $\frac{३}{१}$; वाचन—५०० पृ०

सभवकुमारजी—$\frac{१}{८}$, स्वा० ५५०० गाथा

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{५८}$, $\frac{२}{२८}$, $\frac{३}{५३}$, $\frac{४}{५}$, $\frac{५}{१}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{८}{२}$, $\frac{९}{३}$

कार्यक्रम

- ० जालना मे हस्तकला प्रदर्शनी का आयोजन।
- ० खामगाव मे मर्यादा महोत्सव का भव्य कार्यक्रम।
- ० लोणार मे जैन एकता पर तीनों सम्प्रदाय के साधु-साध्वियो का सामूहिक कार्यक्रम।
- ० महावीर जयन्ति परतुड व अक्षय तृतीया परभणी मे आयोजित।
- ० औरगाबाद मे तीनो संप्रदायो का सामूहिक क्षमायाचना समारोह; मुख्य अतिथि-कमीश्नर श्री अरुण वोगीरवार
- ० अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह मे महाराष्ट्र के पूर्व मत्री श्री अब्दुल अजीज, प्रकाड विद्वान ब्रह्मानंद देशपांडे, प्रो० शांतिलाल जैन के अलावा सभी धर्मो के अधिकारियो ने भाग लिया।
- ० समाचार प्रकाशन—दैनिकपत्र लोकमत, मराठवाडा, अजिंठा, सिटिजन्स, लोकविजय, दैनिक नवमराठा, सकाल, तरुण भारत, नागपुर पत्रिका, दैनिक आंदोलन, असतोष, जन शक्ति, देशोन्नति।

  साप्ताहिक वृत्त गुजन, विश्व सागर, जैन जगत्।

  साहित्य प्रकाशन—१. अमरकुमार सुरसुदरी, ले० मुनि रोशनलाल प्रकाशक—जैन विश्व भारती।

प्रेक्षाध्यान शिविर पर युवाचार्यश्री ने ४ सितम्बर को दिल्ली से एक संदेश प्रदान किया, वह इस प्रकार है—'जीवन जीना एक बात है और मान-

सिक शांति के साथ जीवन जीना बिल्कुल दूसरी बात है। इस बात को बहुत कम लोग जानते हैं। प्रेक्षाध्यान से सीखा जा सकता है कि आदमी मानसिक शांति के साथ कैसे जीए ?·······औरंगाबाद के महिला मंडल ने इस कला को सीखने के लिए मुनि रोशनलालजी की सन्निधि में शिविर आयोजित किया है। उसमें समणी मधुरप्रज्ञा आदि समणियों व अन्य प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण का योग मिल रहा है। उससे सब लाभान्वित होंगे।'

११. अग्रगण्य—मुनि उगमराजजी (देवरिया)

सहयोगी—मुनि वृद्धिचंदजी (केसूर) चिदानंदजी (राजन०)
चातुर्मास—लावा सरदारगढ़, जि० उदयपुर, राज०
मुनि उगमराजजी ने मौन मासखमण किया।
भाई-बहिनों में अच्छी तपस्या हुई।

१२. अग्रगण्य—मुनि हनुमानमलजी (सरदार०)

सहयोगी—मुनि शुभकरणजी (तारा०) गणेशमलजी (लाछुड़ा)
चातुर्मास—दौलतगढ़, जि० भीलवाड़ा, राज०
मुनि गणेशमल—$\frac{३}{६}$, एकांतर—२ माह
शुभकरणजी—निरंतर एकासन
भाई-बहिनों में—$\frac{१}{३३८}$, $\frac{२}{८६}$, $\frac{३}{३}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{५}{२}$, $\frac{८}{२}$, $\frac{९}{१}$

१३. अग्रगण्य—मुनि हनुमानमलजी 'हरीश' (लाडनूं)

सहयोगी—मुनि देवराजजी (मायरा) अर्हत्कुमारजी (पदराड़ा)
चातुर्मास—गोगुन्दा, जि० उदयपुर, राज०
भाई-बहिनों में—$\frac{१}{५०८७}$, $\frac{२}{३३}$, $\frac{३}{४९}$, $\frac{४}{६}$, $\frac{५}{६}$, $\frac{८}{३}$, उपवास की बारी—४ दो बार में सामूहिक आयंबिल—१३०

पिछले वर्ष २३ जुलाई को पिछली रात्रि में मुनिश्री खड़े-खड़े ध्यान कर रहे थे। अचानक चक्कर आ जाने से नीचे गिर गए, फलतः दाहिने पांव में फ्रेक्चर हो गया। उसके बाद पट्टी बंधी, एक ही स्थान पर रहना पड़ा। इन सब के बावजूद मुनिश्री ने समभाव से इस स्थिति को सहा। सहगामी मुनियों द्वारा उल्लेखनीय परिचर्या हुई।

'धर्म का महत्व' विषय पर मुनिश्री व स्थानकवासी हीरा मुनि व नरेशमुनि का संयुक्त प्रवचन हुआ।

पदराडा में स्था० समाज के शिविर में 'धर्म और क्रिया' विषय पर मुनिश्री का प्रभावी प्रवचन।

१४. अग्रगण्य—मुनि बालचंदजी (आसीन्द)

सहयोगी—मुनि हेमचंद्रजी (बगौर)

भाई-बहिनों मे—१/५६८, २/१९, ३/८, ४/३, ५/३, ८/३, ३०/१,
वारी के उपवास—२, आयं-५०
पर्युषण पर्व में, 'ओम् शांति' का अखंड जाप चला।

१५. अग्रगण्य—मुनि सुमेरमलजी 'सुमन'

सहयोगी—मुनि सुरेशकुमारजी (हरनावां) रमेशकुमारजी (सरदार०)
चातुर्मास—आसीद, जि० भीलवाड़ा, राज०
यात्रा—५२५ कि० मि०, क्षेत्र—५७

मंत्र दीक्षा—३०; गुरुधारणा—३८; थोकड़ा—३०; तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२ (पहला शंभुगढ़ मे पंचदिवसीय, शिवरार्थी—३७; दूसरा आसीद मे पंचदिवसीय, शिविरार्थी आयं-८०।

रमेशकुमारजी—५/८, एकातर—१ माह; वाचन—९०० पृ०
सामूहिक वाचन—१५५० पृ०; स्वा. ४०० गाथा

भाई-बहिनों मे—१/१९२५, २/७१, ३/५८, ४/१३, ५/१९, ६/१, ८/१०, ११/१, वारी के उपवास—१४, एकांतर-२८, तेले-तेले तपस्या—१, युवकों में पचरंगी—२, आयंबिल का मासखमण—१, सामूहिक आयं—८०

अन्य समाज के अध्यापक जगदीशप्रसाद शर्मा ने ११ की तपस्या की।
११० भाई-बहिनो के द्वारा 'ओम् भिक्षु' का पौने दो करोड़ का जाप।'

कार्यक्रम

- गंगापुर मे मर्यादा महोत्सव, नाथद्वारा मे महावीर जयंति का आयोजन।
- काल्यास, सरेरी, कंवल्यास, खेजड़ी, अन्टाली आदि गांवो मे स्थानक-वासी समाज के बीच मुनिश्री के प्रभावी प्रवचन।
- पुर व परागाम की स्कूलों मे कार्यक्रम।
- विभिन्न स्कूलों में अणुव्रत छात्र निर्माण सप्ताह के विभिन्न कार्यक्रम, इस सप्ताह मे भीलवाड़ा के एम० एल० वर्मा कॉलेज के प्रिंसिपल श्री भंवरसिंह चौधरी, व्याख्याता धर्मेशजी जैन, तहसीलदार श्री गोविंद सिंह, आसीद पंचायत समिति के प्रधान श्री किशनसिंह चुण्डावत आदि ने भाग लिया। स्कूलो के सैकड़ो बच्चो ने विद्यार्थी अणुव्रत स्वीकार किए।
- अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के कार्यक्रमो मे सांसद श्री गिरधारीलाल व्यास, सर्वोदय कार्यकर्त्ता श्री मनोहरसिंह मेहता, स्वतंत्रता सेनानी श्री शंकरदेव भारतीय, विधायक श्री बिहारीलाल पारीक तथा अन्य अधिकारियों ने भाग लिया।
- मेवाड़ क्षेत्रीय तेयुप का १३ वां वार्षिक अधिवेशन, जिसमे १५० युवा

प्रतिनिधि सम्मिलित हुए ।

- आसीद मे समाज की स्कूल अमृत भारती पब्लिक स्कूल मे १५६ विद्यार्थी अध्ययनरत है ।
- पिछले १३ वर्षों से आसीद मे ज्ञानशाला चल रही है ।
- स्वाध्याय वर्ष के उपलक्ष मे अनेक भाई-बहिनों ने कुल ५०,००० पृ० साहित्य पढने का संकल्प लिया ।
- पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर मुनिश्री की सन्निधि में आयोजित, निदेशक श्री हेमंतदास पटेल ।

१६. अग्रगण्य—मुनि सुखलालजी (सुजान०)

सहयोगी—मुनि मोहजीतकुमारजी (राजगढ), लाभरुचिजी (राजल०)

चातुर्मास—चांखेड—विनयपुरम्, जि० भीलवाड़ा, राज०

यात्रा—७०० कि० मी०; क्षेत्र—६०

मंत्र दीक्षा—२५, सम्यक्त्व दीक्षा-४०, प्रतिक्रमण—६, पच्चीस-बोल—१५

सुखलालजी—वाचन-आगम—५०० पृ०, संघीय व अन्य-२००० पृ०

मोहजीतजी—वाचन-आगम—५०० पृ०, संघीय व अन्य-३००० पृ०, ध्यान व जाप—३०-३० मि०

लाभरुचिजी—३/१, वाचन—१००० पृ०

भाई-बहिनो मे—३/१०, ५/३, ८/७, ६/२, ११/१, अन्य जातियो मे उप.—८०

कार्यक्रम

- साहित्य संस्थान टॉडगढ़ मे चिंतन संगोष्ठी ।
- राजस्थान विद्यापीठ उदयपुर मे भावी योजना संगोष्ठी ।
- तुलसी निकेतन उदयपुर मे सिंहावलोकन संगोष्ठी ।
- भीलवाडा मे जीवन-विज्ञान एव माण्टेसरी शिक्षा-शिक्षक प्रशिक्षण शिविर—१५ दिन
- छात्र निर्माण सप्ताह (सात गांवो मे)
- अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह (सात गांवो मे)
- मेवाड़ युवक परिषद् की कार्यकारिणी की संगोष्ठी ।
- अणुव्रत महिला विद्यापीठ विनयपुरम् द्वारा स्वतंत्रता समारोह ।
- अणुव्रत महिला विद्यापीठ विनयपुरम् द्वारा जीवन-विज्ञान एव सांस्कृतिक समारोह
- माण्डल तहसील वृहद शिक्षक सम्मेलन ।
- अणुव्रत संकल्प अभियान समारोह ।
- अणुव्रत चेतना दिवस-विनयपुरम् ।

- जैन विद्या तथा जीवन-विज्ञान कक्षाएं ।
- अमृत भारती के बच्चो को उद्‌बोधनः—आसीद, लाछुडा, दौलतगढ़, आमेट, वेमाली आदि ।
- श्री विहारीलाल पारीक एवं सुखलालजी वोहरा के नेतृत्व मे अणुव्रत महिला विद्यापीठ, विनयपुरम् की वालिकाओ के साथ अन्य गणमान्य व्यक्तियो द्वारा आचार्य प्रवर के दिल्ली मे दर्शन एव वहां भव्य कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण ।
- तेरापंथ धर्मसंघ के ८७ के चातुर्मासो की सूची मे सबसे छोटे गाव चाखेड़ विनयपुरम् मे चातुर्मास । १०० से अधिक आसपास के तेरापंथी क्षेत्रो के लोगो ने दर्शन सेवा का लाभ लिया ।

विशेष संदेशः—४ नवम्वर को दिल्ली से प्रेपित अपने संदेग मे आचार्य प्रवर ने कहा—'मुनि सुखलालजी ने चाखेड़ चौमामा किया है । इतने छोटे गांव मे चौमासा कभी-कभार होता है । वहां रहकर संतों ने वहुत मनोयोग से काम किया है । अपनी सुविधा-असुविधा को गौण कर विनयपुरम् (वाकली) की योजनाओं को अपना समुचित सहयोग दिया है । चाखेड़ के श्रावकों ने भी जो सेवा की है, दायित्व निभाया है, वह भी एक उदाहरण है । वास्तव मे वाकली (विनयपुरम्) क्षेत्र मे अब भी काफी काम करना होगा और साधुओं को पास-पडौस के श्रावको का सहयोग अपेक्षित होगा ही । हमारे नये भक्त निर्भीक वक्ता विधायक विहारीलालजी ने खूव वीडा उठाया है, वह वहुत ही महत्त्वपूर्ण है । इस ओर वहुतो को ध्यान केन्द्रित करना ही होगा ।

'मुनि सुखलाल आदि संतो को तो कहने की जरूरत नही, अपने विवेक से काम कर लेते हैं ।'

२४ नम्वर को प्रदत्त अपने सदेश मे आचार्यश्री ने कहा—'मुनि सुखलाल ने चांखेड चौमासा करके, छोटे गांव मे रहकर एक नया अध्याय जोडा है । ....साथ मे मुनि मोहजीत भी मनोयोग से काम कर रहा है । यह खुशी की वात है । चाखेड के लोगो ने, आस-पास के कुछ लोगो ने अच्छा योगदान रखा और आगे भी ध्यान रखेंगे ।'

वागौर मे आयोजित शिक्षक संसद के लिए १८ दिस० को प्रदत्त संदेश मे आचार्य प्रवर ने समस्या व समाधान की चर्चा करते हुए अणुव्रत की प्रासंगिकता पर मौलिक विचार दिए । उन्होने आगे कहा—'महात्मा गाधी ने अपने समय मे वकीलो और मजिस्ट्रेटों का वड़ा उपयोग किया था । अणुव्रत इस समय शिक्षको का उपयोग करना चाहता है । इस दृष्टि से वागौर मे हमारे मुनि सुखलालजी के सान्निध्य मे शिक्षक संसद का आयोजन महत्त्वपूर्ण है ।'

उसी सम्मेलन के लिए युवाचार्यश्री ने अपने सदेश मे कहा—'अ०भा० अणुव्रत समिति द्वारा सुखलालजी के सान्निध्य मे अणुव्रत शिक्षक ससद का

सम्मेलन हो रहा है, यह अत्यंत उपयोगी कार्य है।''' शिक्षकों में जितनी आतरिक प्रेरणा प्रवल होगी, उतना ही विद्यार्थी का निर्माण, चरित्र का विकास और समाज का कल्याण होगा।'

१७. अग्रगण्य—मुनि जतनमलजी (लाडनूं)

सहयोगी—मुनि मंगलरुचिजी (राजगढ़)

चातुर्मास—मोखुन्दा, जि० भीलवाडा, राज०

भाई-बहिनों में—$\frac{१}{२८}$, $\frac{२}{१०}$, $\frac{२}{९}$, $\frac{४}{४}$, $\frac{५}{१}$, $\frac{८}{१३}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{१३}{१}$, एकांतर—६, वर्षीतप—२

- ० २५ वर्षों की लंबी अवधि के बाद संतों का चातुर्मास होने से क्षेत्र में अच्छा उत्साह।
- ० चातुर्मास प्रवेश पर स्वागत-समारोह में डॉ० महेन्द्र कर्णावट, श्री देवेन्द्र हिरण, स्था० श्रमण संघ की साध्वी रूपकंवरजी, रतनकंवरजी उपस्थित थी।
- ० १७ अगस्त को मुनिश्री के सान्निध्य में समण सिद्धप्रज्ञजी, उपासक मानवमित्रजी का अभिनंदन।
- ० पर्युषण पर्व पर अखंड जाप।

१८. अग्रगण्य—मुनि मोहनलालजी (आमेट)

सहयोगी—मुनि भवभूतिजी (कांकरोली) जिनेशकुमारजी (जसोल)

चातुर्मास—कानोड़, जि०-उदयपुर, राज०

यात्रा—१००० कि०मी०; क्षेत्र—५०

मंत्र दीक्षा—४५; प्रेक्षाध्यान शिविर (सप्तदिवसीय), थोकड़ा—२५

मोहनलालजी—स्वाध्याय व लेखन का अनवरत क्रम।

भवभूतिजी—तपस्या—$\frac{१}{३०}$, $\frac{३}{१}$, $\frac{४}{१}$, एकातर—१ माह, जप-ध्यान—४ घंटा, कंठस्थ—दशवैकालिक व आवश्यक सूत्र की संस्कृत छाया

जिनेशकुमारजी—$\frac{१}{६}$, जप-ध्यान—$१\frac{१}{२}$ घंटा; स्वा०—३०० गाथा, उत्तराध्ययन (कुछ अध्ययन) तथा सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कंध) का सामूहिक स्वाध्याय।

भाई-बहिनों मे—पचरंगी २, $\frac{८}{६}$, सामूहिक आयंबिल (२ वार)

कार्यक्रम—

- ० तीन स्कूलों व हरिजन बस्ती में अणुव्रत कार्यक्रम, अनेक अणुव्रती बने।

१९. अग्रगण्य—मुनि विनयकुमारजी 'आलोक' (सरदार०)

सहयोगी—मुनि तत्त्वरुचिजी (आमेट), अभयकुमारजी (सरदार०)

चातुर्मास—कोटा, राज०

यात्रा—१००० कि०मी०
मुनि विनयकुमारजी—४$\frac{१}{०}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{३}{२}$, १० महीना पाच विगय वर्जन
अभयकुमारजी—२$\frac{१}{०}$, पांच माह से विगय वर्जन।

कार्यक्रम—

- ० जयपुर में अध्यापकों का दसदिवसीय जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर लगा, जिसमें ११ जिलों के ११० अध्यापकों ने भाग लिया। शिविर मे साध्वी सज्जनश्रीजी के पास दीक्षित होने वाली पाच वहिनो ने भी भाग लिया। शिविर मे शिक्षा मंत्री हीरालाल देवपुरा, शिक्षा सचिव कुम्भट तथा अनेक अन्य लोगों ने भाग लिया।
- ० राज निवास में राज्यपाल श्री वसन्तदादा पाटिल की अध्यक्षता मे सर्वधर्म सद्भाव संगोष्ठी आयोजित।
- ० रतनलाल वैद की माताजी का दसदिवसीय चौविहार अनशन अनेक उपलब्धियों से संयुक्त रहा। धर्मसघ की वहुत प्रभावना हुई।

जनसंपर्क:—उपराष्ट्रपति आर. वेकटरमण, कपडा मत्री श्री रामनिवास मिर्धा, भाजपा नेता अटलविहारी वाजपेयी, भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवानी, सुप्रसिद्ध पत्रकार कुलदीप नैयर, राज्यपाल वसन्तदादा पाटिल, मुख्य मत्री हरिदेव जोशी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमत्री श्री शिवचरण माथुर, पूर्व मुख्यमंत्री श्री जगन्नाथ पहाडिया, राज्यपाल सुखदेव प्रसाद, साहित्यकार, पत्रकार वडी संख्या मे सम्पर्क मे आए।

सवाईमाधोपुर क्षेत्र मे पंचदिवसीय अध्यापको का शिविर, ६५ अध्यापको ने भाग लिया। जेल, कलक्टरी, पुलिस, रोटरी क्लव मे भाषण, दक्षिण पूर्वी राजस्थान श्रावक सम्मेलन, पत्रकार सम्मेलन, युवक सम्मेलन, महिला सम्मेलन व भगवतगढ़ मे विद्यार्थी शिविर तथा अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए।

कोटा मे ९५ महाविद्यालय, हायर सैकेण्डरी, हाईस्कूल तथा मिडिल स्कूल के ५०,००० छात्रो तथा १०,००० अध्यापको के वीच भाषण, ४५,००० विद्यार्थियों तथा ४,००० अध्यापको द्वारा अणुव्रत आचार संहिता का स्वीकरण।

जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण शिविर दस दिनो का, जिसमे ५ जिलो के ९० अध्यापको ने भाग लिया।

रोटरी क्लव आदि अनेकों क्लवों मे भाषण, अनेक सस्थाओं मे प्रवचन। मंदिर, मस्जिद, उपाश्रय तथा स्थानकों मे प्रवचन।

वूदी, टौक, मे ५००० छात्रो के सम्मेलन तथा सामूहिक दोनो ही स्थानों पर कार्यक्रम। देवली, निवाई जैसे नए क्षेत्रो मे मुनिश्री का प्रवास।

सीकर में तीन दिन के प्रवास मे अनेक कार्यक्रम आयोजित। कलक्टर की ओर से आयोजित सत्तर अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच प्रवचन। आयुर्वेद महाविद्यालय, पुलिस लाईन व पत्रकारों के बीच सम्मेलन, जीवन-विज्ञान संगोष्ठी आदि विशेष कार्यक्रम। जिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डा० एन० एम० सिंघवी का विशेष योगदान रहा।

२०. अग्रगण्य—मुनि जशकरणजी (सुजान०) मुनि मिलापचंदजी (बीदासर)

सहयोगी—मुनि पृथ्वीराजजी (श्रीडूगर०) अमृतानंदजी (लाडनू)

चातुर्मास—बोरावड़, जि० नागौर, राज०

जशकरणजी—$\frac{१}{७}$, वाचन—११००० पृ०

मिलापचंदजी—वाचन १२,००० पृ०

पृथ्वीराजजी—$\frac{१}{३३}$, वाचन १०,००० पृ०

अमृतानंदजी—$\frac{१}{९३}$, $\frac{६}{१}$, वा० १८०० पृ०

मुनि मिलापचंदजी छाछ के आगार पर लंबी तपस्या कर रहे हैं। इससे पूर्व भी वे यह तप कर चुके है। २४ अक्टूबर तक १०९ दिन की तपस्या हो चुकी है। आगे यह क्रम काफी लम्बा चलने की सभावना है।

भाई-बहिनो में—$\frac{१}{२२२२}$, $\frac{२}{९६}$, $\frac{३}{२४}$, $\frac{४}{१२}$, $\frac{५}{६}$, $\frac{८}{४}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{१५}{२}$, श्रावकों में ११,००० पृ० व कन्यामंडल की कन्याओं ने ५१,००० पृ० का साहित्य-वाचन किया।

बोरावड़ के भाई-बहनों को तत्त्वज्ञान के क्षेत्र में निष्णात बनाने हेतु मुनिवरों ने अथक प्रयास किया। उनके प्रवासकाल में सैकड़ों लोगों ने थोकड़े सीखे। उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—पच्चीस बोल, जाणपणा व हितशिक्षा के पच्चीस बोल व काल् तत्त्व शतक—९, तत्त्वचर्चा—१०, तेरह द्वार—१५, बासठिया—१५, लघुदंडक—१०, कर्म प्रकृति—१५, अल्पा बहुत—१३, संजया—१०, नियंठा—१०, गतागत—८, बावन बोल—१२, कायस्थिति—५, महादंडक—५

२१. अग्रगण्य—निकाय प्रमुख मुनि बुद्धमलजी

सहयोगी—मुनि शांतिकुमारजी (सुजान०) सुबाहुकुमारजी (श्री डूंगर०) पारसकुमारजी (लाछुड़ा)

चातुर्मास—पाली, राज०

यात्रा—४२५ कि० मी०; क्षेत्र—३०

सम्यक्त्व दीक्षा—१०, प्रतिक्रमण—१५, भक्तामर—१०

साधुओं में कुल तपस्या—$\frac{१}{८६०}$, $\frac{२}{७}$, $\frac{३}{९}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{५}{२}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{१}$, $\frac{९}{१}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१२}{१}$, मासखमण—१

मुनि पारसकुमारजी ने ३१ दिन व १२ तक की लड़ी सानंद सम्पन्न की। तपस्या में भी सेवा, ध्यान व स्वाध्याय नियमित चलते रहे। सभी साधुओ का कुल-वाचन आगम साहित्य—३००० पृ०, सघीय व अन्य साहित्य १०,००० पृ०, कंठस्थ—२०० गाथा, स्वाध्याय—२,००,००० लगभग। विशेष अनुष्ठान जप, ध्यान आदि 'ओम् भिक्षु' का जाप १,२५,००० 'ओम् अभी-राशिको, १,२५,०००।

कार्यक्रम

- जोधपुर में मर्यादा महोत्सव आयोजित हुआ। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री दौलतसिंह भण्डारी, मैनेजर बिडला सीमेंट फैक्ट्री व मुख्य अतिथि न्यायाधीश मिलापचदजी जैन ने अपने विचार व्यक्त किए।
- कृषि मंडी जोधपुर में मुनिश्री का मार्मिक व प्रेरणादायी प्रवचन हुआ।
- पाली—हाऊसिंग बोर्ड मे मुनिश्री का सार्वजनिक प्रवचन हुआ।
- सोजत रोड़—होली पर्व पर 'मन को कैसे रगे' विषय पर मार्केट में मुनिश्री का सार्वजनिक भाषण हुआ। 'सर्वधर्म सद्भाव' पर सोनी बाजार में सार्वजनिक प्रवचन हुआ।
- वगडी—मुनिश्री का त्रिदिवसीय प्रवास रहा। एक रात्रि का प्रवास जैतसिहजी की छतरी-स्थल पर रहा।
- सिरियारी—स्थानीय ठाकुर साहब सपरिवार मुनिश्री की सेवा में उपस्थित हुए। प्रारभिक वार्तालाप के मध्य ठाकुर साहब ने बताया कि तेरापंथ धर्मसघ के प्रति हमारा पारिवारिक सम्बन्ध आचार्य भिक्षु से प्रारभ हुआ, जो आज तक उसी रूप मे चला आ रहा है। मुनिश्री की कविताए सुनकर सभी बहुत प्रभावित हुए।
  स्थानीय विद्यालय मे मुनिश्री का प्रवचन हुआ।
- राणावास—अप्रैल मे कई स्कूलो में मुनिश्री के वक्तव्य हुए तथा महावीर जयंति का आयोजन हुआ।
- जोजावर—अक्षय तृतीया का आयोजन।
- मारवाड जक्शन—जून मे स्थानकवासी सम्प्रदाय के विशिष्ट श्रावक श्री हस्तीमल मुणोत की विशेप प्रार्थना पर मुनिश्री का प्रातकालीन प्रवचन तीन दिन तक स्थानक मे हुआ। वहा विराजित साध्वियो ने स्थानक आगमन पर उनका भावभीना अभिनदन किया।
- देवली —जून/देवली नगर के विशाल चौक मे मुनिश्री का सार्वजनिक प्रवचन हुआ। विधायक खगारसिहजी विशेष रूप से उपस्थित थे।
- पाली—६ जुलाई/पाली चातुर्मास प्रवेश पर मुनिश्री का भव्य स्वागत हुआ। कार्यक्रम मे राजस्व उपमत्री श्रीमती बीना काक व

पाली नगर परिषद् के अध्यक्ष श्री केवलचंद गोलेछा ने मुनिश्री का स्वागत किया।

- १६ जुलाई/स्थानीय कपड़ा मार्केट के विशाल प्रागण में 'जीने की कला' विषय पर मुनिश्री का मार्मिक प्रवचन हुआ। रोटरी क्लब के अध्यक्ष डॉ दिनकर व पुलिस अधीक्षक श्री एम.एन. धवन विशेष रूप से उपस्थित हुए।
- १ अगस्त/पारस मुनि की ३१ दिवसीय दीर्घ तपस्या की सानद सम्पन्नता पर मुनिश्री के सान्निध्य मे स्थानीय न्याती नोहरे में तप-अभिवंदना समारोह आयोजित हुआ। स्थानकवासी साध्वी जैनमतीजी, मुनि राजतिलकजी, साध्वी हेमप्रभाजी आदि मूर्तिपूजक साधु-साध्वियो ने भी इसमे विशेष रूप से सम्मिलित होकर तपस्वी मुनि के प्रति अपनी हार्दिक मगलकामना प्रकट की। स्थानीय जिलाधीश श्री अतुलकुमार गर्ग एवं प्रमुख समाजसेवी डी.डी. सोलंकी ने मुख्य रूप से अपने विचार अभिव्यक्त किए। कार्यक्रम मे २५ गावो के ५००० व्यक्ति उपस्थित थे।
- राणा प्रताप चौक मे भारत जैन महामडल पाली की ओर से एक विराट् आयोजन विश्व मैत्री दिवस के रूप मे रखा गया। उसमे आर्य समाज के विद्वान श्री जगदीश्वरानंदजी एवं वैदिक धर्म के पूज्य श्री रामस्वरूपजी तथा जैन धर्म के सभी सम्प्रदायो के साधु-साध्वियों ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर मुनिश्री का प्रमुख रूप से वक्तव्य हुआ।
- मुनिश्री की बलवती प्रेरणा से एक ऐसा वातावरण व माहौल बना कि आचार्यश्री का चातुर्मास पाली मे ही हो। इसके लिए दिल्ली मे कई वार अर्ज करने गए। सन् १६६० का चातुर्मास पाली घोषित हुआ।

भेंट करने वाले विशिष्ट व्यक्ति

- दौलतसिंहजी भंडारी, मैनेजर बिड़ला सीमेन्ट फैक्ट्री
- मिलापचदजी जैन, न्यायाधीश, राज० हाईकोर्ट
- श्री जसराज चोपडा, न्यायाधीश ,,
- खगारसिंहजी, विधायक
- श्रीमती वीणा काक, राज० की राजस्व उपमंत्री
- श्री केवलचंद गुलेछा, पाली नगर परिषद् अध्यक्ष
- अतुलकुमारजी गर्ग, जिलाधीश, पाली
- श्री महेन्द्रनाथ धवन, पुलिस अधीक्षक, पाली

- श्री डॉ० दिनकर, अध्यक्ष रोटरी क्लब, पाली
- श्री मदनलाल गौड, जनसंपर्क अधिकारी
- श्री सुरेश चतुर्वेदी, नवभारत टाइम्स, संवाददाता
- ,, चैनसिंहजी, राजस्थान पत्रिका, ,,
- ,, सुभाष रावल, दैनिक नवज्योति, ,,
- ,, लीलाराम थवानी, जलते दीप, ,,
- ,, किशोरजी, जय राजस्थान, ,,
- ,, सम्पत भण्डारी, असनाद सम्पादक
- ,, तेजराज कोठारी, अरावली ,,
- ,, लूणकरण छाजेड़, तेयुप समाचार ,,
- ,, श्री ए एस मेहता, संभागीय आयुक्त

समाचार प्रकाशन—नवभारत टाइम्स, राजस्थान पत्रिका, दैनिक नवज्योति, जलते दीप, जय राजस्थान, सच्चा भारत, अरावली टाइम्स आदि ।

२२. अग्रगण्य—मुनि अमोलकचंदजी (राजल०) } मुनि दुलहराजजी (डुधोड़)

सहयोगी—मुनि मांगीलालजी 'मुकुल', संपतमलजी (श्रीडूंगर०), विमलकुमारजी (तारा०), प्रमोदकुमारजी (उदयपुर)

चातुर्मास—लाडनूं—जैन विश्व भारती, राज०

अमोलकचंदजी—$\frac{१}{२४}$ $\frac{२}{१}$, मांगीलालजी $\frac{१}{१५}$

दुलहराजजी—$\frac{१}{१०}$, जप का अनवरत व विशेष उपक्रम, आगम शोध-कार्य मे विशेष रूप से संलग्न ।

विमलकुमारजी—$\frac{१}{१०}$, एकांतर—२ माह,

वाचन—सूयगडो, उपासकदशा टीका व दशाश्रुतस्कंध चूर्णि

अध्यापन—समणवृंद, पारमार्थिक शिक्षण संस्था के अध्यापकों व मुमुक्षु बहिनो को कालु कौमुदी व्याकरण ।

स्नातक तृतीय वर्ष की बहिनो को तुलसी मंजरी (प्राकृत व्याकरण) पियंकरकहा (चार उच्छ्वास) का अध्यापन, प्राकृत पुस्तक का लेखन (जारी)

प्रमोदकुमारजी—$\frac{१}{१०}$ $\frac{२}{१}$, एकांतर—२ माह, स्वा० १,२५,००० गाथा

सामूहिक वाचन—सूयगडो व समवाओ

साहित्य संपादन—मुनि दुलहराजजी

१. देशी शब्दकोश	प्रकाशक—जैन विश्व भारती
२. अमूर्त चिंतन	,,
३. महाप्रज्ञ से साक्षात्कार	,,
४. प्रस्तुति	,,
५ संभव है समाधान	,,

- ० साध्वी किरणयशाजी का प्रभावक अनशन लाडनू की धरती पर हुआ ।[1]
- ० जापानी प्रतिनिधिमंडल का प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविर लगा ।
- ० अन्य अनेक प्रभावक कार्यक्रम आयोजित ।

२३. अग्रगण्य—मुनि अगरचंदजी (गादाणा)

सहयोगी—मुनि चौथमलजी (सरदार०) पन्नालालजी (चूरू)

चातुर्मास—छोटी खाटू, जि० नागौर, राज०

अगरचंदजी—$\frac{१}{१७}$, $\frac{३}{१}$

चौथमलजी—$\frac{१}{१७}$ $\frac{२}{१}$; पन्नालालजी—$\frac{१}{९}$

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{९०३}$, $\frac{२}{३१}$, $\frac{३}{१४}$, $\frac{४}{५}$, $\frac{५}{१}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{७}{२}$, $\frac{८}{३}$, $\frac{९}{१}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{११}{१}$

२४. अग्रगण्य—मुनि मगनमलजी 'प्रमोद' (गंगा०)

सहयोगी—मुनि फतहचंदजी 'पंकज' (गंगा०) मेतार्यजी (काछवली)

चातुर्मास—पचपदरा, जि०-बाड़मेर राज०

यात्रा—६८४ कि०मी०; क्षेत्र—३१

शीलव्रत—२ (श्री राणमल गाधी मेहता आसोतरा, श्री सुमेरमल छाजेड़) मंत्र दीक्षा—१२५, सम्यक्त्व दीक्षा—३००, प्रेक्षाध्यान शिविर-१ (पंचदिवसीय)

मुनि प्रमोदजी—$\frac{१}{२७}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$

पकजजी—$\frac{१}{२७}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$ ध्यान व जप—२ घं.

मेतार्यजी—$\frac{१}{२९}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$, $\frac{६}{१}$

भाई-बहिनों में—$\frac{१}{५७५०}$, $\frac{२}{२१७}$, $\frac{३}{१६३}$, $\frac{४}{५०}$, उपवास की बारी—३४, बेले-बेले तप—१, तेले-तेले तप—१, एकांतर—११०, आयंबिल—५००, दीवाली पर—$\frac{१}{५०}$, $\frac{२}{२०}$, $\frac{३}{३५}$, $\frac{४}{२}$

पर्युषण चरमोत्सव व दीपावली पर अखंड जाप

श्रीमती कंकु बहिन, धर्मपत्नी चम्पालालजी चोपड़ा व श्रीमती बिदामी बाई धर्मपत्नी भंवरलालजी चोपड़ा ने मासखमण किया ।

कार्यक्रम

- ० १६ स्कूलों मे मुनिश्री के प्रवचन से सैंकड़ो अणुव्रती व वर्गीय अणुव्रती बने ।
- ० सायरा हाईस्कूल, सादड़ी छात्रावास में अणुव्रत कार्यक्रम ।
- ० स्थान-स्थान पर हस्तकला प्रदर्शनी का आयोजन ।
- ० बालोतरा मे सिवाणची-मालाणी क्षेत्र का आचलिक युवक सम्मेलन तथा महावीर जयंति का कार्यक्रम ।

---

१. विस्तृत विवरण देखें—'महाप्रयाण' विभाग मे ।

- जसोल मे अक्षय तृतीया समारोह, जिसमे १० तपस्वियो ने वर्षीतप के पारणे किए।
- पचपदरा मे १५ अगस्त को स्कूल मे भव्य कार्यक्रम।
- सिवाणची-मालाणी क्षेत्र का वृहद् श्रावक सम्मेलन आयोजित, जिसमें महासभा के अध्यक्ष कन्हैयालालजी छाजेड, अभातेयुप के अध्यक्ष श्री पदमचंद पटावरी, श्री राणमल जीरावला, वावूजी शंकरलालजी, श्री सोहनराज कोठारी उपस्थित थे। उपस्थिति ७०० थी।
- ज्ञानशाला का व्यवस्थित सचालन।
- पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन।
- गोगुदा, आषाढा, टापरा व कानाना के विभिन्न सामाजिक, पारिवारिक व व्यक्तिगत मनमुटाव व विग्रह शमन मे मुनिश्री की उल्लेखनीय भूमिका रही।

२५. अग्रगण्य—मुनि गणेशमलजी (गंगा०)

सहयोगी—मुनि कन्हैयालालजी (छापर) राजकुमारजी (गंगा०)
चातुर्मास—गंगाशहर, जि० बीकानेर, राज०
यात्रा—२५५ कि० मी०
मंत्र-दीक्षा—१२५, सम्यक्त्व दीक्षा—१२५, प्रेक्षाध्यान शिविर—१
कन्हैयालालजी—$\frac{१}{२७}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{६}{१}$
राजकुमारजी—$\frac{१}{४५}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$, $\frac{४}{१}$

संतों मे नियमित स्वाध्याय का क्रम चला। आगम, सैद्धांतिक व संघीय साहित्य का वाचन चला।

भाई-बहिनो मे—$\frac{४}{१९}$, $\frac{५}{१३}$, $\frac{६}{५}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{२८}$, $\frac{९}{१०}$, $\frac{१०}{५}$, $\frac{११}{३}$, $\frac{१४}{२}$, $\frac{१५}{२}$, $\frac{१६}{२}$, $\frac{१७}{१}$, $\frac{५१}{१}$, उपवास की बारी—२७, एकातर—९७, वर्षीतप—१६

श्रीमती भीखीदेवी छाजेड़ ने ५१ दिन की तपस्या की।

पर्युषण पर्व पर सात दिन, चरमोत्सव पर एक दिन व दीपावली पर तीन दिन अखंड जाप चला।

कार्यक्रम

- बीकानेर-लालगढ़-पैलेस मे मुनिश्री का पदार्पण हुआ। एक रात्रि वही विराजे। महाराजा डा० करणीसिंहजी ने मुनिश्री का स्वागत करते हुए कहा—'आप अठै पधार्‍या, वडी किरपा कराई।' लगभग डेढ़ घंटे तक वार्तालाप हुआ। आचार्यश्री के समाचार सुनकर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होने कहा—'आचार्यश्री रीं म्हारै पर वोत किरपा है।' अनूप पुस्तकालय मे हस्तलिखित प्राचीन ग्रंथों का मुनिश्री ने अवलोकन किया।

- ० वीकानेर में महावीर मंडल, दिगम्बर समाज आदि संस्थाओ द्वारा मुनि गणेशमलजी के सान्निध्य में महावीर जयंति का विराट् आयोजन हुआ। तपागच्छ व खरतरगच्छ की साध्वियों ने भी भाग लिया। श्री पी० पी० सी० भंडारी पुलिस अधीक्षक ने अध्यक्षता की।
- ० वीकानेर से समागत मंदिरमार्गी गणी गुणरत्नविजयजी महाराज तथा मुनिजी का संयुक्त प्रवचन 'बंधन मुक्ति' विषय पर हुआ। मध्याह्न मे लगभग १ घण्टे तक विभिन्न विषयो पर वार्तालाप चला। मुनिश्री ने उनको आचार्यश्री तथा युवाचार्यश्री के साहित्य का परिचय दिया व दिखाया। देखकर गणीजी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।
- ० अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के निर्धारित सप्त दिवसीय कार्यक्रम मुनि श्री के सान्निध्य मे संपन्न हुए। विश्व हिन्दू परिषद् के महामंत्री वैद्य महावीरप्रसादजी, ग्रंथी विसनसिंह, फादर वेजामिन, डा० डी० सी० जैन, व्याख्याता डूगर कालेज, श्री अमरनाथ काश्यप, व्याख्याता रामपुरिया कॉलेज, श्री किरणचंद नाहटा, व्याख्याता डूगर कालेज, वैद्य ठाकुरप्रसाद शर्मा, आयुर्वेदाचार्य यादवेन्द्र शर्मा, शुभु पटवा पत्रकार, श्री के०जी० अग्रवाल, अतिरिक्त जिलाधीश (वीकानेर) आदि वक्ताओ ने निर्धारित विषयों पर विचार व्यक्त किए।
- ० मुनिश्री की सन्निधि मे तेरापथ युवक परिषद् एवं कला दर्शन संस्थान के संयुक्त तत्वावधान मे ४ अक्टूबर को योग पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। परिचर्चा मे प्रो० दुलीचंद शर्मा संस्कृत विभाग श्री डूगर कालेज, डा० दिवाकर शर्मा, मुनि कन्हैयालालजी, मुनि पूनमचंदजी, मुमुक्षु संतोष जैन, डी० सी० जैन, अंत मे मुनि गणेशमल जी ने अपने विचार व्यक्त किए। संयोजन डा० प्रकाशवती शर्मा, प्रो० दर्शन-शास्त्र एव व्यवस्थापिका कला दर्शन संस्थान ने की।

समाचार प्रकाशन—नवभारत टाइम्स, दैनिक नवज्योति, राष्ट्रदूत, जैन समाज, जलते दीप, पंजाव केसरी, युग पक्ष, अधिकार, राजस्थान पत्रिका आदि।

प्रकाशित साहित्य :—ले० मुनि कन्हैयालालजी

- ० स्वप्न और सत्य — द्वितीय सस्करण
- ० प्रकृति और प्रेरणा — तृतीय ,,
- ० गुणसागर — द्वितीय ,,
- ० महावीर चालीसा व भिक्षु चालीसा सतरवां सस्करण
- ० वाल कहानियां (एक से नौ भाग संयुक्त)

२६. अग्रगण्य—मुनि सोहनलालजी (श्रीडूंगरगढ़)

सहयोगी—मुनि संजयकुमारजी प्रकाशकुमारजी (दिवेर)

चातुर्मास—श्रीडूगरगढ़, जि० चूरू, राज०

यात्रा—२२५ कि० मी०; वर्गीय अणुव्रती—१०००

सोहनलालजी—$\frac{१}{२}$, संजयकुमारजी $\frac{१}{२७}$, प्रकाशकुमारजी $\frac{१}{५}$

० संतो मे सामूहिक वाचन—उत्तराध्ययन, ठाणं आदि।

० तीन वार शिविर का आयोजन, जिसमे २०० भाई-बहिनों ने भाग लिया। श्रीडूगरगढ मे कई विद्यालयो मे जीवन-विज्ञान कार्यक्रम।

२७. अग्रगण्य—मुनि छत्रमलजी (चूरू)

सहयोगी—मुनि नगराजजी (चूरू) रिद्धकरणजी,
मोहनलालजी (सुजान०)

चातुर्मास—तारानगर, जि० चूरू, राज०

यात्रा—६० किलोमीटर

छत्रमलजी $\frac{१}{१०}$, नगराजजी $\frac{१}{१५}$, $\frac{३}{१}$,

रिद्धकरणजी $\frac{३}{१}$, मोहनलालजी $\frac{१}{३८}$, $\frac{२}{१}$

सामूहिक वाचन—दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि।

विद्यार्थी प्रशिक्षण शिविर का तीन वार आयोजन।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{३२८}$ $\frac{२}{३२}$ $\frac{३}{८}$ $\frac{४}{८}$ $\frac{५}{१}$ $\frac{७}{१}$ $\frac{८}{२}$ $\frac{९}{१}$

एकातर—१७, वर्षीतप १, जैनेतर लोगो मे भी तपस्याए हुई।

पर्युषण पर्व मे अखंड जाप

मुनिश्री की विशेष प्रेरणा से तारानगर क्षेत्र के भाई-बहिनों ने आचार्यवर के चरणो में आगामी मर्यादा महोत्सव की भावपूर्ण प्रार्थना की और प्रबल दावेदार बना।

२८. अग्रगण्य—मुनि दुलीचंदजी 'दिनकर' (सादुल०)

सहयोगी—मुनि रिद्धकरणजी (श्रीडूगर०) पानमलजी 'प्रदीप' (गगा०)

चातुर्मास—सुजानगढ, जि० चूरू, राज०

यात्रा—१०४ कि० मी०

प्रतिक्रमण—१५, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—१ (पचदिवसीय, शिविरार्थी-५५)

दिनकरजी—$\frac{१}{७०}$, स्वा०-५०० गाथा प्रति०

रिद्धकरजी—$\frac{१}{७४}$, $\frac{२}{२}$, स्वा०—८०० गाथा प्रति०, जप—१ घंटा

पानमलजी—$\frac{१}{४०}$, $\frac{३}{१}$, स्वा०—५०० गाथा प्रति०, मौन—१ घंटा, वाचन—६५४ पृ० (अगसुत्ताणि भाग-१)

सामूहिक वाचन-नव पदार्थ, झीणी चरचा, प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध आदि।

तपस्या-भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{१७००}$, $\frac{२}{८२}$, $\frac{३}{२५}$, $\frac{४}{१६}$, $\frac{५}{१३}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{७}{३}$, $\frac{८}{११}$,

$\frac{९}{३}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१२}{१}$, एकांतर—५, वेले-वेले तप—२, वर्षीतप—१

२९. अग्रगण्य—मुनि पूनमचंदजी (गंगा०)

सहयोगी—मुनि देवीलालजी (सूंकार), कमलकुमारजी (गंगा.)

चातुर्मास—वीकानेर, राज०

यात्रा—१३५० कि० मी०; क्षेत्र—४५

श्रमणोपासक दीक्षा २१, सम्यक्त्व दीक्षा—६०, जैनधर्म दीक्षा-२०; प्रतिक्रमण २; पच्चीस वोल-२५; तत्त्वज्ञान शिविर, त्रिदिवसीय, शिविरार्थी—१८

पूनमचंदजी—$\frac{१}{९}$; देवीलालजी—$\frac{१}{१२}$

कमलकुमारजी—$\frac{३}{२}$, चैत्र मास से एकांतर; वाचन—५०० पृ०

सामूहिक वाचन—सूयगडो तथा अन्य साहित्य

भाई-वहिनो में—सैंकडो $\frac{१}{}$ $\frac{२}{७०}$, $\frac{३}{३५}$, $\frac{४}{१६}$, $\frac{५}{१३}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{९}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{११}{२}$, $\frac{१५}{१}$ एकांतर—२७, वर्षीतप-४, मासखमण-१ (चम्पावाई पुगलिया) उपवास की वारी-८

कार्यक्रम

- गोमती चौराहे पर श्रावक सम्मेलन।
- राणावास छात्रावास, स्कूल व कालेज में मुनिश्री का भाषण।
- नोखामंडी में महावीर जयन्ति पर मजिस्ट्रेट श्री विश्नोई मुख्य अतिथि।
- वीकानेर मे एक कालेज, सात स्कूलो तथा सुधारगृह मे कार्यक्रम।
- वीकानेर में मैत्री दिवस का आयोजन; मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री मोहम्मद उस्मान आरिफ।
- अणुव्रत समिति के एक कार्यक्रम में राज० विधानसभा के मुख्य सचेतक प्रो० वी० डी० कल्ला व वीकानेर के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, श्री एम० डी० वैष्णव की उपस्थिति।
- अणुव्रत उद्‌वोधन सप्ताह में वीकानेर के अतिरिक्त जिलाधीश श्री के० जी० अग्रवाल, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रधानाध्यापिका श्रीमती गंगादेवी।
- आचार्य तुलसी जन्म दिवस समारोह मे वीकानेर संभाग के पुलिस उपमहानिरीक्षक श्री नमोनारायण मीणा ने भाग लिया। वीकानेर सेन्ट्रल जेल मे कैदियो के वीच प्रवचन, जेल अधीक्षक जे० एन० शर्मा उस समय उपस्थित थे।
- दैनिक युगपक्ष में समाचार व लेखो का प्रकाशन।

३०. अग्रगण्य—मुनि सोहनलालजी (लूणकरणसर)

सहयोगी—मुनि जोधराजजी (फतेहपुर) वर्धमानजी (वाव)

चातुर्मास—लूणकरणसर, जि० वीकानेर, राज०

भाई-वहिनों मे—१/१५१०, २/३२, ३/२५, ४/६, ५/३, ६/५, ७/३, ८/१, १५/२, १७/१, एकातर—११, पर्युषण पर्व मे अखड जाप

ज्ञानशाला का निरन्तर संचालन।

३१. अग्रगण्य—मुनि नवरत्नमलजी (मोमासर)

सहयोगी—मुनि जम्बूकुमारजी (सरदार०)

चातुर्मास—सरदारशहर, जि० चूरू, राज०

संतो मे ३००० पृष्ठो का वाचन हुआ, जिनमे उत्तराध्ययन, झीणी चर्चा, शासन समुद्र आदि।

मुनिश्री के इस चातुर्मास मे तीन प्रभावक अनशन हुए—

१. श्रीमती धापूदेवी नाहटा

स्वर्गीय मानमलजी नाहटा की धर्मपत्नी धापूदेवी ६६ वर्ष की थी। उन्होने ६ जुलाई को तपस्या प्रारंभ की। तपस्या के चौथे दिन १२ जुलाई को साय चार वजे उनकी तीव्र भावना को देखते हुए मुनिश्री ने आजीवन तिविहार सथारा करा दिया। मुनिश्री एवं वहा चातुर्मासरत साध्वी कनकश्री जी आदि साध्वियों का पूरा सहयोग मिला। ४२ वें दिन १९ अगस्त को प्रातः ७ वजकर ५ मिनट पर संथारा सम्पन्न हो गया।

२. श्रीमती भंवरीदेवी बोरड़

सितत्तरवर्षीया भवरीदेवी स्व० झूमरमलजी वोरड की धर्मपत्नी थी। ११ जुलाई को तपस्या का प्रारभ किया। १९ जुलाई को मुनिश्री ने संथारा करवाया। अनशन मे परिणाम ऊचे रहे। ११ सितम्वर को प्रातः ७-१५ वजे समाधिपूर्वक सथारा सपन्न हो गया। ८ दिन सलेखना व ५५ दिन अनशन के थे। अनशनकाल मे आचार्यवर का संदेश भी मिला।

३ मुनि घेवरचंदजी

श्री घेवरचदजी सुराणा ने अनशन किया। अनशनकाल मे मुनिश्री के करकमलो से संयमी वने। मुनि घेवरचदजी का जीवन व अनशनकाल वडा प्रभावी रहा।[1]

सरदारशहर मे उल्लेखनीय तपस्या हुई।[2]

---

१. मुनि घेवरचदजी का विस्तृत विवरण देखे 'महाप्रयाण' विभाग मे।

२. सरदारशहर की तपस्या व अन्य विवरण देखे—साध्वी कनकश्रीजी के कालम मे।

३२. अग्रगण्य—मुनि मूलचंदजी 'मराल' (गंगा०)

सहयोगी—मुनि चौथमलजी (छापर), अभिनंदनकुमारजी (गंगा०)
चातुर्मास—नोखामंडी, जि० बीकानेर, राज०
यात्रा—८५० कि० मी०; क्षेत्र—१२
मत्र दीक्षा—४०, गुरुधारणा-२०, व्रत दीक्षा-२
मूलचदजी—$\frac{१}{२१}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$, कंठस्थ—२०० गाथा, जप-३० मिनट
सामूहिक वाचन—ठाणं सूत्र तथा सघीय साहित्य
भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{१३००}$, $\frac{२}{५४}$, $\frac{२}{४१}$, $\frac{४}{१८}$, $\frac{५}{१५}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{७}{२}$, $\frac{८}{२०}$, $\frac{९}{३}$, $\frac{११}{३}$, $\frac{१२}{१}$, $\frac{१५}{३}$, वर्षीतप—३

कार्यक्रम

- ० छीला, श्यामसर, तीतरी, जोधासी आदि गांवो की स्कूलो मे मुनिश्री के भाषण ।
- ० नोखामडी के गट्टाणी उच्च माध्यमिक विद्यालय में मुनिश्री का प्रवचन
- ० १२ अप्रैल को नागौर मे महावीर जयन्ति का आयोजन हुआ, जिसमे मुनिश्री के अलावा मूर्तिपूजक साध्वी शुभकराजी ने भी भाग लिया । जैन कन्या पाठशाला मे आयोजित इस समारोह में जैनो के सभी सम्प्रदायो के लोग उपस्थित थे ।
- ० समाचार प्रकाशन-दैनिक युगपक्ष (बीकानेर), मजदूर ललकार (नागौर) आदि ।

३३. अग्रगण्य—मुनि मोहनलालजी (सादुल०)

सहयोगी—मुनि सोहनलालजी (सरदार०) जयचंदलालजी (लाडनू), बादरमलजी (पचपदरा), मधुकुमारजी; कुलदीपकुमारजी (सरदार०)
चातुर्मास—छापर (सेवाकेन्द्र) जि० चूरू, राज०
यात्रा—२०६ कि० मी०; क्षेत्र—६
सोहनलालजी—$\frac{१}{२२}$, मधुकुमारजी—$\frac{१}{८}$
सतो मे आगम, सघीय व अन्य साहित्य का ६००० पृ० का वाचन ।
मोहनलालजी—स्वा०-३०० गाथा प्रति; उवसग्गहर स्तोत्र का विशेष अनुष्ठान ।
भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{१५००}$, $\frac{२}{२५}$, $\frac{३}{१०}$, $\frac{४}{८}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{६}{३}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{११}$, $\frac{९}{१}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{३४}{१}$, उपवास की बारी—४, एकांतर—६
श्रीमती किरणदेवी नाहटा ने ३४ दिन की तपस्या की ।
श्रीमती कल्लूदेवी ने चार महीने आचार्यवर की उपासना की ।
महावीर निर्वाणोत्सव पर 'महावीर' का सवा करोड़ का जाप हुआ ।

कार्यक्रम

- ० २ अगस्त को मुनिश्री की सन्निधि मे जैन विद्या परीक्षा प्रमाणपत्र व पारितोषिक वितरण; विशेष अतिथि पेडीवाल हाईस्कूल के प्रधानाध्यापक सोहनलालजी ।
- ० तेरापथ महिला मडल के आर्थिक सहयोग व तेयुप के तत्वावधान मे नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन, जिसमे सुजानगढ़, श्रीडूगरगढ़ और रतनगढ के नेत्र विशेषज्ञ सम्मिलित हुए। शिविर मे ६० ऑपरेशन हुए । समापन समारोह मे मुनिश्री का वक्तव्य हुआ ।
- ० तेयुप छापर सामाजिक सेवाओ मे कस्वे की अग्रणी सस्था है । उसके पास ऑक्सीजन सिलेन्डर, पोलियो आदि के टीके नि शुल्क उपलब्ध है ।

३४. अग्रगण्य—मुनि संगीतकुमारजी (टमकोर)

सहयोगी—मुनि प्रसन्नकुमारजी (दिवेर)

चातुर्मास—नरवाना, जि. जीद, हरियाणा

यात्रा—२६० कि० मि०; क्षेत्र-८

जैन धर्म दीक्षा—१० घर

सगीतकुमारजी—$\frac{१}{१७}$, $\frac{२}{२}$, एकातर-२ माह; वाचन-सूयगडो, ठाण, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन

प्रसन्नकुमारजी—$\frac{१}{२५}$, निरंतर एकासन प्रयोग; वाचन—५०० पृ०

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{८००}$ $\frac{२}{९१}$ $\frac{३}{८}$ $\frac{४}{९}$ $\frac{५}{२}$ $\frac{६}{३}$, उपवास की वारी-३

पर्युषण पर्व मे अखड जाप । कुमारी वंदना ने ३१ दिन का आयविल तप किया ।

चार स्कूलो व कालेज मे अणुव्रत कार्यक्रम ।

मुनिद्वय की विशेष प्रेरणा से नरवाना क्षेत्र अपेक्षाकृत नया होते हुए भी आगामी मर्यादा महोत्सव का प्रवल दावेदार वना । वहा के आवाल वृद्ध सभी की भावपूर्ण प्रार्थना को सुनकर उनके उत्साह व आस्था की सराहना की गई ।

साध्वियों का विवरण

३५. अग्रगण्या—साध्वी जतनकुमारीजी 'कनिष्ठा' (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी अमितप्रभाजी (बीदासर) कंचनबालाजी,
ध्रुवरेखाजी (सरदारशहर), नयश्रीजी (चाड़वास)

चातुर्मास—नौगाव, असम

यात्रा—१३०० कि. मी., क्षेत्र २८

मन्त्रदीक्षा—३५०, सम्यक्त्व दीक्षा-५१, व्रत दीक्षा-५, जैनधर्म दीक्षा-७, अणुव्रती-२१, वर्गीय अणुव्रती-१५००, भक्तामर-५, प्रतिक्रमण-२१, व्यसनमुक्त-१०००,

शीलव्रत—३ (श्री जयचन्दलाल कुहाड, श्री भंवरलाल घोडावत, श्री हुलासमल बोरड)

जतनकुमारीजी—१/२३ ३/९, अमितप्रभाजी-१/२३ ३/१

कंचनबालाजी—१/६ ३/१ ४/१ ध्रुवरेखाजी १/२८ ३/१

नयश्रीजी—१/२५ ३/१, 'ओम् भिक्षु' का सवा लाख जाप

साध्वियो मे कुल वाचन—१५००० पृ०, साहित्य वाचन मे सुयगडो, दसवेआलिय, झीणी चरचा आदि प्रमुख है, ३० मिनट सामूहिक प्रेक्षाध्यान चला।

भाई-बहिनो मे १/५००० २/१७५ ३/५१ ४/२१ ५/३१ ६/७ ७/७ ८/६० ९/२१ ११/५ १२/१ १३/१ १५/८ १७/२ २१/२ उपवास की बारी-१३, एकान्तर-२१, सामूहिक आयंबिल १०१, दीवाली पर तेले-११, चौदहवर्षीया बालिका रीता ने १७, नववर्षीया बालिका कविता ने ८ की तपस्या की। नवकार मन्त्र व ओम् भिक्षु का जप तीन महिने तक प्रतिदिन एक परिवार मे १३ घन्टे तक अखण्ड रूप से चला।

प्रतिदिन सामायिक करने व एक घण्टा स्वाध्याय करने का क्रमश. ३०० व १०१ व्यक्तियो ने संकल्प लिया।

नौगांव व जोरहाट में प्रतिदिन 'प्रेक्षाध्यान कक्षा' चली।

तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर नौगांव, ढीग बाजार मे आयोजित, जिसमे क्रमश: ६१ व ३० बच्चो ने भाग लिया। तिनसुकिया मे तीन दिनो मे प्रेक्षा-ध्यान शिविर मे २१ जनो ने भाग लिया।

कार्यक्रम

० गौहाटी—७ दिसम्बर ८६ को विधानसभा भवन कल्चरल क्लब मे

साध्वीश्री के सान्निध्य मे 'अवधान' कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयोजक थे श्री जोयनाथ शर्मा, मुख्य सचेतक, असम गण परिषद् (ए. जी. पी.) एवं डॉ० कमला कलिता, चेयरमैन, हाऊस कमेटी असम। अवधानकार थे—साध्वी अमितप्रभाजी। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पुलकेश वरुआ, स्पीकर, असम विधानसभा ने की। मुख्य अतिथि थे श्री भरतचन्द्र नारहा, वनमन्त्री असम।

- ३ जनवरी को साध्वीश्री के सान्निध्य में नौगांव मे साध्वी अमितप्रभाजी द्वारा अवधान प्रयोग प्रस्तुत। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री यू. एन. भूयन जिलाधीश, नौगाव एव मुख्य अतिथि सासद श्री मोहिराम सेखिया। डिब्रुगढ में भी अवधान हुए।
- ८ फरवरी को १२३ वां मर्यादा महोत्सव समारोह साध्वीश्री के सान्निध्य मे अणुव्रत समिति नौगांव के तत्त्वावधान मे नौगांव मारवाडी पट्टी मे आयोजित किया गया। असम व मेघालय के राज्यपाल श्री भीष्म नारायणसिंह मुख्य अतिथि एवं श्री लखेश्वर हजारिका अध्यक्ष व श्री सतीशचन्द्र काकोटीदेव, असम ट्रिब्यून के विशेष संवाददाता, मुख्य वक्ता के रूप मे उपस्थित थे।
- महावीर जयन्ति का कार्यक्रम १२ अप्रैल को तिनसुकिया मे सम्पूर्ण जैन समाज के लोगो ने एक साथ साध्वीश्री के सान्निध्य मे उत्साह-पूर्वक मनाई।
- १७ दिसम्बर को रोहा कॉलेज व वेसिक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज में साध्वीश्री का विशेष प्रवचन हुआ।
- १० अक्टूबर को नौगांव मे असम का प्रतिनिधि श्रावक सम्मेलन साध्वीश्री के सान्निध्य मे आयोजित किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय संगठन एवं संस्कार जागरण के बारे मे भी विचार-विमर्श किया गया।

समाचार प्रकाशन

(१) दि असम ट्रिब्युन (२) दैनिक विश्वमित्र (३) दि सेन्टिनल (४) जागृत (५) दैनिक असम (६) अकेला

विशिष्ट व्यक्तियों से संपर्क

(१) विनोदकुमार वर्मन—प्रिंसिपल—गौहाटी कालेज
(२) विजयकुमार वरवा— " " "
(३) रोहिणीकुमार वरकाकती—" " "
(४) जोयनाथ शर्मा—मुख्य सचेतक (ए. जी. पी.)
(५) एम. के. शर्मा—अण्डर सेक्रेटरी विधानसभा (असम)

(६) सिराजुद्दीन अहमद—सुपरिटेन्डेट, असम विधानसभा
(७) भृगुकुमार फूकन—गृहमंत्री, असम विधानसभा
(८) डा० कमला कलिता—चेयरमैन हाऊस कमेटी असम
(९) श्री भारतचन्द्र नारहा—वनमन्त्री, असम
(१०) श्री यू. एन. भूयन—डी. सी., नौगाव-असम
(११) श्री मोहिराम सेखिया—सांसद
(१२) श्री पदमकुमार नाथ—संवाददाता 'प्रहरी'
(१३) महामहिम श्री भीष्मनारायणसिह—राज्यपाल, असम, मेघालय, व अरूणाचल।
(१४) श्री सतीशचन्द्र काकोटीदेव—संवाददाता, असम ट्रिब्युन
(१५) श्री निरंजन सारडा—प्रसिद्ध गायक
(१६) पी. एन. एस. फूकन—पुलिस इन्सपेक्टर (पाणितला)
(१७) अशोक जैन—एन. सी. सी. कर्नल (डिब्रुगढ)
(१८) रघुनाथसिह—एन. सी. सी. सहायक कर्नल
(१९) लालचन्द सिंघी—डी. सी. शिवसागर
(२०) पुष्पकान्त बोहरा—मजिस्ट्रेट, जोरहाट
(२१) श्री गुनोहदास बोरा—प्रिंसिपल, रोहा कालेज
(२२) श्री हरेश्वर गोस्वामी—प्रिंसिपल B. T. कालेज
(२३) श्री प्रदीप सेखिया—प्रिंसिपल, धीग कालेज
(२४) शशधर बरुआ—सरकल इन्सपेक्टर, मड़ीगांव
(२५) रंजनकुमार घोष—मैनेजर युनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया
(२६) श्याम रतनदास—डिप्टी मैनेजर " " " "
(२७) सारादीन शर्मा—आर. डी. ओ " " " "
(२८) विद्याकान्त बरुआ—प्रिंसिपल, प्राग्ज्योतिप कॉलेज

विशेष सन्देश

१५ नवम्बर ८६ को लाडनू से अपने सन्देश मे आचार्यवर ने कहा—"साध्वी जतनकुमारीजी अभी गौहाटी मे है…सब क्षेत्रो को परसते हुए, काम करते हुए, क्षेत्रों की संभाल करते हुए विचरण करे। पिछले साल काफी साहस का परिचय दिया। यद्यपि अपेक्षा तो थी गौहाटी पहुंचने की, पर हमको सभव नही लगता था। असभव लगने वाला काम संभव करके दिखलाया। यह हमारे संघ की साध्वियो की निष्ठा का उदाहरण है।'

नौगाव मे साध्वीश्री की सन्निधि में मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ। उसके लिए आचार्यश्री, युवाचार्यश्री एव साध्वी प्रमुखाश्री ने सन्देश प्रदान किए।

साध्वीश्री की सन्निधि में आयोजित होने वाले अवधान व मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम गौहाटी दूरदर्शन केन्द्र से प्रसारित किया गया।

अब इज्जत आपके हाथ में

४ फरवरी १९८७ की बरसाती रात। बीच-बीच मे तूफानी हवा, कौंधती हुई विद्युत् और दूरदर्शन पर पुनः पुनः खराब मौसम की सूचना। आनेवाले तूफान और बरसात की आशंकाएं। दूसरे दिन मर्यादा महोत्सव का विशाल आयोजन। कार्यकर्त्ता बेचैन। पण्डाल व्यवस्था मे गड़बड़। चारों तरफ पानी नजर आ रहा था। सैकड़ों व्यक्ति बाहर से आने वाले थे। असम और मेघालय के राज्यपाल श्री भीष्मनारायणसिंह स्वयं विशेष रूप से उपस्थित होने वाले थे।

लगभग एक सप्ताह से कार्यरत नौगांव के लोग इस प्राकृतिक समस्या के समक्ष अपने आपको अक्षम महसूस कर रहे थे। उस अंधियारी बरसाती रजनी मे कई सुरक्षित स्थानो का अवलोकन भी किया, पर जमा नही। उनके उभरते उत्साह को कुछ क्षणों के लिये प्रकृति ने बिल्कुल ठंडा कर दिया। ठीक इसी समय किसी अनुभवी के श्रद्धामय बोल फूट पडे। कार्यक्रम की सफलता की चिंता करना हमारा काम नही है, न ही इस जिम्मेदारी सम्भालने का अहं हमे रखना है। हमे तो सफलता का पूरा दायित्व पूज्य गुरुदेव पर छोड़ देना चाहिये। तत्काल आचार्य प्रवर का एक फोटो उस पण्डाल मे लगा दिया। इन शब्दो के साथ—'प्रभो। हम निश्चिन्त है। कार्यक्रम कैसे सफल हो, यह आपके जिम्मे है। अब कल की इज्जत आपके सबल हाथो में है।' सभी कार्यकर्त्ता जय भिक्षु, जय तुलसी के स्मरण के साथ निद्राधीन हो गये। सूर्योदय के पहले ही सड़कें सूखी थी, बादल छंट गये थे, धूप खिल गई, सबने सुख की सास ली एवं पुनः प्रभातकाल में दुगुने उत्साह से कार्य की शुरुआत की और सही समय पर सब कुछ व्यवस्थित रूप से सम्पन्न हो गया। किसी को अहसास नही हो रहा था कि रात का मौसम इतना खराब था। सभी श्रद्धानत थे अपने आराध्य के प्रति और उनसे प्राप्त ऊर्जा के चमत्कार के प्रति, जिसने प्रकृति की विकृति को दुरुस्त कर उसे और ज्यादा सुरम्य बना दिया।

३९. अग्रगण्या—साध्वी पिस्तांजी (ऊमरा)

सहयोगिनी—साध्वी प्रकाशवतीजी (सिसाय), दीपमालाजी (श्रीगंगा नगर) प्रेक्षाश्रीजी (बेलगाव)

चातुर्मास—तुपरा, जि बलांगीर, उडीसा

यात्रा—३०७ कि. मी.; क्षेत्र-१०

मंत्र दीक्षा—३०, सम्यक्त्व दीक्षा—७०, जैन धर्म दीक्षा—५२, शीलव्रत—६ (खुशीराम व भगवानदास जैन, टिटिलागढ; पारसदास जैन,

सिरुल; नसीबचद जैन, लुतरवन्द; हनुमानमल जैन, केसिगा; प्रहलादसिंह जैन, सिधिकेला)।

पिस्तांजी—$\frac{१}{३७}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{२}$; प्रकाशवतीजी—$\frac{१}{४}$ आयं.—३

दीपमालाजी—$\frac{१}{३५}$, $\frac{३}{१}$, प्रेक्षाश्रीजी—$\frac{१}{१६}$ $\frac{३}{१}$ आयं. तेला-१, आयं-३

सामूहिक वाचन- निशीथ, वृहत्कल्प, आयारो आदि।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{५२५}$, $\frac{२}{९३}$, $\frac{३}{७}$, $\frac{४}{१}$, $\frac{५}{२}$, $\frac{६}{३}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{४}$, $\frac{९}{१}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१७}{१}$
उपवास की वारी—३, एकातर-७, आयं तेला-६

कार्यक्रम

- केसिगा मे मर्यादा महोत्सव, उत्कला मे होली चौमासा, भवानी पटना मे महावीर जयन्ति, बोरडा मे अक्षय तृतीया के कार्यक्रम।
- तुपरा मे कई स्कूलो में अणुव्रत कार्यक्रम।
- सिधिकेला मे पंचदिवसीय वाल प्रशिक्षण शिविर।
- तुषरा मे पांच दिनो का प्रेक्षाध्यान शिविर, शिविरार्थी-२५
- तुषरा मे तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साध्वियों का प्रथम् चातुर्मास, अतः क्षेत्र मे अपूर्व उत्साह।

साध्वी प्रकाशवतीजी की एक पुस्तक 'आलोक पुज' (भजनो का संग्रह) राजसुमन्द उडीसा से प्रकाशित हुई।

दैनिक समाज (कटक), नवभारत (रायपुर), ड़िविड़िवि (भवानी पटना) आदि पत्रो मे यदा-कदा समाचार व लेख प्रकाशित।

५ अगस्त को प्रदत्त अपने संदेश मे आचार्यवर ने कहा—'साध्वी पिस्ताजी और उनके सहवर्ती साध्वियों ने दृढ़ मनोवल का परिचय दिया है। उडीसा कैसे पहुच गई, आश्चर्य की बात है। यह श्रद्धा का ही वल था, इसलिए सुखे समाधे उडीसा पहुंच गई। अवस्था होने के वाद भी वहां मनोवल ऊचा रखा। गाव-गांव मे काम किया है। उड़ीसा में अच्छा काम हो रहा है। उड़ीसा के लोगो को चाहिए, ऐसी साध्वी का योग मिला है, उसका पूर्ण लाभ उठाए।'

युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाश्री के भी मूल्यवान् सन्देश मिले।

३७. अग्रगण्या—साध्वी रतनश्रीजी (श्रीडूंगर०)

सहयोगिनी—साध्वी सुव्रतांजी, कुलवालाजी, सुमनप्रभाजी (श्रीडूंगर०) मुक्तिश्रीजी (फतेगढ)

चातुर्मास—कानपुर, उत्तरप्रदेश

यात्रा—१४०० कि० मी०; क्षेत्र १५

सम्यक्त्व दीक्षा—३०, अणुव्रती-१५०

साध्वियो मे सामूहिक वाचन—ठाण, समवाओ, दसवेआलियं, झीणी-

चरचा, जैन सिद्धात दीपिका आदि ।

भाई-वहिनो मे $\frac{१}{८०७}$, $\frac{२}{२६}$, $\frac{३}{७}$, $\frac{५}{९}$, $\frac{८}{२८}$, $\frac{१५}{९}$, वारी के उपवास-३, वर्षीतप—१, ५१ व्यक्तियो ने ३० मि० व १ घन्टा स्वाध्याय करने का संकल्प किया ।

कार्यक्रम

- अलीगढ मे साध्वीश्री की सन्निधि, प्राचार्य महेन्द्रकुमार प्रचंडिया की अध्यक्षता व आदित्येन्द्र प्रचडिया के सयोजन मे काव्य सध्या का आयोजन।
- हाथरम मे अक्षय तृतीया समारोह ।
- सिकन्दराराऊ मे प्रेक्षाध्यान सगोष्ठी ।
- कानपुर मे श्रावक मम्मेलन का आयोजन, इलाहावाद, वनारस, राय-वरेली, सीतापुर, ओवरा आदि अनेक नगरो के श्रावको की उपस्थिति ।
- समाचार प्रकाशन—दैनिक जागरण, आज, विश्वमित्र, लखनऊ मेल, दैनिक गणेश आदि ।

हथगोले का भारी विस्फोट

साध्वीश्री अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ उत्तरप्रदेश की यात्रा पर थी । अलीगढ, हाथरस एव सिकन्दराराऊ आदि क्षेत्रो का स्पर्श करती हुई २९ मई को 'एटा' शहर पहुंची । सेवा मे कानपुर वाले भाई-वहन थे । जी. टी. रोड पर स्थित दिगम्वर जैन धर्मशाला मे साध्वियो का प्रवास हुआ। धर्मशाला विशाल थी । साध्विया दूसरी मजिल के कमरे मे सो रही थी ।

उस दिन गर्मी अधिक होने के कारण रात के ११ वजे तक किसी को नीद नही आई। इतने मे एक जोर का धमाका हुआ । धमाके की तीव्र आवाज से पूरी धर्मशाला प्रकपित हो उठी । अन्दर मे सोने वालो को लगा कि धर्मशाला उलट रही है, साथ-साथ काच के टुकडो की वरसात हो रही है । तत्क्षण पाचो साध्वियां आमन लगाकर शात मुद्रा मे वैठ गई और भिक्षु स्वामी का जाप करने लगी । धमाके की जोरदार आवाज सुनकर वाहर मडक पर सैकडो लोगो की भीड एकत्रित हो गई । सभी वाहर जाकर खोज करने लगे । पुलिस भी आ गई । जाच पडताल मे पता लगा—शहर के एक व्यक्ति की वही के एक घनाढ्य सेठ से दुश्मनी चल रही थी । वह कई दिनो से प्रतिशोध लेना चाह रहा था । आज जव सेठ रात के ११ वजे दुकान वन्द करके घर जा रहा था । उस वक्त विरोधी ने आस-पास के विजली के तार काटकर अन्धेरा कर दिया और हथगोला फेका । सेठ के पैर मे साधारण सी चोट आई, पर उस हथगोले की तीव्र आवाज ने आस-पास के मकानो को जवर्दस्त

प्रकंपित कर दिया एवं साथ-साथ मे सैकडो व्यक्तियो के मानस को भी ।

वाद मे लाइट आने पर देखा तो साध्वियो के कम्बलो पर हथगोले के वीसों-तीसों टुकड़े विखरे हुए थे । भिक्षु स्वामी के प्रताप से कोई दुर्घटना नही हुई । दूसरे दिन सब यात्री एव साध्विया अग्रिम मंजिल के लिये प्रस्थित हो गई ।

३८. अग्रगण्या—साध्वी किस्तुरांजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी शुभवतीजी (सिसाय), गुणमालाजी (उदयपुर) चद्रप्रभाजी, सम्यक्प्रभाजी (सरदार०)

चातुर्मास—वैंगलोर, कर्नाटक

यात्रा—८४२ कि० मी०; क्षेत्र-४८

मंत्रदीक्षा—२००, सम्यक्त्व दीक्षा-७५, प्रतिक्रमण-२७, चौवीसी-५, अणुव्रती—१९०

किस्तुराजी—१/९, स्वा० ३००, जप-३० मि०, वाचन-१००० पृ०

शुभवतीजी—१/१०, वाचन—२००० पृ०

गुणमालाजी—१/२५, स्वा०-५००; जप—१ घं०, वाचन-३००० पृ०

चन्द्रप्रभाजी—१/२५, स्वा०-१३००, वाचन १५०० पृ०

सम्यक्प्रभाजी—१/१४, स्वा०-५००, जप-३० मि०, वाचन-१५०० पृ०

भाई-वहिनो मे—१/१०,०००, २/४००, ३/३०५, ४/११, ५/१६, ६/६, ७/२, ८/४१, ९/१८, १०/२, ११/१०, १४/४, १८/२, ३०/३, वारी के उपवास-६५, एकांतर-१००, वेले-वेले तप-३

मासखमण करने वाली वहिने—श्रीमती पानीदेवी गन्ना, श्रीमती कान्तादेवी ढेवा, श्रीमती पुष्पादेवी पारख ।

श्री रूपचंद डोसी की धर्मपत्नी श्रीमती घीसीदेवी के करीब ४० घन्टा अनशन, उम्र-८२ वर्ष, ९ वर्ष से पक्षाघात से ग्रसित थी ।

कार्यक्रम

- प्रेक्षाध्यान शिविर—२, पचदिवसीय, शिविरार्थी क्रमशः ९० व ५५, निदेशक—श्री एस. के. जैन, श्री केवलचंद दरला ।
- तुलसी कॉमर्स कालेज व नेहरू गर्ल्स कालेज, शिमोगा व हायर सेकेण्डरी स्कूल, चन्नगिरि मे साध्वीश्री के प्रवचन ।
- धर्मस्थल मे धर्माधिकारी वीरेन्द्र हेगड़े की अध्यक्षता में मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम ।
- मैसूर मे स्थानकवासी साध्वी नीलमवाई स्वामी के साथ महावीर जयन्ति का कार्यक्रम ।
- मंडिया-कर्नाटक में अक्षय तृतीया एवं साध्वी गोराजी का मिलन समारोह, उपस्थिति लगभग ११००।

- वर्षीतप करने वाली बहिनें—(१) श्रीमती प्यारीदेवी पारसमलजी गादिया (२) श्रीमती पिस्तांदेवी मदनलालजी सकलेचा (३) श्रीमती विदामदेवी घीसूलालजी नाहर (तरीकेरे) (४) श्रीमती रूपचंदजी भंसाली—हासन
- ज्ञानशाला का विधिवत् संचालन ।
- चातुर्मास स्वागत समारोह—विशेष अतिथि नगरपालिका अध्यक्ष—श्री पुट्टेगौडा स्वामी
- पट्टोत्सव कार्यक्रम में मुख्य अतिथि कर्नाटक राज्य के लघु वचत योजना मंत्री श्री विराना ।
- आचार्यश्री का जन्म दिवस—अतिथि डॉ० शैषाद्री, म्युनिशिपल चेयरमैन ।
- आचार्यश्री का दीक्षा दिवस—विशेष अतिथि भूतपूर्व उपराष्ट्रपति वी. डी. जत्ती ।
- गाधी जयन्ति के अवसर पर बेंगलोर राजभवन में राज्यपाल श्री अशोकनाथ वनर्जी ने सर्व धर्म प्रार्थना का आयोजन किया । उसमें साध्वीश्री विशेप रूप से आमंत्रित थी । साध्वीश्री ने अर्हत् वदना का संगान किया । यह कार्यक्रम टी. वी. पर विशेष रूप से प्रसारित किया गया ।
- डॉ० एच. के. श्रीनिवास, अस्थि रोग विशेषज्ञ साध्वीश्री के विशेष सपर्क में आए ।
- ज्ञानशाला के छात्र-छात्राओ एवं अध्यापको का एक संघ दिल्ली गुरु दर्शनार्थ पहुंचा । बेंगलोर से लगभग ५०० व्यक्ति गुरुदेव के दर्शनार्थ दिल्ली पहुंचे ।

१६ सितम्बर को नई दिल्ली से आचार्यश्री ने एक संदेश प्रदान किया । उन्होने संदेश मे कहा—'साध्वी किस्तुरांजी अव हमारी पुरानी साध्वियों में हो गई है । संघ मे वडी सर्मपित साध्वी है । जहा जाती है, वहा बहुत अच्छा काम करती है । शरीर ठीक नही रहा, हाथ की वात नही है, फिर भी मनोवल ठीक रख रही है । अव बेंगलोर मे है, तो बेंगलोर की पूरी-पूरी संभाल रखे ।'

'बेंगलोर शहर मे शिक्षा की अपेक्षा है । बेंगलोर क्षेत्र मे हमारे हजारों वच्चे रहते हैं । ज्ञानशाला चल रही है, ठीक है । पर व्यवस्थित शिक्षा की व्यवस्था नही होगी, तो वच्चो मे सस्कार नही आ सकेगे । अतः एक नया चिंतन करने की अपेक्षा है । समाज को चिंतन करने की जरूरत है ।'

'..........सभी साध्वियां स्वस्थ रहे । अच्छा प्रचार कार्य करे । वहुत दूर बैठे है, पर दूर नही नजदीक ही है । वो हमारे हृदय मे है, इसलिए दूर बैठे

भी नजदीक ही है। स्वस्थ रहे, अच्छा काम करे। साध्वी किस्तुराजी अस्वस्थ क्यों हो गए, स्वस्थ रहना चाहिए था, अब भी जल्दी स्वस्थ हो और अभी बूढ़े नही बने। बहुत काम करना है।'

आचार्य प्रवर के प्रेरणादायी संदेश ने जादू का सा असर किया। आचार्य प्रवर की बलवती भावना, साध्वीश्री की प्रेरणा और निष्ठावान् श्रावकों के सद्प्रयास से विहार से पूर्व डेढ़ महीने के भीतर ही विद्यालय का प्रारूप तैयार कर लिया गया एवं सभी एकजूट होकर इसे शीघ्र क्रियान्वित करने का प्रयास कर रहे है। इसके लिए सर्वसम्मति से श्री सोहनराज कटारिया को संयोजक चुना गया।

३९. अग्रगण्या—साध्वी सोनांजी (डीडवाना)

सहयोगिनी—साध्वी मानकुमारीजी, धनकुमारीजी, शशिप्रभाजी (बीदासर), लब्धिश्रीजी (अहमदाबाद)

चातुर्मास—भुज-कच्छ, गुजरात

यात्रा—१४०० कि० मी०; क्षेत्र—४३

मंत्र दीक्षा—२१, सम्यक्त्व दीक्षा-४१, श्रमणोपासक दीक्षा—२१, अणुव्रती—३१, पच्चीस बोल—२, भक्तामर—१, तत्त्व चर्चा—३, कालू तत्त्व शतक—२, शीलव्रत—१ (मणीलाल भाई मेहता)

सोनांजी:—तपस्या-२/५१, २/१, जप-६ लाख, स्वा-१,३१,००० गा०; वाचन-७०० पृष्ठ

मानकुमारीजी:—तपस्या-१/४८, जप-६ लाख, स्वा०-७५,००० गा०, वाचन-१००० पृष्ठ

धनकुमारीजी.—तपस्या-१/३१, २/१, जप-१० मि०, स्वा०-५१,०००, वाचन-९०० पृष्ठ

शशिप्रभाजी:—तपस्या-१/४१, २/१, जप-३० मि०, स्वा०-१,१३,००० वाचन-१००० पृष्ठ

लब्धिश्रीजी:—तपस्या-१/२१, आयं-७, जप-१५ मि०, स्वा०-५१०००; वाचन-१५०० पृष्ठ

भाई-बहिनो में—१/९४०, २/४५, २/३९, ४/८, ५/१, ६/१, ७/१, ८/१, १८/१, वर्षीतप—२, उपवास की बारी—६, बेले व तेले की बारी—१-१, एकान्तर—६, कंठी तप—१, भुज मे तेरहवर्षीया कुमारी भावना ने अठाई की।

- त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर, शिविरार्थी—४३
- वाव मे अक्षय तृतीया समारोह, पांच व्यक्तियों द्वारा वर्षीतप प्रारंभ।
- 'कच्छमित्र' पत्र मे समाचार प्रकाशन।

४०. अग्रगण्या—साध्वी मीरांजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी पानकुमारीजी (सरदार०), लाघवश्रीजी (टमकोर), जगत्प्रभाजी (हिसार), सूरजप्रभाजी (टमकोर)

चातुर्मास—वाव, जि० बनासकांठा, गुजरात

साध्वियों मे तपस्या—$\frac{१}{७७}$, $\frac{३}{१}$,

भाई-बहिनों में—$\frac{१}{१०००}$, $\frac{२}{३०}$, $\frac{३}{३१}$, $\frac{४}{४}$, $\frac{५}{१}$, $\frac{६}{३}$, $\frac{७}{२}$, $\frac{८}{६}$, $\frac{९}{३}$, $\frac{१०}{८}$, $\frac{११}{८}$, $\frac{१३}{२}$, $\frac{१४}{८}$, $\frac{३०}{१}$, $\frac{३५}{२}$, वारी के उपवास—६, एकान्तर १३, वर्षीतप—५

४१. अग्रगण्या—साध्वी मानकुमारीजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी लिछमाजी (राजल०), कुशलप्रज्ञाजी (सुजान०) कीर्तिरेखाजी (ऊमरा) कमलयशाजी (मोमासर)

चातुर्मास—सूरत, गुजरात

मंत्र दीक्षा—५१

कुशलप्रज्ञाजी—$\frac{१}{३३}$, कीर्तिरेखाजी—$\frac{१}{२२}$, कमलयशाजी—$\frac{१}{२८}$

भाई-बहिनों मे—$\frac{१}{२०००}$, $\frac{२}{४८}$, $\frac{३}{५३}$, $\frac{४}{७}$, $\frac{५}{८५}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{२८}$, $\frac{९}{७}$, $\frac{१०}{३}$, $\frac{११}{५}$, $\frac{१२}{८}$, $\frac{१३}{१}$, मासखमण—१, एकान्तर—२१, उपवास की वारी—१३, वर्षीतप—२, आयं—१०५

पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन, शिविरार्थी—५३, निदेशन समण स्थितप्रज्ञजी व श्रुतप्रज्ञजी ने किया।

४२. अग्रगण्या—साध्वी रामकुमारीजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी हुलासांजी, केसरजी, जतनकुमारीजी (लाडनूं) प्रज्ञावतीजी (वाव)

चातुर्मास—बारडोली, गुजरात

यात्रा—११०० कि० मी०; क्षेत्र—३९

मंत्र दीक्षा—४५, सम्यक्त्व दीक्षा—८१, अणुव्रती—६०, वर्गीय अणुव्रती—४९०, प्रतिक्रमण—११, कालू तत्त्व शतक—९

साध्वियों में कुल तपस्या—$\frac{१}{४५}$, $\frac{३}{२}$, वाचन-ठाणं, आयारो तथा अन्य २००० पृ०, स्वा०—५०० गाथा

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{२५००}$, $\frac{२}{३०}$, $\frac{३}{३८}$, $\frac{४}{२८}$, $\frac{५}{१८}$, $\frac{८}{२७}$, $\frac{९}{३}$, $\frac{१५}{८}$, $\frac{१०}{५}$, $\frac{२१}{३}$, $\frac{३१}{१}$, वर्षीतप—१, एकान्तर—१७, उपवास की वारी—१७

श्रीमती प्यारचंदजी वडोला ने ३१ की तपस्या की।

- कई स्कूलों में अणुव्रत कार्यक्रम।
- समण स्थितप्रज्ञजी के निर्देशन में पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर, शिविरार्थी—५७

४३. अग्रगण्या—साधना निकाय व्यवस्थापिका साध्वी यशोधराजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी नीतिश्रीजी (देवगढ़), आनन्दप्रभाजी (हिसार), ऋजुयशाजी, नूतनयशाजी (पड़िहारा)

चातुर्मास—शाहीबाग-अहमदाबाद, गुजरात

यात्रा—१०७० कि० मी०; क्षेत्र—३२

मंत्र दीक्षा—१५०, सम्यक्त्व दीक्षा—२३५, प्रतिक्रमण—११, शीलव्रत—३

साध्वियों में कुल तपस्या—$\frac{१}{१०८}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{३}{१}$, कंठस्थ—२२०० गा०; स्वा०—१००० गा० प्रति; जप—१ घं०, वाचन-आगम—३००० पृ०, संघीय व अन्य—१४००० पृ०, मौन—१ घं०

भाई-बहिनों मे—$\frac{१}{९०००}$, $\frac{२}{३०००}$, $\frac{३}{२१५}$, $\frac{४}{२०}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{८}{९०}$, $\frac{९}{५}$, $\frac{१०}{२}$, $\frac{११}{७}$, $\frac{१२}{१}$, $\frac{१३}{१}$, $\frac{१४}{१}$, $\frac{१५}{१}$, $\frac{२६}{१}$, $\frac{३०}{४}$, एकान्तर—४३, वेले-वेले तप—३, वर्षीतप—२५, सामू० आयं—५०

श्री हजारीमल वच्छावत ने एक वर्ष मे तीन मासखमण किए। तपस्या मे भी हजारीमलजी आचार्यवर की उपासना मे पहुंच जाते। साथ ही गर्मी मे भी मार्गवर्ती उपासना कर उन्होंने अद्भुत साहस का परिचय दिया। श्री भरत भाई ने भी मासखमण किया।

घोर तपस्वी श्री लालचन्द भाई का अनशन में निधन[१]।

कार्यक्रम

- तीन, सात, तीन व एकदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर, शिविरार्थी क्रमशः ४५, ३५, ९०, १३५
- चिलाला प्राथमिक स्कूल व राजस्थान हाईस्कूल अहमदावाद मे अणुव्रत कार्यक्रम।
- पिण्डवाड़ा मे आदिवासी छात्रों के बीच साध्वीश्री का प्रवचन।
- गुजरात युवक केन्द्र द्वारा आयोजित व्याख्यान माला के अन्तर्गत टाऊनहाल मे 'भगवान महावीर की साधना का रहस्य' विषय पर वक्तव्य।
- विश्व मैत्री दिवस, भारत जैन महामण्डल द्वारा टाऊनहॉल मे आयोजित।
- लायन्स, लायनेस एवं लियो क्लब के सदस्यो की संगोष्ठी दो बार।
- महावीर जयन्ति का माउण्ट आवू मे स्थानकवासी संत मुनि कन्हैयालालजी के साथ संयुक्त कार्यक्रम व ब्रह्मकुमारियो से भेंट।

---

१. विस्तृत विवरण पढें 'परिशिष्ट—५' मे

- जयाचार्य निर्वाण दिवस पर गुजरात के राज्यपाल श्री आर० के० त्रिवेदी की अध्यक्षता में आध्यात्मिक विचार परिषद् का आयोजन।
- खेड़ब्रह्मा में शिक्षक संगोष्ठी।
- होमगार्ड पुलिस कर्मचारियों के बीच प्रवचन।
- कोवा आश्रम में प्रेक्षाध्यान का प्रयोग।
- गुजरात के राज्यपाल आर० के० त्रिवेदी से राजभवन में १ घण्टे तक वार्तालाप।

विशिष्ट व्यक्तियों का सम्पर्क

- गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री बाबूभाई पटेल।
- गुजरात के प्रमुख साहित्यकार डा० चन्द्रकान्त मेहता।
- पूर्व मुख्य न्यायधीश श्री बी० के० दीवान।
- अध्यात्म योगी, आत्मानन्दजी (डा० सोनेजी)
- दिगम्बर आचार्य निर्मलसागरजी
- मूर्तिपूजक आचार्य धर्मधुरन्धरसूरिजी
- डिस्ट्रीक्ट गवर्नर लायन धीरेश टी० शाह०
- जयाबेन शाह—प्रमुख, नशाबंदी मंडल, गुजरात।
- पूर्व उपकुलपति डा० चीनूभाई नायक।
- डा० महेन्द्रभाई दवे—डिस्ट्रीक्ट चेयरमैन, ड्रग अवेयरनेस
- अहमदाबाद में चातुर्मासिक प्रवेश, व्यसन मुक्ति, प्रेक्षाध्यान शिविर, घोर तपस्वी लालचन्द भाई व तपस्वी हजारीमलजी के लिये आचार्य श्री, युवाचार्यश्री के संदेश प्राप्त हुए।
- समाचार प्रकाशन—गुजरात समाचार, गुजरात संदेश, जनसत्ता, समभाव, जयहिन्द, जैनसमाज, टाइम्स ऑफ इंडिया आदि पत्रों में। आकाशवाणी व दूरदर्शन द्वारा कार्यक्रम का प्रसारण।
- आचार्यवर की उपासना करने वाले—सविता बहिन पटेल (२ मास), मनोहरीबाई सेठिया (२ माह), भीखमचन्दजी बैंद (१ माह)।

४४. अग्रगण्या—साध्वी गौरांजी (राजगढ़)

सहयोगिनी—साध्वी चेतनाश्रीजी (सरदार०), उज्ज्वलकुमारीजी (मिसाय), लाभवतीजी (बाव), जिनबालाजी (गगा०)

चातुर्मास—कोयम्बतूर, तमिलनाडु

यात्रा—१२५ कि० मी०; क्षेत्र—७१

मंत्रदीक्षा—७७, सम्यक्त्व दीक्षा—२००, गुरुधारणा ६, व्रतदीक्षा—२५, प्रतिक्रमण व [illegible] न—५१, व्यसनमुक्त—५००, शीलव्रत—२

(अमोलकचन्दजी सुराणा, देवीचन्दजी बोहरा)

गौराजी—$\frac{१}{२०}$, $\frac{३}{१}$, स्वा० २००, 'ओम् भिक्षु' का तीन बार सवा लाख जप, वाचन—२००० पृ०

चेतनाश्रीजी—$\frac{३}{१}$, वाचन—१००० पृ०, मौन-८ घं०, विशेष जप अनुष्ठान

उज्ज्वलकुमारीजी—वाचन २००० पृ०, स्वा० ८०० गा०

लाभवतीजी—वाचन—१००० पृ०

जिनबालाजी—वाचन—२५०० पृ०, विशेप जप अनुष्ठान ।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{६००}$, $\frac{२}{५१}$, $\frac{३}{३१}$, $\frac{४}{१}$, $\frac{५}{३}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{६}$, $\frac{९}{८}$, $\frac{१०}{२}$, $\frac{२१}{२}$, $\frac{१७}{१}$, $\frac{३०}{१}$, $\frac{३१}{३}$ एकान्तर—७, उपवास की बारी—७, मासखमण करने वाली चार बहिनो के नाम ये है—श्रीमती सुमित्रादेवी बोहरा, श्रीमती मनोहरदेवी सुराणा, श्रीमती चद्रादेवी बोहरा, श्री अचलचंद सेमलानी

कार्यक्रम

- हैदराबाद मे गुजराती स्थानक में प्रेक्षाध्यान शिविर लगा ।
- कोयम्बतूर मे त्रिदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी २५
- होसपेट से चित्रदुर्ग तक १० दिन लगातार दयारामजी के प्रयास से स्कूलो मे कार्यक्रम । जिसमे गाव के सैंकडों व्यक्तियो ने बीड़ी, शराब आदि व्यसनो के त्याग किए ।
- नंजनगुड, ऊटी आदि कई स्थानो पर स्थानकवासी साध्वी श्री रश्मि बाई स्वामी के साथ प्रवचन हुए ।
- महावीर जयन्ति चित्रदुर्ग मे मनाई गई, जिसमे मुख्य अतिथि श्री निर्जलिगप्पा एवं अध्यक्ष हिरियूर के जिलाधीश श्री जवल्लणाजी थे ।

हैदराबाद मे मर्यादा महोत्सव सार्वजनिक रूप मे मनाया, जिसमे स्थानकवासी सम्प्रदाय की साध्वी ललिताबाई स्वामी व रमणीककंवरजी सम्मिलित थे तथा अन्य समस्त सम्प्रदायों के श्रद्धालुओं ने भाग लिया । कार्यक्रम अध्यक्ष आन्ध्रप्रदेश के परिवहन मंत्री श्री सत्यनारायण, मुख्य अतिथि श्री वंदेमातरम् रामचंद्र राव थे ।

कोयम्बतूर: अनेक बुद्धिजीवी, क्रिश्चियन पादरी व नन्स के बीच अणुव्रत गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमे दिव्योदया संस्था के संचालक फादर जौन पीटर एव सपिरियर सिस्टर लिली आदि २५-३० बुद्धिजीवियों ने भाग लिया । क्रिश्चियन सेन्ट फेन्चिस कॉन्वेन्ट में विशेष आग्रह पर साध्वीश्री पधारी व प्रेक्षाध्यान पर २½ घटे तक जिज्ञासा-समाधान का क्रम चला । दोनो प्रोग्रामों में अंग्रेजी एवं तमिलभाषा मे अनुवाद रतनचंदजी पारख ने किया ।

आचार्यश्री तुलसी जन्मोत्सव बडे हर्षोल्लास से मनाया। मुख्य अतिथि श्री ई० पुरुषोत्तम (अध्यक्ष कोयम्बतूर डिस्ट्रिक्ट हार्डवेयर मर्चेन्ट्स एसोसियेशन) थे। अध्यक्ष—पूरनचदजी गोलछा, अध्यक्ष स्थानकवासी सघ। मुख्य वक्ता श्री आर० गोपालन, रजिस्ट्रार, भारतीय विद्या भवन; मंडिया मे अक्षय तृतीया व साध्वीश्री से मिलन समारोह हजारो की उपस्थिति मे हुआ।

भेंट करने वाले विशिष्ट व्यक्तियो के नाम

- आन्ध्रप्रदेश के परिवहन मंत्री सत्यनारायणजी।
- कामराज जिले के जिलाधीश श्री दीपक जैन
- अनेक संस्थाओ के पदाधिकारी श्री सुरेन्द्र लूनिया (हैदराबाद)
- मदिरमार्गी समाज के प्रमुख कार्यकर्ता श्री प्रसन्नचद नाहर („)
- हिरियुर के जिलाधीश श्री जवल्लणाजी
- अणुव्रती कार्यकर्ता श्री विश्वनाथन
- गांधी आश्रम की प्रतिष्ठित श्री सरोजनी मा।

अनेक सर्वोदय कार्यकर्ता, डाक्टर, प्रिन्सिपल, प्रोफेसर, वकील, पुलिस, इन्सपेक्टर, इजीनियर, व्यापारी, बुद्धिजीवी आदि सैकडो की संख्या मे सम्पर्क मे आए।

दृढता का परिचय—साध्वीश्री की सन्निधि मे हैदराबाद मे मर्यादा महोत्सव सम्पन्न हुआ। साध्वी गौरांजी की कमर मे अकस्मात् दर्द उठा और वह भयानक होता चला गया। आचार्यवर का तमिलनाडु की ओर विहार करने का आदेश आ गया। श्रावकों के निवेदन पर साध्वीश्री ने स्पष्ट उत्तर दिया—'मैंने अपने पचास वर्ष के संयमकाल में आज तक आचार्य प्रवर को इस प्रकार अर्ज नही करवाई और अब भी भाव नही है। जो गुरुदेव ने फरमाया है, वही मेरे लिए शिरोधार्य है। मैं प्राणपन से गुरु इंगित के अनुसार तमिलनाडु पहुंचूगी और गुरु की आज्ञा का पालन करूगी। शक्ति गुरुदेव स्वयं ही प्रदान कर देंगे, मुझे कोई चिंता नही।' वही हुआ। बडे-बडे डाक्टरो ने पैर की स्थिति गंभीर बताकर १५ दिन 'बेड रेस्ट' की सलाह दी, पर उनके आस्थाशील मानस ने कुछ भी मजूर नही किया। आचार्य प्रवर, भिक्षु बाबे का नाम लेकर वे चली। मार्ग मे १ कि.मी. मे ५-७ बार व कभी-कभी १०-१० बार भी विश्राम लेना पड़ता। इस प्रकार १ दिन मे १२-१३ कि. मी. तथा कभी-कभी परिस्थितिवश १७ कि.मी का विहार करती हुई पधारी। पूरे रास्ते मे कोयम्बतूर तक यही स्थिति रही। लेकिन समर्पण व मनोबल इतना दृढ़ कि कोयम्बतूर पहुच कर ही चैन की अनुभूति की।

४५. अग्रगण्या – साध्वी नगीनाजी (टॉडगढ़)

सहयोगिनी—साध्वी पद्मावतीजी (शाहदा), कंचनकुमारीजी

(उदयपुर) पुष्पावतीजी (वाव), गवेपणाश्रीजी (समदड़ी)

चातुर्मास—ट्रिप्लिकेन-मद्रास, तमिलनाडु

यात्रा—१००० कि. मी.; क्षेत्र—६०

मंत्र दीक्षा—६३, सम्यक्त्व दीक्षा-१०५, प्रतिक्रमण-९१; पच्चीस वोल-४८, भक्तामर—१२, चौवीसी—३१, कालू तत्त्व शतक-५, शीलव्रत-५

नगीनाजी—तपस्या-१/५३, जप व ध्यान-१ घं०, वाचन ७,०००पृ., स्वा.—२०० गा०, मौन-१ घं०

पद्मावतीजी—तपस्या १/३५ २/१, जप व ध्यान-१½-घं०, वाचन-७००पृ०, स्वा-३०० गा०, मौन १ घ०

कंचनकुमारीजी—तपस्या-१/८५ २/१ ३/२ ६/१, जप व ध्यान-२½ घं०, स्वा-२०० गा०, मौन-२ घं०

पुष्पावतीजी—तपस्या-१/३५ २/२ ३/३ एकान्तर-१ माह, वाचन-७०० पृ०, स्वा-२०० गा०, मौन-२ घं०

गवेपणाश्रीजी—तपस्या-१/४८ २/१, जप व ध्यान-१ घ०, वाचन-१५०० पृ०, स्वा-३०० गा०, मौन २ घं०

भाई-वहनों में—१/३१०३ २/१०२ ३/१४२ ४/३० ५/१६ ६/२ ७/३ ८/५५ ९/१४ १०/२ ११/१५ १५/२ १७/१ १९/१ २१/२

मासखमण करने वाले—श्रीमती विमलावाई मांडोत, श्रीमती लीला वाई वाफना, श्रीमती पुष्पावाई सेठिया, श्रीमती मूलीवाई वोथरा, श्रीमती रसालवाई धोखा, श्रीमती पुष्पावाई भंडारी, श्रीमती सोहनीवाई समदड़िया श्री लखमीचन्द समदड़िया। श्रीमती पुष्पावाई मूंथा ने ६१ की तपस्या की।

प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविर—१, शिविरार्थी-५५

तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३, ,, —२००

सम्पर्क में आने वाले विशिष्ट व्यक्ति

- जेल सुपरिन्डेन्टेन्ड टी० जे० थामस
- कारावास के महानिदेशक आर० एल० हाण्डा
- मिनिस्टर श्री सुन्दरेशन
- तमिलनाडु वाटर वोर्ड चेयरमैन, पूर्व मंत्री श्री माणिकवेल्लुजी
- प्रसिद्ध कवि आर० आर० वागड़ी
- मुख्य अतिथि श्री पी० वी० राव०, चीफ रीजनल मैनेजर स्टेट वेंक ऑफ इंडिया
- श्री भक्त वतसलइया, सी. ए.
- विधायक श्री वी० के० राजु
- विधायक श्री एस० जे० रामस्वामी
- पचायत के अध्यक्ष श्री एस०एम० रामलिंगम्

- उपाध्यक्ष श्री शिवप्रकाश रेडियार
- संगीतकार श्री दुखीराम सुखी
- डाक्टर सत्यनारायण

मद्रास सेन्ट्रल जेल का कार्यक्रम तमिलनाडु टी०वी० केन्द्र से रिले किया गया और तमिल पत्रों मे प्रकाशित हुआ।

गुरु कृपा

श्रद्धा अमोघ शक्ति है। इस विश्वास के धागे से जिसका पोर-पोर अनुस्यूत है, बाधाएं, दुर्घटनाएं उसके सामने स्वतः शक्तिहीन बन जाती है। घटना इस वर्ष की है। मद्रास से एक दल आचार्यश्री के दर्शनार्थ दिल्ली पहुचा। कुछ दिन की उपासना के बाद वापिस आ रहे थे। भोपाल के निकट एक भयंकर ट्रेन दुर्घटना घटित हो गई। उसको सुनने मात्र से रोमांच होता है। ट्रेन के ४-५ डिब्बे लाईन से नीचे उतर गये। उस दल वाला डिब्बा १३ फुट ऊपर से नीचे उलट गया। चारो और भागदौड़ एवं हाहाकार मच गया। यात्री ज्यो के त्यों सुरक्षित थे। उन्हें खीच कर बाहर निकाला गया। आश्चर्य तब हुआ जब वे कह रहे थे कि 'डिब्बा उलटने का हमे पता नही चला। जैसे किसी ने हमे उठाकर बिठा दिया हो। ऐसा आभास हो रहा था। न किसी के कोई आघात लगा, न किसी पर कोई सामान भी गिरा, न कोई खरोच तक आई।' यात्री मानते हैं कि यह सब गुरु की कृपा का ही प्रभाव है।

४३. अग्रगण्या—साध्वी विजयश्रीजी [रतन०]

सहयोगिनी—साध्वी जयप्रभाजी (श्रीडूगर०) शशिरेखाजी (बाव) मृदुलाकुमारीजी (चिकमगलूर) शीलयशाजी (सांडवा)

चातुर्मास—नाभा, पंजाब

मंत्र दीक्षा-४२, सम्यक्त्व दीक्षा ६५, वर्गीय अणुव्रती २००

विजयश्रीजी—वाचन—३०००पृ०, स्वा० ३००

जयप्रभाजी- ,, - १०००पृ, ,, २००

शशिरेखाजी ,, - ५०००पृ० ,, ३००

मृदुलाजी ,, - ५००० पृ० ,, २००

शीलयशाजी ,, - १००० पृ० ,, ५००, कंठस्थ-५००

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{३२५}$ $\frac{२}{४}$ $\frac{३}{१}$ $\frac{५}{२}$, आय. १२५, आयं अठाई-२

कुमारी वीणा ने अल्पायु मे आठ की तपस्या की।

- ज्ञानशाला का व्यवस्थित सचालन।

४७. अग्रगण्या—साध्वी सिरेकुमारीजी [सरदार०]

सहयोगिनी—साध्वी कंचनकवरजी (लाडनू) निर्मलाश्रीजी (सरदारगढ) मधुमतीजी (टमकोर) विनयवतीजी (हांसी)

चातुर्मास—५०० कि०मी०; क्षेत्र-१२

मत्र दीक्षा—३०, जैन धर्म दीक्षा—६०, पच्चीस बोल-५०; प्रतिक्रमण-५, अणुव्रती—१००, वर्गीय अणुव्रती—१००

- साध्वियो मे स्वाध्याय व वाचन का सुन्दर क्रम चला।
- श्री प्रकाशचन्द खत्री ने ४१ दिनों की तपस्या की। सामू. आयं-६०
- पंचदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर मलेरकोटला व अहमदगढ़ मे, शिविरार्थी क्रमशः ५० व २१।
- सात स्कूलो व दो कालेजों मे साध्वीश्री के प्रवचन।
- घरो मे अखंड जप।

४८. अग्रगण्या—साध्वी तेजकुमारीजी [सरदार०]

सहयोगिनी—साध्वी इन्दुमतीजी (अबोहर) सत्यवतीजी (हांसी) पुण्यदर्शनाजी (सूरतगढ़) मधुरयशाजी (गंगा०)

चातुर्मास—रामामंडी, जि० भंटिडा, पंजाव

यात्रा—१००० कि०मी०; क्षेत्र-२१

मंत्र दीक्षा—१०१, गुरुधारणा—४ परिवार; सम्यक्त्व दीक्षा-५५, व्रत दीक्षा २, वर्गीय अणुव्रती-३९५, शीलव्रत-५ (गिरधारीलाल, प्रभुदयाल, मोहनलाल, जेवंतराय, जोरावरसिह—रामामंडी)

साध्वियो मे तपस्या—$\frac{१}{१२५}$ $\frac{२}{८}$ $\frac{३}{१}$ आयं—३५

वाचन—आगम—८५१, संघीय—४००

भाई-बहिनो मे $\frac{२}{५}$ $\frac{३}{१}$ $\frac{४}{१}$ $\frac{५}{१}$ $\frac{६}{१}$ उपवास की वारी-१ चारवर्षीया वालिका ज्योति ने उपवास किया।

- तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-२ (पहला संगरिया मे, शिविरार्थी-३१; दूसरा भटिण्डा मे, शिविरार्थी-२३)
- हस्तकला प्रदर्शनी आयोजित।
- हिन्दू सीनियर सैकेण्डरी स्कूल मे साध्वीश्री का प्रवचन।

४९. अग्रगण्या—साध्वी भीखांजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी चंद्रावतीजी, शांताकुमारीजी (गगा०) पुण्यप्रभाजी, दर्शनप्रभाजी (वाडमेर)

चातुर्मास—धूरी, पंजाव

यात्रा—८०० कि०मी०

सम्यक्त्व—१५१, जैन धर्म दीक्षा-१५, थोकड़ा-६, शीलव्रत-३ (श्री हंसराज गोयल, जगदीशराय, जयभगवान)

भीखाजी—$\frac{१}{३}$ $\frac{८}{}$ $\frac{२}{१}$ कंठस्थ -३००, स्वा-५०० गा०

चन्द्रावतीजी—$\frac{१}{५७}$ " १३०० " १०००

शान्ताकुमारीजी—$_{२}\frac{१}{५}$, आयं ५, स्वा-३०० ७००
पुण्यप्रभाजी—$_{४}\frac{१}{१}$ आयं ६, " ५०० " ३००
दर्शनप्रभाजी—$_{२}\frac{१}{७}$ " ७०० " ५००
भाई-बहिनो मे—$_{५}\frac{१}{००}$ $\frac{३}{२}$ आय अठाई-१, आयं-७१

० त्रिदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर मे ४० बच्चो ने भाग लिया।
० ७४ घरों मे 'ओम् णमो अरहंताणं' का ५४ दिन अखण्ड जप चला।

५०. अग्रगण्या—साध्वी सोहनकुमारीजी [छापर]

सहयोगिनी—साध्वी गणेशांजी (छापर) जेठांजी (मोमासर) लज्जावतीजी (सरदार०) लावण्यश्रीजी (के० जी०एफ०)
चातुर्मास—लुधियाना, पंजाब
यात्रा—४०० कि०मी०
गुरुधारणा—७ परिवार, पच्चीस बोल—५, कालू तत्त्व शतक-२, प्रतिक्रमण—३, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-१

५१. अग्रगण्या—साध्वी कमलश्रीजी (टमकोर)

सहयोगिनी—साध्वी पानकुमारीजी (लाडनू), झमकूजी (सरदार०) जिनरेखाजी (गंगा०) हेमयशाजी (अहमदाबाद)
चातुर्मास—समाना, पजाब
यात्रा—४०० कि० मी०
कमलश्रीजी—$_{३}\frac{१}{०}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$, स्वा०—३००, ध्यान-१ घं०
पानकुमारीजी—$_{३}\frac{१}{६}$, $\frac{२}{१}$, स्वा०—२००, जप—१ घं०
झमकूजी $_{४}\frac{१}{५}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{३}{१}$ स्वा०—२००, जप ३० मि०
जिनरेखाजी स्वा०—२००, जप ३० मि०
हेमयशाजी $_{६}\frac{१}{०}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{३}{१}$ स्वा०—१०००, जप १ घं०
सामूहिक वाचन—१ घं०, स्वा—३० मि०

साध्वी कमलश्रीजी द्वारा २४ तीर्थंकरो पर गीत काव्य लिखा, जिसका आधार तीर्थंकर चरित्र (ले० मुनि सुमेरमल 'लाडनू') है। इसके अलावा अन्य अनेक गेय व्याख्यानो की रचना की।

५२. अग्रगण्या—साध्वी सरोजकुमारीजी (बम्बई)

सहयोगिनी—साध्वी चन्द्रलेखाजी (लाडनू), प्रभावनाश्रीजी (टमकोर), सोमप्रभाजी (लाडनू)
चातुर्मास—लोगोवाल, पंजाब
यात्रा—३२५ कि० मी०; गुरुधारणा—७५
सरोजकुमारीजी—वाचन-ठाणं, निशीथ; ध्यान—३० मि०
चन्द्रलेखाजी—$_{३}\frac{१}{३}$, $\frac{३}{१}$ स्वा--३००; जप-३० मि०, मौन—२ घ०

प्रभावनाश्रीजी—स्वा० ३००, जप ३० मि०, मौन २ घं०

सोमप्रभाजी—स्वा ३००, जप ३० मि०, मौन २ घ०

५३. अग्रगण्या—साध्वी जयश्रीजी[1] [राजल०]

सहयोगिनी—कमलप्रभाजी (बीरज) कनकरेखाजी (श्रीडूंगर०) प्रियदर्शनाजी (सूरतगढ), मुदितप्रभाजी (उकलाना)

चातुर्मास—कलकत्ता, प० बंगाल

यात्रा—२१०० कि मी०

भाई-बहिनों में २/३००, ३/२००, ४/६०, ५/३५, ६/२१, ७/२१, ८/१५, ९/७५, १०/७, ११/७, १३/७, १४/३, १५/७, १६/३, एकान्तर—१३५, उपवास की वारी—४५, बेले-बेले—५, वर्षीतप—७, आयं-१५०, उपवास—हजारों

प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन।

५४. अग्रगण्या—साध्वी मोहनकुमारीजी [राजल०]

सहयोगिनी—साध्वी मानकुमारीजी (राजल०) मानकुमारीजी (सरदार०) वसंतप्रभाजी (राजल०) नंकलश्रीजी (भादरा)

चातुर्मास—फारबिसगंज, बिहार

यात्रा—५०० कि० मी०; क्षेत्र-१२

अणुव्रती—५५, वर्गीय अणुव्रती—१०१, दहेज त्याग—३१, मंत्र-दीक्षा—१०००, सम्यक्त्व दीक्षा—१०१, व्रत दीक्षा-२ प्रतिक्रमण—१३; थोकड़ा—२५, भक्तामर—५

साध्वियों में कंठस्थ—उत्तराध्ययन (१५ अध्य०), आराधना, नववाड़।

वाचन—निशीथ, उत्तरा०, दशवै०, व्यवहार सूत्र आदि।

जप व ध्यान के विशेष प्रयोग चले।

भाई-बहिनों में—१/४०००, २/३००, ३/८५, ४/५२, ५/२१, ६/१३, ७/१५, ८/२५, ९/१३, १०/५, ११/५, १४/१, १५/११, १७/१, २१/१ वर्षीतप—२, एकान्तर—३०, आय—१२५, वारी के उपवास—२३

- वर्षो से शराब आदि व्यसनों के आदी कई व्यक्तियों द्वारा उसका परित्याग।
- चातुर्मास में प्रेक्षाध्यान की नियमित कक्षा।
- फारबिसगंज मे तीन प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित।
- पटना मे विश्वमैत्री दिवस का कार्यक्रम
- पटना सीटी मे महावीर जयंति, मुजफ्फरपुर में अक्षय तृतीया समारोह।

---

* साध्वीश्रीजी की सन्निधि में अनेक महत्त्वपूर्ण व प्रभावी कार्यक्रम आयोजित हुए, पर रिपोर्ट न मिलने से वे यहा नही दिए जा सके।

- ० मुजफ्फरपुर के नरैया व कुनौली बाजार मे अवधान कार्यक्रम ।
- ० फारबिसगंज मे राष्ट्रीय स्वयंसेवक सघ के एक कार्यक्रम में साध्वीश्री का प्रवचन ।

विशिष्ट संपर्क—श्री उमाशंकरसिंह मोहनिया—बडौदा बैंक मैनेजर, श्री शिववचनसिंह मोहनिया, मैनेजर डा० सिद्धि मिश्रा प्रभाकर, होम्योपैथिक डाक्टर, श्रीमती परमजीत कौर फारबिसगज प्रखण्ड विकास अधिकारी, श्री चन्द्रनारायण मल्लिक, प्रवक्ता, दर्शन शास्त्र ।

कार्यक्रम की न्यूज—पटना रेडियो, नवभारत टाइम्स, आर्यावर्त, जनसत्ता आदि में छपी ।

५५. अग्रगण्या—साध्वी चांदकुमारीजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी राकेशकुमारीजी (राजल०), तिलकश्रीजी (सुजान०) मंजुबालाजी (मोमासर) तितिक्षाश्रीजी (मद्रास)

चातुर्मास—गुलाबबाग, जि० पूर्णिया, बिहार

यात्रा—८०० कि० मी०; क्षेत्र—२६

मत्र दीक्षा—५५१, सम्यक्त्व दीक्षा—३५६, व्रत दीक्षा—२५, वर्गीय अणुव्रती—१०००, अणुव्रती—६००, व्यसनमुक्त—२६४, थोकडा—१२१, प्रतिक्रमण—२३, भक्तामर—११, शीलव्रत—४

तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३, दलखोला मे पंचदिवसीय, शिविरार्थी—६५, किशनगज मे पचदिवसीय, शिविरार्थी—७५, मधुवनी मे त्रिदिवसीय, शिविरार्थी—४१,

	कठस्थ	स्वा०	जप	तप	मौन	वाचन
चादकुमारीजी	५०० गा०	३०० गा०	१ घ०		१ घं०	५००० पृ०
राकेशकुमारीजी	—	१,०८,०००	१ घं०	१/२१	१ घ०	३५००
तिलकश्रीजी	४००	३००	९ लाख		१ घं०	५०००
मजुबालाजी	—	३००	सवा लाख	२/३ ३/१	१ घ०	३५००
तितिक्षाश्रीजी	५००	३००	—	—	१ घं०	२५००

भाई-बहिनो मे—४/२५, ५/२१, ६/५, ७/११, ८/३५, ९/११, ११/५, १५/२, १६/१, २६/१, ३४/१, एकातर—३१, उपवास की बारी-२५, सामूहिक तेले-१८, सामूहिक आय०-२५ चातुर्मास मे १८ दिन अखंड जप । प्रतिदिन १०१ व्यक्तियो ने सामूहिक स्वाध्याय की । सामूहिक वाचन-२,२५,००० पृ०

कार्यक्रम

- ० ३ जनवरी १९८७ वर्धमान (बंगाल) मे स्थानीय नेहरू विद्यालय मे छात्र-छात्राओ के बीच अणुव्रत व जीवन-विज्ञान पर विशेष प्रवचन ।

- सैंथिया, जैन मंदिर मे मर्यादा महोत्सव का भव्य आयोजन, आस-पास के करीब २५ क्षेत्रो के लोगों ने कार्यक्रम मे भाग लिया।
- ५ फरवरी, 'भारतीय संस्कृति को जैन धर्म की देन' विषय पर विचार परिषद् का समायोजन। विशेष वक्ता-बीकानेर गद्दी के श्री पूज्य श्री जिनचंद्रसुरिजी।
- १२ अप्रैल बरहमपूर कासिम बाजार मे महावीर जयन्ति का भव्य आयोजन, स्थान-हनुमान मंदिर, उद्घाटन—दानमलजी गुलगुलिया। वक्ता-महेश्वर। जैन जेनेतर सभी ने मिलकर प्रभात जागरिका निकाली। १८ जून किशनगंज, इन्सान स्कूल में करीब ८०० विद्यार्थियो एवं शिक्षकों के बीच अणुव्रत कार्यक्रम। स्कूल के डायरेक्टर सैयद हसद भी उपस्थित थे।
- १९ जून किशनगंज, स्थानीय तेरापंथी सभाभवन मे 'सर्वधर्म सद्भाव समारोह' में रामशरणजी महाराज (पूर्व नाम श्री कन्हैयालाल दूगड) रामस्नेही सम्प्रदाय के आचार्य भगवान दासजी महाराज ने विचार प्रस्तुत किए। अन्त मे साध्वीश्री ने अपने विचार रखे।
- स्थान-स्थान पर तेयुप, तेमम, ते. सभा का गठन।
- २४ दिसम्बर, जूट व्यवसायी भवन गुलाबबाग मे नेपाल-बिहारस्तरीय श्रावक सम्मेलन एवं जन्मोत्सव के उपलक्ष में अभिवन्दना समारोह का कार्यक्रम रहा। अध्यक्ष—ने० वि० सभा के अध्यक्ष जीवनमलजी बैंद। विशेष अतिथि के रूप में बोलते हुए राणीपत्रा सर्वोदय आश्रम के अध्यक्ष श्री बिन्दु ने आचार्य तुलसी को महान् आचार्य बताया।
- व्यापारी उद्बोधन समारोह, स्थान—मार्केटिंग यार्ड, गुलाब बाग। नवभारत टाइम्स पटना के रिपोर्टर अखिलेशजी भी समारोह में उपस्थित थे। साध्वीश्री ने अणुव्रत आन्दोलन के महत्त्वपूर्ण सूत्रो की विस्तार से चर्चा की।
- गर्ल्स हाईस्कूल, गुलाबबाग मे अणुव्रत कार्यक्रम।
- विद्वद् विचार गोष्ठी—परिचर्चा का विषय था, 'वर्तमान परिवेश में नैतिक मूल्यो की प्रतिष्ठा'। डा० एस० के० सिन्हा के संयोजकत्व मे गोष्ठी बहुत ही महत्त्वपूर्ण रही। विचार गोष्ठी मे भाग ले रहे थे पूर्णिया के प्रतिष्ठित १५ अधिवक्ता, अनेको प्रोफेसर, डाक्टर, सपादक प्रेस रिपोर्टर, साहित्यकार आदि करीबन ४०-५० विद्वान साध्वीश्री से मिले।

भेट करने वाले विशिष्ट व्यक्ति

भागीरथी के संपादक—परमेश्वरलालजी गोयल, पूर्णिया कालेज के

के प्रोफेसर—कैलाशप्रसादजी, अधिवक्ता चन्द्राननजी महादेव, महेन्द्रजी, गोपाल गोखलाजी आदि। डा० एस० के० सिन्हा, डा० के० के० झा०। प्रेस रिपोर्टर अखिलेशजी, राणीपत्रा सर्वोदय आश्रम के अध्यक्ष श्री विन्देश्वरीप्रसाद बिन्दु, कवि श्री भोजा बाबू, अखिल भारतीय कांग्रेस सेवा समिति के अध्यक्ष श्री तारिक अनवर आदि।

० समाचार, लेख का प्रकाशन भागीरथी, नवभारत टाइम्स

५६. अग्रगण्या—साध्वी हुलासकुमारीजी (गंगा०)

सहयोगिनी—साध्वी केसरजी (पडिहारा), ज्योतिश्रीजी (श्रीडूगर०) शीलवतीजी (लाडनू), मगलमालाजी (सरदार०)

चातुर्मास—झकनावद, मध्यप्रदेश

यात्रा—६०० कि० मी०; क्षेत्र-१६

मंत्र दीक्षा—२७, सम्यक्त्व दीक्षा-१००, व्रत दीक्षा-२, श्रमणोपासक दीक्षा-१८, व्यसनमुक्त—६१, प्रतिक्रमण-२५, भक्तामर-१५

हुलासकुमारीजी—१/६७, २/१, ३/१ आयं० तेले-८, वाचन-१५००, स्वा०-७१,००० गा०

केसरजी—१/२५, २/१ आयं० तेला—१, वाचन-१०००, स्वा० ३००

ज्योतिश्रीजी—१/५१, २/१, ३/२ आयं० तेला—५, वाचन-५५००, स्वा० ४००

शीलवतीजी १/४५, २/३, ३/१ आय० तेला०—२, वाचन-५००, स्वा०-३००

मंगलमालाजी—१/३१, २/१ आयं० तेला—१, वाचन-७००, स्वा०-३००

सभी साध्वियो मे मौन, जप व ध्यान का नियमित क्रम चला।

भाई वहिनो में—१/६००, २/२७, ३/३१, ४/३, ५/३, ८/३, ६/४, ११/१, वारी के उपवास-४, वर्षीतप-१

सोलहवर्षीया चंचला कोठारी ने ५५ व पन्नादेवी भांगू ने ३५ का तप किया। उनकी तपस्या की पूर्णाहुति पर आचार्यश्री व युवाचार्यश्री ने संदेश प्रदान किया।

कार्यक्रम

० धार जिले के राघवानी कस्बे मे तेरापंथी साध्वियो का प्रथम आगमन था। २४ दिन के प्रवास मे स्थानीय जैन, जैनेतर लोगो ने अच्छा लाभ लिया। वहा तेरापंथ के मात्र ५ परिवार रहते है।

० गंधवानी मे सतरह गावों का आदिवासी सम्मेलन, साध्वीश्री की प्रेरणा से कइयो ने व्यसन त्यागे।

- गंधवानी मे मूर्तिपूजक आचार्य जयंतविजयसूरीजी के साथ संयुक्त प्रवचन।
- थादला मे मर्यादा महोत्सव, समारोह मे न्यायाधीश श्री आर० के० महाजन, प्रो० प्रेमचंद, प्रशासन अधिकारी चंद्रशेखर नीलकंठ आदि उपस्थित थे।
- वोरी मे महावीर जयंति कार्यक्रम, वहां जयंतविजयसूरीजी की साध्वियां साध्वीश्री से मिली व बातचीत की।
- झकनावद में अनेक स्कूलों में अणुव्रत कार्यक्रम।
- झकनावद में सप्तदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित, निदेशन हेमन्तदासजी पटेल।
- दैनिक भास्कर, नई दुनिया, स्वदेश आदि पत्रों में समाचार प्रकाशित।

५७. अग्रगण्या—साध्वी चारित्रश्रीजी (सुजान०)

सहयोगिनी—साध्वी मनोहरांजी, विनयश्रीजी (सरदारगढ) ज्योत्स्नाकुमारीजी (गंगा०) हेमलताजी (वेलगांव)

चातुर्मास—पेटलावद, जि० झावुआ, मध्यप्रदेश

यात्रा—४०० कि० मी०; क्षेत्र—२९

मंत्र दीक्षा—२१, सम्यक्त्व दीक्षा-६८, श्रमणोपासक दीक्षा-२५, व्रत दीक्षा—१८, प्रतिक्रमण-८, शीलव्रत-१ (चांदमलजी वंवोरी, केसूर)

चारित्रश्रीजी—$\frac{१}{२४}$, $\frac{२}{१}$ वा०-७००० पृ०, स्वा-५०० गा०

मनोहराजी—$\frac{१}{५}$, मौन-५ घं०, जप-३० मि०

विनयश्रीजी—$\frac{१}{५}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$, वा०-२००० पृ०, स्वा०-५०० गा०

ज्योत्स्नाजी—$\frac{१}{१३}$

हेमलताजी—$\frac{१}{३५}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$, वाचन-३००० पृ०, स्वा०-७०० गा०; ध्यान—३० मि०

भाई-वहिनों मे—$\frac{१}{९७१}$, $\frac{२}{४८}$, $\frac{३}{२५}$, $\frac{४}{३}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{८}{६}$, $\frac{९}{५}$, $\frac{१६}{१}$, एकान्तर—१०, वारी के उपवास-११

कार्यक्रम

- केसूर, किशनगढ व पेटलावद में त्रिदिवसीय शिविर, शिविरार्थी क्रमशः १०,२१ व १८।
- वड़नगर मे मूर्तिपूजक साध्वी अमितगुणाजी के साथ संयुक्त कार्यक्रम।
- खाचरोद मे साध्वीश्री का स्थानकवासी साध्वी अर्चनाश्रीजी के साथ सम्मिलित महावीर जयंति समारोह।
- अणुव्रत कार्यक्रमों मे प्रो० रमेश व्यास, अंजुमन कमेटी पेटलावद के अध्यक्ष श्री शकूर मोहम्मद आदि ने भाग लिया।

○ भास्कर, स्वदेश, नईदुनिया आदि अखबारों में समाचारो का प्रकाशन ।

५८. अग्रगण्या—साध्वी राजीमतीजी (रतन०)

सहयोगिनी—साध्वी कानकुमारीजी, मानकुमारीजी (चूरू)
करुणाश्रीजी (सुजान०), समताश्रीजी (राजल०)
चातुर्मास—मरीन ड्राईव-बम्बई, महाराष्ट्र
यात्रा—२००० कि०मी०
मंत्र दीक्षा—१२५, व्रत दीक्षा—५०, प्रतिक्रमण—२५, थोकड़े—२५
राजीमतीजी—वाचन-३००० पृ०
कानकुमारीजी—वाचन-१५०० पृ०, स्वा० ३०० गा०, सवा लाख जप
मानकुमारीजी—वाचन-२००० पृ०, ,, ,,
करुणाश्रीजी—वाचन ,, ,, ,,
समताश्रीजी—वाचन ,, २०० गा० ,,
सामू० वाचन-दसवे० उत्तरा०, सूयगडो, समवाओ, दीपिका
भाई-वहिनों मे—४ से १६ तक की तपस्या—८०

कार्यक्रम

○ तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२, शिविरार्थी—१००
○ भारतीय विड़ला क्रीडा केन्द्र में 'स्वस्थ कैसे रहे' विषय पर साध्वीश्री का प्रवचन ।
○ तारावाई हॉल में अणुव्रत उद्‌वोधन सप्ताह का समापन कार्यक्रम ।
○ विराट् महिला सम्मेलन, उपस्थिति—३००
○ एकदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर, शिविरार्थी—३००
○ चातुर्मास में प्रेक्षा व तत्त्वज्ञान कक्षा चली ।
○ विशाल श्रावक सम्मेलन का आयोजन ।
○ श्री जेठाभाई जवेरी व श्री देवीलाल कच्छारा (सपरिवार) ,तथा श्रीमती धनु वेन व जया वेन ने एक माह से ऊपर केन्द्र की उपासना की ।

साहित्य प्रकाशन; लेखक—साध्वी राजीमतीजी

१. वाल वोध प्रकाशक—खेमराजजी कोठारी, वम्वई (तीसरा संस्करण)
२. दैनिक योग साधना प्रकाशक—पन्नालालजी वांठिया, जयपुर (")
३. अमृत योग " —आदर्श साहित्य संघ (प्रथम ")

५९. अग्रगण्या – साध्वी कंचनप्रभाजी (सुजान०)

सहयोगिनी—साध्वी मनोहरांजी (छापर), मंजुरेखाजी (वाव)
उदितप्रभाजी (उकलानामंडी), सोम्ययशाजी (धूलिया)

चातुर्मास—कुर्ला-बम्बई, महाराष्ट्र
मंत्र दीक्षा—२००, वर्गीय अणुव्रती—७००, सम्यक्त्व दीक्षा—३७५
साध्वियो में सामू-वाचन—दशवैकालिक सूत्र।

भाई बहिनों में—१/हजारों २/९५, ३/७६, ४/१६, ५/८, ६/४, ७/२, ८/५३, ९/११, १०/१, ११/४, १५/३, १६/१, १७/३, उपवास की बारी-४३, सामू० आयं (दो बार में)—२५६,१५१।

कार्यक्रम

० कुर्ला मे साध्वीश्री के सान्निध्य मे 'बालको के जीवन-निर्माण मे अभिभावकों की भूमिका' विषय पर कार्यक्रम। अध्यक्ष महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री एवं प्रवुद्ध चिंतक डा० राममनोहर त्रिपाठी, मुख्य अतिथि विधायक काका साहब थोरात, नगर पार्षद श्री शांताराम डी. नाईक, एडवोकेट श्री के. डी. दाणी, प्रो० एल. पी. सवनीस, शिवसेना शाखा प्रमुख श्री चन्द्रकात मोरे, श्री आत्माराम पावसकर ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

० कुर्ला मे साध्वीश्री के सान्निध्य मे महिलाओ का प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ, जिसमें ८५ महिलाओ ने भाग लिया। शिविर में श्री नगीन भाई शाह ने भी महिलाओ को प्रेक्षाध्यान पद्धति के प्रयोग करवाए।

० कुर्ला मे साध्वीश्री के सान्निध्य में बम्बई महिला मंडल का विशेष सम्मेलन। पुरस्कार वितरण व स्कूल गणवेश वितरण समारोह में ब्लिट्ज के संपादक श्री नन्दकिशोर नौटियाल, महाराष्ट्र के पूर्व मंत्री डॉ० राममनोहर त्रिपाठी, सांसद प्रमोद महाजन आदि ने अपने विचार रखे।

० बम्बई में महावीर जयन्ति का समग्र जैन समाज द्वारा भव्य आयोजन, सान्निध्य—मुनि राकेशकुमारजी व साध्वी कंचनप्रभाजी एवं मूर्तिपूजक सम्प्रदाय के मुनि वात्सल्यदीपजी। महाराष्ट्र के राज्यपाल डॉ० शंकरदयाल शर्मा, महाराष्ट्र की शिक्षा मंत्री सुश्री चन्द्रिका केनिया आदि। स्थल—बिड़ला मातुश्री सभागार।

० तेरापन्थ युवक परिषद्, बम्बई द्वारा कुर्ला में डॉ० शमशेरचन्द भंडारी के निर्देशन मे नेत्र परीक्षण शिविर, जिसमे लगभग ७०० भाई-बहिनों का नेत्र परीक्षण व चश्मे वितरित किए गए।

० घाटकोपर-बम्बई में साध्वीश्री के सान्निध्य में कपोलवाडी मे 'मानवीय मूल्यों के प्रति युवको का दायित्व' विषय पर परिचर्चा का विशाल आयोजन रहा, जिसमें महाराष्ट्र भारतीय जनता पार्टी के महामंत्री

श्री किरीट सोमैया एवं श्री प्रकाश मेहता ने विशेप रूप से अपने विचार रखे।

- सान्ताक्रुज मे साध्वीश्री के सान्निध्य में मर्यादा महोत्सव का अच्छा कार्यक्रम रहा। महाराष्ट्र की शिक्षा एवं कानून राज्यमंत्री सुश्री चन्द्रिका केनिया, प्रो० राजम्नटराजन्, विधायक श्री डी. उमाचेन ने मर्यादा महोत्सव की विलक्षणता महसूस करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किए।

६०. अग्रगण्या—साध्वी भीखांजी (श्रीडूंगर०)

सहयोगिनी—साध्वी भीखांजी (छापर), किस्तुरांजी (वीदासर)
पूनाजी (सुजान०), भानुमतीजी (गगा०)

चातुर्मास—टमकोर, जि०-झुझनूं, राज०

यात्रा—२०० कि०मी०; क्षेत्र—५

मंत्र दीक्षा—११, सम्यक्त्व दीक्षा—४१, गुरुधारणा—९

तपस्या	स्वा०	मौन
भीखांजी (डू०)—१/३६, २/१	४०० गा०	१ घंटा
भीखांजी—१/६१, २/१	५०० गा०	१ घंटा
किस्तुरांजी	३०० गा०	३ घंटा, वाचन—१५०० पृ०
पूनांजी—१/४१, २/१	४०० गा०	१ घंटा
भानुमतीजी—१/४२	४०० गा०	२ घंटा

सभी साध्वियों मे १ घंटा सामूहिक स्वाध्याय का सुन्दर क्रम चला।

भाई-बहिनो में—१/३००, २/४, ३/४, ४/२, वर्पीतप—१

पंचदिवसीय तत्त्वज्ञान-प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी—३०

६१. अग्रगण्या—साध्वी भागवतीजी (श्रीडूंगर०)

सहयोगिनी—साध्वी लिखमावतीजी, मंजुकुमारीजी (श्रीडूंगर०)
शरदप्रभाजी (लाडनूं)

चातुर्मास—फतेहपुर-शेखावाटी, जि०—सीकर, राज०

यात्रा—३७४ कि० मी०; क्षेत्र—१३

व्रत दीक्षा—७, गुरुधारणा—१५, पच्चीस वोल-१५, प्रतिक्रमण-२; अणुव्रती—७०, वर्गीय अणुव्रती—१००

भागवतीजी—वाचन ५००० पृ०; ओम् भिक्षु का सवा लाख जप, कंठस्थ—४०० गा०

लिखमावतीजी—१/४३, २/४, स्वा०-५०० गा०

मंजुकुमारीजी—१/३६, २/१, वाचन—४५०० पृ०

शरदप्रभाजी—वाचन-३५०० पृ०, कंठस्थ—३०० गा०

भाई-बहिनों में—$\frac{१}{१०००}$, $\frac{२}{१५}$, $\frac{३}{११}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{५}{१}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{१}$, $\frac{९}{१}$, एकान्तर—१०

श्रीमती कमलादेवी सोनी ने अनशन किया। वह एक श्रद्धालु व पाप-भीरु श्राविका थी।

६२. अग्रगण्या—साध्वी भाग्यवतीजी (बाव)

सहयोगिनी—साध्वी कुसुमलताजी (तारा०), कंचनरेखाजी (बाव), गुप्तिप्रभाजी (तारा०)

चातुर्मास—सवाई माधोपुर, राज०

यात्रा—१२०० कि०मी०; क्षेत्र-२४

मंत्र दीक्षा—७३, सम्यक्त्व दीक्षा—५६, व्यसनमुक्त—९, प्रतिक्रमण—२५, भक्तामर-३, शीलव्रत—३, वर्गीय अणुव्रती—३०००

	तपस्या	जप	मौन	स्वा०	वाचन
भाग्यवतीजी	$\frac{१}{२८}$, $\frac{२}{१}$,	१ घं०	३ घं०	३०० गा०	२५०० पृ०
कुसुमलताजी	$\frac{१}{३५}$,	१	३	५००	२०००
कंचनरेखाजी	$\frac{१}{२९}$, $\frac{२}{१}$,	१½	५	२००	१५००
गुप्तिप्रभाजी	$\frac{१}{३१}$,	१	४	१०००	२५००

सामू० जप—सवा लाख

भाई-बहिनों में—$\frac{१}{५५८}$, $\frac{२}{६४}$, $\frac{३}{३८}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{५}{१}$, वर्षीतप—३, एकांतर-१५, बारी के उपवास—१२

कार्यक्रम

- साहूनगर में जीवन-विज्ञान शिक्षक-प्रशिक्षक शिविर।
- १५ जून को दक्षिणी पूर्वी राजस्थान श्रावक सम्मेलन।
- सवाई माधोपुर में कन्या उ० मा० विद्या०, चंद्रसागर विद्या०, हरसहाय कटला, मिडिल स्कूल में साध्वीश्री के प्रवचन।
- स्थानीय गुरुद्वारों में साध्वीजी का भाषण।

जनसंपर्क

श्री एस. एन. जैन, जिला पुलिस अधीक्षक

श्री फारुख हसन, न्यायाधिपति हाईकोर्ट, राजस्थान

श्री जेठाराम सुथार, अतिरिक्त जिला कलेक्टर व मजिस्ट्रेट

श्रीमती जसकोर मीना, जिला शिक्षा अधिकारी (छात्रा)

श्री शंकरलाल मेहता, निदेशक, जैन विश्व भारती (लाडनूं)

श्री रतनलाल वैद्य, उद्योगपति जयपुर

श्री कपूरचन्द जैन, अध्यक्ष, स्थानकवासी श्रावक संघ

श्री बजरंगलाल सर्राफ, अध्यक्ष, श्रीसंघ सवाई माधोपुर

श्री रघुनाथदास जैन, निर्देशक, स्वाध्याय संघ
श्री रामस्वरूप जैन, ग्रामवाणी के संवाददाता
श्री गिर्राजकिशोर तिवाड़ी, राष्ट्रदूत "
श्री हनुमान जैन, जननायक "
श्री हीरालाल जैन, पुकार "
श्री माथुर, देश की धरती "
श्री जसवीर सिंह, अध्यक्ष, गुरुद्वारा कमेटी
श्री मोतीलाल जैन, अध्यक्ष, राज० शिक्षक सघ सवाई माधोपुर
श्री रामेश्वर जैन, अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी
श्रीमती मेहता, प्रधानाध्यापिका, बालिका उ० मा० वि०
श्री बाबूलाल जैन, प्रधानाध्यापक, मानटाऊन माध्य० विद्यालय

६३. अग्रगण्या—साध्वी टमकूजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी मेहतावांजी (सरदार०) भत्तूजी (लाडनू)
सोम्यप्रभाजी, अमितश्रीजी (सरदार०)

चातुर्मास—ब्यावर, जि० अजमेर, राज०

भाई-बहिनों में—१/४२१, २/६, ३/१५, ४/४, ५/१, ८/१, ९/१, २१/१, वारी के उपवास—२, एकातर—१

श्रीमती लाडकंवर नौलखा ने मासखमण किया।

६४. अग्रगण्या—साध्वी धनकुमारीजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी कुंथुश्रीजी (ऊमरा), भावनाश्रीजी (गंगा०)
ललितरेखाजी (छोटी खाटू)

चातुर्मास—टॉडगढ़, जि० अजमेर, राज०

मंत्र दीक्षा—१५०, व्रत दीक्षा—१५, प्रतिक्रमण-५

धनकुमारीजी—१/३०, ३/१, स्वा० ७०० गा०

कुंथुश्रीजी—१/२३, स्वा० ७०० गा०

भावनाश्रीजी—स्वा० ५०० गा०

ललितरेखाजी—स्वा० ३०० गा०

धनकुमारीजी ने १६ दिन विशेष जप व नौ दिन मौन किया।

सामू० आगम वाचन—सूयगडो, समवाओ, दसवेआलियं; आगमेतर—५००० पृ०

भाई-बहिनों में—१/६००, २/१३, ३/१३, ४/२, १०/१, उपवास की वारी—२, एकांतर—४, वर्षीतप-३, सामू० आयं०—६५

० ताल व बड़ाखेड़ा में तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी क्रमश २५, १५

- श्री नेमीचन्द पीतलिया (सपत्नी) ४ माह केन्द्र की उपासना की। पीतलिया दंपति सेवाभावी श्रावक हैं।
- सप्तदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर टॉडगढ़ में, निदेशक हेमन्तदासजी पटेल।
- टॉडगढ़ में वहिनों में क्वीज टाइप प्रोग्राम

प्रेक्षा से उपद्रवी हिल उठा

श्रीमती प्रेम मांडोत ५ वर्षो से निरन्तर वीमार थी। उसके कोई दैविक उपद्रव था। ४ वर्षो से कुछ भी नहीं खाती थी, केवल चाय पर ही आधारित थी। कभी-कभार आधी चपाती ले लेती थी। अभी ४ महीने से तो विल्कुल नीद नही आती थी। वह प्रेक्षाध्यान शिविर में भर्ती हुई। शिविर के तृतीय दिवस ध्यान मे उपद्रवी देव ने कहा—'तुम ध्यान करना छोड़ दो। यदि तुमने ऐसा नही किया, तो मेरा वश नही चलेगा। उस दिन श्रीमती प्रेम वाई को हरे रंग का ध्यान आनन्द केन्द्र पर कराया गया। उसके वाद उसे नीद आने लगी।

शिविर के सातवें दिन वह उपद्रवी पुनः उपस्थित हुआ। सभी शिविरार्थियों ने ४५ मिनट का ध्यान सम्पन्न किया, किन्तु प्रेम वहिन का ध्यान नहीं खुला। ध्यान मे ही वह उपद्रवी वोला—'मैं पांच दिनों से वहुत परेशान हो गया हूं। में लोहे के पिंजरे मे जकड़ गया हूं, उसकी साधना के पीछे मेरा कोई वश नही चल रहा है। अव मैं वहुत दुखी हूं। वावा, मुझे क्षमा मांगनी ही पड़ेगी। एक साल हो गया जादू मंतर करते-करते मैं कभी नही घवराया, किंतु इन सात दिनों मे मेरा जादू खत्म हो गया। मुझे क्षमा मांगनी पड़ेगी। किंतु यह क्षमा यहां नही मिल सकती। यदि यही क्रम चलता रहा, तो मेरा अस्तित्व ही नहीं रहेगा'।

उसी समय साध्वी धनकुमारीजी ने कहा—'राजसमंद में शिविर प्रारंभ हो रहा है। पटेल साहव (हेमन्तदासजी) आज वहां जा रहे है क्यों न इसको भी तुलसी साधना शिखर पर प्रेक्षाध्यान कराया जाए।' संयोग से दूसरे ही दिन राजसमंद में शिविर लग रहा था। पटेल साहव के साथ तत्काल प्रेम वहिन को भी राजसमंद ले जाया गया।

६५. अग्रगण्या—साध्वी जतनकुमारीजी (राजगढ़)

सहयोगिनी—साध्वी सूरजकुमारीजी (टमकोर) धनकुमारीजी (लाडनू) गुणवतीजी (टमकोर) अमितरेखाजी (जसोल)

चातुर्मास—सेमड़, जि० उदयपुर, राज०

यात्रा—४०० कि० मी०; क्षेत्र-२६

मंत्र दीक्षा १५०, सम्यक्त्व दीक्षा-५०, गुरुधारणा-१०, अणुव्रती-१५०,

वर्गीय अणुव्रती-३२५, पच्चीस बोल-२१, प्रतिक्रमण-१०, भक्तामर-५

जतनकुमारीजी—स्वा. १००० गा., जप ३० मि०

सूरजकुमारीजी—स्वा. ३०० गा., ध्यान ३० मि०

धनकुमारीजी—स्वा. २०० गा.; गुणवतीजी स्वा.—७००, जप १ घं०

अमितरेखाजी—स्वा० ८०० गा०, मौन १ घं०

साध्वियों में सामूहिक तप $\frac{1}{38}$, कठस्थ—२००० गा०, वाचन-आगम —५००० पृ०, आगमेतर—५५०० पृ०

भाई-बहिनो में—$\frac{1}{45}$ $\frac{2}{35}$ $\frac{3}{25}$ $\frac{4}{1}$ $\frac{5}{3}$ $\frac{6}{1}$ $\frac{8}{2}$ $\frac{9}{2}$, आयं—७५

- सेमड़ मे स्कूलो में अणुव्रत कार्यक्रम।
- सायरा मे २१ नवम्बर ८७ को पंचायत समिति के १०४ माध्यमिक स्कूलो के ११०० छात्र-छात्राओ व २०० अध्यापको के बीच साध्वी श्री का नैतिक शिक्षा पर प्रवचन, मुख्य अतिथि—शिक्षा अधिकारी श्री यमुनाशंकर विजावत, अध्यक्ष श्री नरेन्द्रकुमार पालीवाल
- साध्वी जतनकुमारीजी के बी. पी. की शिकायत। जी घबराना, चक्कर आना, बेचैनी रहना स्वाभाविक था। साध्वीजी ने डालिम चरित्र का वाचन शुरू किया और क्रमशः स्वस्थ हो गई। उनकी धारणा थी—'सांप काटने पर गुलाब खां नामक एक मुसलमान डालगणी के नाम से डोरा बाधने से स्वस्थ हो गया, तो मैं क्यो नही होऊंगी।'

६६. अग्रगण्या—साध्वी पानकुमारीजी (पचपदरा)

सहयोगिनी—साध्वी धनकुमारीजी (सरदार०) दीपाजी (श्रीडूगर०) हेमश्रीजी (देवरिया) प्रमोदश्रीजी (पचपदरा) विजयप्रभाजी (बालोतरा)

चातुर्मास—भीलवाड़ा, राज०

यात्रा—२५० कि० मी०, क्षेत्र—२५

मंत्र दीक्षा—५०, सम्यक्त्व दीक्षा—१६०, व्रत दीक्षा—१, अणुव्रती—२००, वर्गीय अणुव्रती—४००, शीलव्रत—१ (धरमचन्दजी दक), प्रतिक्रमण—५

पानकुमारीजी $\frac{1}{53}$ $\frac{3}{4}$, स्वा० १,००,००० गा०

धनकंवरजी $\frac{1}{33}$, वाचन—२००० पृ०, स्वा० ३०० गा०

दीपाजी $\frac{1}{94}$, वाचन—२०० पृ०, स्वा० ३०० गा०

विजयप्रभाजी $\frac{1}{25}$, वाचन—१०००, स्वा०—३०० गा०

भाई-बहिनो मे—$\frac{8}{2}$ एकान्तर—२६; बारी के उपवास—१६, आयं० ५७

- चिताम्बा, भीम, भीलवाडा की स्कूलों मे अणुव्रत कार्यक्रम।

- मांडल पंचायत समिति के पूरे स्टॉफ के बीच साध्वीश्री का प्रवचन।
- भीलवाड़ा के अतिरिक्त जिलाधीश श्री वंशीलाल शर्मा, डा० चौहान; प्रो० प्रीतमचन्द वागरेचा, विधायक विहारीलालजी पारीक आदि विशिष्ट व्यक्ति साध्वीश्री से मिले।
- नवभारत टाइम्स, राजस्थान पत्रिका, क्रान्ति, तरुण संदेश, लोकजीवन आदि पत्रो मे यदा-कदा कार्यक्रम के समाचार प्रकाशित।

६७. अग्रगण्या—साध्वी गुलाबांजी [भादरा]

सहयोगिनी—साध्वी भत्तूजी, ज्योतिप्रभाजी (भादरा) धर्मप्रभाजी (राजगढ़) संयमलताजी (बाड़मेर)

चातुर्मास—धोईन्दा, जि० उदयपुर, राज०

मंत्र दीक्षा—३१, सम्यक्त्व दीक्षा—१२१

भाई-वहिनो मे—$\frac{१}{४०५}$ $\frac{२}{२२}$ $\frac{३}{२८}$ $\frac{४}{३}$ $\frac{५}{१०}$ $\frac{६}{२}$, एकान्तर—१०, उपवास की वारी—४

- धोईन्दा मे धोईन्दा, कांकरोली व राजसमंदवासियों द्वारा सामूहिक खमतखामना समारोह, इस अवसर पर तीनों क्षेत्रों की चातुर्मासिरत साध्वियां उपस्थित थी।

६८. अग्रगण्या—दीर्घ तपस्विनी साध्वी पन्नांजी (देरासर)

सहयोगिनी—साध्वी विजयश्रीजी (सरदार०), धर्मवतीजी, ऊर्मिलाकुमारीजी, इलाकुमारीजी (गंगा०)

चातुर्मास—चारभुजा (गड़वोर), जि० उदयपुर, राज०

पन्नांजी—$\frac{२}{७}$ $\frac{३}{३}$ $\frac{८}{१}$ $\frac{२१}{१}$, एकान्तर निरन्तर चलते हैं।

धर्मवतीजी—$\frac{१}{५०}$ $\frac{२}{३}$ $\frac{३}{१}$

उर्मिलाजी—$\frac{१}{२९}$ $\frac{२}{१}$

इलाजी—$\frac{१}{३१}$ $\frac{२}{११}$ $\frac{३}{३}$ $\frac{६}{१}$

भाई-वहिनों में—$\frac{१}{७००}$ $\frac{२}{७०}$ $\frac{३}{५१}$ $\frac{४}{५}$ $\frac{५}{५}$ $\frac{७}{३}$ $\frac{८}{२१}$ $\frac{९}{४}$ $\frac{१०}{१}$ $\frac{११}{२}$ $\frac{१५}{१}$ एकान्तर—१६, सामू० आयं—६०; वारी के उपवास—७

- अखिल मेवाड़स्तरीय महिला मंडल का वार्षिक अधिवेशन, उसमें ३०० प्रतिनिधि वहिनों ने भाग लिया।
- कवि सम्मेलन का आयोजन, कवि श्री माधव दरक द्वारा शानदार कविता की प्रस्तुति।
- अनेक विद्यालयों मे अणुव्रत कार्यक्रम।
- पड़ासली मे वर्षो से एक विवाद चल रहा था। साध्वीश्री की प्रेरणा व प्रयास से वह खत्म हो गया।

६९. अग्रगण्या—साध्वी रायकुमारीजी [राजल०]

सहयोगिनी—साध्वी कानकुमारीजी (राजल०), मदनश्रीजी (बीदासर)
अणिमाश्रीजी (मोमासर), संघप्रभाजी (राजल०)

चातुर्मास—केलवा, जि० उदयपुर, राज०

सम्यक्त्व दीक्षा—१३१, व्यसनमुक्त—१५१, पच्चीस बोल—३५; प्रतिक्रमण—१५, कालू तत्त्व शतक—७१, वर्गीय अणुव्रती—३००

	तप	वाचन पृ०	कंठस्थ गा०	जप	मौन	स्वाध्याय गा०
रायकुमारीजी—	$\frac{३}{१}$	२५००	—	१ घं०	—	१,६४,१००
कानकुमारीजी—	$\frac{१}{२६}$ $\frac{२}{१}$	२०००	५००	१ घं०	—	३,२०,३००
मदनश्रीजी—	$\frac{१}{२८}$ $\frac{३}{१}$	२१००	१००	३० मि०	१ घं०	९८००
अणिमाश्रीजी—	—	३०००	१०००	३० मि०	१ घं०	३,५२,१००
संघप्रभाजी—	$\frac{१}{८}$	३३००	१०००	३० मि०	१ घं०	१,९१,३००

भाई-बहिनों मे—$\frac{१}{१५००}$ $\frac{२}{४५}$ $\frac{३}{३१}$ $\frac{४}{५}$ $\frac{५}{१५}$ $\frac{६}{१}$ $\frac{८}{१३}$ $\frac{९}{१}$, उपवास की वारी—९, एकान्तर—१३, वर्षीतप—४

कार्यक्रम

- ० २० नव. ८६ को तुलसी साधना शिखर, राजसमंद में साध्वीश्री की सन्निधि में मेवाड कान्फ्रेस का सेतीसवां अधिवेशन आयोजित।
- ० आतमा मे अक्षय तृतीया समारोह, श्रीमती लहरीबाई ने वर्षीतप का पारणा किया।
- ० केलवा में अभिनिष्क्रमण दिवस व महावीर जयन्ति का आयोजन।
- ० सापोल मे साध्वियो की प्रेरणा से अनेक राजपूतो ने हिंसा त्यागी।
- ० चातुर्मास मे साध्वियो के निर्देशन मे अनेक शिविर आयोजित।
- ० तेरापंथ स्थापना दिवस का अंधेरी ओरी मे आयोजन।
- ० विभिन्न स्कूलो मे अणुव्रत छात्र सप्ताह।

जप का अचूक प्रभाव

घाटा (गजपुर) में साध्वी संघप्रभाजी को रात्रि में करीब साढ़े ग्यारह वजे एक जहरीले विच्छू ने काट खाया। दाहिने पैर के अंगुठे पर तीक्ष्ण डंक लगाते ही पूरे शरीर में असह्य वेदना एवं अगारे की भाति तीव्र जलन होने लगी। रात्रि के समय औषध आदि लेना जैन साधु के लिए अकल्पनीय है। अव क्या उपचार किया जाए? सभी साध्वियां उठी और 'ॐ भिक्षु' का जप करने लगी। लगातार तीन घंटे तक जप चलता रहा। यह स्वामीजी के नाम का ही अचूक प्रभाव था कि पूरा जहर उतर गया और रात को दो वजे उन्हें अच्छी तरह नीद आ गई। प्रात. वे एकदम स्वस्थ हो गई। प्रातः कुछ

श्रावक मंत्रविदों एवं चिकित्सको को उपचार हेतु लाए, किन्तु साध्वीश्री ने कहा—'हमारा उपचार तो स्वामीजी ने कर दिया है।' साध्वीश्री के मुख से जप की घटना सुनकर सभी विस्मित हो गए।

७०. अग्रगण्या—साध्वी राजकुमारीजी [नोहर]

सहयोगिनी—साध्वी जतनकुमारीजी (भेंसाणा), राजवतीजी (श्रीडूगर०), सोमयशाजी (गंगा०)

चातुर्मास—पदराड़ा, जि० उदयपुर, राज०

मंत्र दीक्षा—३५, पर्युपण में अखंड जप।

भाई-बहिनों मे—$\frac{१}{३९३}$ $\frac{२}{२३}$ $\frac{३}{१९}$ $\frac{४}{७}$ $\frac{८}{९}$, उपवास की वारी ६, एकान्तर—७, सामू० आयं—९५

० पदराड़ा में अमृत भारती पब्लिक स्कूल का विधिवत् संचालन।

७१. अग्रगण्या—साध्वी आनन्दकुमारीजी (मोमासर)

सहयोगिनी—साध्वी विदामांजी, भीखांजी (पीपली) वासुमतीजी, उज्ज्वलरेखाजी (सरदार०)

चातुर्मास—नाथद्वारा, जि० उदयपुर, राज०

० पर्युपण में अखंड जप।

० भाई-बहनो मे—$\frac{१}{७२८}$, $\frac{२}{५१}$, $\frac{३}{८५}$, $\frac{४}{८}$, $\frac{५}{३}$, $\frac{८}{४}$ वर्षीतप—१

७२. अग्रगण्या—साध्वी संतोकांजी (राजगढ़)

सहयोगिनी—साध्वी गुलावांजी (सरदार०), धनकुमारीजी (लाडनू) शशिकलाजी (हांसी)

चातुर्मास—थामला, जि० उदयपुर, राज०

मंत्र दीक्षा—९, सम्यक्त्व दीक्षा—१०१, गुरु धारणा-४, पच्चीस वोल—१५

संतोकांजी—$\frac{१}{९१}$, $\frac{२}{९}$, स्वा० १००० गा० प्रति०

गुलावांजी—$\frac{१}{४३}$, $\frac{२}{१}$ कंठस्थ—५०० गा०, जप—सवा अठारह लाख

धनकुमारीजी—$\frac{१}{५१}$, कंठस्थ—५०० गा०

शशिकलाजी—$\frac{१}{३१}$, कठस्थ—१२०० गा०, स्वा०—५०० गा० प्रति

सामूहिक वाचन—७००० पृ०

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{९३१}$, $\frac{२}{१०}$, $\frac{३}{२२}$, $\frac{८}{५}$, एकान्तर—१२, वारी के उपवास—६, आयं-१५१, वर्षीतप—१

० पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन।

० थामला में महावीर जयंति समारोह। मेवाड़ प्रवर्तक स्था० आचार्य अंबालालजी व साध्वीश्री की संयुक्त सन्निधि।

७३. अग्रगण्या—साध्वी सुखदेवांजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी भीखाजी (सुजान०), चांदकुमारीजी (रतननगर), मधुवालाजी (मोमासर), विज्ञानश्रीजी (सुजान०)

चातुर्मास—रीछेड, जि० उदयपुर, राज०

यात्रा—५१ कि० मी; क्षेत्र—५

मंत्रदीक्षा—३१, सम्यक्त्व दीक्षा—१०७, व्रत दीक्षा—५, प्रतिक्रमण-१५, पच्चीस वोल—२५

साध्वियो मे कुल तपस्या—$\frac{१}{६१}$, वाचन—आगम-आयारो, सूयगडो आदि। संघीय साहित्य—शासन समुद्र, भिक्षु विचार दर्शन, तीर्थंकर चरित्र आदि। मधुवालाजी व विज्ञानश्रीजी ने स्वा० क्रमश—५००, ३०० गाथा की की।

भाई-वहिनो मे—$\frac{८}{१२}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१५}{१}$ पचरंगी—३

श्रीमती दुलीचंद मादरेचा ने मासखमण की तपस्या की

- त्रिदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी—२५

७४. अग्रगण्या—साध्वी सूरजकुमारीजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी विजयश्रीजी, साधनाश्रीजी (सरदार०), विमलप्रभाजी (वीदासर), सन्मतिश्रीजी (सरदार०)

चातुर्मास—आमेट, जि० उदयपुर, राज०

यात्रा—४५० कि० मी०; क्षेत्र—४१

मंत्र दीक्षा—९०, सम्यक्त्व दीक्षा—१७, श्रमणोपासक दीक्षा-२१, प्रतिक्रमण—४१, थोकडा-१८, पच्चीस वोल ६१, भक्तामर—४१

सूरजकुमारीजी—$\frac{१}{३६}$, $\frac{२}{१}$ विजयश्रीजी—$\frac{१}{३०}$, $\frac{२}{१}$ साधनाश्रीजी—$\frac{१}{६१}$, $\frac{५}{२}$ विमलप्रभाजी—$\frac{१}{३६}$, सन्मतिश्रीजी—$\frac{१}{३३}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{४}{१}$

भाई-वहिनो मे—$\frac{१}{२०००}$, $\frac{२}{१३१}$, $\frac{३}{१०५}$, $\frac{४}{१७}$, $\frac{५}{१६}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{८}{११}$, $\frac{९}{२}$ एकान्तर—३५, वारी के उपवास-३६, सामू० आयं०-२५१

- विभिन्न विद्यालयों मे अणुव्रत कार्यक्रम।
- समण सिद्धप्रज्ञजी व उपासक मानवमित्रजी का स्थानीय जनता द्वारा अभिनन्दन।

७५. अग्रगण्या—साध्वी इन्दूजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी रायकंवरजी (सुजान०), पूनांजी (सुजान०), लिछमाजी (गगा०), मर्यादाश्रीजी (गोगुन्दा)

चातुर्मास—देवगढ, जि० उदयपुर, राज०

यात्रा—२५० कि० मी; क्षेत्र—२८

मंत्र दीक्षा—२१, सम्यक्त्व दीक्षा-१०२, श्रमणोपासक दीक्षा-१६, व्रत दीक्षा—११, प्रतिक्रमण-१६, भक्तामर—७, पच्चीस बोल-२१

इन्द्रूजी—$\frac{१}{१९}$, पूनाजी $\frac{१}{१९}$, $\frac{५}{१}$

मर्यादाश्रीजी $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$ एकान्तर—३ माह

पूनांजी—$\frac{३}{४}$ एकान्तर—२$\frac{१}{२}$ माह

साध्वियों मे कुल वाचन आगम—२००० पृ०, अन्य साहित्य—३७,००० पृ०

भाई-बहिनो मे $\frac{१}{९८३}$, $\frac{२}{२४}$, $\frac{३}{२८}$, $\frac{४}{७}$, $\frac{५}{१०}$, $\frac{८}{८}$, उपवास की वारी –५, आयं-३३८

० तीन दिनों का तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी—४६

० कुंदवा ग्राम मे पंचदिवसीय शिविर, शिविरार्थी —२१

० देवगढ की सात स्कूलो मे साध्वीश्री के प्रवचन ।

० देवगढ मे श्री हस्तीमल सेठिया वर्षों से ज्ञानशाला व शिविर संचालन में सलग्न है ।

७३. अग्रगण्या—साध्वी लक्ष्मीकुमारीजी (सादुलपुर)

सहयोगिनी—साध्वी ज्ञानांजी, जेठांजी, सज्जनश्रीजी (सादुल०)

चातुर्मास—काकरोली, जि० उदयपुर, राज०

यात्रा—७०० कि० मी०, क्षेत्र-३५

मंत्र-दीक्षा—६०, सम्यक्त्व दीक्षा-१००, गुरु धारणा-१५, श्रमणोपासक दीक्षा-२, व्रत दीक्षा-२०, प्रतिक्रमण-३, भक्तामर-१

लक्ष्मीकुमारीजी—$\frac{१}{४१}$, $\frac{२}{१}$, $\frac{३}{१}$, आयं-११, वाचन-आगम-१०० पृ०, संघीय व अन्य—२२०० पृ०, जप व मौन-१-१ घं०

ज्ञानांजी—वाचन आ०-१००० पृ०, अन्य-२७०० पृ०, मौन-२ घं०

जेठांजी—$\frac{१}{३१}$ वाचन-आ० १००० पृ०, संघीय—५०० पृ०, मौन ३ घं० ।

सज्जनश्रीजी—$\frac{१}{३५}$, $\frac{२}{१}$ वाचन-आ०-१००० पृ०, संघीय-२००० पृ०, कंठस्थ-५०० गा०, मौन व जप १-१ घं०

भाई-बहिनों मे—$\frac{१}{१५००}$, $\frac{२}{२५}$, $\frac{३}{१९}$, $\frac{४}{३}$, $\frac{५}{९}$, $\frac{८}{९}$, $\frac{१३}{१}$, वर्षीतप-६, आयं—१७१

कार्यक्रम

० तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—२, पहला रेलमगरा में त्रिदिवसीय शिविर, शिविरार्थी—४१, दूसरा कांकरोली में पंचदिवसीय, शिविरार्थी-४५ ।

० तुलसी साधना शिखर पर पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर में ३४ जनों

ने भाग लिया।

- ० रजियापुरा व कांकरोली स्कूल में साध्वीश्री का प्रवचन।
- ० तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन उपजिलाधीश श्री मीठालाल लोढ़ा ने किया।
- ० कुआथल में महावीर जयंति कार्यक्रम की अध्यक्षता ग्रामीण बैंक के मैनेजर श्री प्रल्हादराय मीणा ने की।
- ० कांकरोली मे मुन्सिफ मजिस्ट्रेट श्री नागोरी ने एक भाषण प्रतियोगिता का उद्घाटन किया।
- ० रेलमगरा में बख्तावरमल मेहता व भंवरलाल मेहता के बीच १२ वर्षों से मनमुटाव था, अनबोल थे। ५ जून से साध्वीश्री की प्रेरणा से दोनों ने अपने मनोमालिन्य को धो दिया।
- ० रतनगढ मे युवाचार्यश्री ने साध्वीजी को एक सन्देश प्रदान किया।
- ० कांकरोली के श्री कन्हैयालाल सोनी (सपरिवार) ने दो माह आचार्यवर की उपासना का लाभ लिया।

७७. अग्रगण्या—साध्वी कंचनकुमारीजी (उदयपुर)

सहयोगिनी—साध्वी गुलाबांजी (सरदार०) श्रद्धाश्रीजी (उदयपुर) विजयमालाजी (कालू) प्रज्ञाश्रीजी (तासोल)

चातुर्मास—उदयपुर, राज०

यात्रा—५५० कि० मी०; क्षेत्र—३३

मंत्र दीक्षा—१५, सम्यक्त्व दीक्षा-५, श्रमणोपासक दीक्षा-१८, व्रत दीक्षा-४

कंचनकुमारीजी $\frac{१}{२४}$ श्रद्धाश्रीजी $\frac{१}{१२}$ प्रज्ञाश्रीजी $\frac{१}{२६}$ साध्वियों मे कुल वाचन-५००० पृ०

भाई-बहिनों में—$\frac{१}{हजारों}$ $\frac{२}{२५०}$, $\frac{३}{१०५}$, $\frac{४}{७}$, $\frac{५}{१०}$, $\frac{६}{५}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{१५}$, $\frac{९}{४}$, $\frac{१०}{१}$, $\frac{११}{२}$ एकान्तर—५२, उपवास की वारी-१४

पांच तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर लगे। पर्युषण मे अखंड जप।

उदयपुर की कई स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रम।

७८. अग्रगण्या—साध्वी रतनश्रीजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी विदामांजी (खिवाड़ा) रमावतीजी (बीदासर) हिमश्रीजी (सरदारशहर)

चातुर्मास—गंगापुर, जि० भीलवाड़ा, राज०

यात्रा—२०८ कि० मी०, क्षेत्र-३३

मंत्रदीक्षा—८००, सम्यक्त्व दीक्षा-१००, शीलव्रत-२

रतनश्रीजी—१/१३, वाचन—५००० पृ०, जप-१ घं०

रमावतीजी—वाचन—५००० पृ०, कंठस्थ-१२०० गा०, स्वा०-३००

हिमश्रीजी-वाचन—२००० पृ०, कंठस्थ-५००, ॐ भिक्षु का सवा लाख जप।

भाई-बहिनों मे—१/१४००, ८/९, आयं-१२५, रात्रि भोजन त्याग-२५, सचित्त त्याग-१५

- ० पंचदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी-३०
- ० शिक्षक सम्मान समारोह।
- ० आचार्य तुलसी अमृत महाविद्यालय निर्माणारंभ समारोह का आयोजन।

७९. अग्रगण्या—साध्वी आनंदश्रीजी (गंगा०)

सहयोगिनी—साध्वी लीलावतीजी (केसूर), गुणप्रभाजी (वाव), रजतरेखाजी (लाडनू), प्रवलयशाजी (छापर)

चातुर्मास—राजसमंद, जि०-उदयपुर, राज०

मंत्र दीक्षा—८०, साध्वी लीलावतीजी ने दस की तपस्या की।

सामू०, आयं—८०, उपवास की वारी-७

श्रीमती पुष्पा वागरेचा ने मासखमण किया।

प्रमाण पत्र वितरण समारोह मे अतिरिक्त जिला शिक्षाधिकारी ने भाग लिया।

८०. अग्रगण्या—साध्वी स्वयंप्रभाजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी इंदिराजी (सरदार०) लब्धिप्रभाजी (टिटिलागढ़)

चातुर्मास—दिवेर, जि० उदयपुर, राज०

मत्रदीक्षा—३१, सम्यक्त्व दीक्षा-१०१, पच्चीस बोल-२०, प्रतिक्रमण-१०, तत्त्व चर्चा-२, शीलव्रत-३ (भेरूलालजी नाहर, लक्ष्मीलालजी डागा व राजमलजी सोलंकी)

स्वयंप्रभाजी १/२४, वाचन—६७०० पृ०, मौन १ घं०, स्वा-२ लाख, जप-सवा लाख 'ओम् भिक्षु' का

इंदिराजी—१/९, वाचन-४५०० पृ०, मौन १ घ०, स्वा २ लाख, जप-नवकार व ओम् भिक्षु का सवा-सवा लाख

लब्धिप्रभाजी १/१६, वाचन-७५०० पृ०, मौन-१ घं०, विशेष जप अनुष्ठान। स्वा०-२,५०,००० गा;

भाई-बहिनों मे—१/७००, २/२६, ३/१५, ४/९, ५/१३, ६/१, ७/१, ८/१९

कार्यक्रम

- ० पर्युषण मे अखड जप।

- अवधान कार्यक्रम, जिसमे अनेक बुद्धिजीवी उपस्थित ।
- भीलवाडा में भारत जैन महामडल द्वारा महावीर जयंति कार्यक्रम, जिसमे साध्वीश्री के अलावा स्थानकवासी मुनि महेन्द्रजी 'कमल' एवं साध्वी जसकंवरजी आदि ३५ साध्वियां थी ।
- पाली मे मुनि बुद्धमलजी के सान्निध्य मे आयोजित मर्यादा महोत्सव समारोह मे साध्वीश्री सम्मिलित ।

८१. अग्रगण्या—साध्वी रायकुमारीजी (चाड़वास)

सहयोगिनी—साध्वी भीखांजी (राजल०) विद्याकुमारीजी (सिसाय) संयमप्रभाजी (हांसी), नम्रयशाजी (सिसाय)

चातुर्मास—डीडवाना, जि० नागौर, राज०

यात्रा—२१ कि० मी०, क्षेत्र-२

मत्र दीक्षा—५१, सम्यक्त्व दीक्षा-१०१, व्रत दीक्षा-५, जैन धर्म दीक्षा-५, प्रतिक्रमण व भक्तामर-१

रायकुमारीजी—$\frac{१}{४२}$, $\frac{२}{९}$ आयं० ३८, स्वा०-७००० गा०, मौन-५ घं०

भीखांजी—$\frac{१}{६१}$, $\frac{३}{३}$, स्वा०-५०००, मौन-४ घ०

विद्याकुमारीजी—$\frac{१}{६५}$, $\frac{२}{२}$, स्वा-७००, मौन-३ घ०

संयमप्रभाजी—$\frac{१}{५१}$, स्वा-१३०० गा०

नम्रयशाजी—$\frac{१}{१५}$, स्वा-२००, मौन-१ घ०

रायकुमारीजी व भीखांजी ने नमस्कार महामत्र का क्रमश: सात लाख व पांच लाख जप किया । चौवीस तीर्थंकरो का पृथक्-पृथक् सवा-सवा लाख जाप किया । अनेक सघीय पुस्तकों का वाचन किया । ध्यान का प्रयोग भी चला ।

भाई-बहिनों मे $\frac{१}{५०९}$, $\frac{२}{६}$, $\frac{३}{७}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{५}{९}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{८}{८}$, $\frac{९}{७}$, $\frac{११}{९}$, आयं-५१

एक माह से अधिक केन्द्र की उपासना करने वाले—श्री कोमलचद सिंघवी, श्रीमती केसरबाई घोडावत, श्रीमती मनोहरीबाई घोड़ावत ।

आचार्यवर, युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाजी ने दिल्ली से विशेष संदेश प्रदान किए ।

८२. अग्रगण्या—साध्वी सिरेकुमारीजी (श्रीडूंगर०)

सहयोगिनी—साध्वी केसरजी (श्रीडूगर०), लालांजी (पेटलावद), मनोहरांजी (जयपुर), कुशलरेखाजी (सरदार०), काव्यलताजी (गादाणा)

चातुर्मास—बालोतरा, जि० बाडमेर, राज०

मंत्र दीक्षा ३००, सम्यक्त्व दीक्षा-३१, श्रमणोपासक दीक्षा-२१, व्रत दीक्षा-२१, जैन धर्म दीक्षा-१, प्रतिक्रमण, थोकडा आदि-२०१, शिविर-७,

अणुव्रती-२५, वर्गीय अणुव्रती-७००

सिरेकुमारीजी—$\frac{१}{५}$ वाचन-४००० पृ०

केसरजी—$\frac{१}{३}$, वाचन-१००० पृ०

लालांजी—$\frac{१}{५}$, आयं-११, वाचन-४००० पृ०

मनोहराजी—$\frac{१}{५}$, आयं-५, वाचन-२००० पृ०

कुशलरेखाजी—$\frac{१}{१६}$, आयं-३, वाचन-२००० पृ०

काव्यलताजी—$\frac{१}{४१}$, $\frac{२}{६}$, $\frac{३}{७}$, आय-५, वाचन-५००० पृ०

साध्वियों में जप के प्रयोग भी चले ।

भाई-बहिनो में—$\frac{३}{१२१}$, $\frac{५}{५१}$, $\frac{८}{२५}$, $\frac{११}{२}$

- मारवाड जंक्शन में मर्यादा महोत्सव ।
- तेरह स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रम ।
- बालोतरा मे मूर्तिपूजक समाज के बीच साध्वीजी का प्रवचन ।
- प्रथम बार सिवाणची-मालाणी महिला सम्मेलन ।
- समणो के निर्देशन मे शिविर का आयोजन ।
- श्रीमती चम्पाबाई, श्रीमती बादरमल, श्रीमती केवलचंद कोठारी ने एक माह से अधिक केन्द्र की उपासना की ।

८३. अग्रगण्या—साध्वी मोहनकुमारीजी (राजगढ़)

सहयोगिनी—साध्वी मालूजी (मोमासर), कनकश्रीजी (राजगढ), धर्मयशाजी (बीदासर)

चातुर्मास—बाडमेर, राज०

यात्रा—३२६ कि.मी.; क्षेत्र-११

मंत्र दीक्षा—३३, अणुव्रती—५६, थोकडे—६५

साध्वियो मे कुल-तपस्या—$\frac{१}{८१}$, $\frac{२}{७}$, $\frac{३}{७}$, $\frac{५}{१}$ आय.-२०, एकातर-२ माह

वाचन-आगम—३००० पृ०, संघीय व अन्य—१५०० पृ०

चारो साध्वियां प्रतिदिन क्रमशः २००, ३००, ५०० व ३०० गाथाओं का स्वाध्याय करती है ।

भाई-बहिनो मे $\frac{१}{१०००}$, $\frac{२}{१०७}$, $\frac{३}{२१}$, $\frac{४}{१६}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{८}{८}$, वर्षीतप-३, एकान्तर-२१, बेले-बेले तप-१, आयं.-१४१

- नवदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी—५५
- साध्वीश्री की सन्निधि मे आयोजित एक अणुव्रत कार्यक्रम मे जिलाधीश श्री राजेन्द्र जैन व अतिरिक्त जिलाधीश श्री मूलचंद आर्य ने भाग लिया ।

८४. अग्रगण्या—साध्वी हर्षकुमारीजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी लिछमांजी, मनोहराजी (सरदार०), प्रभाश्रीजी

(वाव)

चातुर्मास—ईडवा, जि०-नागौर, राज०

यात्रा—२४० कि० मी०; क्षेत्र-९

पच्चीस बोल—२६, प्रतिक्रमण-१५, भक्तामर-३

साध्वियों मे सामू० वाचन—दशवै०, उत्तरा०, आयारो, ठाणं आदि।

श्री जयचंदलाल कोठारी ने (सपरिवार) दिल्ली में एक माह आचार्यवर की उपासना की।

८५. अग्रगण्या—साध्वी कमलाकुमारीजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी छगनांजी (फतेहपुर), लिछमाजी (सरदार०), मोहनाजी, विजयकंवरजी (छापर), कुमुदयशाजी (लाडनू)

चातुर्मास—अपाढा, जि०-बाडमेर, राज०

यात्रा—४५० कि० मी०; क्षेत्र-११

सम्यक्त्व दीक्षा—२५, प्रतिक्रमण—९, शीलव्रत—१ (श्री नेमीचंद भसाली)

लिछमाजी—$\frac{२}{५}$, $\frac{३}{१}$, $\frac{४}{१}$, $\frac{५}{१}$, एकातर-२ माह, प्रथम प्रहर निरन्तर

सभी साध्वियो मे 'ओम् भिक्षु' के विशेष जप अनुष्ठान, सामू० जप—पार्श्वनाथ का; वाचन—ठाण, दशवैकालिक, तीर्थंकर चरित्र आदि।

भाई-वहिनो मे—$\frac{५}{८६०}$, $\frac{२}{६०}$, $\frac{३}{१६}$, $\frac{३}{१६}$, $\frac{४}{१०}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{२}$, उपवास की वारी-५, वर्षीतप-२, (श्रीमती खम्मादेवी, अणसीदेवी) वेले-वेले तप-१,

८६. अग्रगण्या—साध्वी चांदकुमारीजी (जोधपुर)

सहयोगिनी—साध्वी सज्जनाजी (सेवंतरी), मूलाजी (सुजान०), मदनकवरजी (उज्जैन), अर्हत्प्रभाजी (सरदार०)

चातुर्मास—जाटावास-जोधपुर, राज०

यात्रा—२८० कि०मी०, क्षेत्र-११

सम्यक्त्व दीक्षा—२९, प्रतिक्रमण-५

चादकंवरजी—$\frac{१}{१७}$, कठस्थ-३००, वाचन-७०० पृ०, जप-३० मि०

सज्जनाजी—कंठस्थ-१००, जप-सवा लाख नवकार मंत्र

मूलाजी—वाचन १७०० पृ०, कंठस्थ-१००, जप-३० मि०

मदनकंवरजी—$\frac{१}{२५}$, $\frac{२}{१}$, वाचन-२०० पृ०, कंठस्थ-३००, जप-३० मि०

अर्हत्पभाजी—$\frac{१}{२०}$, $\frac{२}{१}$, एकातर-१ माह, वाचन-१००० पृ०; कंठस्थ-४०० गा०

सामूहिक वाचन मे ठाण, जैन तत्त्व विद्या, दीपिका आदि।

भाई-वहिनो मे—$\frac{२}{४०}$, $\frac{३}{३६}$, $\frac{४}{८}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{८}{५}$, $\frac{६}{१}$ $\frac{१०}{१}$, $\frac{१५}{२}$

- जोधपुर मे त्रिदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी-२५
- राजमहल स्कूल मे साध्वीश्री का प्रवचन।
- जयनारायण व्यास टाऊन हॉल मे साध्वीश्री की सन्निधि में महावीर विकलांग समिति व तेरापंथ महिला मंडल का सयुक्त कार्यक्रम।
- न्याती नोहरे मे विश्व मैत्री दिवस का आयोजन।

८७. अग्रगण्या—साध्वी सुखदेवांजी (चूरू)

सहयोगिनी—साध्वी भत्तूजी (सरदार०), मानकंवरजी (टमकोर), धनश्रीजी, शुक्लप्रभाजी (सरदार०), पुण्ययशाजी (बीदासर)

चातुर्मास—जसोल, जि०-बाडमेर, राज०

यात्रा—४७५ कि. मी०; क्षेत्र-१५

मत्र दीक्षा-३१, सम्यक्त्व दीक्षा-३५, श्रमणोपासक दीक्षा-१३, व्रत दीक्षा-२५, पच्चीस बोल-११, प्रतिक्रमण-११, तत्त्वचर्चा-१६, भक्तामर-१६, चौबीसी-१५

सुखदेवांजी—वाचन-७०० पृ०

भत्तूजी—$\frac{१}{४८}$, $\frac{२}{२}$, $\frac{३}{२}$, $\frac{४}{१}$, आयंबिल मासखमण-१, स्वा.—१३०० गा०

मानकवरजी—$\frac{१}{७}$ आयं-७, स्वा.-७००

धनश्रीजी—वाचन-२००० पृ०

शुक्लप्रभाजी—$\frac{१}{३३}$, आयं-२, वाचन-१७०० पृ०, कंठस्थ-२०००, स्वा०-३०० गाथा

पुण्ययशाजी—आय०-२०, वाचन-३००० पृ०, कठस्थ-३००, स्वा०-३०० गाथा

सभी साध्वियो मे 'ओम् भिक्षु' व 'पार्श्व' का सवा-सवा लाख जप का विशेष अनुष्ठान हुआ।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{४५९३}$, $\frac{२}{३५५}$, $\frac{३}{९४६}$, $\frac{४}{४०}$, $\frac{५}{३३}$, $\frac{६}{५}$, $\frac{८}{२२}$, $\frac{९}{५}$, $\frac{१०}{९}$, $\frac{११}{१}$, $\frac{१५}{२}$, एकांतर-७३, बेले-बेले-२, तेले-तेले-१, वर्षीतप-२, बेले-बेले वर्षीतप-२

चातुर्मास में घर-घर 'ओम् अभिराशिको नमः' जप का अनुष्ठान चला। चौदहवर्षीया राजपूत कन्या भूरी ने अठाई की।

- जसोल मे तत्त्वज्ञान व प्रेक्षाध्यान शिविर, जिनमे क्रमशः ६१, ४१ शिविरार्थियो ने भाग लिया।
- जसोल मे हाईस्कूल, कन्या पाठशाला व हरिजन बस्ती में अणुव्रत कार्यक्रम।
- मूर्तिपूजक साध्वी मदनश्रीजी साध्वीश्री से सांवत्सरिक क्षमायाचना करने हेतु बालोतरा से जसोल गई।

८८. अग्रगण्या—साध्वी क्षमाश्रीजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी सिरेकुमारीजी (सरदार०), कैलाशवतीजी (सिसाय), पंकजश्रीजी (लाडनू)

चातुर्मास—चांदारूण जि०-नागौर, राज०

सिरेकुमारीजी ने चार की तपस्या की

भाई-बहिनो मे—१/५२५, २/१३, ३/८२, ४/८, ८/३, ६/१

हायर सैकेण्ड्री व गर्ल्स स्कूल मे अणुव्रत कार्यक्रम।

८९. अग्रगण्या—साध्वी सुबोधकुमारीजी (बीदासर)

सहयोगिनी—साध्वी सुंदरजी (श्रीडूंगर०), केशरजी (नोहर), कंचनकंवरजी (खाटू), सुदर्शनाश्रीजी (सरदार०)

चातुर्मास—जोजावर, जि० पाली, राज०

यात्रा—१३० कि० मी०; क्षेत्र-१२

मंत्र दीक्षा—२००, सम्यक्त्व दीक्षा-५०, व्रत दीक्षा-१०, गुरु धारणा-५, प्रतिक्रमण-२५, पच्चीस बोल-५१, वर्गीय अणुव्रती-५००, व्यसनमुक्त-३००

सुबोधकुमारीजी—वाचन-४००० पृ०; कंचनकंवरजी-२००० पृ०; सुदर्शनाश्रीजी-३००० पृ०

सभी साध्वियो मे—१/१५५, ३/५; विशेष जप अनुष्ठान चला।

भाई-बहिनो में—१/५०८, २/२६, ३/१५, ५/१०, ८/५

- पाली व जोजावर मे क्रमशः प्रेक्षाध्यान व संस्कार-निर्माण शिविर।
- स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रम।

९०. अग्रगण्या—साध्वी गुलाबकुमारीजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी फूलकुमारीजी (नोहर), रायकुमारीजी (श्रीडूगर०), लघिमाश्रीजी (श्रीडूगर०), हेमरेखाजी (लाडनू)

चातुर्मास—राणी, जि०-पाली, राज०

व्रत दीक्षा—१५, अणुव्रती-१५००

साध्वियों मे कुल तप—१/१५५, २/३, ३/२।

भाई-बहिनों मे—१/५५१, २/५६, ३/४१, ४/३१, ५/२१, ८/४, ११/१, एकान्तर-७, आयंबिल-२२५, उपवास की वारी-१०

९१. अग्रगण्या—साध्वी मधुस्मिताजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी कल्पनाश्रीजी (आड़सर) सुमनकुमारीजी (छापर) विशुद्धप्रभाजी (लाडनूं)

चातुर्मास—सरदारपुरा-जोधपुर, राज०

यात्रा—३७१ कि० मी०; क्षेत्र-१५

सम्यक्त्व दीक्षा-१५, श्रमणोपासक दीक्षा-५१, प्रतिक्रमण-३

	तपस्या	वाचन	कंठस्थ	स्वाध्याय
मधुस्मिताजी	१/१७	२२२५ पृ०	३०० गा०	१,०८,००० गा०

७५ दिन निरंतर पांच विगय का वर्जन।

	तपस्या	वाचन	कंठस्थ	स्वाध्याय
कल्पनाश्रीजी		१००० पृ०		
सुमनकुमारीजी	१/७७, ३/२	५००० पृ०		
विशुद्धप्रभाजी	१/३०	२३५ पृ०	३०० गा०	७२,००० गा०

भाई-वहिनों में—१/२०००, २/४५, ३/१५, ४/७, ५/४, ८/१, ९/१, ५५/१, एकान्तर-१५, उपवास की वारी-३, सामू० आयं-९०, मिश्रीमलजी भंसाली ने ५५ की तपस्या की।

कार्यक्रम—

- तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, महामंदिर, पीपाड व सरदारपुरा में; शिविरार्थी क्रमशः २१,३१ व ३५ थे। निरन्तर प्रेक्षाध्यान कक्षा।
- राजमहल स्कूल मे नैतिक कार्यक्रम।
- ओसवाल न्याती नोहरे मे सभी जैन संप्रदायों के साधु-साध्वियो का सयुक्त विश्व मैत्री दिवस आयोजित।
- महावीर विकलांग समिति द्वारा कार्यक्रम।
- जलते दीप, ब्लास्ट आदि पत्रों मे समाचार-प्रकाशन।

९२. अग्रगण्या—साध्वी आसांजी (राजल०)

सहयोगिनी—साध्वी मानकुमारीजी (सुजान०), लिछमाजी, सोहनांजी (राजल०), कलाश्रीजी (सुजान०), कल्याणमित्राजी (गगा०)

चातुर्मास—कालू, जि० वीकानेर, राज०,

यात्रा—४०० कि० मी०, क्षेत्र-१३

मंत्र दीक्षा—४०, व्रत दीक्षा-१, प्रतिक्रमण-१५

	तपस्या	स्वा०	वाचन-आगम	संघीय
आसांजी	१/४२, २/६	२.५० लाख	२५०० पृ०	२५०० पृ०
मानकुमारीजी	१/३४	२.३० लाख	३००० पृ०	५५०० पृ०
सोहनांजी	१/३१, २/३, ३/२	३ लाख	१००० पृ०	२५०० पृ०
लिछमाजी	१/८३, २/१	१.५० लाख	१७०० पृ०	१४०० पृ०
कलाश्रीजी		२ लाख	३२०० पृ०	२६०० पृ०
कल्याणमित्राजी	१/८१	२ लाख	३००० पृ०	२७०० पृ०

भाई-वहिनों में—१/९२५, २/२६, ३/१७, ४/७, ५/७, ६/३, ७/१, ८/२, ९/३, आयं-७५

- तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-२, शिविरार्थी क्रमशः—३१ व २१
- श्रीमती जेठीदेवी धाडेवा व भंवरीदेवी राखेचा ने १ माह से ऊपर केन्द्र की उपासना की।

६३. अग्रगण्या—साध्वी संतोकांजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी मघुजी (सरदार०), मानकुमारीजी (चूरू) कमलावतीजी (सुजान०), संयमश्रीजी (रतन०), सुलेखाश्रीजी (हिसार)

चातुर्मास—मोमासर, जि० चूरू, राज०

मंत्र दीक्षा—२१, सम्यक्त्व दीक्षा-११, व्रत दीक्षा-१५, प्रतिक्रमण-१३, थोकड़ा-२५

साध्वियो मे कुल तप-$\frac{१}{१०५}$, $\frac{२}{६}$, $\frac{८}{१}$

वाचन-आगम—३००० पृ०, सघीय साहित्य-२१,००० पृ०

स्वाध्याय—५,४०,००० गाथा, कंठस्थ-१३०० गा०

साध्वी मघुजी ने कंठीतप किया।

भाई-वहिनो मे—$\frac{१}{३०००}$, $\frac{२}{१२५}$, $\frac{३}{५१}$, $\frac{४}{६}$, $\frac{५}{६}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{६}$, $\frac{१५}{१}$ सामू० आयं०—१५५, भाई-वहिनो मे स्वाध्याय व जप के विशेप प्रयोग चले। वर्षीतप-२, एकान्तर-३

पंचादिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी-४१

स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रम।

साध्वी सतोकांजी के लिए मुनि हसराजजी, साध्वी यशोधराजी के साथ दो पृथक्-पृथक् पत्र भेजे, जो क्रमशः २३ नवम्बर, ८६ सुजानगढ तथा ४ जनवरी ८७ कुहाडिया से लिखे थे। पत्रों मे साध्वी संतोकाजी की इस वात के लिए प्रशसा की कि उन्होने माता वदनांजी की वड़ी सेवा की और उन्हें समाधि उपजाई।

गांठ सहज निकल गई मोमासरवासिनी श्राविका मोहनीदेवी संचेती (स्वर्गीय चुन्नीलालजी सचेती की धर्मपत्नी) के उदर पर तीन वर्पो से एक भयंकर गांठ थी। पारिवारिक लोगो ने उनसे आप्रेशन करवाने के लिए वहुत कहा, पर मोहनीदेवी ने इन्कार कर दिया और दृढ निश्चय के साथ कहा कि स्वामी भीखणजी के प्रताप से अपने आप ही ठीक हो जाएगी। कुछ समय वाद इस गाठ पर एक फोड़ा हुआ। व्रण की चिकित्सा चली और साथ में वह गांठ सहज ही निकल गई। ७ वर्पो से मोहनीदेवी वर्षीतप कर रही है। डाक्टरो व पारिवारिक जनों ने तपस्या छोडने के लिए वहुत कहा, पर वह इससे सहमत नही हुई।

९४. अग्रगण्या—साध्वी चांदकुमारीजी [मोमासर]

सहयोगिनी—साध्वी केशरजी (राजल०), आशावतीजी (नोखामंडी), कीर्तियशाजी (गंगा०)

चातुर्मास—देशनोक, जि० वीकानेर, राज०

यात्रा—४७३ कि० मी०; क्षेत्र-१५

सम्यक्त्व दीक्षा—१२३, जैन धर्म दीक्षा-२१, श्रमणोपासक दीक्षा-२७, अणुव्रती १०१, प्रतिक्रमण-४, भक्तामर-१३, शीलव्रत-१ (वावुलालजी सेठिया)

चादकुमारीजी—$\frac{३}{१}$, वाचन-५००० पृ०, स्वा०-६,१५,००० गा०

केशरजी—$\frac{१}{२९}$, $\frac{२}{१}$ वाचन-१३००, कंठस्थ-३०० गा०, स्वा-१३ लाख

आशावतीजी—$\frac{१}{२९}$, वाचन-२००० पृ०, कंठस्थ-३००, स्वा०-७ लाख

कीर्तियशाजी $\frac{१}{२}$, वाचन-१५०० पृ०, कण्ठग्थ-१००० गा०, स्वा-१,५०,००० गा०

सामूहिक वाचन—दसवेआलियं, सूयगडो आदि आगम व संघीय साहित्य; साध्वियों मे जप के विशेप अनुष्ठान चले।

भाई-वहिनो मे—$\frac{१}{१००१}$, $\frac{२}{३३}$, $\frac{३}{५}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{७}{९}$, $\frac{८}{९}$ सामू० आयं० ४६

रासीसर व देशनोक में पंचदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी क्रमश: १७ व ३६

९५. अग्रगण्या—साध्वी मोहनकुमारीजी (डीडवाना)

सहयोगिनी—साध्वी पूनांजी (वीदासर), सुगनाजी (रूणियावास), गुणश्रीजी (लाडनू), गुणप्रेक्षाजी (उदासर)

चातुर्मास—उदासर, जि० वीकानेर, राज०

भाई-वहिनो में—$\frac{१}{८००}$, $\frac{२}{४५}$, $\frac{४}{८}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{६}{२}$, $\frac{७}{१}$, $\frac{८}{४}$, $\frac{९}{१}$, $\frac{१०}{२}$, $\frac{११}{१}$, एकान्तर-१८, वर्षीतप-३, उपवास की वारी-८

९६. अग्रगण्या—साध्वी सोहनकुमारीजी [लाडनूं]

सहयोगिनी—साध्वी कमलूजी (लाडनू), विनयश्रीजी (श्रीडूंगर०), मंजुलताजी (लाडनू)

चातुर्मास—श्रीडूगरगढ, जि०—चूरू, राज०

यात्रा—१२२७ कि० मी०, क्षेत्र-१२

श्रमणोपासक दीक्षा—५०, सम्यक्त्व दीक्षा-८१, गुरु धारणा-६, प्रतिक्रमण-१३, थोकड़ा-३, शीलव्रत-१ (चंद्रभाणजी सिंघी)

साध्वियो मे कुल तपस्या—$\frac{१}{३१}$ $\frac{२}{२}$ वाचन-दसवे; उत्तरा; आयारो आदि। संघीय व अन्य साहित्य-२००० पृ०, विशेष जप-भिक्षु स्वामी, नवकार मंत्र, तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-२; शिविरार्थी-क्रमश. ४१,४६

कई स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रम ।

९७. अग्रगण्या—साध्वी जतनकुमारीजी [राजल०]

सहयोगिनी—साध्वी लिछमांजी (सूरतगढ़), ज्ञानवतीजी (लाडनूं),
संगीतश्रीजी (श्रीडूगर०), शातिप्रभाजी (लाडनूं)

चातुर्मास—सूरतगढ, जि० गंगानगर, राज०

मंत्र दीक्षा ४, त्रिदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी-४०

जतनकुमारीजी १/८; लिछमांजी १/२५; ज्ञानवतीजी १/४

संगीतश्रीजी—१/३१ ४/१, एकान्तर-१ माह

शांतिप्रभाजी १/२६ ३/१, एकांतर-१ माह

भाई-बहिनो मे—१/३१८ २/१७ ३/५ ४/२ ५/३ ७/२ ८/७ १७/१ १८/१ २०/१

पर्युपण मे अखंड जाप। ज्ञानशाला का विधिवत् संचालन ।

९८. अग्रगण्या—साध्वी विनयश्रीजी (श्रीडूंगर०)

सहयोगिनी—साध्वी केशरजी (श्रीडूगर०), कानकुमारीजी (लाडनूं),
मंजुप्रभाजी (छापर), विशदप्रज्ञाजी (वीदासर)

चातुर्मास—गंगाशहर, वीकानेर, राज०

यात्रा—५७० कि० मी०; क्षेत्र-३२

मंत्र दीक्षा—५१, सम्यक्त्व दीक्षा-३२, प्रतिक्रमण १०, पच्चीस वोल-७

विनयश्रीजी—आय०-१२; केशरजी-३/१९, कानकुमारीजी १/१३

मजुप्रभाजी ३/१६ विशदप्रज्ञाजी ५/८

सामू० वाचन-आगम—६२८ पृ०, सघीय साहित्य-३००० पृ०

भाई-वहिनो मे—४/१७ ५/१३ ६/७ ७/१ ८/२८ ९/१० १०/४ ११/३ १४/२ १५/२ १६/२ १७/१ ५१/१ उपवास की वारी-२८, एकान्तर-९५, आय-४००, आयं. तेला-५१

कार्यक्रम

- पर्युपण, चरमोत्सव व दीपावली पर अखंड जाप
- ७५० व्यक्तियों ने एक वर्ष तक नियमित साहित्य वाचन का संकल्प लिया ।
- गंगाशहर की शिक्षण सस्थाओ मे अणुव्रत कार्यक्रम ।

दो पचदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी क्रमश. २५ व २१; पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर, सख्या-२१

एक माह मे अधिक सेवा करने वाले श्रीमती मनोहरीदेवी आंचलिया, तोलारामजी सामसुखा, वालचदजी डागा (सपरिवार), उदयचन्दजी सेठिया ।

९९. अग्रगण्या—साध्वी मोहनकुमारीजी (तारा०)

सहयोगिनी—साध्वी कृष्णकुमारीजी (पदमपुर), जगदत्मलाजी

(वीदासर) कणिकाश्रीजी (समदड़ी)

चातुर्मास—भीनासर, जि० वीकानेर, राज०

यात्रा—२५० कि० मी०; क्षेत्र-११

मंत्र दीक्षा—७०, सम्यक्त्व दीक्षा-२५, व्रत दीक्षा-२, जैन धर्म दीक्षा-५, प्रतिक्रमण-११, पच्चीस वोल-४, भक्तामर-४, शीलव्रत (श्री धर्मचंद सेठिया, झझु)

मोहनकुमारीजी $\frac{१}{११७}$, कृष्णाजी $\frac{१}{१८}$, कणिकाश्रीजी $\frac{१}{६७}$ $\frac{२}{३}$

वाचन-दसवे; आयारो आदि ३००० पृ०, स्वा०-३००० गा०

भाई-वहिनो मे $\frac{१}{३०००}$ $\frac{२}{१५}$ $\frac{३}{११}$ $\frac{४}{१०}$ $\frac{५}{७}$ $\frac{६}{२}$ $\frac{७}{१}$ $\frac{८}{५}$ $\frac{१५}{२}$ उपवास की वारी-५, वर्षीतप-७

- त्रिदिवसीय तीन तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी क्रमशः २५, ३५, ३०
- झझु, दियातरा की स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रम।
- दियातरा में महावीर जयंति समारोह।
- यति श्री जिनचंद्रसूरीजी के शिष्यों के साथ वातचीत।
- जवाहर मा० वि० में साध्वीश्री का प्रवचन।
- लूणकरणजी सेठिया ने केन्द्र की लम्वी उपासना की।

नाम काम आया

रतनगढ़ मर्यादा महोत्सव के वाद वीदासर से विहार कर साध्वी मोहनकुमारोजी (तारा०) अपनी सहयोगिनी साध्वियों के साथ वीदासर से विहार कर श्रीडूंगरगढ़ की ओर जा रही थी। रास्ते में मिलिट्री की सैकड़ों गाड़ियों का मुवमेंट जारी था। दो जीप कुछ आगे जाकर रुकी और जोर से आवाज सुनाई दी—'रुक जाओ।' साध्वियां वही रुक गई। सैना के दस-वारह जवानों ने साध्वियों को चारों ओर से घेर लिया और विविध प्रश्न पूछने लगे।

कर्नल—'आप कौन हो?'
साध्वीश्री—'हम जैन साध्वियां हैं।'
कर्नल—'कहां जा रही हैं?'
साध्वी—'वीकानेर।'
कर्नल—'वहां जाकर क्या करोगी?'
साध्वी—'नैतिकता का प्रचार।'
कर्नल—'वीकानेर के वाद कहां जाएंगी?'
साध्वी—'जहां हमारे गुरु का आदेश होगा, वहां जाएंगी।'

कर्नल ने कासीद की ओर संकेत करते हुए कहा—'आपके साथ यह कौन है।'

साध्वी—'यह भाई हमारी सेवा में रहता है।'

कर्नल—'आपके साथ कहां तक जायेगा ?'

साध्वी—'बीकानेर तक हमारे साथ जायेगा।'

कर्नल—'उसके बाद कहा जाएगा।'

साध्वी—'पडिहारा जायेगा।'

बहुत समय तक इस प्रकार प्रश्नोत्तर चलते रहे।

कर्नल को आचार्यश्री तुलसी का परिचय व कार्यक्रमों की अवगति कराते हुए साध्वीश्री ने कहा—'संत लोंगोवाल आचार्यश्री तुलसी से मिले और पंजाब के संदर्भ मे विचार-विमर्श किया। पंजाब समझौते मे आचार्यश्री का बहुत बड़ा योग रहा है।' साध्वीश्री ने आगे कहा—'श्रीमती इन्दिरा गांधी, पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, प्रधानमंत्री राजीव गाधी आदि विशिष्ट व्यक्तियों ने भी समय-समय पर युगीन समस्याओं के संदर्भ मे आचार्यश्री तुलसी से सलाह मशविरा किया है। आचार्यश्री के साथ हरेक तबके का सीधा संबंध है।'

कर्नल—'अच्छा, यह बात है, फिर तो आप सब जा सकती हैं।' इस घेरे से मुक्त होने में मुख्य रूप से आचार्यवर का विराट् व प्रभावी व्यक्तित्व ही कार्यकारी रहा।

१००. अग्रगण्या—साध्वी पानकुमारीजी 'प्रथम' (श्रीडूंगर०)

सहयोगिनी—साध्वी पानकुमारीजी (गोगुन्दा), अनोपकुमारीजी, ऋजुश्रीजी (श्रीडूगर०), शिवमालाजी (टमकोर), परमयशाजी (बीदासर)

समाधि केन्द्र की साध्वियां—इन्द्रूजी (राजल०), मनोहराजी (सुजान०), मनोहरांजी (मोमासर), लाधूजी, संतोकाजी (सरदार०); लिछमांजी (सिरसा), लिछमांजी (उदयपुर), सुन्दरजी (सरदार०), हुलासांजी (श्रीडूंगर०), सूर्यकुमारीजी (सरदार०), मोहनांजी (लाडनू), मनोहरांजी (सरदार०), लिछमांजी (बीदासर), रायकुमारीजी (राजल०); विदामांजी (देवगढ़), मानकुमारीजी (राजल०), कानकुमारीजी (राजल०) पानकुमारीजी (सुजान०), रतनकंवरजी (चूरू), सूरजकुमारीजी (छोटी खाटू), ऋजुमतीजी (मोमासर), सुषमाश्रीजी (गंगाशहर)

चातुर्मास—बीदासर (समाधि केन्द्र) जि०, चूरू, राज०

यात्रा—७०० कि० मी०; क्षेत्र-१८

मंत्र दीक्षा—१००, सम्यक्त्व दीक्षा-१०१, श्रमणोपासक दीक्षा-६, व्रत दीक्षा-१५, प्रतिक्रमण-६, अणुव्रती-१०००

साध्वियों मे तप, वाचन, स्वाध्याय व जप का विशेप क्रम चला। उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

	आगम वा०	साहित्य वा०	स्वा०	जप
पानकुमारीजी		१०००	३,००,०००	सवा लाख
लाधूजी	१७००	४२००	१,००,०००	तीन लाख
संतोकांजी	१७७५	४२८०	१,००,०००	
लिछमांजी				सवा लाख
सूरजकंवरजी		११००		दो करोड़
सुषमाजी		११००	५०,०००	
मनोहरांजी			५०,०००	दो लाख
अनोपकुमारीजी			६०,०००	दो लाख
विदामाजी			७०,०००	आठ लाख
मनोहरांजी				दस लाख
मोहनांजी	४०००		३,६०,०००	सवा लाख
सुन्दरजी	१०००			छत्तीस लाख
सूर्यकुमारीजी	५००		१,८०,०००	सवा लाख
मनोहराजी	५००			सवा लाख
रतनकवरजी	२५००		२,२५,०००	पांच लाख
इन्द्रूजी	५००		१,००,०००	तीन लाख
लिछमांजी	५००		१,००,०००	सवा लाख
पानकंवरजी			२०,०००	सवा लाख
लिछमांजी		५००	१०,०००	पांच लाख
राजकुमारीजी	१०००	२०००	२०,०००	सात लाख
ऋजुश्रीजी		२०००	१५,०००	चार लाख
शिवमालाजी	—	१५००	३०,०००	सवा लाख
परमयशाजी		२०००	५०,०००	सवा लाख

भाई-वहिनो मे आयं०— १६१, उपवास की वारी-२१, एकान्तर-२५

वीदासर मे तीन संथारे हुए— १. श्रीमती केशरीचद दूगड़

२. श्रीमती मोच्छवचंद वैंगाणी—६ दिन तिविहार व २५ घंटे चौविहार

३. श्रीमती रिद्धकरण मुणोत—४ दिन चौविहार

- सप्तदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी-८५
- वीदासर समाधि केन्द्र की साध्वियों को युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखा श्री ने अपने सदेश प्रदान किए।

हादसा होते-होते बचा

भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी (५ दिसम्बर) की आधी रात थी। सभी

साध्वियां सो चुकी थी। साध्वी रतनकुमारीजी (चूरू), जो वयोवृद्ध साध्वी लाधूजी, संतोकांजी की सेवा मे निरत है। उनके पैरो से होता हुआ एक काला नाग सिर तक पहुंचा कि नीद टूट गई और उन्हे पता लग गया। उन्होंने आवाज की—'सर्प ! सर्प !!' आवाज के साथ प्राय: सभी साध्वियां जग चुकी थी। साध्विया कुछ करे, इससे पूर्व वह सर्प विना किसी को कोई क्षति पहुंचाए द्रुत गति से आगे वढ गया। और कोई हादसा होते-होते रह गया। एक अन्य घटना मे साध्वी ऋजुमतीजी वाल-वाल वच गई। जव एक तेज तूफान से एक शिला टूट कर गिर पड़ी।

१०१. अग्रगण्या—साध्वी मालूजी (चूरू)

सहयोगिनी—साध्वी सुप्रभाजी (श्रीडूगर०), ज्ञानप्रभाजी (सरदार०) कीर्तिश्रीजी (तारा०) मनीषाश्रीजी (चाड़वास)

चातुर्मास—चूरू, राज०

यात्र—१७५ कि० मी०

व्यसनमुक्त—३००, भक्तामर-६, शीलव्रत-२, (मोहनलालजी वैद, नगराजजी सुराणा)

मालूजी—$\frac{१}{३०}$, स्वा०—४०० गा०, मौन—५ घं०

सुप्रभाजी—कठस्थ ३००, स्वा०-३००

कीर्तिश्रीजी कंठस्थ-३००, स्वा०-३००

ज्ञानप्रभाजी—कंठस्थ-६००, स्वा०-३००

मनीपाश्रीजी $\frac{१}{९०}$, कंठस्थ–७००, स्वा०-४००

भाई-वहिनो मे $\frac{१}{७००}$, $\frac{२}{९५}$, $\frac{३}{१}$, $\frac{४}{३}$, $\frac{६}{९}$, $\frac{८}{४}$, $\frac{१०}{९}$, एकान्तर-१३, उपवास की वारी-४, साधना शिविर का आयोजन,शिविरार्थी-४१।

१०२. अग्रगण्या—साध्वी पानकुमारीजी 'द्वितीय' (श्रीडूंगरगढ़)

सहयोगिनी—साध्वी सोहनांजी (चाड़वास), झमकूजी (वीदासर), केशरजी (श्रीडूगर०), लाधूजी (गंगा०), चंपाजी (राजगढ़), रायकुंवरजी (लाडनू), नाथांजी, पूनांजी (सरदार०), दाखांजी (तिलोली), दीपांजी (सरदार०), रतनाजी (फतेहपुर), सुखदेवांजी (गंगा०), ज्ञानाजी (कालू), चदणाजी (भीनासर), कानकंवरजी (लाडनू), सोनाजी (श्रीडूगर०) मुलाजी (फतेहगढ़) कानकुमारीजी (छापर), प्रभावतीजी (फतेहगढ़), संवेगप्रभाजी (लूणकरणसर) मंगलयशाजी (फतेहगढ़)

चातुर्मास—राजलदेसर-सेवाकेन्द्र, जि० चूरू, राज०

यात्रा—४२५ कि० मी०

सम्यक्त्व दीक्षा—१३, प्रतिक्रमण-५, वर्गीय अणुव्रती-८०

साध्वी पानकुमारीजी $\frac{1}{23}$, $\frac{2}{1}$, चम्पाजी—$\frac{1}{38}$, $\frac{3}{1}$,

मूलाजी—$\frac{1}{24}$, सवेगप्रभाजी-आयं-३१

मंगलयशाजी—आयं—१८, $\frac{3}{1}$; चन्दनाजी—$\frac{1}{71}$, $\frac{3}{1}$,

कानकुमारीजी $\frac{1}{9}$; पूनाजी—$\frac{1}{31}$

सोनांजी – $\frac{1}{25}$, ११ लाख का जप; झमकूजी—$\frac{1}{25}$, $\frac{2}{1}$, २ लाख जप

कानकुमारीजी—$\frac{1}{77}$, $\frac{4}{6}$; नाथाजी-$\frac{1}{20}$

रायकुवरजी—२ घंटा स्वाध्याय प्रतिदिन; सुखदेवांजी—$\frac{1}{30}$, $\frac{2}{1}$

दाखाजी—$\frac{1}{78}$, $\frac{2}{7}$, $\frac{3}{6}$; ज्ञानांजी—$\frac{1}{32}$, $\frac{2}{1}$, $\frac{3}{1}$, $\frac{5}{1}$

भाई-वहिनो मे—१/सैकड़ो $\frac{2}{50}$, $\frac{3}{15}$, $\frac{4}{5}$, $\frac{5}{6}$, $\frac{6}{1}$, $\frac{7}{3}$, $\frac{8}{7}$, $\frac{9}{1}$, $\frac{14}{1}$ आयं-२०० वहिने, वाचन-२५००० पृ०

श्रीमती चुन्नीलाल वैद व श्रीमती बीजराज वेगवानी ने दिल्ली मे ३ महीने केन्द्र की उपासना की।

- स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रम।
- तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर—३, शिविरार्थी क्रमश ७०, २५ व १००।

२०३. अग्रगण्या—साध्वी रामकुमारीजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी इन्द्रूजी (चाड़वास), गणेशांजी (लाडनू), विनयप्रभाजी (सरदार०)

चातुर्मास—चाड़वास, जि० चूरू, राज०

भाई-वहिनों में—$\frac{1}{631}$, $\frac{2}{11}$, $\frac{3}{5}$, $\frac{4}{5}$, $\frac{5}{5}$, $\frac{8}{2}$, $\frac{9}{2}$, $\frac{30}{1}$, एकान्तर-४, उपवास की वारी ६; पर्युषण मे अखंड जप।

१०४. अग्रगण्या—साध्वी मेणरयाजी (पेटलावद)

सहयोगिनी—साध्वी छोटांजी (राजगढ़), केसरजी (राजल०), सवेगश्रीजी (श्रीडूगर०)

चातुर्मास—राजगढ़, जि० चूरू, राज०

यात्रा—८९६ कि० मी०; क्षेत्र-२१

मंत्र दीक्षा—२१, सम्यक्त्व दीक्षा-१६, प्रतिक्रमण-५, भक्तामर-३, पच्चीस वोल-३, व्यसनमुक्त-१०१

मेणरयाजी—$\frac{1}{13}$

छोटांजी—ध्यान-३० मि०, मौन-२ घं०, स्वा०—२०० गा०

केसरजी—$\frac{1}{12}$, मौन-२ घं०, स्वा०-३००, ध्यान-२ घं०

संवेगश्रीजी—१/२७, ३/१

भाई-बहिनों में—१/सैकडों, २/२२, ३/८, ४/१, ८/३, वारी के उपवास-३; एकान्तर-२

ददरेवा व सादुलपुर मे तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी क्रमशः १४ व ३१

१०५. अग्रगण्या—साध्वी महाकुमारीजी [श्रीडूंगर०]

सहयोगिनी—साध्वी मनोहराजी (भादरा), रतनकवरजी (सरदार०), सिरेकंवरजी, गुलावांजी (चूरू)

चातुर्मास—सादुलपुर, जि० चूरू, राज०

यात्रा—४०० कि० मी०; क्षेत्र-३०

मंत्र-दीक्षा—२५०, सम्यक्त्व दीक्षा-५१, व्रत दीक्षा—१, जैन धर्म दीक्षा—२२, प्रतिक्रमण—३, थोकडा—१६, शीलव्रत—१ (श्री नोपचंद मालू)

साध्वियों मे कुल तपस्या—१/८७, २/३, ४/१, वाचन—१६,७०० पृ०; कंठस्थ-६०० गा०, स्वा०-४,८६,३००; विशेष जप अनुष्ठान चले।

भाई-बहनों मे—१/६८५, २/२६, ३/६, ४/५, ५/२, ६/१, ७/१, ८/४, ११/१, १३/४, एकांतर-४, वेले-वेले तप-१, उपवास की वारी-१

- त्रिदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर-१, शिविरार्थी-४१
- साध्वीश्री से मिलने वाले विशिष्ट व्यक्ति-मोहता कॉलेज के प्राचार्य श्री एम० आर० व्यास, नीलकंठ हॉस्पीटल की डाक्टर एम० वाला, गीतादेवी स्कूल की प्रधानाध्यापिका श्रीमती तारा गौड, आयुर्वेदाचार्य श्री परमेश्वरलाल वैद्य आदि।

इस सिंघाडे मे पहले सिंघाडपति साध्वी छगनांजी (सरदार०) थी। उनका फाल्गुण कृष्णा नवमी को अचानक स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात् आचार्यवर ने साध्वी महाकुमारीजी को अग्रगण्या बनाया।

१०६. अग्रगण्या—सेवानिकाय व्यवस्थापिका साध्वी कनकश्रीजी (लाडनूं)

साध्वी रायकुमारीजी (जयपुर)[1]

सहयोगिनी—साध्वी पानकुमारीजी (जयपुर), जयकुमारीजी (खाटू), सुमतिश्रीजी (सरदार०), कुलप्रभाजी (बीदासर), वीणाकुमारीजी (सरदार०), मधुलताजी (गगा०), सुधाकुमारीजी (बीदासर), अमृतप्रभाजी (सरदार०)

चातुर्मास—सरदारशहर, जि० चूरू, राज०

---

१. इनका उल्लेख केवल संयुक्त चातुर्मास होने के कारण ही किया गया है।

यात्रा—४०० कि० मी०; क्षेत्र-१३

सम्यक्त्व दीक्षा—२१, श्रमणोपासक दीक्षा-१३, प्रतिक्रमण २१, भक्तामर-११, थोकड़े-५१

कनकश्रीजी—वाचन आगम-४, अन्य ३००० पृ०, स्वा०—३६,०००

कुलप्रभाजी—वाचन-२५०० पृ०, कंठस्थ-२०० गा०

वीणाकुमारीजी—वाचन-१००० पृ०, स्वा० २०,००० गा०

मधुलताजी—वाचन-४ आगम, स्वा०-३०,००० गा०

अमृतप्रभाजी—वाचन-४ आगम, अन्य २००० पृ०, स्वा०-३०,०००

भाई-बहिनों में—१/हजारों $४\frac{२}{७०}$, $५\frac{३}{५}$, $२\frac{४}{५}$, $५\frac{५}{५}$, $५\frac{६}{५}$, $२\frac{७}{२}$, $२\frac{८}{५}$, $५\frac{९}{५}$, $\frac{१०}{५}$, $\frac{११}{३}$, $\frac{१२}{५}$, $\frac{१३}{५}$, $२\frac{१}{३}$, $२\frac{८}{५}$, $२\frac{५}{५}$, बारी के उपवास-४, एकान्तर—३१

- अणुव्रत छात्र निर्माण सप्ताह के अन्तर्गत तीन स्कूलों में साध्वीश्री के विशेष प्रवचन।
- हिसार में हरियाणा प्रादेशिक विराट् युवक सम्मेलन, उस अवसर पर हरियाणा के उद्योगपति श्री ओ० पी० जिंदल उपस्थित थे।

विशिष्ट संपर्क—श्री सुरेशचन्द्र सेठ, प्रो०, बेसिक टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज

श्री रायजादा—प्रिंसिपल मित्तल कॉलेज

श्री राधाकृष्ण व्यास, अध्यक्ष व्यापारी मंडल (सरदार०)

श्रीमती प्रेमलता बबूटा, प्राध्यापिका बालिका विद्यालय

श्रीमती सोमलता, प्रधानाध्यापिका मीरा निकेतन

श्री प्रह्लादराय सिंघी, प्रधानाध्यापक राजेन्द्र विद्यालय

मौलवी मेजर खां, मित्तल कॉलेज

श्रीमती सुमिता व कीर्ति बहिन, प्रवक्ता महाविद्यालय

पंजाब केसरी, दैनिक नभछोर, भटिंडा टाइम्स आदि पत्रों में लेखन व समाचारों का प्रकाशन।

- सरदारशहर में तीन प्रभावक संथारे हुए।[1]

१०७. अग्रगण्या- साध्वी सुमनश्रीजी (बीदासर)

सहयोगिनी—साध्वी सुरेखाजी (चाड़वास), ऋजुप्रभाजी (बाव), शीतलप्रभाजी (कोप्पल), दीपयशाजी (धूलिया)

चातुर्मास—पीलीबंगा, जि० गंगानगर, राज०

यात्रा—३०० कि० मी०; क्षेत्र-१०

मंत्र दीक्षा—२१, व्रत दीक्षा-१, सम्यक्त्व दीक्षा-५, प्रतिक्रमण-५, थोकड़ा-५, व्यसनमुक्त-३०

---

१. संथारों का विवरण देखें—पृष्ठ २११।

पांचों साध्वियो का वाचन-५००० पृ०

भाई-वहिनो मे—$\frac{१}{५५५}$, $\frac{२}{२५}$, $\frac{३}{३१}$, $\frac{४}{१८}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{६}{३}$, $\frac{७}{२}$, $\frac{८}{८}$, $\frac{९}{१}$, वारी के उपवास-५, एकान्तर-५

हरिजन युवक गणेश ने पन्द्रह दिन की तपस्या की। वह साध्वीश्री की प्रेरणा से प्रतिदिन सामायिक करता है।

- तीन तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर; शिविरार्थी क्रमश. ३३, ५० व २५
- श्री धनराज दफ्तरी (सपरिवार) ने दिल्ली में केन्द्र की एक माह उपासना की।
- दैनिक तेज आदि पत्रो मे समाचार प्रकाशन।
- महत. सत अमरदास साध्वीजी के सपर्क मे आए।

१०८. अग्रगण्या—साध्वी अशोकश्रीजी [सरदार०]

सहयोगिनी—साध्वी पानकुमारीजी (सादुल०), प्रमोदश्रीजी (पडिहारा), प्रेमप्रभाजी (लाडनू), मजुयशाजी (वीदासर)

चातुर्मास—रतनगढ, जि० चूरू, राज०

अशोकश्रीजी—जप व स्वा—३ घ०, मौन-२ घ०, वाचन-६००० पृ०

पानकुमारीजी—स्वा० २०० गा; वा०-६००० पृ०, 'ओम् भिक्षु' का २ लाख जाप

प्रमोदश्रीजी—वाचन-५००० पृ०

प्रेमप्रभाजी—$\frac{१}{३०}$, $\frac{३}{५}$, स्वा०-२०० गा०

मजुयशाजी—$\frac{१}{२५}$, $\frac{३}{१}$, स्वा० ५००, वाचन-३०००, जप-३० मि०

भाई-वहिनो मे—२ पचरगी

- त्रिदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी-२५
- पचदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर, शिविरार्थी-२५
- श्रीमती उत्तमचन्द दूगड ने तिविहार अनशन किया।
- सचिया स्कूल, रघुनाथ वि०, स्टेट वि०, वहुउद्देशीय उ० मा० वि०, हनुमान वालिका वि०, राज० कन्या पाठशाला मे अणुव्रत छात्र निर्माण सप्ताह के कार्यक्रम आयोजित।
- प्रजापति ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की प्रमुख व सहवर्ती ब्रह्मकुमारियो के साथ 'वर्तमान परिस्थिति मे मानव का दायित्व' विपय पर सार्वजनिक कार्यक्रम।
- साध्वी किरणयशाजी के दीक्षित होने के वाद चार दिन की विशेष सेवा का अवसर सा० अशोकश्रीजी को मिला।

१०९. अग्रगण्या—साध्वी कमलप्रभाजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी अकलकुवरजी (जोधपुर), सुधाश्रीजी (सरदार०), कीर्तिसुधाजी (गगा०)

चातुर्मास—नोहर, जि० गंगानगर, राज०

यात्रा—६५० कि० मी०; क्षेत्र-६

मत्र दीक्षा—३०, सम्यक्त्व दीक्षा-१५, प्रतिक्रमण-२५, शीलव्रत-२

	तपस्या	वाचन	स्वा०	कंठस्थ
कमलप्रभाजी—	$\frac{१}{२७}$	३५०० पृ०	३,६०,००० गा.	३०० गा०
अकलकुवरजी—	$\frac{१}{७०}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{३}{२}$	५०० पृ०	४ लाख	३००
सुधाश्रीजी—	$\frac{१}{३५}$	२००० पृ०	४ लाख	३००
कीर्तिसुधाजी—	$\frac{१}{५}$	१००० पृ०	१ लाख	३००

सामू० वाचन—उत्तराध्ययन, सूयगडो, समवाओ आदि

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{८०००}$, $\frac{२}{२६}$, $\frac{३}{१}$, $\frac{४}{१}$, $\frac{५}{५}$, $\frac{६}{४}$, $\frac{८}{६}$, $\frac{९}{२}$, $\frac{१२}{१}$, $\frac{१३}{१}$

- पंचदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी-४०
- श्रीमती बरजीदेवी छाजेड ने केन्द्र की ३३ दिन उपासना की।
- कानाना मे मूर्तिपूजक साध्वियो के साथ कार्यक्रम।
- भादरा मे ब्रह्मकुमारियो के साथ सार्वजनिक प्रवचन।
- स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रम।
- समाचार प्रकाशन—पंजाब केसरी, नवभारत टाइम्स, राज० पत्रिका, जैन समाज, गगानगर समाचार, नोहर केसरी आदि।

११०. अग्रगण्या—स्वाध्यायरता साध्वी रूपांजी [सरदार०]

सहयोगिनी—साध्वी पानकुमारीजी (सरदार०), चांदकुमारीजी (हांसी), सूरजकुमारीजी (बीदासर), सिरेकुमारीजी (सुजान०), सरस्वतीजी (हांसी)

चातुर्मास—भिवानी, हरियाणा

यात्रा—४०७ कि० मी०; क्षेत्र-२५

मत्र दीक्षा—७५, गुरु धारणा-१८, व्रत दीक्षा-२०, प्रतिक्रमण-१३, थोकडा ३५, वर्गीय अणुव्रती-६२, शीलव्रत-२

साध्वियो मे कुल तपस्या—$\frac{१}{६४}$, $\frac{२}{२}$, वाचन-७३००

स्वाध्यायरता सा० रूपांजी ने १ लाख गाथा की स्वाध्याय की।

भाई-बहिनो मे—१/सैकडो, $\frac{२}{४०}$, $\frac{२}{१०}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{६}{१}$, $\frac{८}{३}$, $\frac{९}{१}$, बारी के उपवास-५

- पचदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी-५५
- स्कूलो मे अणुव्रत कार्यक्रम
- विशिष्ट व्यक्तियो से भेट—असम के मुख्यमत्री श्री प्रफुल्लकुमार महंत,

हरियाणा के उपमुख्यमंत्री श्री बनारसीदास गुप्त, पूर्व नगरपालिका प्रधान श्री भागीरथमल आदि।

१११. अग्रगण्या—साध्वी पानकुमारीजी (सरदार०)

सहयोगिनी—साध्वी छगनाजी (राजल०), लक्ष्मीवतीजी (सरदार०), कुशलश्रीजी (सरदार०), ललितकलाजी (गंगा०)

चातुर्मास—टोहाना, हरियाणा

यात्रा—३२५ कि० मी०; क्षेत्र-१३

मंत्र दीक्षा—५७, सम्यक्त्व दीक्षा-८४, श्रमणोपासक दीक्षा-३, प्रतिक्रमण-१४, शीलव्रत-१ (श्री महावीरप्रसाद जैन), व्यसनमुक्त-१५१, अणुव्रती-२५

पानकुमारीजी—$\frac{१}{२४}$, $\frac{३}{२}$, वा० ३,९२,०००, छगनांजी $\frac{१}{४}$, $\frac{३}{१}$, वा०-१,८०,००० पृ०

लक्ष्मीवतीजी—$\frac{१}{३४}$, $\frac{२}{१}$, कुशलश्रीजी $\frac{१}{२७}$, $\frac{२}{१}$ वा०-१,८०,००० जप-१५ मि०, ललितकलाजी—$\frac{१}{२५}$, $\frac{२}{१}$ वा०-१,८०,०००, जप-१५ मि०।

साध्वियो मे सामू. वाचन-१ घ० चला।

भाई-बहिनो मे—$\frac{१}{१५००}$, $\frac{२}{३७}$, $\frac{३}{१७}$, $\frac{४}{७}$; $\frac{५}{४}$, $\frac{८}{५}$

- नवकार मत्र का चार महीने निरन्तर प्रत्येक घर मे जप।
- त्रिदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर उकलाना व टोहाना में; शिविरार्थी क्रमश. २१ व २५।
- टोहाना की दो हाईस्कूलो व एक मिडिल स्कूल मे अणुव्रत कार्यक्रम।

११२. अग्रगण्या—साध्वी रतनकुमारीजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी सुमतिकुमारीजी (लाडनू), राकेशकुमारीजी (वायतू), मधुरलताजी (रामसिहजी का गुड़ा)

चातुर्मास—हांसी, जि०-हिसार, हरियाणा

यात्रा—१२५ कि.मी., क्षेत्र-४

मंत्र-दीक्षा—५०, सम्यक्त्व दीक्षा-२५, व्रत दीक्षा-२, श्रमणोपासक दीक्षा-६

साध्वियो मे कुल वाचन—५००० पृ०, जप व ध्यान के प्रयोग।

- भिवानी मे साध्वीश्री का स्थानकवासी मुनियों के साथ संयुक्त महावीर जयंति समारोह।
- सहयोगिनी साध्वी राकेशकुमारीजी व मधुरलताजी ने ३० कि. मी. लम्बा विहार कर १६ अप्रैल ८७ को मुढाल गांव मे आचार्यवर के दर्शन किए। साध्वी रतनकुमारीजी के हाल ही मे आंखो का आप्रेशन हुआ था। आचार्यवर ने उनके लिए इन दोनो साध्वियो के साथ एक

विशेष संदेश भी प्रदान किया।

- सुरेशचदजी सर्राफ (सपरिवार) व श्रीमती शांतिदेवी गर्ग ने एक माह से ऊपर केन्द्र की उपासना की। सुरेशजी मार्गवर्ती व राजधानी दिल्ली मे जिम्मेवारी से सेवा की। वे एक अच्छे कार्यकर्ता है।

११३. अग्रगण्या—साध्वी रायकुमारीजी (रतन०)

सहयोगिनी—साध्वी रतनकुमारीजी (चूरू), रविप्रभाजी (लाडनूं), पूर्णिमाश्रीजी (सरदार०)

चातुर्मास—उकलानामडी, जि०-हिसार, हरियाणा

यात्रा—८०० कि. मी.

व्रत दीक्षा—१५, गुरु धारणा-४१, वर्गीय अणुव्रती-५१, व्यसन मुक्त-१०१

रायकुमारीजी—जप १५ लाख 'ओम भिक्षु', वाचन-५०० पृ०

रतनकुमारीजी—जप-१ घ०, मौन-२ घ०, स्वा० ३ लाख गा०

रविप्रभाजी—मौन १ घ०, जप-३० मि०, स्वा० ३ लाख

पूर्णिमाश्रीजी—मौन १ घं०, जप-३० मि०, स्वा०-३ लाख

सामू० प्रेक्षाध्यान-३० मि०

- भाई-बहिनों मे उपवास हुए-५२५।
- प्रेक्षाध्यान का नियमित अभ्यास चला।
- भूना मे पंचदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर लगा।

११४. अग्रगण्या—साध्वी फूलकुमारीजी (लाडनूं)

सहयोगिनी—साध्वी केशरजी (टमकोर), जसवतीजी (सरदार०); मंगलप्रभाजी, अमृतयशाजी (लाडनू)

चातुर्मास—कालावाली, हरियाणा

यात्रा—४०६ कि.मी.; क्षेत्र-११

मत्र दीक्षा-४५, सम्यक्त्व दीक्षा-७५, जैन धर्म दीक्षा-११ व तीन पूरे परिवार

साध्वियो मे कुल तपस्या—१०५, जसवतीजी ने ४५ दिन एकांतर व केशरजी ने वेला किया। वाचन-आगम-दसवे०, उत्तरा० आदि, संघीय-५००० पृ०, सामूहिक प्रतिक्रमण व एक घंटा स्वाध्याय

- कालांवाली के २८ परिवारो मे 'ओम् भिक्षु' का सवा लाख जप।
- त्रिदिवसीय तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण शिविर, शिविरार्थी-२१
- पंचदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर, शिविरार्थी-४५
- प्रेक्षा शिविर के लिए युवाचार्यश्री ने एक सदेश प्रदान किया।
- फाजिल्का के वकील नरेशजी, डॉ० चिरंजीलाल अरोड़ा, न्यायाधीश

श्री विनोद जैन, सरपच हरीराम तथा अनेक डाक्टर, वकील, शिक्षक साध्वीश्री से मिले व अनेक विषयो पर बातचीत की ।

११५. अग्रगण्या—साध्वी रायकुमारीजी (सुजान०)

महयोगिनी—साध्वी सिरेकुमारीजी (सुजान०), मुक्तिप्रभाजी (सिरसा), चन्दनप्रभाजी (नोखा)

चातुर्मास—सिरसा, राज०

यात्रा—३३५ कि.मी.; गुरुधारणा-२६

मुक्तिप्रभाजी—१/२१, ३/४, २/१, एकान्तर १ माह, चदनप्रभाजी १/२५, ५/१

भाई-बहिनो मे विविध तप हुए । पर्युषण मे अखंड जप ।

मडी आदमपुर व मडी डीग मे अनेक कार्यक्रम आयोजित ।

११६. अग्रगण्या—साध्वी संघमित्राजी (श्रीडूंगर०)

सहयोगिनी—साध्वी चद्रकलाजी (हिसार), ललितप्रभाजी, शील-प्रभाजी (सरदार०), गुणरेखाजी (बीदासर), ऋषभ-प्रभाजी (सरदार०)

चातुर्मास—हिसार, हरियाणा

यात्रा—३०० कि मी ; क्षेत्र-१३

मत्र दीक्षा-३५, सम्यक्त्व दीक्षा-२१, श्रमणोपासक दीक्षा-१, व्रत दीक्षा-५, जैन धर्म दीक्षा-६, शीलव्रत-१ (मुन्नीलालजी)

साध्वियो मे कुल तप १/२११, ३/२, कठस्थ—१५०० गा० वाचन-आगम—५००० पृ०, अन्य-४००० पृ०

छह दिनो व तीन दिनों के दो शिविर, शिविरार्थी-४५ व ५५

- हिसार की पी. जी. एस. डी. हाईस्कूल, जैन कन्या हाईस्कूल, आर्य क० हाई०, राज० मा० वि०, कलाघर हाई०, नूरनिवास हाई०, सी० ए० वी० हाईस्कूल मे अणुव्रत विद्यार्थी सप्ताह के कार्यक्रम ।
- यशोदा हाई०, हरजीराम हिन्दू हाई०, राज० कन्या मा० वि०, देवी भवन हाई स्कूल मे अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का आयोजन ।
- विशिष्ट व्यक्ति जो साध्वीजी के सपर्क मे आए—हांसी कॉलेज के प्राचार्य राजकवि उदयभानू 'हस', सर्वोदय नेता श्री गणेशीलाल, पडित जगत्स्वरूप एडवोकेट दत विशेषज्ञ श्रीमती वर्षा गुप्ता, युवा कांग्रेस नेता विजय कौशिक, सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री ओमप्रकाश जिन्दल आदि ।

११७. अग्रगण्या— साध्वी फूलकुमारीजी (सुजान०)

सहयोगिनी—साध्वी मणिप्रभाजी (छापर), प्रमिलाकुमारीजी (सुजान०), ललिताश्रीजी (टमकोर)

चातुर्मास—जीन्द, हरियाणा

यात्रा—७१५ कि. मी., क्षेत्र-२२

मंत्र दीक्षा-६१, सम्यक्त्व दीक्षा-१२५, श्रमणोपासक दीक्षा-२, जैन धर्म दीक्षा-३५, प्रतिक्रमण-२, थोकडे-५, पच्चीस बोल-२५, शान्त सुधारस-१, शील-व्रत-२, अणुव्रती-६५, वर्गीय अणुव्रती-५००

साध्वियो मे कुल तपस्या $\frac{१}{२५}$, एकान्तर-१ माह, आयं-१५, वाचन-आगम-१५०० पृ०, सघीय १४०० पृ०, कंठस्थ-६०० गा०, स्वा०-८०० प्रति.

भाई-वहिनों मे—$\frac{१}{२५००}$, $\frac{२}{१५}$, $\frac{३}{११}$, $\frac{४}{२}$, $\frac{८}{१}$, $\frac{१०}{१}$

- ५३१ जनो ने एक वर्प तक ५०० पृष्ठ प्रमाण साहित्य पढने का सकल्प लिया।
- तत्त्वज्ञान शिविर, शिविरार्थी-५०
- साध्वीजी की सन्निधि मे त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर, शिविरार्थी-४०, निदेशक-श्री एस. के. जैन।
- २५ दिन अखड जप चला।
- जीद मे कई विद्यालयो मे अणुव्रत कार्यक्रम।
- जीद मे आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविर के लिए युवाचार्यश्री व साध्वी प्रमुखाजी ने विशेप संदेश प्रदान किए।

अखंड जप का प्रभाव

जीद जैन श्वे. ते. सभा के पूर्व प्रधान श्री पीरचंद जैन का दो लाख रुपये कीमत का ट्रक चोरी चला गया। उसकी खोजबीन करते छह माह बीत गए। कोई सुराग नही मिला। एक दिन पीरचदजी साध्वी फूलकुमारीजी की सन्निधि मे बैठे थे। बातचीत मे उन्होने प्रसगवश ट्रक चोरी चले जाने की बात कही। साध्वीजी ने उन्हें समभाव रखने व चौवीस घटे घर मे अखड जाप करने की प्रेरणा दी। पीरचंदजी ने अपने घर के पारिवारिक जनों के साथ चौवीस घटे अखड जाप (ओम् अभीराशिको नम) किया। जप के सम्पन्न होते ही उनके भाई श्री व्रजभूपण जैन (हासी) का टेलीफोन आया और यह समाचार मिला कि छह माह पूर्व चोरी गया ट्रक 'आसनसोल' थाने मे खडा है। पीरचदजी इसमे अखड जप का ही चमत्कार मानते हैं।

अवशिष्ट

इस वर्ष भारत के १३ प्रांतों मे चातुर्मासिक प्रवास १३४, श्रमण सिंघाड़े ३७, श्रमणी सिंघाडे ९६।

तेरापंथ दिग्दर्शन १९८७ मे ३४ श्रमण सिंघाडो व ८३ श्रमणी सिघाडो का विवरण प्रस्तुत है। जिन अवशिष्ट ३ श्रमण सिंघाड़ो व १३ श्रमणी सिंघाडो की रिपोर्ट कई सूचनाओ के बावजूद हमे नही मिली, वे

निम्नांकित है—

१. अग्रगण्य—मुनि शुभकरणजी (सरदार०)

सहयोगी—मुनि विनोदकुमारजी (सरदार०)
चातुर्मास—खेडब्रह्मा, गुजरात

२. मुनि सागरमलजी 'श्रमण' (लाडनूं)

मुनि मणिलालजी (सरदार०), अमृतकुमारजी (झाबुआ)
रायपुर, मध्यप्रदेश

३. मुनि डूंगरमलजी (सरदार०)
मुनि सोहनलालजी (खाटू)

चंपालालजी, नगराजजी (सरदार०)
पडिहारा, जि०-चूरू, राज०

४. साध्वी विद्यावतीजी (श्रीडूंगर०)

साध्वी गुणसुन्दरीजी (श्रीडूगर०) कमलरेखाजी (लाडनू)
प्रियवदाजी, प्रेरणाश्रीजी (मद्रास)
गुवाहाटी, असम

५. साध्वी सोमलताजी (गंगा०)

साध्वी कीर्तिलताजी, शान्तिलताजी (बेंगलोर), शकुन्तलाकुमारीजी (बालोतरा)
पालनपुर, गुजरात

६. साध्वी भीखांजी (नोहर)

साध्वी जयश्रीजी, राजकुमारीजी, रमाकुमारी, जयमालाजी (नोहर)
जयपुर, राज०

७. साध्वी केशरजी (सरदार०)

साध्वी चादकुमारीजी (टॉडगढ़), विद्यावतीजी (श्रीडूगर०)
दिव्यप्रभाजी (गोगुन्दा), सूर्ययशाजी (श्रीडूगर०)
सी. स्कीम-जयपुर, राज०

८. साध्वी मोहनकुमारीजी (श्रीडूंगर०)

साध्वी चान्दाजी, प्रेमलताजी (श्रीडूगर०), प्रतिभाश्रीजी (गंगा०), लोकप्रभाजी (लाडनू)
अजमेर, राज०

९. साध्वी जतनकुमारीजी (सरदार०)

साध्वी पानकुमारीजी (सरदार०) गरिमाश्रीजी (लाडनूं), लोकयशाजी (रतनगढ़)

वावलास, जि० भीलवाड़ा, राज०

१०. साध्वी यशोमतीजी (राजगढ़)

साध्वी धनकुमारीजी (लाडनूं), किरणमालाजी (भादरा), रचनाश्रीजी (टमकोर)

विणोल, जि०-उदयपुर, राज०

११. साध्वी रूपांजी (लाडनूं)
साध्वी कमलाकुमारीजी (उज्जैन)

साध्वी इन्द्रूजी (गडवोर), दोलांजी (सरदार०) तनसुखांजी (लाडनूं) लिछमांजी (लाडनूं), चौथांजी (छापर), छगनांजी (नोहर), लिछमांजी, (लूणकरणसर), नोजांजी (श्रीडूंगर०), मुवटांजी (वीदासर), मृगनांजी (श्रीडूंगर०), रामूजी (नोहर), मनोहरांजी (मोमासर), मूलांजी (लूणकरणसर), गोगांजी (श्रीडूंगर०) गोरांजी (सरदार०) संतोकांजी (हांसी), भत्तूजी (सरदार०), जसूजी (नोहर), पन्नांजी (गादाणा), चंपाजी (सादुल.); सजनांजी (देशनोक), रतनकुमारीजी (सरदार०), कानकुमारीजी (चाड़वास), सूरजकुमारीजी (सादुल०), कुसुमश्रीजी (सुजान०), सिद्धप्रज्ञाजी (लाडनूं); राजप्रभाजी (फारविसगंज), स्वर्णलताजी (कर्णपुर), निर्मलाश्रीजी (उदासर), कलाप्रभाजी, रतिप्रभाजी (वालोतरा)

लाडनूं (सेवाकेन्द्र), जि०-नागौर, राज०

१२. साध्वी कंचनकुमारीजी (राजनगर)

साध्वी ज्ञानांजी (पड़िहारा), सोहनांजी, विनयश्रीजी (वोरावड़), पावनप्रभाजी (श्रीडूंगरगढ़)

राणावास, जि०-पाली, राज०

१३. साध्वी अजितप्रभाजी (सरदारगढ़)

साध्वी भत्तूजी (केलवा), अजितप्रभाजी (रामसिंहजी का गुडा) धर्मलताजी (सरदार०)

वायतू, जि०-बाड़मेर, राज०

१४. साध्वी मनसुखांजी (मोमासर)

साध्वी गणेशांजी (लाडनूं), विवेकश्रीजी (फतेहगढ़), विद्युत्प्रभाजी (मोमासर), चिन्मयप्रभाजी (नाथद्वारा)

आड़सर, जि०-चूरू, राज०

१५. साध्वी रतनकुमारीजी (सरदार०)

साध्वी कानकुमारीजी, रतनकुमारीजी (सरदार०),
प्रशमरतीजी (तारा०)
भादरा, जि० गंगानगर, राज०

१६. साध्वी कानकुमारीजी (सरदार०)

साध्वी मधुरेखाजी (गगा०), सविताश्रीजी (सरदार०), कुन्दनप्रभाजी (उदासर), पीयूषप्रभाजी (सरदार०)
गंगानगर, राज०

महाप्रयाण

१. मुनि शोभालालजी इरांस, जि०—भीलवाड़ा राज०

जन्म—भादवा सुदी १४ सं० १९८२

दीक्षा—माघ शुक्ला ७ सं० १९९८ आचार्यश्री तुलसी द्वारा

स्वर्गवास—फाल्गुन कृष्णा १४-१५, (२७-२-१९८७)

समय—साय ४.३० वजे

स्थान—रतनगढ, जिला—चूरू, राजस्थान

कारण—पीलिया

वे मुनि डूगरमलजी के साथ अड़तीस वर्ष तक निरंतर सेवा में रहे।

आचार्यवर के उद्‌गार—'मुनि शोभालाल मेवाड़ी संत था, रंगीला संत था। शासन व शासनपति के प्रति उसके मन में प्रगाढ़ श्रद्धा थी। जव-जव उसे केन्द्र की सेवा का अवसर मिलता, तो उसका रूं-रूं खिल जाता। दीक्षा लेने के वाद वह मुनि डूगरमलजी के साथ रहा। उनके सिंघाड़े में वह ऐसा घुलमिल गया था कि सव एक रूप दिखाई देते। मुनि शोभालाल का जाना वहुतों को अखरा, पर नियति के आगे किसी का वश नही चलता। दिवंगत आत्मा के प्रति शुभकामना।'

२. मुनि घेवरचंदजी, सरदारशहर, जि०—चूरू, राज०

जन्म—पौष शुक्ला ११ सं० १९८७

दीक्षा—आसोज कृष्ण २ सं० २०४४

स्वर्गवास—आसोज कृष्ण १० सं० २०४४ (१७-९-१९८७)

समय—प्रात: ८.४५ वजे,

स्थान—सरदारशहर, जिला-चूरू, राजस्थान

इस वर्ष तेरापथ धर्मसंघ में दो विलक्षण अनशन हुए—साध्वी किरणयशाजी व मुनि घेवरचंदजी। दोनो की ही अनशन में दीक्षा हुई। छह वर्ष पूर्व कलकत्ता मे एक प्रभावी संथारे को देखकर श्रावक घेवरचंदजी ने संकल्प लिया कि मैं भी छप्पन वर्ष आ जाने पर संथारा करूंगा। उसी संकल्प के तहत् इस वर्ष ३ अगस्त को संलेखना तप प्रारंभ किया। १७ अगस्त को मुनि नवरत्नमलजी से तिविहार अनशन स्वीकार किया। संथाराकाल में घेवरचंदजी की संयम-प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा जगी। आचार्यप्रवर को निवेदन करते हेतु सूरजमलजी गोठी दिल्ली गए। उस समय आचार्यवर ने दीक्षा का आदेश तो नही दिया, पर एक संदेश प्रदान किया। संदेश में उनके

अद्‌भुत मनोवल व दृढ़ता की प्रशंसा करते हुए मुनि नवरत्नमलजी व जम्बू-कुमारजी के आध्यात्मिक सहयोग की सराहना की।

६ सितम्वर को श्री सुमतिकुमार गोठी व श्री शुभकरण दसाणी के निवेदन पर आचार्यश्री ने दीक्षा का आदेश दे दिया और उस समय प्रदत्त अपने विशेष सन्देश मे आचार्यवर ने द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव को देखते हुए मुनि नवरत्नमल जी को दीक्षा देने का आदेश दिया। ९ सितम्वर को सूरजमलजी गोठी की हवेली 'सूरज भवन' में अनशन के ३८ वे दिन मुनि नवरत्नमलजी ने उन्हे दीक्षा प्रदान की। और वे मुनि घेवरचदजी हो गए। मुनि जम्बूकुमारजी को अपने पितृ ऋण से उऋण होने का सुन्दर अवसर मिला और उसका अपूर्व लाभ लिया। कृशकाय व दुर्वलदेह होने के वावजूद मुनि नवरत्नमलजी का सहयोग उल्लेखनीय था। साध्वी कनकश्रीजी व रायकंवरजी का भी अच्छा योग मिला। युवक रत्न श्री सूरजमल गोठी ने सपत्नीक उपासना का अच्छा लाभ लिया।

नव दिन के संयम पर्याय मे मुनि घेवरचंदजी ने वडी जागरूकता व अप्रमत्तता का उदाहरण प्रस्तुत किया। अनशन के प्रारम्भ से ही उन्होने घर छोड दिया था। उस दौरान वे 'सूरज भवन' में रहे। वही मुनि नवरत्नमलजी प्रवासित थे। अनशनकाल—४६ दिन (नौ दिन संयम पर्याय के संलग्न); जिसमे संलेखना तप १४ दिन, तिविहार संथारा-३२ दिन, चौविहार संथारा ३ घंटा ३० मिनट।

अंतिम शोभायात्रा मे करीव पाच हजार भाई-वहिन थे। वाहर से कई क्षेत्रो के लोग अंत्येष्ठी मे पहुचे। सरदारशहर के सभी शिक्षण सस्थान, सरकारी दफ्तर व वाजार पूर्णत: वन्द रहे।

आचार्य प्रवर के उद्‌गार—'इस वर्ष दो विलक्षण संथारे हुए है। एक लाडनू में साध्वी किरणयशा का और दूसरा यह सरदारशहर मे मुनि घेवर-चंदजी का। यद्यपि अन्य दो वहिनो के सथारे (सरदारशहर) भी महत्त्वपूर्ण थे, पर मैं इन दो को विशेष उल्लेखनीय मानता हू। दोनो ने संकल्पपूर्वक जिस दृढता और अतुल मनोवल का परिचय दिया, वहुत वड़ी वात है। दोनों ने ही दीक्षा के लिए प्रार्थना की और विना सोचे अचानक दोनो को शुभ संयोग मिल गया। दोनो ने ही समाधिपूर्वक अपनी अन्तिम यात्रा सम्पन्न की। इन दोनो संथारो से धर्मसंघ की वहुत अच्छी प्रभावना हुई।' दोनो को लक्षित कर परमाराध्य आचार्यवर ने यह दोहा फरमाया—

किरण सती घेवर मुनि, दोन्या रो इतिहास।
जुग-जुग रहसी जीवतो, संघ सदा सोल्लास॥

आचार्यश्री ने घेवर मुनि के प्रति यह पद्य भी फरमाया —

ऐतिहासिक और अद्‌भुत एक अनशन की कथा,
सहज 'सूरज भवन' मे सव शान्त तन मन की व्यथा।
शुद्ध श्रावक संत अन्तिम साधना मे है वना,
'सुमति शुभ' संयोग से यह योग कैसा है वना ॥

३. मुनि वादरमलजी, पचपदरा, जि० वाड़मेर, राज०

जन्म—सं० १९६० : दीक्षा स० २००० आचार्यश्री तुलसी के द्वारा
स्वर्गवास—पौष कृष्णा १० (१९-१०-८७)
स्थान—छापर, जिला-चूरू, राज०

वे विवाहित थे और भरेपूरे परिवार को छोड दीक्षित हुए। आचार्यवर के उद्‌गार—'मुनि वादरमलजी स्वर्गीय मुनि छोगजी के वड़े पुत्र व मुनि केशरीमलजी व मुनि दुलीचंदजी के ज्येष्ठ भ्राता थे। प्रकृति से वे कुछ कठोर थे, पर आचारनिष्ठ एवं पापभीरु थे। दीर्घकाल तक उन्होंने मुनि पर्याय की अनुपालना की थी। एक वार जवरदस्त झटका भी सहन किया। पर लगता है इससे उनकी प्रकृति मे वदलाव आ गया। जीवन के अंतिम समय में अनशनपूर्वक समाधिमृत्यु का वरण कर अपनी लक्ष्य सिद्धि की है। भिक्षु शासन सवके लिए त्राण है। इसकी शरण आने वाला हर व्यक्ति अपनी मंजिल पा लेता है। इसी का एक उदाहरण है मुनि वादरमलजी। उनके ज्ञातिजनों ने सेवा का अच्छा लाभ लिया। सेवाकेन्द्र स्थित मुनियों ने भी अच्छी सेवा कर शासन की प्रभावना की।'

१. साध्वी छगनांजी, सरदारशहर, जि० चूरू, राज०

जन्म—सं० १९८३; दीक्षा-सं० १९९६ आचार्यश्री तुलसी द्वारा
स्वर्गवास—फाल्गुन कृष्णा ९ सं० २०४३ (२३-२-१९८७)
समय-सायं ५ वजे
स्थान—चूरू, राज०

साध्वीश्रीजी प्रात: झूमरमलजी वच्छावत के मकान में गोचरी हेतु जा रही थी। मार्ग मे अकस्मात् मिल का दौरा पडा और गिर गई। तत्काल साध्वियां उन्हें पास के मकान में ले गई। डा० मांगीलाल सामसुखा ने चिकित्सा मे सहयोग किया। उनका व्यवस्थित उपचार हुआ। आचार्यप्रवर ने युवाचार्यश्री को वहां भिजाया। साध्वी प्रमुखाजी व अन्य साध्वियां पहले से वहा थी। उनकी अच्छी परिचर्या हुई। आचार्यवर के उद्‌गार—'साध्वी छगनांजी को मैंने वारह वर्ष की उम्र में दीक्षित किया। दीक्षित होने के वाद वह सवसे पहले साध्वी मीरांजी, छोगाजी के साथ रही, फिर उसने करीव ३९ वर्षों तक स्थिरवासिनी साध्वी परतापांजी की अग्लान भाव से सेवा की। उनके दिवगत होने के वाद वह कुछ समय तक मेरी सेवा मे रही। उसके वाद

उन्हे अग्रगण्या वना दिया। इस वर्ष का चातुर्मास उन्हे सादुलपुर करना था, पर अचानक दिल का दौरा पडने के कारण उनका स्वर्गवास हो गया। उनका शरीर दीखने में इतना मजवूत था कि धूप में महीने भर सुखाया जाए, तव भी न सूखे। वह वडी भाग्यशालिनी थी कि गुरु चरणो मे अपनी जीवन-यात्रा समाधिपूर्वक सम्पन्न की।'

२. साध्वी रतनकंवरजी, राजगढ़, जि० चूरू, राज०

जन्म—स. १९७६, दीक्षा सं० १९८८ कालूगणी के द्वारा
स्वर्गवास—वैसाख कृष्णा १० स. २०४४ (२३-४-८७)
समय-सायं ७.३० वजे।
स्थान—आसाढ़ा, जिला—वाड़मेर, राजस्थान

वह अग्रगण्या साध्वी मोहनांजी की संसारपक्षीय छोटी वहिन थी।

आचार्यवर के उद्गार—'साध्वी रतनकवरजी मोहनांजी की सगी छोटी वहिन थी। हमारे धर्मसघ की वह एक अच्छी साध्वी थी। वह विनम्र एव समर्पित थी। अचानक अस्वस्थ हुई और चली गई। मोहनाजी संघनिष्ठ साध्वी है। उन्होने वहुत लम्वी-लम्वी यात्राए की है। जहा भी गई है, सघ की अच्छी प्रभावना की है।'

३. साध्वी किरणयशाजी, उदासर, बीकानेर, राज०

जन्म—२१ जून, १९६७
दीक्षा—ज्येष्ठ शुक्ला ३ (३०-५-८७)
स्वर्गवास—ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीय ५ (२-६-१९८७)

उदासर की मुमुक्षु किरण कई वर्षो मे पारमार्थिक शिक्षण सस्था में साधना कर रही थी। कुछ वर्षो से उसको दैविक उपसर्ग होने लगे। उपद्रव-कारी ने उसको धर्म से विचलित करने का वहुत प्रयास किया, पर वह दृढ रही। समय-समय पर उसे अनेक प्रकार की विभीषिकाए दिखाई जाने लगी। उसने आध्यात्मिक जप का सहारा लिया। उपद्रव चलता रहा। वहिन ने तपस्या प्रारम्भ की। एक वार उसने ५१ दिन की लम्वी तपस्या की। उस समय ऐसा लगा कि वह उपद्रवमुक्त हो गई, पर वह भ्रम ही था। कुछ समय वीता और उपद्रवों का सिलसिला फिर शुरू हो गया। उपद्रवो मे कपड़े जलना, कपडे गन्दे होना, पत्थर आदि गिरना, गला घुटना, विकराल रूप दिखाई देना आदि अनेक क्रम चले। कभी इसे कहा जाता—'धर्म छोड दे, अन्यथा मारकर रहूंगा।'

उसके आस-पास नुकीले पत्थरो और कांच के हजारो टुकड़ो का वरसना तो प्राय: घटित होता ही रहता। तान्त्रिको द्वारा हाथ मे वाधे तावीज भी गायव हो जाते। यही नही, अनेक वार तो मारणांतिक शारीरिक

वेदना होती। अनेक उपचारो के बावजूद उपद्रवों की रौद्रता बढती गई, पर पिछले दिनो उपद्रवो का नया दौर शुरू हो गया। जप और तपस्या चल रही थी, उसी क्रम में वह मेवाड गई। दीर्घ तपस्विनी साध्वी पन्नांजी के दर्शन कराये गये। वहा उपद्रव दूर होने के स्थान पर अधिक बढ गये। तप और जप की निरतरता के बावजूद उपद्रवकारी ने मौत की चुनौती दे दी। इसके साथ बहिन का गला घुटने लगा और ऐसा लगा मानो कुछ ही क्षणों मे जीवन-लीला समाप्त होने वाली है। उस समय किरण ने अपने आत्मबल को तोला और सोचा—'इस यक्ष के हाथो मरने की अपेक्षा मैं स्वय अनशनपूर्वक समाधि-मरण का वरण करूंगी।' इस सकल्प के साथ उसने स्वयं ही सथारा पचख लिया। उसके बाद साध्वी पन्नाजी को उसने संथारा पचखाने का अनुरोध किया। उन्होने टालने की बहुत कोशिश की, पर उसके आग्रहपूर्ण निवेदन और मजबूत मनोबल को देख वहा उपस्थित साध्वियों तथा श्रावकों के साथ विचार-विमर्श कर सथारा पचखा दिया।

अनशन स्वीकार करने के बाद वह मेवाड से लाडनू व वहां से ३० अप्रैल को आचार्यवर के दर्शन करने दिल्ली गई। दर्शन करने से उसका आत्मबल और अधिक वृद्धिगत हुआ, मनस्तोष भी बढा। गुरुदेव के प्रेरक अमृत वचन बहिन के लिए अनुपम पाथेय बन गए।

३० मई को आचार्यश्री की आज्ञा से मुनि दुलीचंदजी 'दिनकर' ने किरण को दीक्षा प्रदान की। और वह साध्वी किरणयशाजी बन गई। दीक्षा लेने के बाद नया जीवन प्रारम्भ हो जाता है तथा पूर्व समय मे लिए गए सथारे का पारणा भी किया जा सकता है, परन्तु साध्वी किरणयशाजी ने संथारा चालू रखा।

साध्वी किरणयशाजी की मात्र ३½ वर्ष की तपस्या का विवरण—

१/२५१ २/१९ ३/२९ ४/६ ५/७ ६/२ ७/४ ८/२ ९/१ १०/१ ११/१ १२/१ १३/१ १५/१ २१/१ ५१/१

धर्मचक्र-१, आयम्बिल की लडी ११ तक, आयम्बिल का २१ का थोकड़ा-१, तीन मास एकान्तर, दस प्रत्याख्यान-४ बार, एकासन २४ मास निरन्तर।

अनशनकाल मे मुनि अमोलकचदजी, दुलहराजजी का अच्छा सहयोग रहा। दीक्षा के बाद साध्वी अशोकश्रीजी, सिद्धप्रज्ञाजी आदि साध्वियों ने अच्छी सार-सभाल की।

साध्वीजी के सलेखना तप १४ दिन, अनशन ३९ दिन, कुल-५३ दिन, जिसमे चार दिन सयम के शामिल है।[1]

स्वर्गीया साध्वी के बारे में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए आचार्यवर

---

१. साध्वी किरणयशाजी का प्रेरक जीवनवृत्त, रोचक संस्मरण व रोंगटे खड़े कर देने वाली घटनाओ का विस्तृत विवरण देखे, जैन भारती अक २२-२३, ८-१५ जून १९८७।

ने कहा—'चार दिन पूर्व मुनि पर्याय स्वीकार करने वाली हमारी एक छोटी साध्वी के प्रलम्ब अनशन की संपन्नता का सवाद मुझे मिला। आज से चार दिन पूर्व तक मुमुक्षु किरण के रूप मे उसका अनशन चल रहा था। मुझे लाडनू से वरावर उसके मनोवल की दृढता एवं शरीरवल की क्षीणता के सवाद मिल रहे थे। अनशन के ४९ वें दिन मेरे मन मे यह विकल्प आया कि अव जव मुमुक्षु किरण का कार्य सिद्ध होने को ही है, तो उसकी एक मात्र इच्छा मुनि जीवन की स्वीकृति को भी क्यों न पूरा कर दिया जाए और इसी चिन्तन के आधार पर मेरी आज्ञा से अनशन के पचासवें दिन साध्वी दीक्षा प्रदान की गई। चौथे दिन ही अपने कार्य को संपन्न कर उसने अभीप्सित लक्ष्य को पा लिया है। इतनी कम उम्र मे इतना वडा अनशन तेरापथ इतिहास की एक अद्भुत एव अपूर्व घटना है। साध्वी किरणयशा की समता, सहिष्णुता एवं संतुलन प्रशस्य है। दैविक उपद्रवों की स्थिति मे भी वह कभी विचलित नही हुई, अपितु अपूर्व साहस के साथ उसने मृत्यु को आमंत्रित किया। निश्चय ही उसका यह आमत्रण आसुरी शक्तियों के प्रति एक चुनौती है। मृत्युजंयी आत्मा के उत्तरोत्तर आध्यात्मिक विकास की वहुत-वहुत मंगलकामना।'

४. साध्वी कुसुमश्रीजी सुजानगढ़, जि० चूरू, राज०

जन्म—सं० १९८४, दीक्षा सं० २००८ आचार्यश्री द्वारा
स्वर्गवास—माघ शुक्ला, १-२ सं० २०४४ (२०-१-१९८८)
समय—सायं ४ वजे
स्थान—लाडनू, जि० नागौर, राज०

आचार्यवर के उद्गार—'साध्वी कुसुमश्री सुजानगढ़ के कोठारी परिवार मे विवाहित थी। उसने भरे-पूरे सपन्न परिवार व अपने पति की सहर्ष स्वीकृति लेकर सुहागिन अवस्था मे दीक्षा ली। वह संयम मे रची-पची रही और अपनी साधना मे सलग्न थी। दीक्षित होते ही साध्वी हुलासांजी (सरदारशहर) के साथ भेजा गया। जव तक वे रही उनके साथ रही। फिर साध्वी कमलाकुमारीजी (उज्जैन) के साथ रही। इस वर्ष लाडनूं-सेवाकेन्द्र मे थी। वड़े ऊंचे परिणामो के साथ उसने सथारे मे अपने शरीर का परित्याग किया। साध्वियों ने उसकी अच्छी सेवा की। मुनि दुलहराजजी ने भी अच्छा सहयोग दिया।'

८ फरवरी १९८७ से प्रारम्भ इस दिग्दर्शन वर्ष मे ३ साधु व ४ साध्वियां स्वर्गस्थ हुईं, इस वर्ष ४ वहिनो व एक भाई की मुनि दीक्षा संपन्न हुई। इस प्रकार २ फरवरी १९८८ को साधु-साध्वियो की सख्या इस प्रकार थी—

साधु—१४७, साध्वियां—५५८, कुल—७०५

समण श्रेणी : बढ़ते चरण

आचार्य तुलसी एक युगीन क्रान्तपुरुप है। उन्होने अपने विभिन्न आयामी पहलु से भटकते युग में आशा, उत्साह की प्रथम किरण पहुंचाई है। आचार्यप्रवर द्वारा अन्वेषित समणश्रेणी वक्त की आवाज है। ८ वर्ष की स्वल्प अवधि मे इसने न केवल तेरापंथ समाज मे, अपितु विद्वत् एवं प्रबुद्ध वर्ग के बीच जो अपनी पहचान बनाई है, वह समूचे धर्मसंघ के भविष्य का शुभ संकेत है। समणश्रेणी ने अपने निष्पत्तियों भरे चरणों से एक लघु विकास की यात्रा प्रारम्भ की है, जिसके बिन्दु निम्न है—

प्रायोगिक जीवन

समणश्रेणी तेरापंथ के धरातल पर एक ऐसी प्रायोगिक भूमिका है जहा ध्यान, जाप, स्वाध्याय, सेवा, श्रमशीलता आदि प्रयोगों के लिए मुक्त अवकाश है। यहां अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा के दिनो कायोत्सर्ग-प्रतिमा (ध्यान का विशेप प्रयोग) के रूप में ४ घंटे का प्रयोग होता है। इसके अतिरिक्त नियमित आसन, भ्रमण, ध्यान व स्वाध्याय आदि भी दिनचर्या के अग है। सुवह ४ वजे से लेकर रात को १० वजे तक विभिन्न प्रयोगों से गुजरता हुआ यह वर्ग व्यक्तिगत, सामूहिक व संघीय कार्यक्रमों को सम्पादित करता है।

अध्ययन-अध्यापन

विकास का महल शिक्षा की नीव पर आधारित है। आचार्यप्रवर के मन मे एक अभिलापा है कि जब तक हम प्रज्ञा को जागृत नही करेंगे, तब तक रूपान्तरण घटित नही कर सकेगे। समणीवर्ग भी इस क्षेत्र मे निष्णात बने, इसके लिए पाठ्यक्रम का निर्धारण किया गया है। उसमे निम्नोक्त समणीजी सम्मिलित है—

१. जैन दर्शन (प्रथम वर्प)—समणी स्मितप्रज्ञाजी, मुदितप्रज्ञाजी, परमप्रज्ञा जी, अक्षयप्रज्ञाजी व भावितप्रज्ञाजी।

२. जैन दर्शन (द्वितीय वर्प)—समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी व मगलप्रज्ञा जी।

३ अहिंसा एव शांति शोध—समणी स्थितप्रज्ञाजी, सरलप्रज्ञाजी, श्रुतप्रज्ञाजी व मल्लिप्रज्ञाजी।

४. जीवन-विज्ञान (प्रथम वर्ष)—समणी सुप्रज्ञाजी, उज्ज्वलप्रज्ञाजी, निर्भयप्रज्ञाजी।

५. जीवन-विज्ञान (द्वितीय वर्ष)—समणी गुरुप्रज्ञाजी, सहजप्रज्ञाजी, शशिप्रज्ञाजी, स्वस्थप्रज्ञाजी व ज्योतिप्रज्ञाजी।

समणी परमप्रज्ञाजी व मंजुप्रज्ञाजी ने जीवन-विज्ञान का दो वर्षो का कोर्स पूरा कर लिया है। पाठ्यक्रम के अनुसार उन्होने अपना लघु शोध प्रवन्ध भी तैयार किया है। शोध प्रवन्ध के विषय निम्न है—

समणी परमप्रज्ञाजी——कुण्डलिनी योग

समणी मंजुप्रज्ञाजी——पर्यावरण-विज्ञान और प्रेक्षाध्यान।

समणी कुसुमप्रज्ञाजी निर्युक्ति पर कार्य कर रही है तथा समणी उज्ज्वलप्रज्ञाजी ने डा० टाटिया के पास युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रणीत आयारो भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद किया।

ब्राह्मी विद्यापीठ मे अध्ययनरत है—समणी निर्मलप्रज्ञाजी, मलयप्रज्ञाजी कुशलप्रज्ञाजी, जयप्रज्ञाजी, और सम्यक्प्रज्ञाजी। राजस्थान अजमेर वोर्ड द्वारा निर्धारित प्रथम वर्ष में समणी निर्वाणप्रज्ञाजी व चैतन्यप्रज्ञाजी अध्ययनरत है।

इनके अतिरिक्त कुछ समणीजी ब्राह्मी विद्यापीठ मे मुमुक्षु वहिनो को निम्न विषयो का अध्यापन करवा रही है—

सस्कृत व्याकरण—समणी चिन्मयप्रज्ञाजी, सहजप्रज्ञाजी

जैन विद्या—समणी स्वस्थप्रज्ञाजी, मंजुप्रज्ञाजी

प्राकृत—समणी ज्योतिप्रज्ञाजी

दर्शन—समणी मगलप्रज्ञाजी।

पत्रिकाओं का सम्पादन

वार्तमानिक युग मे पत्र-पत्रिकाओ के माध्यम से अपने विचारो को सम्प्रेषित कर एक नई क्रान्ति लाई जा सकती है। तेरापंथ समाज से भी अनेक पत्रिकाए समाज के विभिन्न पहलु को जागृत करने के लिए प्रकाशित होती है। उसमे जैन भारती और प्रेक्षाध्यान भी मुख्य पत्रिकाए है। प्रेक्षा-ध्यान की वढती हुई लोकप्रियता एव व्यक्तित्व-निर्माण की प्रक्रिया को ध्यान मे रखते हुए यह अपेक्षा महसूस की गई कि एक ऐसी पत्रिका का सम्पादन व प्रकाशन किया जाए, जिससे दूरवर्ती लोग भी इससे अवगत हो सके। इस पत्रिका के सहसम्पादन के रूप मे समणी सरलप्रज्ञाजी अपना सहयोग दे रही है।

जैन भारती सघीय पत्रिका है। साधु-साध्वियां विभिन्न क्षेत्रों मे रहकर दूर-दूर तक तेरापथ के मौलिक तत्त्वो का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उन सब के कार्यक्रम की एक जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से होती है। इस पत्रिका के सम्पादन मे समणी परमप्रज्ञाजी का योगदान रहता है।

नए प्रयोग का प्रारम्भ

पारमार्थिक शिक्षण सस्था तेरापंथ समाज की वह उदीयमान संस्था है, जहा प्रत्येक मुमुक्षु अनुशासन, आज्ञापालन व अहिंसा के विभिन्न प्रयोगों में ढलकर साधुत्व के अनुरूप बनता है। इतने वर्षों तक हमारे संघ के चरित्र-निष्ठ, सेवाभावी व कर्त्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ताओ के द्वारा संस्था की आन्तरिक व वाह्य व्यवस्था का संचालन होता था। इस वर्ष आचार्यवर ने संस्था की आन्तरिक व आध्यात्मिक व्यवस्था का भार समणी स्मितप्रज्ञाजी को सौंपा है।

तपस्या

यह वर्ष भारत मे सूखे का वर्ष था। राजस्थान तो भयकर सूखे की चपेट में था। वहा वर्षा न होने से श्रावण व भाद्रपद का महीना ज्येष्ठ और आषाढ का परिचायक बना हुआ था। ऐसे मौसम मे भी समणीवर्ग मे अच्छी तपस्या हुई। वैसे अष्टमी, चतुर्दशी को एकासन, उपवास, आयम्बिल होते ही है; फिर भी उपवास, बेले, तेले को छोडकर इस वर्ष तपस्या इस प्रकार हुई—

१५ दिन—समणी सुप्रज्ञाजी, सम्यक्प्रज्ञाजी
११ दिन—समणी निर्भयप्रज्ञाजी
८ दिन— समणी स्मितप्रज्ञाजी, सहजप्रज्ञाजी व मतिलप्रज्ञाजी।
७ दिन—समणी श्रुतप्रज्ञाजी
५ दिन— समणी सरलप्रज्ञाजी
४ दिन—समणी निर्भयप्रज्ञाजी।

पर्युषण यात्राएं

इस वर्ष समणीजी के पांच दलो का भारत के सुदूर क्षेत्रों मे जाना हुआ। वहां उन्होने आचार्यवर के मिशन को प्रचारित ही नही किया, अपितु वहा के श्रावक समाज के अन्त.करण को विशुद्ध बनाने का सलक्ष्य यत्न किया। उनका विवरण इस प्रकार है—

हैदराबाद

समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी के नेतृत्व मे श्रुतप्रज्ञाजी, ज्योतिप्रज्ञाजी व सम्यग्प्रज्ञाजी पर्युषण पर्व पर हैदराबाद गईं। १७ सितम्बर को स्थानक-वासी संत श्री केवलमुनि एव समणीजी का सम्मिलित कार्यक्रम रहा। मैत्री दिवस का कार्यक्रम सामूहिक रूप से मनाया गया। संवत्सरी के दिन ८ की तपस्या मे श्रीमती मनोहरीदेवी सुराणा ने आजीवन अनशन ग्रहण किया। उनके ५१ दिन के सथारे मे समणीजी का पूरा आध्यात्मिक सहयोग मिला।

ग्वालियर

समणी कुसुमप्रज्ञाजी के नेतृत्व मे उज्ज्वलप्रज्ञाजी, मंजुप्रज्ञाजी एवं निर्भयप्रज्ञाजी ने ग्वालियर मे पर्युषण पर्व मनाया। आगरा में स्थानकवासी विजय मुनि शास्त्री ने कहा कि आज जैन सम्प्रदायो मे केवल तेरापंथ मे ही ठोस कार्य हो रहा है। सोनगिरी तीर्थस्थल मे आचार्य सुमतिसागरजी के साथ भी कार्यक्रम रहा। पर्युषण मे १३ लाख का जप हुआ। वहां दिगम्बर समाज के दशलक्षण पर्व पर भी समणीजी के कार्यक्रम हुए।

कोप्पल

समणी सुप्रज्ञाजी के नेतृत्व मे सहजप्रज्ञाजी व मल्लिप्रज्ञाजी पर्युषण पर्व की यात्रा हेतु कोप्पल (कर्नाटक) गई। आस-पास के ११ क्षेत्रो मे धर्म-जागरणा की। गदग मे युवक परिषद् के कार्यकर्ताओ से विशेष चर्चा एवं धारवाड युनिवर्सिटी मे जैन चेयर के प्रमुख प्रो० रानाडे से वार्तालाप किया।

पालघर

समणी सरलप्रज्ञाजी के नेतृत्व में गुरुप्रज्ञाजी, चिन्मयप्रज्ञाजी व चैतन्य-प्रज्ञाजी पर्युषण पर्व की यात्रा मे पालघर पहुंची। पालघर मे त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर रखा गया। डहाणु तथा वोईसर मे स्थानकवासी भाई ने प्रभावित होकर कहा—'आचार्यश्री युग की मांग को समझकर नये-नये प्रयोग कर रहे है।'

विशाखापट्टनम्

समणी परमप्रज्ञाजी के नेतृत्व मे स्वस्थप्रज्ञाजी व मंगलप्रज्ञाजी धार्मिक अनुष्ठान हेतु रवाना हुए। ८ दिन विजयनगरम् मे प्रवास हुआ। इसके अति-रिक्त उडीसा के विभिन्न क्षेत्र तुषरा, टिटिलागढ, केसिंगा, काटावाजी, वेल-पाड़ा, रायपुर, कलकला, कटक मे भी कार्यक्रम रहे।

लंबा प्रवास

आचार्यवर की परिकल्पना है कि हिन्दुस्तान मे जैसे वैदिक धर्म के ४ मठ है, वैसे ही समणीवर्ग देश के चारो कोनो मे केन्द्र बनाकर धर्म प्रचार करे—इस परिकल्पना को साकार करने हेतु देश के पूर्वाञ्चल और दक्षिणाञ्चल में समणीजी के दो ग्रुप गए। दोनो ग्रुपो ने १२ महीने वहा रहकर विभिन्न कार्य-क्रम व प्रेक्षाध्यान के प्रयोगो को करवाते हुए अग्रेजी भाषा का भी अध्ययन किया। उनकी यात्रा का विवरण निम्न है—

दक्षिणांचल यात्रा

समणी स्थितप्रज्ञाजी के नेतृत्व मे मुदितप्रज्ञाजी, भावितप्रज्ञाजी एवं कुशलप्रज्ञाजी ने दक्षिण भारत की ओर प्रस्थान किया। लम्बी यात्रा के मुख्य

उद्देश्य थे तमिल एवं अंग्रेजी भाषा का अध्ययन और वहां के विभिन्न क्षेत्रों में धर्मजागरणा करना। यात्रा के दौरान ३१ क्षेत्रों को संभाला। कॉलेजों में प्रेक्षाध्यान का आयोजन रखा गया। मद्रास में स्थानकवासी साध्वियों के बीच पंचदिवसीय शिविर आयोजित हुआ।

असम व बंगाल की यात्रा

समणी स्मितप्रज्ञाजी के नेतृत्व में अक्षयप्रज्ञाजी, शशिप्रज्ञाजी व जयप्रज्ञाजी ने एक वर्ष की लम्बी यात्रा के लिए प्रस्थान किया। तीन महीने कलकत्ता व पौने पांच महीने समणियां सिलीगुड़ी में रही। तत्पश्चात् जैन संस्कारों के प्रचार-प्रसार के लिए असम के क्षेत्रों का दौरा किया। यात्रा के अंतिम चरण में सिल्चर में आयोजित कान्फ्रेंस में भी भाग लिया।

पोप पॉल से मिलन

कम्युनिटी ऑफ एजीड़ियो द्वारा रोम में आयोजित विश्व-शांति प्रार्थना में आचार्य तुलसी के प्रतिनिधि के रूप में समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी व समणी स्मितप्रज्ञाजी रोम गए। शांति प्रार्थना के कार्यक्रम में जैन धर्म का परिचय व अर्हत् वंदना का संगान हुआ। वेटिकन सीटी में पोप पॉल ने भाषण के बाद सभी प्रतिनिधियों से व्यक्तिशः परिचय किया। १० दिनों तक जैन धर्म, प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान व अणुव्रत का प्रचार-प्रसार किया।

प्रेक्षाध्यान यात्रा

समणियां प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान के सैद्धांन्तिक व प्रायोगिक स्तर पर स्वयं प्रयोग ही नही करती, अपितु समय-समय पर स्वतंत्र शिविर संचालन कर जन चेतना को प्रेक्षाध्यान से परिचित करवाती हैं। इस वर्ष प्रेक्षाध्यान शिविरों के संचालन की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है—

स्थान निर्देशक
कोटा— समणी सरलप्रज्ञाजी
सहजप्रज्ञाजी, मल्लिप्रज्ञाजी
अहमदाबाद—सरलप्रज्ञाजी, मल्लिप्रज्ञाजी
भीलवाड़ा—सरलप्रज्ञाजी, मल्लिप्रज्ञाजी, निर्भयप्रज्ञाजी
राजलदेसर—समणी सरलप्रज्ञाजी व मल्लिप्रज्ञाजी

समणों की रिपोर्ट

समणवृन्द द्वारा इस वर्ष सम्पादित कार्यक्रमों की रूपरेखा इस प्रकार है—

रतनगढ़ में समण श्री स्थितप्रज्ञ, सिद्धप्रज्ञ एवं श्रुतप्रज्ञ ने स्टेट स्कूल और रघुनाथ स्कूल में जीवन-विज्ञान व प्रेक्षाध्यान की सैद्धांतिक जानकारी देते

हुए ध्यान के प्रयोग भी करवाए। इसके अतिरिक्त स्थानीय सभा-भवन मे करीब १० दिन तक प्रात.काल ध्यान एवं योगाभ्यास का नियमित अभ्यास करवाया गया।

राजस्थान उच्च माध्यमिक विद्यालय तोपदडा, अजमेर में शिक्षा विभाग के वरिष्ठ व्यक्तियो के वीच समण-त्रय ने शिक्षा में जीवन-विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला एव उसके प्रयोग भी करवाए।

उदयपुर—राष्ट्रीय शिक्षा नीति क्रियान्विति से सम्वन्धित व्यक्तियो का एक शिविर एस. आई. आर. टी सस्थान उदयपुर मे आयोजित हुआ। समण स्थितप्रज्ञजी ने जीवन-विज्ञान के प्रयोग करवाये।

सुजानगढ़—राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सम्वन्ध मे एक शिविर लगा, जिसमे समणवृन्द ने 'जीवन-विज्ञान की आज की शिक्षा मे क्या उपयोगिता है' इस पर सारगभित विचार व्यक्त किए।

राजकीय महारानी वालिका उच्च मा० वि० वनीपार्क, जयपुर मे मुनि श्री विनयकुमार 'आलोक' के सान्निध्य मे जीवन-विज्ञान शिक्षक-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। उस शिविर मे समण स्थितप्रज्ञजी ने जीवन-विज्ञान का प्रशिक्षण दिया।

शिक्षा मंत्रालय, राजस्थान के निर्देशानुसार माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय तक के शिक्षको का एक शिविर आयोजित हुआ। प्रशिक्षण समण स्थितप्रज्ञजी एव श्री प्रदीप भाटी द्वारा दिया गया।

समणद्वय की गुजरात एवं कच्छ यात्रा

आचार्यश्री, युवाचार्यश्री के मगल आशीर्वाद एव शुभ दृष्टि प्राप्त कर समण स्थितप्रज्ञजी, समण श्रुतप्रज्ञजी एव प्रशिक्षक श्री प्रदीप भाटी ने गुजरात यात्रा के लिए प्रस्थान किया। गुजरात के अनेक क्षेत्रो मे प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमो का आयोजन हुआ। स्कूलो व सार्वजनिक स्थानो पर समणो के विषयवद्ध वक्तव्य हुए, स्थान-स्थान पर समणो ने ध्यान के प्रयोग कराए। इन सवका सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

खेडब्रह्मा—सातदिवसीय शिविर का आयोजन, सान्निध्य—मुनि शुभकरणजी, पांच स्कूलो मे जीवन-विज्ञान कार्यक्रम।

अहमदावाद—साध्वी यशोधराजी की सन्निधि मे सप्तदिवसीय शिविर।

सूरत—साध्वी पानकुमारीजी के सान्निध्य मे पांच दिनो का शिविर, डायमड के क्षेत्र मे काम करने वाले करीव ३०० कारीगरों के वीच प्रेक्षा प्रयोग।

उधना—सार्वजनिक भाषण।

बारडोली—चारदिवसीय प्रेक्षा शिविर, सन्निधि—साध्वी रामकुमारीजी।

पाटण—सम्वत्सरी का भव्य कार्यक्रम।

पालनपुर—साध्वी सोमलताजी की सन्निधि मे त्रिदिवसीय शिविर व एक विविधलक्षी विद्यामंदिर में करीब २००० छात्र-छात्राओं के वीच जीवन-विज्ञान कार्यक्रम।

डीसा—आदर्श हाईस्कूल व सरदार पटेल हाईस्कूल मे कार्यक्रम।

बाव—त्रिदिवसीय प्रेक्षा शिविर व एक हाईस्कूल में कार्यक्रम।

रापर—त्रिदिवसीय शिविर, प्रेक्षा सेमिनार।

इस प्रकार उनकी गुजरात-यात्रा प्रभावी रही।

पचपदरा, बालोतरा, जसोल व खेडब्रह्मा में प्रेक्षाध्यान शिविर तथा खेडब्रह्मा व राजलदेसर में शिक्षको को जीवन-विज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया।

देवरिया में पर्युषण पर्व

समण सिद्धप्रज्ञजी व उपासक मानवमित्रजी पर्युषण पर्व पर पर्वाराधना हेतु देवरिया (मेवाड) गए। वहा विविध कार्यक्रम उत्साह के साथ सम्पन्न हुए। इसके अलावा लावासरदारगढ़, गंगापुर, मोखुन्दा आदि स्थानों पर भी आयोजन रखे गए। कोटा में शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ।

अध्ययन

समण स्थितप्रज्ञजी जीवन-विज्ञान के द्विवर्षीय कोर्स में उत्तीर्ण एवं अभी 'अहिंसा और शांति शोध' के स्नातकोत्तर कोर्स के प्रथम वर्ष मे अध्ययन कर रहे है।

समण श्रुतप्रज्ञजी जीवन-विज्ञान की दो वर्ष का कोर्स उत्तीर्ण कर लिया। समण सिद्धप्रज्ञजी जीवन-विज्ञान के प्रथम वर्ष मे अध्ययनरत है।

समण त्रय के निर्देशन मे तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती मे साधना का क्रम नियमित एवं व्यवस्थित चलता है।

तीनों समण-समण स्थितप्रज्ञजी, सिद्धप्रज्ञजी व श्रुतप्रज्ञजी ने एक वर्ष की सावधिक समण दीक्षा स्वीकार की थी। उसकी पूर्णता के वाद तीनो ने दिल्ली मे पुनः तीन वर्ष के लिए सावधिक समण दीक्षा ग्रहण कर ली।

प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान : एक विहंगावलोकन

जैन विश्व भारती का साधना विभाग तुलसी अध्यात्म नीडम् अध्यात्म योग विपयक विविध प्रवृत्तियों के सुसंचालन के साथ-साथ निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। आलोच्य वर्ष मे (१९८७-८८) विगत-काल से चली आ रही स्थायी प्रवृत्तियां जहा पूर्वानुसार अनवरत सचालित हुई, वही नई प्रवृत्तियो का शुभारम्भ भी हुआ। जीवन-विज्ञान प्रशिक्षण में नये आयाम स्थापित हुए। साधना-योग प्रचार-प्रसार की भूमिका प्रशस्त हुई व जन-जन तक प्रेक्षाध्यान पहुचाने के स्वप्न को साकार किए जाने की दिशा में चरण गतिमान हुए।

वर्ष भर की विविध प्रवृत्तियों का सक्षेप मे विवरण इस प्रकार है—

१. प्रेक्षाध्यान शिविर

ये शिविर युवाचार्यश्री के निदेशन मे लगे।

क्र० सं०	शिविर क्रमांक	स्थान	अवधि	शिविरार्थी सं०
१.	४५ वां प्रे० ध्या० शिविर	देवी भवन धर्मशाला, हिसार	२७/३ से ४/४/८७	५१
२.	४६ वां " "	अध्यात्म साधना केन्द्र, जयपुर	२/५ से ८/५/८७	१००
३.	४७ वां " "	अग्रसेन भवन, ब्लॉक डी, अशोक विहार, फेज-I, दिल्ली-५२	१७/७ से २४/७/८७	७०
४.	४८ वा " "	अग्रवाल धर्मशाला, मॉडल टाऊन, दिल्ली	२८ से ६/८/८७	८९ महिलाएं (अ.भा. ते.म.मं. के तत्त्वावधान में)
५.	४९ वा " "	१८, ग्रीन पार्क, आशीर्वाद भवन, नई दिल्ली	२६/९ से ५/१०/८७	८५

६.	५० वां प्रे० ध्या० शिविर	अध्यात्म सा. केन्द्र, नई दिल्ली	२५/१० से ३/११/८७	५५ (अन्तर्राष्ट्रीय शि.)
७.	५१ वा " "	अणुव्रत विहार, नई दिल्ली	२८/१२ से १/१/८८	२८

२. प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविर

देश-विदेश (नेपाल) मे हमारे प्रशिक्षित साधको, समणों-समणियो व साधु-साध्वियो के निर्देशन/सान्निध्य मे प्रेक्षाध्यान शिविर आयोजित होते है। ऐसे सहस्रो शिविरों मे हजारों व्यक्ति प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके है। इस वर्ष आयोजित प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविर—

क्र० सं०	स्थान	अवधि	निर्देशन	शिविरार्थी
१.	कोयम्बतूर	१८ मार्च, ८७ ए.दि.	समणी स्थितप्रज्ञाजी	१९ बहिनें
२.	अ. सा. केन्द्र, नई दिल्ली	२१ से २७ मार्च ८७	श्री धर्मानन्द, कठौतियाजी	१८
३.	पूना	१ मार्च, ८७	श्री जेठाभाई झवेरी	१५
४.	दिल्ली	२१-२ से २७-२-८७	धर्मानदजी, मोहनलाल कठोतिया	२३
५.	लक्ष्मीपुरा (खेड़ब्रह्मा)	१५-३ से २१-३-८७	मुनि शुभकरणजी	५०
६.	कोयम्बतूर	२२ मार्च, ८७	समणी स्थितप्रज्ञाजी	५०
७,	सेलम	१९ अप्रेल, ८७	समणी मुदितप्रज्ञाजी	२८
८.	अणुव्रत मडल, बम्बई	२९-३ ८७	समणी भावितप्रज्ञा, श्री एन.सी. शाह	२८
९.	तिनसुकिया	१८ से २० अप्रैल, ८७	सा. साध्वी जतनकुमारी	२५
१०.	पाली	१३ से १७ मई, ८७	सा. साध्वी सुबोधकुमारीजी निर्दे. श्री शुभकरण सुराणा	७३

११.	पीपाड़ सीटी	१२ से १६ मई, ८७	सा. साध्वी मधुस्मिताजी	३१ बच्चे
१२.	जसोल	१४ से १८ मई, ८७	सा. साध्वी अजितप्रभाजी, नि. पृथ्वीराज सकलेचा	५१ "
१३.	थामला	२६ से ३० मई, ८७	सा. साध्वी सतोषकुमारीजी, नि. हेमन्त भाई	४३ यु. युवतियां
१४.	आसाढा	२४ से २८ मई, ८७	सा. साध्वी अजितप्रभाजी	२५ बालिकाएं
१५.	पिपलान्तरी	१४ से १६ जून, ८७	सा. साध्वी आनन्दश्रीजी	३० बालक-बालिकाएं
१६.	नोहर	जून तृतीय सप्ताह	सा. साध्वी कमलप्रभाजी	४५ छात्र-छात्राएं
१७.	मद्रास	१५ से १६ जुलाई, ८७	सा. साध्वी नगीनाजी, नि. शांताबाई संघवी, केवलचन्द दरला	६१ महिलाएं
१८.	शिवाकाशी (त० ना०)	१४ जून, ८७ (एकदिवसीय)	नि. समणी स्थितप्रज्ञाजी	३० स्त्री-पुरुष
१९.	अलीपुर (कलकत्ता)	२१ से २७ जून, ८७	सा. साध्वी जयश्रीजी, नि. श्री व श्रीमती धर्मानंदजी	५३ " "
२०.	कुम्भोजगिरि बाहुबलि	२७ जून, ८७ एकदिवसीय	सा० मुनि धर्मचंदजी 'पीयूष'	७० " "
२१.	साकरोदा	जून अन्तिम सप्ताह	सा. साध्वी आनन्दश्रीजी	५० छात्र-छात्राएं
२२.	बम्बई (अणु० सभागार)	१६ जुलाई, ८७ एक दिव०	सा. साध्वी राजीमतीजी नि. जे. एस. जवेरी, एन.सी. शाह	६० स्त्री पुरुष
२३.	नाथद्वारा	२१ से २७ जुलाई, ८७	सा. साध्वी आनंदकुमारीजी	५० ते.म.मं.यु.
२४.	सलुम्बर	२७ से ३० जुलाई, ८७	सा. आचार्य अजितसागरजी महाराज नि० एस.के. जैन, रोहतक	५७ स्त्री पु०

२५.	केलवा	२८ से ३१ जुलाई, ८७	सा. साध्वी रायकुमारीजी, निर्दे. सा० कानकुमारीजी	५५ महिलाएं
२६.	जसंसिहपुर	३१-७ से ४-८-८७	सा. मुनि धर्मचंदजी 'पीयूष' निर्दे. जे. एस. झवेरी	४० स्त्री-पुरुष
२७.	आसीद	२ से ६ अगस्त, ८७	निर्दे हेमंतभाई पटेल	४० " "
२८.	खेडब्रह्मा	६ से १५ अगस्त, ८७	सा. मुनि शुभकरणजी, नि० समण श्रुतप्रज्ञजी	४० " "
२९.	अहमदाबाद	१० से १६ अगस्त, ८७	सा. साध्वी यशोधराजी, नि. समण स्थितप्रज्ञजी	६० " "
३०.	पूना (मराठा वाणिज्य एवं उद्योग मंडल)	१४ अगस्त (एकदिवसीय)	नि. जे.एस. झवेरी	२५ पदाधिकारी
३१.	सूरत	१७ से २१ अगस्त, ८७	सा. साध्वी मानकुमारीजी नि. समण स्थितप्रज्ञजी	५४ स्त्री-पुरुष
३२.	पालघर	२२ से २५ अगस्त, ८७	नि. समणी सरलप्रज्ञाजी	उपलब्ध नही
३३.	बारडोली	२४ से २६ अगस्त, ८७	सा. साध्वी रामकुमारीजी, नि. समण स्थितप्रज्ञजी	५७ भाई-बहिन
३४.	नौगांव	जुलाई तृ.स. (८ दिवस)	सा. साध्वी जतनकुमारीजी	६० बालक-बा०
३५.	बालोतरा	त्रिदिवसीय (अगस्त अन्तिम सप्ताह)	सा. साध्वी सिरेकुमारीजी नि. सा. काव्यलताजी	२७ महिलाएं

३६.	हासन (कर्नाटक)	२२ से २४ अगस्त, ८७	निर्दे समणी स्थितप्रज्ञाजी	१०० भाई-बहिन
३७.	पाटन	२८ से ३० अगस्त	समण स्थितप्रज्ञजी	उपलब्ध नही
३८.	पालनपुर	३७ अग. से २ सित., ८७	सा. साध्वी सोमलताजी, निर्दे. समण स्थितप्रज्ञजी	२५ भाई-बहिन
३९.	औरंगाबाद	१ से १३ सित० ८७	सा. मुनि रोशनलालजी, निर्दे. समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी	३३ भाई-बहिन
४०.	पूना (प्री.ओ.मो.)	४ सित. (एकदिवसीय)	निर्दे० जे. एस. झवेरी	२५ उच्च अधि.
४१.	बाव (सेमिनार)	४ से ६ सित. ८७	सा. साध्वी भीखाजी, निर्दे समण स्थितप्रज्ञजी	१०० भाई-बहिन
४२.	रापड़ (सेमिनार)	८ से १० सित.	सा. मुनि ताराचदजी, नि. समण स्थितप्रज्ञजी	५० भाई-बहिन
४३.	भुज	११ से १३ सित.	सा. साध्वी सोनाजी, नि. समण स्थितप्रज्ञजी	४३ भाई-बहिन
४४.	कालांवाली	१३ से १७ सित.	सा. साध्वी फूलकुमारीजी (लाडनूं) नि. मुमुक्षु सन्तोप	४६ भाई-बहिन
४५.	समानामण्डी	१८ सित. एकदिवसीय	सा. साध्वी तीजाजी, नि. मुमुक्षु सन्तोप	६५ भाई-बहिन
४६.	पचपदरा	१७ से २१ सित.	सा. मुनि मगनमलजी, समण स्थितप्रज्ञ जी	८१ भाई-बहिन
४७.	धोईन्दा (उदयपुर)	४ से ६ सित., ८७	सा. साध्वी गुलाबाजी	३५ बालक

६३.	जयसिंहपुर	२९ अक्टू. एकदिवसीय	सा. मुनि धर्मचंदजी 'पीयूष'	४० छात्र-छात्राएं
६४.	कलकत्ता	६ अक्टू. ८७ एकदि.	निर्दे. उम्मेद बैद	२७ भाई-बहिन
६५.	जोधपुर	२५ से २७ अक्टू.	सा. साध्वी मधुस्मिताजी	२५ बालिकाए
६६.	समाना	२१ से २५ नव.	सा. साध्वी कमलश्रीजी, निर्दे. श्री एवं श्रीमती एस.के. जैन	उप. नहीं
६७.	राजलदेसर	२० से २३ नव.	सा. साध्वी पानकंवरजी, नि. समणी सरलप्रज्ञाजी	५० कन्या महि.
६८.	फरीदाबाद	१० से १५ नव. ८७	सा. आचार्य तुलसी, नि. युवाचार्य महाप्रज्ञ	२५ बुद्धिजीवी
६९.	हस्तिनापुर	२ से ६ दिस. ८७.	सा. आर्यिका रत्न ज्ञानमतीजी नि. एस.के. जैन, श्रीमती सन्तोप जैन	२५
७०.	अ.सा. केन्द्र, दिल्ली	४ से ७-१२-८७	सा. मोहनलालजी कठोतिया	११
७१.	उदासीन आश्रम सम्मेद शिखर	१७ दिस. एकदिवसीय	निर्देशन-श्री एस.के. जैन	२५
७२.	कलकत्ता	२३-१२ से १-१-८८	निर्दे. श्री जे.एस. झवेरी	८० (म., पु.)
७३.	कुन्दकुन्द आश्रम, वन्दवासी	२५ से २७ दिस.	नि. साधिका शाता संघवी	४०
७४.	टापरा	२२ से २६-१२-८७	सा. साध्वी सिरेकुमारीजी	४० छात्र-छात्रा
७५.	वर्धमान भवन, वन्दवासी	९ व १० जन. ८८	निर्दे. शांता सघवी	६०
७६.	उदयपुर	१४ जन. ८८ (एकदिव.)	मुनि शुभकरणजी, नि. कन्हैयालाल सोनी	७६
७७.	राजलदेसर	२ से ६ दिस. ८७	सा. साध्वी पानकुमारीजी, नि. समण द्वय	३३ भाई-बहिन
७८.	मद्रास	४ दिव. (नव. ८७)	सा. साध्वी नगीनाजी, निर्दे. एन.सी. शाह	५५

७९.	पाली-मारवाड़	१ से ५ जन. ८८	नि. समणी मुदितप्रज्ञाजी	३३ भाई-बहिन
८०.	अहमदाबाद	७ फरवरी, एकदिवसीय	निर्देशन-जे.एस. झवेरी	७० भाई-बहिन
८१.	तुलसी साधना शि., राजसमंद	१३ से १७ फरवरी १९८८	सा. मुनि सुमेरमलजी 'सुमन'	३५ भाई-बहिन
८२.	मद्रास	२२ व २३ फरवरी १९८८	निर्देशन-शांता एम. सघवी	उपलब्ध नही
८३.	अहमदाबाद (प्रजापति ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय)	४ से ६ मार्च ८८	सान्निध्य-साध्वी यशोधराजी	१५० भाई-बहिन

३. अध्यापक-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविर

यह शिक्षा जगत् को नीडम् की विशिष्ट देन है। प्रारम्भ मे नागौर जिले के अध्यापको के 'अध्यात्म योग नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण शिविर' के नाम से यह प्रोजेक्ट प्रारभ हुआ। तत्पश्चात् एन सी.ई.आर.टी. के सहयोग से ८२-८३ मे राजस्थान मे अध्यापक प्रशिक्षणार्थ जयपुर व लाडनू में शिक्षा विभाग, राजस्थान के सहयोग से शिविर लगाए गए। छात्र-छात्राओ को प्रशिक्षण दिया गया व प्रशिक्षण जांच आधुनिक ढंग से हुई। यह प्रशिक्षण अब तक जारी है। इस वर्ष विभिन्न गतिविधियां इस प्रकार चली—

(i) राजकीय स्तर पर अध्यापक शिविर

क्र० सं०	स्थान	अवधि	सान्निध्य/निर्देशन	संभागी अध्यापक
१.	बनी पार्क, जयपुर	१५ से २४ मई, ८७	सा. मुनि विनयकुमारजी आलोक, नि. समणवृन्द	१०६ अध्यापक (जयपुर संभाग के ४१ विद्यार्थी)
२.	साहू नगर, सवाई माधोपुर	१० से १४ जून, ८७	सा. मुनि विनयकुमार, नि. समण स्थितप्रज्ञजी	६१ अध्या.
३.	जानकीलाल धर्मशाला, शवदाह घाट गली, कोटा	५ से १४ सित. ८७	सा. मुनि विनयकुमारजी नि. समण द्वय	८८ अध्यापक (कुल ७२ विद्यालयों के)-

(ii) निजी स्तर पर अध्यापक प्रशिक्षण शिविर व कार्यक्रम

क्र० सं०	स्थान	अवधि	सान्निध्य/निर्देशन	संभागी अध्यापक
१.	भीलवाडा	२१ मई से ४ जून ८७	मुनि सुखलालजी, नि. समणी सरलप्रज्ञाजी,	२३ (१६ क्षेत्रों के अमृत भारती के शिक्षक)
२.	लाडनूं	१० मार्च, ८७	नागौर जिले के प्राथमिक, उच्च प्राथ. विद्यालयो के प्रधानाध्यापकों की वाक्-पीठ सगोष्ठी-जैन.वि.भा. मे हुई	जि. शि. ब्रह्मदत वैष्णव, अ.जि.शि. व उप जि. शिक्षाधिकारियो ने भाग लिया
३.	अजमेर	२१-४-८७	समण स्थितप्रज्ञजी, बच्छराज दूगड़, शकरलाल मेहता	नई शिक्षा नीति क्रियान्वयन हेतु संदर्भित व्यक्तियों का शिविर
४.	भीलवाडा	२२ मई से २० जून ८७	स. सरलप्रज्ञाजी, मल्लिप्रज्ञाजी, सुधा सोनी	२३ अध्यापक
५.	सुजानगढ (पी.मा.वी उ. मा.वि. मे राष्ट्रीय शिक्षा-नीति शि. मे ४ शिविर	१० दिनों के ४ शिविर मई व जून मे	समणी व समण वृन्द ने सैद्धा. व प्रायोगिक जानकारी दी।	५० (प्रत्येक शिविर मे)
६.	दूगड वि. सरदारशहर	३० जुलाई	सा. कनकश्रीजी	अध्यापक व छात्र-छात्राओ की जी. वि. संगोष्ठी में सा. श्री ने उद्बोधन दिया

७.	पालघर	अगस्त ८७	समणी सरलप्रज्ञाजी के संचालकत्व में	स्थानीय विद्यालयों, कॉ. में जी.-वि. का प्रचार-प्र.
८.	शिक्षक प्रशिक्षण विद्या. (B.S T.C) राजल.	११ से २२ नव. ८७	समणीवृन्द द्वारा	शिक्षको को जी.वि. का सैद्धांतिक व प्रायोगिक प्रशिक्षण
९.	शिक्षक प्रशिक्षण विद्या. (B.S.T.C.) राजल.	२३ नव. से ४ दि. ८७ तक	समणीवृन्द द्वारा	शिक्षकों को जी.वि. प्रशि.
१०.	अहमदाबाद के १० उ. व उ.मा. विद्यालय	मार्च ८८ द्वि. व तृतीय सप्ताह	साध्वी यशोधराजी के अहमदाबाद प्रवास के समय	१० उ. व उ.मा. विद्या- में कार्यक्रम हुए।
११.	सेठ के.टी. वि. खेड़ब्रह्मा	२९ अक्टू. ८७	मुनि शुभकरणजी व समण स्थितप्रज्ञजी के निर्देशन मे	विद्यालय के अध्यापक वर्ग का एकदिवसीय शिविर

५. प्रेक्षाध्यान साधक प्रशिक्षण शिविर

अन्यत्र प्रेक्षाध्यान अभ्यास शिविर लगाने के निमित्त प्रशिक्षक तैयार करने के लिए नीडम् द्वारा इन शिविरों का आयोजन किया जाता है।

क्र० सं०	स्थान	अवधि	सा./नि.	संभागी विवरण	परिणाम
१.	नयी दिल्ली	६ से १२ अक्टू, १९८७	नि. युवाचार्य महाप्रज्ञ सहयोगी-मुनि किशनलाल, महेन्द्रकुमार, जे.एस.झवेरी,	५५ (५ सा. ३ समण, १० समणियां, ७ मुमुक्षु बहिनें, १६ महिलाएं व १४ पुरुप)	दो ग्रुप बनाकर १०-११ की लिखित परीक्षा ली गई, ५३ संभागी सफल रहे।

बहुत असाता का वेदन किया। २७ वर्षो से वह पलंग पर था, पर उसने सहिष्णुता के साथ कष्टों को सहन किया। वह तेरह वर्षों से मात्र सात द्रव्य खा रहा था। उसकी मां व पत्नी ने उसकी पूरी सेवा की।'

० श्री जयचदलाल सेठिया (जालना)

आचार्यवर के उद्गार—'जयचदलालजी सेठिया एक धर्मनिष्ठ व जागरूक श्रावक थे। ध्यान एव स्वाध्याय के प्रति भी उनकी गहरी अभिरुचि थी। उनकी धर्मपत्नी रतनदेवी एक जागरूक महिला है।'

० श्री चम्पालाल नाहटा (सरदारशहर)

आचार्यश्री ने उनके बारे मे कहा—'चम्पालालजी सरदारशहर के एक जाने माने श्रावक स्व० जयचंदलालजी नाहटा के पुत्र थे। वे अपनी भक्ति-वत्ता के कारण 'भगतजी' नाम से प्रसिद्ध थे। चम्पालालजी भी अपने पिता की तरह श्रद्धावान् श्रावक थे। वे होमियोपैथिक डाक्टर थे। साधु-साध्वियों की वे अच्छी सेवा करते थे।'

० श्रीमती बिदामीबाई (उदयपुर)

आचार्यवर के उद्गार—'बिदामीबाई एक धर्मनिष्ठ श्राविका थी। वर्षो से वह केन्द्र की लम्बी उपासना करती थी। रास्ते की सेवा मे भी वह स्वावलम्बी बनकर रहती। उसके चले जाने से उदयपुर मे एक अच्छी श्राविका की कमी हो गई।'

० श्रीमती खेतसीदास दूगड (सरदारशहर)

आचार्यवर के उद्गार—'खेतसीदासजी की धर्मपत्नी एक श्रद्धाशील श्राविका थी। उसने अपनी एक पुत्री (साध्वी मानकवरजी) को धर्मसंघ के लिए समर्पित किया।'

० श्री फूलचन्द बम्ब (आमेट)

आचार्यश्री ने उन्हे एक तत्त्वज्ञ श्रावक बताते हुए कहा—'फूलचन्दजी तत्त्वज्ञ तो थे ही, साथ ही वे बहुत विनम्र थे, श्रद्धालु थे, शासन के भक्त व सेवार्थी थे। उनकी कमी केवल आमेट को ही नही, अपितु पूरे मेवाड को खटकेगी।'

० श्रीमती सुराणा (ईडवा)

अखिल भारतीय तेयुप के पूर्व मंत्री श्री सुभाष सुराणा की वह धर्म-पत्नी थी। इंजेक्शन के रिएक्शन के कारण उसका निधन हो गया। असमय मे बहिन के चले जाने से सभी परिवार किंकर्त्तव्यविमूढ हो गए। पारिवारिक-जनों ने आचार्यवर से संबल प्राप्त किया।

० श्रीमती हुलासीदेवी गिड़िया (टमकोर)

वह सौभागमलजी गिड़िया की धर्मपत्नी थी। आचार्यश्री ने उनके निधन पर कहा—'हमारे धर्मसंघ मे प्राय. प्रतिवर्ष कुछ प्रभावक अनशन होते

हैं, उसी शृंखला में हुलासीदेवी का अनशन भी था। सलेखना और संथारा सहित ५४ दिन की तपस्या कर बहिन ने उल्लेखनीय कार्य किया। अनशनकाल मे समणियो का धार्मिक सहयोग मिला।'

० श्री जसकरण आचलिया (रतनगढ़)

आचार्यश्री के उद्गार—'जसकरणजी स्व० हीरालालजी आंचलिया के सुपुत्र थे। उनकी मा बहुत श्रद्धालु और धार्मिक थी। जसकरणजी का संघ व सघपति के प्रति पूरा समर्पण था।'

० श्री आनन्दकुमार वैद (लाडनू)

वे स्व० कुशलचंदजी वैद के पुत्र थे। उनका अल्पायु मे निधन हो गया। आचार्यवर के उद्गार—'कुशलचदजी की धर्मपत्नी सुदरदेवी को इन वर्षो मे एक के वाद एक तीन पुत्रो का वियोग सहना पडा। इस कठिन परिस्थिति मे सुदरदेवी ने अपने धार्मिक सस्कारो और गहरी निष्ठा के कारण इस दु:ख को वडे धैर्य व समभाव से सहन किया है।'

० श्री मनोजकुमार चडालिया (सरदारशहर)

वह श्री हंसराज चंडालिया का बीसवर्षीय पुत्र था। मनोज स्वभाव से विरक्त व शांत था।

० श्री प्रह्लाद व्यास (वीकानेर)

श्रावक प्रह्लादजी व्यास का विराटनगर मे निधन हो गया। आचार्य श्री ने उनके वारे मे कहा—'नोखा के नौलखा परिवार के सपर्क मे वीकानेर के गणपतजी ब्राह्मण का परिवार जैन और तेरापथी वना। पूरा परिवार केवल श्रद्धाशील ही नही, तत्त्वज्ञान से भी सम्पन्न है। गणपतजी के पुत्र प्रह्लाद जी भी तत्त्वज्ञानी, तपस्वी व श्रद्धालु थे। वे समय-समय पर तेरापंथ के सिद्धान्तो को अन्यान्य लोगों को समझाया करते थे।'

० श्री राजमल सेठिया (भीनासर)

आचार्यवर के उद्गार—'राजमलजी एक श्रद्धालु श्रावक थे। धर्म व स्वीकृत नियमों के प्रति उनके मन मे गहरी आस्था थी। पिछले वर्षो मे वे कॅंसर से पीडित हो गये थे। बीच मे एक बार वे ठीक भी हो गए। उनके ज्येष्ठ भ्राता लूणकरणजी भी अच्छे श्रावक है। विगत छह वर्षो से वे निरन्तर वर्षीतप कर रहे हैं।'

० श्री वृजमोहन जैन (सवाईमाधोपुर)

वे कल्याणमलजी के सुपुत्र थे। आचार्यवर ने वृजमोहनजी को एक सेवाभावी श्रावक वताया।

० श्री चन्दनमल दूगड (जयपुर)

आचार्यवर के उद्गार—'चन्दनमलजी दूगड जयपुर के हमारे प्रमुख श्रावको मे एक थे। वे मूलत. बीदासर के थे और जयपुर गोद आये थे। शुरू

से ही उनके धार्मिक संस्कार अच्छे थे। जयपुर में मुनि पूनमचन्दजी स्वामी का विराजना बहुत हुआ। तब वहां के श्रावक सुजानमलजी खारड, गुलाबचन्दजी लूणिया, मोतीलालजी बांठिया, नानगरामजी सरावगी और चन्दनमलजी दूगड़ ने अच्छा तत्त्वज्ञान सीखा था। उन तत्त्वज्ञ श्रावकों मे एक मात्र चन्दनमलजी ही वर्तमान मे थे। वे भी चले गए। यद्यपि इन वर्षों मे वे शारीरिक दृष्टि से परवश थे, पर प्रकृति से सहज एवं शान्त थे। संघ एवं संघपति के प्रति उनके मन मे अटूट आस्था थी।'

० श्री बाबूलाल दूधोडिया (छापर)

आचार्यवर के उद्गार—'बाबूलाल दूधोडिया एक अच्छा होनहार युवक था। व्यवसाय की दृष्टि से वह सूरत रहता था। कुछ समय से वह रक्त केसर से पीडित था।'

० लाला शेरसिह जैन (ऊमरा)

आचार्यवर के उद्गार—'शेरसिह दिल्ली का बहुत पुराना भक्त था। दिल्ली के नया बाजार ठिकाने मे वह ४५ वर्षो से रहता था। मेरे स० २००८ के वृद्धिचन्द जैन स्मृति भवन के चातुर्मास में उसने अच्छी सेवा की।'

० श्रीमती गुलाबीबाई रामपुरिया (सुजानगढ)

आचार्यवर ने उनके पति श्री थानमल रामपुरिया को एक धार्मिक व्यक्ति बताते हुए कहा—'उनकी धर्मपत्नी गुलाबीबाई उनसे कम नही थी। वह बडी श्रद्धालु श्राविका थी। गुरु-दर्शन के लिए वह सदैव तत्पर रहती थी। स्वाध्याय की प्रवृत्ति उसमे अच्छी थी।'

दृढ़धर्मी दीर्घ तपस्वी श्रावक श्री लालचन्द भाई

सौराष्ट्र के (काठियावाड)चूड़ा निवासी श्री लालचन्द भाई माणकचन्द शाह, जिन्होने तेरापंथ धर्मसंघ मे तपस्या का एक अनोखा कीर्तिमान स्थापित किया, का ५ जून १९८७ को समाधि-मरण हो गया। वे ७७ वर्ष के थे।

जीवन वृत्त—श्री लालचन्द भाई का जन्म वि० सं० १९६६, फाल्गुन कृष्णा ६ को चूड़ा मे हुआ था। श्री लालचन्दभाई प्रथमत: वि० सं० २००४ मे तेरापंथ के सम्पर्क मे आए व मुनि डूगरमलजी से प्रथम साक्षात्कार हुआ। आगे चलकर उन्होने धर्म-सिद्धान्त को आत्मसात् करते हुए तेरापंथ की गुरुधारणा स्वीकार कर ली। इसी क्रम मे आगे उन्हे बहुत से सामाजिक विरोधों का सामना भी करना पड़ा, पर वे सदैव स्थिर रहे।

मुनिश्री द्वारा सम्यग् बोध प्राप्त करने के बाद श्री शाह का जीवन त्याग-तपस्या से ओत-प्रोत रहा। आचार्यश्री के प्रति उनके मन मे अगाध श्रद्धा रही। उन्हे वे पुण्यवान् देव-तुल्य मानते थे।

प्रारम्भ से ही धार्मिक संस्कारो मे पले थे, अत: वे ही सस्कार आगे

चलकर पल्लवित और पुष्पित हुए। वे पिछले ३६ वर्षों से लगातार तेले-तेले की तपस्या कर रहे थे।

तपस्या का विवरण

तिविहार एकान्तर तप	१ वर्ष तक	चौविहार अठाई	२० बार
तिविहार बेले-बेले तप	१ वर्ष तक	२५ दिवस तप	१ बार
तिविहार तेले-तेले तप	२५ वर्ष तक	१५ दिवस तप	१ बार
तिविहार चोले-चोले तप	१ वर्ष तक	१४ दिवस तप	१ बार
चौविहार तेले-तेले तप	११ वर्ष तक	पौषध	३५००
तिविहार अठाई	५ बार	सामायिक	५०००

इस प्रकार लालचन्द भाई ने अपने जीवन मे कुल लगभग १०,००० दिवस की तपस्या कर कीर्तिमान स्थापित किया है। इसके अलावा अग्रेजी दवाइयो के सेवन, हरी सब्जी, आम के अलावा सभी फलो, जूते पहनने, पारणे मे ८ द्रव्यो से अधिक सेवन का उनके पिछले कई वर्षों से त्याग था। इस प्रकार उनका पूरा जीवन ही तपस्यामय बन गया।

आचार्यवर के उद्गार—'सौराष्ट्र मे चूडा निवासी श्रावक लालचन्द माणकचन्द शाह एक तपस्वी श्रावक था। वह जैन, तेरापथी श्रावक था। श्रावकत्व उसमे जन्मना ही नही, कर्मणा मूर्त रूप ले चुका था। उसका परिवार धार्मिक व आर्थिक दोनो दृष्टियो से सम्पन्न है। कुछ वर्षो से वह सौराष्ट्र को छोड अहमदावाद में प्रवास करता था। उसके मन मे अपने धर्मसघ एवं धर्मगुरु के प्रति अटूट आस्था थी। उसके जीवन मे कुछ विलक्षणताए थी। उनमे एक बडी विलक्षणता थी तपस्या। उसके तपस्या का क्रम काफी लम्बा था। उसके जीवन मे तपस्या के साथ शाति का अद्भुत योग था। मै उसके साथ दो सम्बोधन जोड़ना चाहता हूं 'दृढधर्मी दीर्घतपस्वी श्रावक लालचन्द।' उसकी धार्मिक दृढता व दीर्घकालीन तपस्या सबके लिए प्रेरणा देने वाली है।'

परिशिष्ट-६

यात्रा-विवरण

रतनगढ़ मर्यादा महोत्सव की सम्पन्नता के बाद

दिनांक	समय	कि० मी०	गांव/शहर	स्थान	प्रवास	जैन	तेरापंथी
फरवरी १९८७				**चूरू जिला, राजस्थान**			
१५	प्रातः	७	जालेऊ	स्कूल	दि०[1]	—	—
१५	साय	४ ½	गौरीसर	तातेड़ धर्मशाला	रा०[2] १	—	—
१६	सायं	९	सेला	स्कूल	रा० १	—	—
१७	प्रातः	६	सातड़ा	स्कूल	रा० १	—	—
१८	प्रातः	९	बीनासर	चौधरी का मकान	रा० १	—	—
१९	प्रातः	१३	चूरू	रावतमल वैद	रा० १०	—	१२५
मार्च							
१	सायं	३	चूरू (गांव बाहर)	नवरत्नमल सूरजमल सुराणा कृषिफार्म	रा० १	—	—
२	प्रातः	१०	ढाढर	वजरंगलाल अग्रवाल	रा० १	—	—
३	प्रातः	८½	चारणों की ढाणी	मकान	रा० १	—	—
४	प्रातः	१०½	दूधवाखारा, झुंझनू जिला	धर्मशाला (स्टेशन के सामने)	रा० १	—	—

१. दिन २. रात

५	प्रातः	१०	टमकोर,	ओसवाल पंचायत भ०[1]	रा० ३	—	४५
८	सायं	३½	मोतीसिंहजी की ढाणी चूरू जिला	डूगरसिंह राजपूत	रा० १	—	—
९	प्रातः	६½	हड़याल स्टेशन	स्कूल	रा० १	—	—
१०	प्रातः	८½	डोकुवा	स्कूल (गाव में)	रा० १	—	—
११	प्रातः	९	सादुलपुर	सेठिया गेस्ट हाऊस	रा० ३	—	६५
१४	प्रातः	२	राजगढ	कोठारी भवन	रा० ४	—	१२५
१८	सायं	१	राजगढ (लुदीवास)	शोभाचंद इन्द्रमल सुराणा	रा० १	—	—
१९	प्रात.	१३½	लसेड़ी	स्कूल	रा० १	—	—
२०	प्रातः	८	गोठ्यां	सेठिया भवन	अ०[2]	—	८
हरियाणा राज्य							
२०	प्रातः	१½	झुपा, भिवानी जिला	स्कूल	दि०	—	४
२०	सायं	४½	मोतीपुरा	स्कूल	रा० १	—	—
२१	प्रातः	१४½	सिवानी	स्कूल	रा० १	—	८
२२	प्रातः	११	चौधरीवास, हिसार जि०	स्कूल	रा० १	—	—
२३	प्रातः	८½	मुकलान	स्कूल	रा० १	—	—
२४	प्रातः	६½	गंगवा	स्कूल	रा० १	—	—
२५	प्रातः	६	हिसार	विश्नोई मन्दिर	रा० ११	सैकड़ो	१२५

१. भवन २. अल्प प्रवास

अप्रैल

५	प्रातः	२½	हिसार (ग्रीनपार्क)	विद्यासागर जैन	अं०	—	—
५	प्रातः	१½	हिसार (मॉडल टाऊन)	तेरापंथ भवन	रा० १	—	—
६	प्रातः	½	हिसार (मॉडल टाऊन)	ओ० पी० जिंदल की कोठी	रा० १	—	—
७	प्रातः	१०	विद्यादेवी जिंदल पब्लिक स्कूल	विद्यालय भवन	रा० १	—	—
८	प्रातः	१३	हांसी	बलवंतसिंह जैन कटला	रा० ६	१००	१६५
१४	सायं	२	हांसी (नई अनाजमंडी)	नेमिसागर जैन	रा० १	—	—
१५	प्रातः	१०	गडी, भिवानी जिला	स्कूल	रा० १	—	—
१६	प्रातः	११	मुढानखुर्द	स्कूल	रा० १	—	—
१७	प्रातः	१४½	महम, रोहतक जिला	अग्रवाल सभा	रा० १	—	—
१८	प्रातः	१०	मदीना	स्कूल	दि०	—	—
१८	सायं	७	बहुअकबरपुर	स्कूल	रा० १	—	—
१९	प्रातः	६	रोहतक	नवभारत इंडस्ट्रीज	अ०	सैकड़ों	१८
१९	प्रातः	१½	रोहतक	एस० के० जैन	अ०	—	—
१९	प्रातः	१½	रोहतक	वैश्य गर्ल्स हाईस्कूल	रा० १	—	—
२०	सायं	१	रोहतक	मालाबार गेस्ट हाऊस	रा० २	—	—
२२	प्रातः	१२	खरावड़	कन्या विद्यालय	रा० १	—	—

२३	प्रातः	११	सांपला	स्कूल	रा० १	—	—
२४	प्रातः	६	असौदा	स्कूल	रा० १	—	—
२५	प्रातः	१०	बहादुरगढ़	हरकिशनदास पत्थरवाले	रा० १	—	—

राजधानी दिल्ली (केन्द्र शासित)

२६	प्रातः	१२	नजफगढ़	सुदर्शन जैन आदर्श स्कूल	रा० १		१
२७	प्रातः	१५	बिजवासन	सहगल फार्म	रा० १		—
२८	प्रातः	१२	महीपालपुर	बसंत कुंज	रा० १		—
२९	प्रातः	५	महरौली	अध्यात्म साधना केन्द्र	रा० १९	२५	२ (गांव में)

मई

१८	प्रातः	७	साकेत	रमेश जैन, एम० ३६	रा० १		३
१९	प्रातः	४	पंचशील एन्कलेव	सुरेश जैन	रा० १		३
२०	प्रातः	२	ग्रेटर कैलास	दानचन्द वाफणा ड० ४५	रा० १		५
२१	प्रातः	२	नेहरू प्लेस	शिवचन्दराय डाबडीवाल, आर० १३	अ०		१
२१	प्रातः	२	सुखदेव विहार	बारूमलजी जैन, न० ११	अ०		४
२१	प्रातः	३	न्यू फ्रैंड्स कॉलोनी	उमरावचंद चोरड़िया	१		१०
२२	प्रातः	६½	सिद्धार्थ एन्कलेव	अलायचंद गोठी, न० २३२	१		५

२३	प्रातः	१०	दीनदयाल उपाध्याय मार्ग	अणुव्रत भवन	२	
२५	प्रातः	७	स्वास्थ्य विहार	प्रेमनाथ जैन, बी० ९२	१	
२६	प्रातः	१	प्रीत विहार	सोहनलाल जैन ई० ८३	अ०	
२६	प्रातः	४	विश्वास नगर	विजयराज सुराणा २/३३, युधिष्ठिर गली	अ०	
२६	प्रातः	२	विवेक विहार	हनुमानमल बैद	रा० ६	
जून						
१	प्रातः	३	कबूल नगर	दिगम्बर जैन मं०[1]	अ०	४
१	प्रातः	५	शास्त्री पार्क	जैन स्थानक	रा० १	१
२	प्रातः	६	सब्जीमंडी	कठोतिया भवन १५३२, चंद्रावल रोड	रा० १	
३	प्रातः	२	सी० सी० कॉलोनी	बलवंतराय जैन	रा० १	१५
४	प्रातः	$\frac{3}{4}$	स्टेट बैंक कॉलोनी	रामेश्वरदास जैन न० ७५ जी० टी० रोड	अ०	४
४	प्रातः	$\frac{1}{2}$	डेरावालान	मोहनलाल गिड़िया	अ०	४
४	प्रातः	६	शालीमार बाग	नरेश गोयल, ए० जी० २०	रा० ८	६०

१. मंदिर

१२	प्रातः	२	अशोक विहार	जैन स्थानक, फैज-१, एफ-३	रा० ५	३०
१७	प्रातः	४	पीतमपुरा	किस्तुरीलाल तरसेमचंद जैन	रा० ४	३२
२१	प्रातः	१½	लोकविहार	ज्ञानचंद बोथरा ए०-१, शिवा एन्कलेव	रा० १	२०
२२	प्रातः	४	जयदेव पार्क	ओमप्रकाश जैन १/५	अ०	५
२२	प्रातः	½	पंजाबी बाग (ईस्ट)	स्वरूपचन्द बरड़िया हाऊस नं० १२, रोड नं० ३	अ०	२
२२	प्रातः	३	कीर्तिनगर	चावला भवन	रा० २	३२
२४	प्रातः	२	मानसरोवर गार्डन	फतेहचंद भंसाली एफ० ३३	रा० १	८
२५	प्रातः	२	कीर्तिनगर	चावला भवन	दि०	३२
२५	सायं	१	कीर्तिनगर	कन्हैयालाल पटावरी, के० ७२	रा० १	
२६	प्रातः	२	रणजीतनगर	सुरेश जैन क्वार्टर ४६६ डी० डी० ए० कॉलोनी	अ०	२
२६	प्रातः	३½	राजेन्द्र नगर	बालभारती पब्लिक स्कूल, गंगाराम हॉस्पीटल के पास	रा० २	१३
२८	प्रातः	४	मंदिर मार्ग	हिन्दू महासभा भवन	रा० १	
२९	प्रातः	३	हेलीरोड	वी० वी० अजमेरा	अ०	

२६	प्रातः	२	दीनदयाल उपाध्याय मार्ग (राऊज एवेन्यु)	२१०, अणुव्रत भवन	चातुर्मास		
नवम्बर १९८७							
६	प्रातः	९	लाजपतनगर	हनुमान मदिर	रा० १		२०
७	प्रातः	२	सिद्धार्थ एन्कलेव	सुखराज सेठिया, न० १५	अ०		४
७	प्रातः	३	सुखदेव विहार	बारूमल जैन, नं ११	रा० १		४
८	प्रातः	६	बदरपुर	निरंजनलाल जैन नं०, ४१४	रा० १	६	—
हरियाणा राज्य (फरीदाबाद जिला)							
९	प्रातः	६	फैक्ट्री	फैक्ट्री	अ०	—	—
९	प्रातः	४	ओल्ड फरीदाबाद	भीमसेन जैन·१६३, सेक्टर १६ ए	रा० १		२
१०	प्रातः	४	फरीदाबाद	वैश्य धर्मशाला	रा० ५		३०
१५	सायं	४	ओल्ड फरीदाबाद	भीमसेन जैन	रा० १		२
दिल्ली							
१६	प्रातः	९	बदरपुर	निरंजनलाल जैन	रा० १	६	—
१७	प्रातः	६	सुखदेव विहार	पूनमचंद जैन ११९, जामिया नगर	अ०		४
१७	प्रातः	३	न्यू फेंड्स कॉलोनी	बाबूलाल सेठिया ए० १४०	रा० १		१०
१८	प्रातः	२	महारानी बाग	सोहनलाल सरावगी, डी० ३	अ०		१
१८	प्रातः	१	सिद्धार्थ एन्कलेव	तोलाराम संचेती, न० ३९	अ०	—	४
१८	प्रातः	६	दीनदयाल उ० मार्ग	अणुव्रत भवन	रा० २५		

दिसंबर							
१३	सायं	४½	नया बाजार	विरधीचंद जैन स्मृति भवन	रा० १		१०
१४	प्रातः	३	सब्जी मंडी	कठोतिया भवन	अ०		
१४	प्रातः	३	दिल्ली विश्वविद्यालय	आर्ट्स फैकल्टी भ०	अ०	—	—
१४	प्रातः	२	तिमारपुर	मागीलाल सेठिया ५, दीनदयाल शर्मा मार्ग, बनारसीदास इस्टेट	रा० १	—	१
१५	प्रातः	३	मॉडल टाऊन	लाभचंद पुगलिया ई-४/८ ए० फेज-२	रा० १		१३
१६	प्रातः	२	डेरावालान	राजीव जैन	अ०		
१६	प्रातः	४	गुलाबीबाग	नजरकंवर सुराणा स्मृति आई हॉस्पीटल	रा० १		
१७	प्रातः	२	विवेक विहार	पदमचंद खटेड़	अ०		४
१७	प्रातः	४	सदरथाना रोड़	नजरकंवर सुराणा स्मृति भवन	दि०		२०
१७	सायं	४½	दीनदयाल उ० मार्ग	अणुव्रत भवन	रा० २७	—	—
जनवरी, १९८८							
१३	प्रातः	४	हैदरकुली	बालचन्द जैन, ४१८-ए	अ०		
१३	प्रातः	३½	सिविल लाइंस	उमरावचंद बेंगानी, ७-बी श्रीराम रोड़	रा० १		१

१४	प्रातः	३	नीलकटरा	लाजपतराय जैन ६४६, गली घंटेश्वर	अ०	—	२
१४	प्रातः	४½	दीनदयाल उ० मार्ग	अणुव्रत भवन (मर्यादा महोत्सव)	रा० १६	—	—
फरवरी							
२	सायं	४	पृथ्वीराज चौहान मार्ग	६, जिंदल भवन	रा० १	—	१
३	प्रातः	६	गुलमोर पार्क	किशनलाल दूगड, ए० १४	अ०		२
३	प्रातः	१½	ग्रीनपार्क	आशीर्वाद भवन	रा० १		२०
४	प्रातः	२	पंचशील	कुंदनमल डावडीवाल, एस० ८५	अ०		२
४	प्रातः	७	महरौली	अध्यात्म साधना केन्द्र, छतरपुर रोड	रा० १		
५	प्रातः	१½	महरौली (गांव)	प्रसन्नचंद कोठारी, गली तेलियान	अ०	२४	२
५	प्रातः	६	एन० सी० ई० आर० टी० एरिया	कुन्दकुन्द भारती	अ०	—	—
५	प्रातः	४½	आनंद निकेतन (मोतीबाग)	जे० एम० भंडारी, सी०/५३	रा० १		४
६	प्रातः	८	हरीनगर	आर० सी० जैन, ए इ/४३३	अ०		५
६	प्रातः	३	जनकपुरी	आदर्श पब्लिक स्कूल, बी० ब्लॉक	रा० १		४
७	प्रातः	५½	सुन्दर विहार	भरतसिंह विजयकुमार जैन ११/३६८ आउटर रिंग रोड़	अ०		२

७	प्रातः	२½	पश्चिम विहार	रमेशचंद गुप्ता, ए-१/१८५	दि०	—	२
७	साय	५	नांगलोई	हरीराम जैन, नजफगढ रोड़	रा० १		

दिल्ली प्रवेश तक—यात्रा दिवस-३८, क्षेत्र-३७, यात्रा-३१९ किलोमीटर; दिल्ली में कुल प्रवास—२८८ दिवस, उपनगर-५८, यात्रा-३२८ किलोमीटर; कुल यात्रा-६४७ किलोमीटर। दिल्ली के उपनगरों मे जैनों के सैकडो-सैकड़ों परिवार रहते है। उनकी निश्चित संख्या की अवगति न होने से जैन घरो की गिनती मे पृथक् उल्लेख नही किया है।

परिशिष्ट-७
संस्था विवरण

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्, गंगाशहर

आंचलिक सम्मेलन

तेयुप के वढ़ते हुए विस्तार एवं कार्यक्षेत्र को मध्यनजर रखते हुए यह अनुभव किया गया कि आंचलिक स्तर पर देश के विभिन्न अंचलों मे युवा सम्मेलन आयोजित किये जाए, ताकि सम्वन्धित अंचल की तेयुप शाखाओ एवं वहां के युवाओं से विशेप सम्पर्क वन सके एवं सघन रूप से कार्यक्रमो की संभावनाएं आंकी जा सके। केन्द्रीय परिपद् द्वारा इस दौरान पाच आंचलिक सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो चुके है। ये अंचल है वीकानेर आंचलिक, दक्षिणांचल (महाराष्ट्र, गुजरात आदि इसमें दक्षिण के कुछ क्षेत्रों के प्रतिनिधि भी आमंत्रित किये गये) सम्मेलन वम्वई में, हरियाणा प्रांतीय सम्मेलन हामी मे जिसमे पूज्य गुरुदेव का पावन सान्निध्य भी प्राप्त हुआ, सिवाणची मालानी आंचलिक सम्मेलन, वालोतरा मे एवं पंजाव प्रातीय आंचलिक सम्मेलन नाभा मे। निकट भविष्य में पूर्वांचल, तेयुप आचलिक सम्मेलन, सिलीगुडी (पश्चिमी वंगाल) एवं कर्नाटक प्रांत के सम्मेलन प्रस्तावित है।

प्रकोष्ठों का गठन

केन्द्रीय प्रवृत्तियो को विशेप वल और दिशा देने एवं कानोड़ सम्मेलन के तहत् परिपद् को सौपे गये दायित्वो को क्रियान्विति देने की दृष्टि से केन्द्रीय परिपद् ने कुछ प्रकोष्ठो का गठन किया। ये प्रकोष्ठ है—रोजगार प्रकोष्ठ, जिसका संयोजकीय दायित्व श्री मूलचन्द डागा (कलकत्ता) सदस्य, राष्ट्रीय कार्यकारिणी, व्यसनमुक्ति प्रकोष्ठ, जिसका संयोजकीय दायित्व श्री हंसराज वेताला (भागलपुर), सदस्य. राष्ट्रीय कार्यसमिति एवं आहार शुद्धि प्रकोष्ठ, जिसका संयोजकीय दायित्व, श्री मुरलीधर कांठेड़ (व्यावर), सदस्य, राष्ट्रीय कार्यसमिति को सौपा गया है। सभी प्रकोष्ठों ने अपना कार्य शुरू कर दिया है। तीनों ही कार्य अपने ढंग से महत्त्वपूर्ण हैं। रोजगार प्रकोष्ठ के संयोजक ने अखिल भारतीय स्तर पर आठ युवाओ को अपने साथ जोडा है और एक पैनल स्थापित कर अपने कार्य को गति दे रहे है। इस प्रकोष्ठ को अव तक ११ व्यक्तियों के आवेदन प्राप्त हुए हैं। इनमें से १० व्यक्तियो को प्रकोष्ठ के सहयोग से कार्य मिल चुका है। व्यसनमुक्ति और आहार शुद्धि

प्रकोष्ठों ने भी अपने कार्यक्रम निर्णीत किए हैं।

संगठन यात्राएं : कितनी उपयोगी, कितनी सार्थक

तेयुप अभियान के निरन्तर विस्तार के पीछे यदि कोई कारगर तरीका सफल हुआ है तो वह है संगठन यात्राओं का। हमारे पिछले वर्षों के अनुभव बताते हैं कि इन संगठन यात्राओं के माध्यम से जहां हम तेयुप के करणीय कार्यों को प्रभावी ढंग से अपनी शाखाओं तक पहुंचा पाये है, वहां एक दूसरे को जानने, समझने एवं जिज्ञासाओं के समाधान मे भी मदद मिली है। आलोच्य वर्ष मे भी यात्राओ के अनेक क्रम वने। हाल ही मे केन्द्रीय परिपद् के सशक्त कार्यकर्ता श्री ईश्वरचंद वैद (नोखा) ने लम्वी यात्रा सम्पन्न की है। राजस्थान के जोधपुर, पाली, वालोतरा होते हुए सूरत, अहमदावाद, वंवई, मद्रास, कर्नाटक के विभिन्न क्षेत्रो तक की सुदूर लम्वी यात्रा मे जहां परिपद् की प्रवृत्तियो के प्रचार-प्रसार की सम्भावनाओ पर विचारो का आदान-प्रदान किया गया, वहां परिपद् की प्रवृत्तियो के लिए स्नेह, सहयोग और सद्भाव प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हुई। ठीक इसी तरह परिपद् के अध्यक्ष, मंत्री, कोपाध्यक्ष, कार्यसमिति के अन्य साथियों ने समय-समय पर यात्राए सम्पन्न की हैं। तमिलनाडु क्षेत्र से परिपद् की राष्ट्रीय कार्यसमिति के सदस्य इन्द्रचन्दजी वोहरा, केवलजी वोहरा एवं तेयुप मद्रास के अध्यक्ष गौतमजी वोहरा ने अभी तमिलनाडु क्षेत्र की संगठन यात्रा सम्पन्न की। केन्द्रीय परिपद् के सहमंत्री श्री सुरेन्द्र जैन (भिवानी) ने हरियाणा प्रांत और अमृतलालजी गुप्ता (जगराओ-पंजाव) ने संगठन यात्राओं के सिलसिले को अपने क्षेत्रो मे विशेप रूप से जारी रखा है।

सामाजिक सेवाएं

तेयुप के त्रिवेणी कार्यक्रम मे एक है सेवा। सेवा को हम सामाजिक दायित्व वोध की दृष्टि स्वीकृत कर अपनी समस्त शाखाओ को इस हेतु प्रेरित करते है। यो तो सेवा के विविधमुखी कार्यक्रम तथा रोग निदान केन्द्र, टीको की व्यवस्था, औपधि वितरण, छात्रवृत्तिया, सहयोग परिपदो के द्वारा संचालित होते ही है। लेकिन कभी ऐसे अनायोजित प्रसंग भी उपस्थित होते है, तव सेवा के उपक्रमों को तेजतर्रार वनाना पड़ता है। इस वर्ष देश के विभिन्न भागो मे भयंकर सूखे से अकाल की विभीपिका पैदा हो गई है। कई क्षेत्रो मे वाढ़ से जनजीवन आक्रांत हो उठा है। ये वे अवसर है जव सेवा के प्रोजेक्ट आवश्यक होते है और सेवा के कार्यक्रम कसौटी पर कसे जाते हैं। प्रसन्नता है कि हमारी तेयुप शाखाओं और अनेक क्षेत्रो मे हमारे तेयुप के सदस्यो ने संगठित रूप से एव व्यक्तिगत रूप से सेवा के इन कार्यक्रमों में अच्छी रुचि दिखाई है और अपने सहयोगी हाथ वढ़ाकर सेवा कार्यो को वरीयता प्रदान

की है।

जैन विश्व भारती परिसर में 'युवालोक भवन' का निर्माण

परिषद् के 'युवालोक भवन' के निर्माण की कुछ वर्षों से संजोई जा रही कल्पना तब साकार होने को आई, जब जैन विश्व भारती, लाड़नू ने जैन विश्व भारती परिसर में युवालोक निर्माण की स्वीकृति प्रदान की। युवालोक निर्माणाधीन भवन का शिलान्यास युवालोक की एक मंजिल के सौजन्यदाता एवं उत्साही श्रावक श्री सम्पतमल संचेती [मोमासर] के हाथो सम्पन्न हो चुका है। उत्साही श्रावक श्री लालमनजी अग्रवाल, कालांवाली ने युवालोक की एक मंजिल का अनुदान प्रदान कर हमें उत्साहित किया है।

साहित्य प्रकाशन

तेयुप की एक और प्रवृत्ति है लघु, बाल एवं भजन साहित्य का प्रकाशन। इस वर्ष प्रकाशित हुई पुस्तकों का विवरण—

हिवडै रो हैलो	मुनि मधुकरजी	द्वितीय सस्करण
गुजन	,,	चतुर्थ ,,
स्वर गूजे निर्माण के	,,	तृतीय ,,
अच्छे बच्चे	मुनि सुखलालजी	सप्तम ,,
प्रकाश एक है		प्रथम ,,
स्मृति के झरोखे से		
जैन संस्कार	संकलन	चतुर्थ व पंचम ,,
मंत्र दीक्षा	संकलन	संशोधित ,,

आंचलिक संयोजक

संयोजक	अंचल
श्री अमृतलाल गुप्ता, जगराओ	पंजाब
श्री मोहनलाल बंसल, कालावाली	हरियाणा
श्री गौतम श्रीश्रीमाल, बालोतरा	सिवाणची-मालानी
श्री आसकरण पारख, गंगाशहर	बीकानेर
श्री अशोकभाई संघवी, वाव	गुजरात
श्री पारसमल गोलेच्छा, बम्बई	बम्बई
श्री कमलसिंह वैद, विजयनगरम्	आन्ध्रप्रदेश
श्री लक्ष्मीचन्द पुगलिया, पीलीबंगा	श्रीगंगानगर

- अ० भा० तेयुप द्वारा आकर्षक व नयनाभिराम स्टीकरो का निर्माण व एक लाख से भी अधिक स्टीकर जारी, ये स्टीकर आचार्यवर की अमृतवाणी से युक्त।
- तेयुप का मासिक प्रकाशन 'युवादृष्टि' ने प्रकाशन यात्रा के १५ वर्ष

पूरे किए। सोलहवें वर्ष के उपलक्ष में यह 'समाज विकास विशेपांक' के रूप मे प्रकाशित हुआ।
- 'तेयुप समाचार' अखवारी स्वरूप में प्रकाशित।
- अभा तेयुप के कार्यक्रमो को देश भर में फैली शाखाओ की परिपदों द्वारा व्यापक प्रचार-प्रसार।
- अभा तेयुप व शाखा परिषदों के लिए निर्धारित विधान के अन्तर्गत पिछले वर्ष तक पजीकृत १२९ शाखाओं की तुलना में इसकी संख्या वढकर १७० हो चुकी है।
- दिल्ली में इस वार अभातेयुप व अभातेमम का संयुक्त अधिवेशन आयोजित हुआ।

—श्री भंवरलाल डागा

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल लाडनूं

संगठन यात्राएं

हमारी संस्था की अध्यक्ष श्रीमती सज्जनदेवी चोपडा ने अपनी सहयोगिनी वहिनो के साथ स्थानीय शाखा मंडलो को सक्रिय, सगठित और सुव्यवस्थित करने के लिए चार वर्षो मे राजस्थान, महाराष्ट्र, पंजाव, हरियाणा, मेवाड, मारवाड आदि क्षेत्रो की लगभग १०५ शाखाओ का निरीक्षण किया। अनेक मंडलो को अपना दायित्ववोध करवाया गया। संगठन की दृष्टि से यात्राए काफी महत्त्वपूर्ण रही। इसके साथ प्रत्येक शाखा के क्रियाकलापो की जानकारी मिली। स्थान-स्थान पर महिला मडल सक्रिय सगठन वन गए, सार्धमिक वात्सल्य के भाव प्रगाढ वने, पारस्परिक सम्पर्को को वल मिला एव केन्द्रीय प्रवृत्तियो की शाखाओ को विस्तार से जानकारी दी गई। हमारी केन्द्रीय कार्यकारिणी की सदस्याओ तथा पदाधिकारियो ने भी ४ वर्षो मे १०० क्षेत्रो की सगठन यात्रा की, जिसके परिणाम वहुत उपलब्धिपूर्ण रहे।

प्रेक्षाध्यान साधना शिविर

शिविरो का आयोजन यो तो समय-समय, पर होता ही रहता है, परतु इस वर्ष श्रद्धेय आचार्य प्रवर के पावन सान्निध्य एव युवाचार्य प्रवर के कुशल निर्देशन मे अखिल भारतीय तेरापथ महिला मडल द्वारा भारत की राजधानी दिल्ली मे दिनांक २ अगस्त से ६ अगस्त तक पंचदिवसीय महिला प्रेक्षाध्यान साधना शिविर आयोजित किया गया। इसमे देश के विभिन्न क्षेत्रो की प्रतिनिधि वहिनों ने भाग लिया।

जन सेवा

अखिल भारतीय तेरापथ महिला मंडल का यह वर्ष जन सेवा की

दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण वर्ष रहा है। मंडल के पिछले अधिवेशन में जन सेवा के महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम हाथ में लिए गए थे—

१. नेत्र चिकित्सा शिविर २. विकलांगों को कृत्रिम अंग लगाना।

३. अभावग्रस्त मेधावी वच्चों को गोद लेना ४. स्टोर संचालन।

इस वर्ष देश मे शताब्दी का सवसे भयंकर सूखा है, तो कहीं अतिवृष्टि के कारण कही-कही भयंकर बाढ़ का प्रकोप भी हुआ है। व्यक्तियों के खाने-पीने, रहने की समस्या के साथ साथ सवसे वड़ी समस्या पशुओं के चारे-पानी की है। ऐसे संकटपूर्ण समय में हमारे मंडलो ने लक्ष्य वनाया है, उनके लिए राहत व सेवाकार्य कर उनकी सहायता की है। और भी उल्लेखनीय कार्य किए हैं हमारी शाखाओं ने।

धार्मिक कार्य

हमारी शाखाओ ने धार्मिक कार्यों के साथ-साथ रचनात्मक कार्य किए है, वे हैं—प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन, श्रमणोपासक दीक्षा, तप और जप, मंत्र दीक्षा, हस्तकला प्रदर्शनी, स्वास्थ्य परीक्षण, छात्र-वृत्ति, सिलाई-बुनाई, कढ़ाई केन्द्र आदि अन्य उद्योगों पर भी उल्लेखनीय कार्य।

प्रान्तीय सम्मेलन

साध्वी पन्नांजी के सान्निध्य मे महिलाओं का विशेप सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें मेवाड़ के ३५ क्षेत्रों के मंडलों ने भाग लिया। सभी प्रतिनिधि वहिनों ने तत्त्वज्ञान, रूढ़ि उन्मूलन पर चिंतन किया व क्रियान्वित करने का संकल्प लिया।

साध्वी सिरेकुमारीजी के सान्निध्य में सिवानची-मालानी के सभी मण्डलों का सम्मेलन वालोतरा में बुलाया गया। सभी वहनो ने ज्ञानशाला, सामूहिक गोष्ठी, चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा का विशेप संकल्प लिया।

अपना भवन

किसी भी संस्था के स्थायित्व की सवसे वड़ी पहचान होती है उसका अपना भवन। हमारी कर्मठ वहनों ने आज से तेरह वर्ष पहले अर्थ संग्रह किया, भवन का निर्माण करवाया, जिसकी पहचान ब्राह्मी विद्यापीठ के नाम से होती है। वह पारमार्थिक शिक्षण संस्था की वहिनों के अध्ययन के काम आ रहा है। संस्था के कार्य संचालन के लिए जैन विश्व भारती, लाडनूं परिसर में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल का अपना भवन निर्माण की प्रक्रिया मे है, जिसे लाडनू निवासी उमरावसिहजी वैगानी अपनी पूज्य दादीसा की स्मृति मे वना रहे हैं।

० अभातेमम की पूरे देश में १६० पंजीकृत शाखाएं है।

- केन्द्रीय मंडल का रजिस्ट्रेशन।
- नारीलोक का प्रकाशन व व्यापक पत्र-व्यवहार।
- शाखा मंडलो द्वारा रचनात्मक कार्यक्रम समायोजित।

—श्रीमती शांता पुगलिया

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कलकत्ता

विधान में परिवर्तन

रतनगढ़ मे महासभा के ४ फरवरी १९८७ के विशेष साधारण अधिवेशन मे हमने सर्वसम्मति से महासभा के विधान के नियम-उपनियमों में अनेक संशोधन एवं परिवर्द्धन स्वीकार किए थे। नई कार्यसमिति का पहला प्रमुख कार्य था इस संशोधित एवं परिवर्द्धित विधान को रजिस्ट्रार ऑफ सोसाइटीज से स्वीकृत कराना। अनेक प्रयत्नो के पश्चात् २९-६ ८७ को रजिस्ट्रार ऑफ सोसाइटीज, कलकत्ता द्वारा महासभा के संशोधित विधान की स्वीकृति प्राप्त हो गई और वह तत्काल प्रभावी हो गया। नए विधान की कुछ मुख्य बातें हैं—

महासभा की सेन्ट्रल कौंसिल का अस्तित्व समाप्त हो गया, कार्यसमिति के सदस्यो की संख्या ४१ से बढ़कर १०० हो गई। साधारण सभा केवल अध्यक्ष, ट्रस्ट वोर्ड अंकेक्षक एवं आरवीट्रेशन के सदस्यो का निर्वाचन करेगी। कार्यसमिति का गठन अध्यक्ष करेंगे। कार्यसमिति में सम्भाग वार प्रतिनिधियों का कोटा निर्धारित कर दिया गया है। हमारे समाज की स्थानीय सभाएं एवं संस्थाएं महासभा की एफिलियेट मेम्वर वन सकेंगी, उनका भी २० प्रतिशत प्रतिनिधित्व महासभा की कार्यसमिति में रहेगा। कार्यसमिति का कार्यकाल अव दो वर्ष का होगा, आदि। संशोधित विधान के अनुसार कुछ सभाएं महासभा की एफिलियेट मेम्वर वन गई हैं।

महासभा के शाखा कार्यालय लाडनूं से 'जैन भारती' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन नियमित हुआ। इस वर्ष जैन भारती के दो विशेषांक प्रकाशित हुए।

१. मर्यादा एवं अमृत महोत्सव विशेषांक
२. साध्वी किरणयशा स्मृति विशेषांक

समाजभूषण स्व० छोगमलजी चोपड़ा शिक्षाकोष

समाजभूषण स्व० छोगमलजी चोपड़ा की पुण्य स्मृति में संचालित महासभा के शिक्षाकोष से इस वर्ष २३,४६० रुपयों की वार्षिक छात्रवृत्ति स्वीकृत की गई। देश के विभिन्न क्षेत्रो के २८ छात्र-छात्राएं इस छात्रवृत्ति से लाभान्वित हुए। श्री अजीतमल चोपड़ा जो स्व० छोगमलजी चोपड़ा के सुपुत्र

हैं, बड़ी निष्ठा एवं लगन के साथ अनेक वर्षो से इस विभाग के संयोजक के रूप में अपना दायित्व निभा रहे हैं। इस कोष में स्थायी जमा राशि १,७०,००० रुपया है, जिसके ब्याज की आय से छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाती है।

महिला विभाग

इस विभाग के अन्तर्गत बहिनो को सिलाई सिखाने का क्रम अनेक वर्षो से चलाया जा रहा है। इस वर्ष ४२५ बहिनो ने इसमें प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह विभाग चारित्रात्माओ की सेवा-उपासना में भी अपना पूरा दायित्व निभा रहा है। प्रेक्षाध्यान शिविर व अन्य शिविरो की व्यवस्था मे भी इस विभाग की बहिनें अपना पूरा दायित्व निभाती हैं। इस वर्ष श्रीमती मैनादेवी सुराना ने इस विभाग की संयोजिका के रूप में अपना दायित्व अच्छे ढंग से सभाला। पुस्तकालय एवं वाचनालय का व्यवस्थित संचालन हुआ।

महासभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष	:	श्री कन्हैयालाल छाजेड़
उपाध्यक्ष	:	" जंवरीमल बैंगानी
उपाध्यक्ष	:	" माणिकचंद नाहटा
उपाध्यक्ष	:	" मोतीलाल एच० राका
उपाध्यक्ष	:	" कन्हैयालाल पटावरी
उपाध्यक्ष	:	" मांगीलाल विनायकिया
उपाध्यक्ष	:	" लक्ष्मणसिंह कर्णावट
उपाध्यक्ष	:	" दौलतसिंह सुराणा
प्रधानमंत्री	:	" भवरलाल वेगवानी
उप-प्रधानमंत्री	:	" मिन्नालाल बरडिया
उप-प्रधानमंत्री	:	" भंवरलाल सिंघी
कोषाध्यक्ष	:	" रणजीतसिंह कोठारी
हिसाब परीक्षक	:	" एस० एम० डागा एण्ड क०
प्रधान ट्रस्टी	:	" खेमचन्द सेठिया
ट्रस्टी	:	" छतरसिंह बैद
ट्रस्टी	:	" जयसिंह सिंघी
ट्रस्टी	:	" माणिकचंद बांठिया
ट्रस्टी	:	" सोहनलाल दूगड़
ट्रस्टी	:	" फतेहचंद भंसाली
ट्रस्टी	:	" कैलाशचन्द गोयल

—श्री भंवरलाल बेगवाणी

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति, नई दिल्ली

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति की विविध रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रवृत्तियां इस वर्ष एक नई करवट के साथ संचालित की गई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के दिल्ली चातुर्मास से अणुव्रत समिति के कार्यक्रमो मे एक नया उत्साह एव वातावरण बना। इस वर्ष अखिल भारतीय अणुव्रत समिति की विभिन्न प्रवृत्तियो का विवरण इस प्रकार हैं—

अणुव्रत समिति का ३६ वां अधिवेशन

२५ एवं २६ जुलाई, १९८७ को अखिल भारतीय अणुव्रत समिति का ३६ वां वार्षिक अधिवेशन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में राजधानी दिल्ली मे उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में अणुव्रत समिति की नई कार्यसमिति बनी, जो इस प्रकार है—

अध्यक्ष	:	श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट
कार्याध्यक्ष	:	" मोतीलाल एच० राका
उपाध्यक्ष	:	" शुभकरण सुराना
उपाध्यक्ष	:	" बलभद्रकुमार हूजा
महामंत्री	:	" निर्मलकुमार सुराणा
संयुक्तमंत्री	:	" विजयराज सुराणा
उपमंत्री	:	" अमरचंद कुण्डलिया
अर्थमंत्री	:	" महेन्द्र धारीवाल
शिक्षामंत्री	:	" डा० धर्मेन्द्रनाथ
प्रकाशन मंत्री	:	" धरमचंद चोपड़ा
संगठन मंत्री	:	" माणकचंद बोथरा

इसके अलावा ग्यारह कार्यकारिणी के सदस्य बने। अणुव्रत अधिवेशन में अनेक विशिष्ट व्यक्तियों ने भाग लिया। भारतीय लोक जीवन मे अणुव्रत आदर्शों को प्रसारित करने के कार्य मे उल्लेखनीय सहयोग प्रदान करने वाले प्रमुख पत्रकार, साहित्यकार, शिक्षासेवी एवं समाजसेवियों को सम्मानित किया गया। अणुव्रत छात्र-निर्माण सप्ताह व उद्बोधन सप्ताह के प्रभावी एवं आकर्षक कार्यक्रम आयोजित हुए।[1]

अणुव्रत कलैण्डर का प्रकाशन

इस वर्ष समिति द्वारा अणुव्रत भावना के अनुरूप अणुव्रत आचार संहिता एवं आचार्यश्री तुलसी के आकर्षक मुद्रायुक्त एक अणुव्रत कलैण्डर का प्रकाशन किया गया। इस कलैण्डर का विमोचन पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह

१. इन सबका विस्तृत विवरण देखें, पृष्ठ ८३ व ८७।

ने किया। कलैण्डर की कीमत तीन रुपया रखी गई है।

अणुव्रत परीक्षा

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति द्वारा आयोजित अणुव्रत परीक्षाएं व्यवस्थित ढंग मे आयोजित की गई। प्रतिवर्ष की भांति आयोजित होने वाली इन परीक्षाओं का उद्देश्य छात्रों को नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से उन्नत बनाना है। इस वर्ष देश के विभिन्न भागों में करीब ५६ केन्द्रों में परीक्षाएं आयोजित की गईं। इन केन्द्रों में ३०१७ छात्र-छात्राओं ने नामांकन पत्र भरे। जिनमे अणुव्रत विज्ञ मे २११०, अणुव्रत विशारद मे ७३७, अणुव्रत प्रभाकर मे ११४ एवं अणुव्रत रत्न मे ५६ छात्र-छात्राओं के नामांकन पत्र प्राप्त हुए हैं। दिल्ली प्रदेश के करीब पांच सौ छात्र-छात्राओं की संख्या इसमे पृथक् है। अणुव्रत की ये परीक्षाएं २२ नवम्बर को आयोजित की गई थी। इन परीक्षाओ में राष्ट्रीयस्तर पर प्रथम, द्वितीय आने वाले छात्रो को सूची इस प्रकार है—

अणुव्रत विज्ञ

श्री राजी कोठारी-केलवा	प्रथम
कु० मधुबाला मादरेचा	द्वितीय
कु० सुमन बोथरा-सरदारशहर	द्वितीय
कु० राज बरड़िया-सरदारशहर	द्वितीय
श्री कालीदास नारवाड़ी-अहमदाबाद	द्वितीय

अणुव्रत विशारद

श्री ओंकार जैन-दिल्ली	प्रथम
कु० झंकार छाजेड़-सरदारशहर	द्वितीय

अणुव्रत प्रभाकर

श्री अमरजीतसिंह-दिल्ली	प्रथम
कु० मंजू छाजेड़-विक्रोली	द्वितीय

अणुव्रत रत्न

कु० उपावैन-अहमदाबाद	प्रथम
श्री शिवकुमार शर्मा-मोखुन्दा	द्वितीय

अणुव्रत यात्राएं

अणुव्रत समिति की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने, अणुव्रत आंदोलन की प्रवृत्तियो को व्यापक स्तर पर आयोजित करने एवं अणुव्रत के संगठनात्मक स्वरूप को नया स्वरूप देने के ध्येय से इस वर्ष यात्राओं का भी एक सुंदर क्रम चला। नवनिर्वाचित महामंत्री श्री निर्मलकुमार सुराणा ने विभिन्न क्षेत्रों

की यात्रा करके एक रचनात्मक वातावरण बनाया।

यात्राओ के क्रम में सर्वप्रथम श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट-अध्यक्ष, श्री निर्मल सुराणा-महामंत्री एवं श्री बुद्धमल शामसुखा आदि ने प० बंगाल के सिलीगुड़ी, असम प्रदेश के गौहाटी एवं नौगांव क्षेत्रों की यात्रा की। इस यात्रा में ग्यारह सौ रुपये के सहयोगी सदस्य बनाकर इस यात्रा को सफल बनाया। सिलीगुड़ी मे ११, नौगांव में २, गौहाटी मे ३८ सहयोगी सदस्य बने।

दूसरी यात्रा श्री निर्मल सुराणा—महामंत्री एवं श्री माणकचंद बोथरा—संगठनमंत्री ने महाराष्ट्र प्रान्त के जालना, बीड़, अम्बाजोगाई, लातूर एवं भुसावल आदि क्षेत्रो की की। इस क्षेत्र मे अणुव्रत बाल भारती, अणुव्रत परीक्षा केन्द्र, अणुव्रत रचनात्मक मंच, अन्य प्रवृत्तियों एवं अणुव्रत की संगठनात्मक दृष्टि से लोगो ने रुचि दिखाई। इस यात्रा मे भी करीब २८ सहयोगी सदस्य बने।

महामंत्री श्री निर्मलकुमार सुराणा ने मेवाड़ क्षेत्र की यात्रा वर्ष के दौरान अनेक बार की। इन यात्राओं से मेवाड़ में अणुव्रत प्रवृत्तियो की दृष्टि से काफी बल मिला है।

अणुव्रत पाक्षिक के विज्ञापन संग्रह की दृष्टि से महामंत्री श्री सुराणा एवं सयुक्तमंत्री श्री विजयराज सुराणा ने जून के प्रारम्भ मे नेपाल-विहार प्रान्त की यात्रा की। वे इस यात्रा के दौरान पटना, मुजफ्फरपुर, मोतीपुर, कटिहार, समस्तीपुर, पूर्णिया एवं विराटनगर क्षेत्रो का दौरा किया। विराटनगर मे अणुव्रत पाक्षिक की दृष्टि से काफी काम हुआ। इसके लिए श्री किशनलाल दूगड़ का सहयोग उल्लेखनीय रहा।

अणुव्रत पाक्षिक के नए आयाम

इस वर्ष अणुव्रत पाक्षिक के प्रकाशन एवं सम्पादन का कार्य राजसमन्द से स्थानान्तरित होकर दिल्ली आ गया। प्रारम्भ के तीन अंक श्री देवेन्द्रकुमार कर्णावट के सम्पादन में ही छपे। चूकि दिल्ली आने के बाद अणुव्रत पाक्षिक का प्रकाशन नई तकनीक, आधुनिक साज-सज्जा एवं नई व्यवस्था के अन्तर्गत होने लगा, इसलिए इसने एक नया परिवेश बनाया एवं बहुत लोकप्रिय हुआ।

१ दिसम्बर, १९८७ से अणुव्रत पाक्षिक के सम्पादन का दायित्व समाज के जाने-माने कार्यकर्ता एवं विचारक श्री धर्मचंद चोपड़ा के पास आया। उनके सम्पादन में 'अणुव्रत' ने हर अगले अंक में नई-नई उपलब्धिया अर्जित की हैं। अब अणुव्रत पाक्षिक की एक नई छवि समाज के सामने प्रस्तुत हो रही है। चोपड़ाजी के नेतृत्व में 'अणुव्रत' के प्रकाशन एवं संपादन का दायित्व युवा पत्रकार श्री ललित गर्ग सफलतापूर्वक संपादित कर रहे हैं।

'अणुव्रत' पाक्षिक के ग्राहक अभियान में भी तेजी आई है। ग्राहक बनाने की दृष्टि से श्री कान्तीभाई संघवी—वाव, श्री हजारीमल सेठिया-दिल्ली, श्री किशन जैन एवं श्री आसकरण पगारिया के अलावा अनेक कार्यकर्ताओं का योगदान मिला है।

अणुव्रत नियमावली का प्रकाशन

अणुव्रत नियमावली का व्यवस्थित प्रकाशन कार्य भी इस वर्ष किया। हिन्दी की अणुव्रत नियमावली एवं अंग्रेजी की नियमावली छप चुकी है। हिंदी की नियमावली के प्रकाशन में बम्बई अणुव्रत समिति एवं श्री जगदीशप्रसाद-जैन, कलकत्ता का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ, जबकि अंग्रेजी नियमावली के लिए श्री शोभाचंद मांगीलाल विनायकिया चेरिटेबल ट्रस्ट राजलदेसर एवं अहमदाबाद का आर्थिक सहयोग मिला। अणुव्रत के ११ नियमों में ग्यारहवें नियम में एक वाक्य और जोड़ा गया है 'पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूंगा।'

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के दिल्ली कार्यालय में श्री ललित गर्ग, श्री सागरमल दूगड़, श्री कर्मवीरसिंह तोमर एवं श्री जगदीश आदि कार्यरत है। दिल्ली कार्यालय की समस्त प्रवृत्तियो को संयुक्त मंत्री श्री विजयराज सुराणा कुशलता से संभाल रहे हैं। महामंत्री श्री निर्मल सुराणा भी यहां प्रायः आते रहते है एवं कार्यालय के व्यवस्थित सचालन में अपना मार्गदर्शन देते हैं।

स्व० अमनजी की स्मृति में ग्रंथ का प्रकाशन

स्व० गोपीनाथजी अमन की स्मृति में अखिल भारतीय अणुव्रत समिति द्वारा एक स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन किया गया। अमनजी अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष व वर्षों तक दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रहे।

तीन सौ बाईस पृष्ठो का यह विशाल ग्रंथ स्व० अमनजी के सार्वजनिक जीवन पर प्रकाश डालता है। अणुव्रत आन्दोलन के साथ लगातार तीन दशकों तक जुड़े रहे अमनजी के अणुव्रत-सेवी के रूप में जीए नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों से परिपूर्ण आदर्श जीवन का यह एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ प्रकाशन मे श्री कमलेश चतुर्वेदी का विशेष सहयोग रहा।

अखिल भारतीय अणुव्रत समिति द्वारा इन प्रवृत्तियों के अलावा शिक्षा, साहित्य, संस्कृति एवं चरित्र-निर्माण की दिशा मे अनेक प्रवृत्तियों का आयोजन किया गया। अणुव्रत बाल भारती, अणुव्रत शिक्षक मंच, अणुव्रत संस्कार, निर्माण केन्द्र आदि ऐसी ही प्रवृत्तियां हैं।

—श्री ललित गर्ग

जैन विश्व भारती, लाडनूं

आज से करीब १७ वर्ष पूर्व जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, स्वास्थ्य, सेवा आदि व्यापक एवं कल्याणकारी उद्देश्यों के विकास के लिए हुई। यह संस्था इन उद्देश्यो की पूर्ति की ओर उत्तरोत्तर प्रगति करती रही है। इसकी प्रवृत्तियो का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

शिक्षा (जय विद्या विहार)

ब्राह्मी विद्यापीठ, पारमार्थिक शिक्षण संस्था का प्रमुख शिक्षा-संकाय है। यहां मुमुक्षु बहिनों के लिए स्नातक स्तर की शिक्षा की व्यवस्था है। पाठ्यक्रम दो प्रकार का है। एक के अन्तर्गत राजस्थान विश्वविद्यालय एवं अजमेर बोर्ड की परीक्षाएं दिलाने का प्रावधान है तथा दूसरे के अन्तर्गत जैन विश्व भारती द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर परीक्षाएं लेने की व्यवस्था है। पाठ्य विषयो मे हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत (व्याकरण एवं साहित्य), जैन विद्या, दर्शन-शास्त्र और प्राकृत का अध्यापन होता है। प्राचार्य पद पर श्री सीताराम दाधीच कार्यरत है।

विद्यापीठ-संचालन समिति के सदस्य हैं श्री भैरूलाल बरड़िया, श्री श्रीचन्द बैगानी मंत्री, जैन विश्व भारती एव श्री भंवरलाल बेगवानी मंत्री, जैन श्वे. ते. महासभा। वर्तमान मे समणी स्मितप्रज्ञाजी सस्था में रहते हुए वाछनीय निर्देशन द्वारा योगदान कर रही है।

अनेकान्त शोधपीठ

इस अनुभाग के अन्तर्गत जैन विश्व कोष निर्माण, जैनागमो का सटिप्पण शुद्ध प्रकाशन, विशिष्ट ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद, स्नातकोत्तर अध्ययन व अध्यापन, समणी-वृन्द एवं समणों को अंग्रेजी भाषा का विशिष्ट अध्यापन आदि चालू हैं।

संस्था को डीम्ड युनिवर्सिटी के रूप मे मान्यता प्रदान कराने हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा भारत सरकार के कार्यालयो मे सघन प्रयास चल रहे हैं। नवनिर्मित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रोफेसरो व व्याख्याताओ की नियुक्ति कर ली गई है तथा स्नातकोत्तर जैन दर्शन-शास्त्र, अहिंसा व विश्व शान्ति, प्रेक्षाध्यान व जीवन-विज्ञान की कक्षाएं प्रारम्भ हो गई है। संस्था को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से संबद्ध कराने हेतु भी उच्चस्तरीय प्रयास चल रहे है।

अक्टूबर, १९८७ में दिल्ली में आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री के सान्निध्य में आयारो पर एक त्रिदिवसीय संगोष्ठी (सेमिनार) का आयोजन किया गया।

विभागीय त्रैमासिक शोध पत्रिका 'तुलसी प्रज्ञा' का प्रकाशन नियमित रूप से किया जा रहा है।

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ ने आचारांग सूत्र पर संस्कृत मे महाभाष्य तैयार किया है, उसका अग्रेजी अनुवाद डा० टाटिया ने संपन्न कर लिया है।

मुनि दुलहराजजी के निर्देशन मे साध्वी अशोकश्रीजी, साध्वी विमलप्रज्ञाजी तथा साध्वी सिद्धप्रज्ञाजी देशी शब्दकोश के कार्य में तत्पर है। समणी कुसुमप्रज्ञाजी द्वारा निर्युक्ति-गाथाओ का कार्य हो रहा है तथा प्राचीन प्राकृत पद्य-संग्रह के अन्तंगत लगभग ४० हजार कार्ड वनाए जा चुके है।

वर्धमान ग्रन्थागार

'श्रुत सन्निधि' नामक इस भव्य इमारत मे शोध-कार्य हेतु जैन, बौद्ध तथा समस्त भारतीय दर्शनो के अतिरिक्त विश्व की वहुमूल्य साहित्य निधि संगृहीत है। वर्तमान मे इसकी ग्रंथ सख्या १६०८५ है। इसके अतिरिक्त लगभग २१०० हस्तलिखित ग्रंथ भी है। सारे ग्रंथ इ-यू-ई दशमलव प्रणाली से विभिन्न विपयो मे वर्गीकृत है। प्रत्येक ग्रंथ के अलग-अलग कार्ड पुस्तक शीर्षक, लेखक तथा विपय के अनुसार वने हुए है, जिनसे शोधार्थियो को पुस्तक का प्रयोग करने मे सुविधा रहती है।

सेवाभावी कल्याण-केंद्र

इस केन्द्र के अन्तर्गत एक चिकित्सालय का सचालन हो रहा है। चिकित्सालय मे २०० रोगी प्रतिदिन निःशुल्क औपधियां प्राप्त कर स्वास्थ्य लाभ उठा रहे है।

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

इस रसायनशाला मे विशुद्ध आयुर्वेदिक तथा वहुमूल्य औपधियों का निर्माण कार्य प्रामाणिकता से किया जाता है। रसायनशाला मे लगभग ३५० औपधियो का निर्माण किया जाता है जिनमे रस, रसायन, भस्म, पर्पटी, वटी, गुग्गुल, चूर्ण, आसव, अरिप्ट, क्वाथ, अनुभूत तथा अनेक स्वर्णघटित औपधियां भी है। एक उचित मूल्य का विक्रय विभाग भी चलाया जा रहा है।

अन्य प्रवृत्तियां

'श्रीमती कानकंवरी वोथरा आयुर्वेदिक अनुसंधान एवं चिकित्सा केन्द्र' आम जनता की सेवा हेतु सादुलपुर में २६-६-८५ से चल रहा है। यह प्रतिदिन लगभग १०० रोगियो की निःशुल्क चिकित्सा-सेवा कर रहा है।

आरोग्य शोधपीठ

इस प्रवृत्ति के द्वारा प्रतिवर्ष सामयिक विपयो पर सेमिनार भी आयोजित होते है। इस वर्ष युग प्रधान आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में दिल्ली मे 'अन्तःस्रावी ग्रंथियो का शरीर एवं मन पर प्रभाव' विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया, जिसकी स्मारिका प्रकाशित की जा रही है।

आतुरालय

रोगियों को यही रखकर चिकित्सा की जा सके, एतदर्थ समाज के प्रसिद्ध दानवीर सेठ श्री हनुमानमल वेंगानी के आर्थिक सौजन्य से शीघ्र ही एक आतुरालय का विशाल भवन-निर्माण करने की योजना है।

सम्प्रति इसके विभागाध्यक्ष श्री झूमरमल वेंगानी, बीदासर एवं निदेशक वैद्य श्री सोहनलाल दाधीच है।

२. केन्द्रीय कार्यालय

सामान्य प्रशासन, पत्र-व्यवहार, जीरोक्स, स्टोक-स्टोर्स, सामग्री-क्रय, हिसाव-विभाग, वित्त, जन-सम्पर्क, राजकीय सम्पर्क, आतिथ्य, मुद्रणालय, साहित्य-प्रकाशन व विक्रय, निर्माण, विकास, परिसर व भवन अनुरक्षण, सड़क, सिचाई, हरितीकरण, पेयजल, विद्युत्, वाहन, श्रम, नीति, अमृत-निधि योजना आदि से सम्वन्धित संस्था के सर्व कार्यों का संचालन मंत्री कार्यालय करता है। ४१ सदस्यीय संचालिका समिति द्वारा लिए गए नीति संवंधी निर्णयो की क्रियान्विति का दायित्व भी इसी कार्यालय पर है।

आचार्यप्रवर द्वारा घोषित सं० २०४६ के योगक्षेम वर्ष के परिप्रेक्ष्य में संस्था परिसर में अनेक निर्माण कार्य हो रहे हैं व प्रारम्भ किए जाने हैं। इन सवकी योजना, क्रियान्विति आदि का दायित्व इसी केन्द्रीय कार्यालय पर है।

वर्तमान मे श्री श्रीचंद रामपुरिया संस्था के कुलपति, श्री खेमचंद सेठिया अध्यक्ष, श्री श्रीचंद वेंगाणी मंत्री तथा श्री हनुमानमल वेंगानी कोषाध्यक्ष हैं।

सूचना केन्द्र व प्रेस पत्र-प्रचार, प्रकाशन

इस विभाग के अन्तर्गत संघ, समाज व संस्था की विभिन्न प्रवृत्तियो को देशव्यापी जैन व राष्ट्रीय स्तर के पत्रो मे नियमित प्रकाशन का क्रम निरंतर विकासोन्मुख व गतिशील हैं। अनेक लेखों व परिसंवादो का प्रकाशन भी प्रभाव-पूर्ण ढंग से होता रहता है। सूचना केन्द्र के रूप में जन साधारण को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई जाती रही है। विशिष्ट अतिथियों, दर्शकों को संस्था-अवलोकन में यह सहयोगी रहता है। सम्प्रति इस केन्द्र का कार्य वरिष्ठ पत्रकार, अणुव्रत सेवी श्री रामस्वरूप गर्ग कुशलता से संभाल रहे हैं।

साधना विभाग (तुलसी अध्यात्म नीडम्)

इस विभाग की विविध प्रवृत्तिया नियमिततः संचालित होती रही हैं। इस विभाग के विभागाधिपति श्री सूरजमल गोठी, निर्देशक श्री शंकरलाल मेहता (संपादक प्रेक्षाध्यान) डॉ० मोहनलाल जैन व श्री जेसराज सेखानी है।[१]

---

१. इस विभाग की विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें—पृ. २८६ पर।

साहित्य प्रकाशन

जैन विश्व भारती का अपना निजी मुद्रणालय है, जिनमें आगम, आगमेतर, योग, जैन विद्या परीक्षोपयोगी एवं अन्यान्य विषयक साहित्य का मुद्रण होता रहता है। प्रेस से निम्न पत्रिकाएं नियमित रूप से मुद्रित होती रहती हैं—१. तुलसी प्रज्ञा २. प्रेक्षाध्यान ३. जैन भारती ४. अरुणिमा ५. जय तिथि पत्रक।

इस वर्ष प्रेस से प्रकाशित पुस्तकें इस प्रकार हैं—

क्रम सं०	प्रकाशन का नाम	लेखक/संपादक	संस्करण
१.	भगवान महावीर	आचार्यश्री तुलसी	चतुर्थ
२.	सोचो ! समझो !! भाग-१	,,	प्रथम
३.	सोचो ! समझो !! भाग-२	,,	प्रथम
४.	सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण	,,	छठा
५.	नवसुत्ताणि भाग-५	आचार्यश्री तुलसी युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ	प्रथम
६.	प्रेक्षाध्यान : अनुप्रेक्षा	युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ	प्रथम
७.	मन का कायाकल्प	,,	द्वितीय
८.	प्रेक्षाध्यान : प्रयोग पद्धति	,,	द्वितीय
९.	एसो पंच णमोक्कारो	,,	पांचवां
१०.	श्रमण महावीर	,,	दूसरा
११.	सोया मन जग जाए	,,	प्रथम
१२.	जीव-अजीव	,,	सातवां
१३.	प्रेक्षाध्यान : बेसिक प्रिंसिपल्स (अंग्रेजी)	,,	प्रथम
१४.	जीवन की पोथी	,,	दूसरा
१५.	मन के जीते जीत	,,	सातवां
१६.	प्रेक्षाध्यान : सिद्धांत और प्रयोग	,,	प्रथम
१७.	प्रेक्षाध्यान : थ्योरी एंड प्रेक्टिस (अंग्रेजी)	,,	प्रथम
१८.	प्रेक्षाध्यान : कंटेम्प्लेशन एंड ऑटो सजेसन (अंग्रेजी)	,,	दूसरा
१९.	तेरापंथ दिग्दर्शन १९८६-८७	मुनिश्री सुमेरमल 'लाडनूं'	प्रथम
२०.	जैन विद्या भाग-१	सं. मुनिश्री सुमेरमल 'सुदर्शन'	छठा
२१.	जैन विद्या भाग-२	,,	सातवां
२२.	निर्माण की दहलीज पर	मुनिश्री विजयकुमार	प्रथम
२३.	झंकार	,,	प्रथम
२४.	अमरकुमार : सुरसुन्दरी	मुनिश्री रोशनलाल	प्रथम

२५. भिक्खु दृष्टांत	जयाचार्य	दूसरा
२६. संबोधि के पथ पर	मुनिश्री शुभकरण	प्रथम
२७. प्रेक्षाध्यान : ह्यूमन बोड (भाग-१ अंग्रेजी)	जे० एस० जवेरी	दूसरा
२८. जीवन-विज्ञान कक्षा-८	डा० शिवकुमार शर्मा श्री कमल पोकरणा	प्रथम

समण संस्कृति संकाय

यह संकाय कई महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित करता है। उसका एक प्रमुख कार्य है जैन विद्या परीक्षाओं का आयोजन। भारत, नेपाल व भूटानव्यापी इस सप्तवर्षीय परीक्षाओ मे सन् १९८७-८८ में कुल १७४ केन्द्रों मे ६६२३ व्यक्तियों ने आवेदन पत्र भरे, परीक्षा मे ६५७४ बैठे। उनमें ५१७९ परीक्षार्थी उत्तीर्ण तथा १३९५ अनुत्तीर्ण रहे। परीक्षा परिणाम ७८.७८ प्रतिशत रहा। इस सत्र में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले मेधावी परीक्षार्थियों का विवरण इस प्रकार है—

जैन विद्या प्रवेशिका प्रथम वर्ष

केन्द्र का नाम	नामांक	परीक्षार्थी का नाम	श्रेणी
कलकत्ता	८५५	श्रीमती सुनीता संचेती	प्रथम
कलकत्ता	८३५	श्री विनीतकुमार संचेती	द्वितीय
उदासर	३१०३	श्रीमती मधु महनोत	तृतीय
प्रवेशिका द्वितीय वर्ष			
रायपुर	५५५	श्रीमती ललिता धाड़ीवाल	प्रथम
श्रीगंगानगर	१९९६	सुश्री मंजु जैन	द्वितीय
गुलावबाग	१६२२	सुश्री बबीता बैद	तृतीय
भादरा	४६०	श्रीमती सुमन पटावरी	तृतीय
विशारद प्रथम वर्ष			
दिल्ली	८३५	सुश्री सरिता सुराणा	प्रथम
राजनांदगांव	१५५	श्रीमती ज्योति कोठारी	द्वितीय
देशनोक	५५	श्रीमती सुमंगला बोरड़	तृतीय
विशारद द्वितीय वर्ष			
गंगाशहर	५२४	श्रीमती सुनीता दूगड़	प्रथम
पाली	२७४	श्रीमती शांति पुगलिया	द्वितीय
बणील	७१	सुश्री वसन्ता डांगी	तृतीय

रत्न प्रथम वर्ष

वाव	१७	सुश्री उर्मिला वहन	प्रथम
आसींद	४८	सुश्री पुष्पा वाफना	द्वितीय
टमकोर	७१	सुश्री कुसुमलता चोरड़िया	तृतीय

रत्न द्वितीय वर्ष

पीलीवंगा	११८	सुश्री सुमन जैन	प्रथम
व्यावर	३०	सुश्री ललिता हीगड़	द्वितीय
जीन्द	७७	सुश्री मंजु जैन	तृतीय

रत्न तृतीय वर्ष

गंगापुर	२७	सुश्री सुधा हिरण	प्रथम
वाव	८	सुश्री दीपिका वहन	द्वितीय
आसींद	१२	सुश्री लाड दूगड़	तृतीय

इस सत्र में १७४ केन्द्रों में संपन्न हुई जैन विद्या परीक्षाओं का केन्द्रानुसार संपूर्ण विवरण इस प्रकार है—

क्रम सं०	केन्द्र का नाम	कुल परीक्षार्थी	उत्तीर्ण	परीक्षा परिणाम प्रतिशत में
१.	सेवंत्री	२०	८	४०
२.	धीग	८	७	८७
३.	सिंधीकेला	२०	१९	९५
४.	टिटिलागढ़	१०	४	४०
५.	वोरड़ा	१२	११	९१
६.	समदडी	२५	१५	६०
७.	मोमासर	३१	२९	९३
८.	इस्लामपुर	१६	१५	९३
९.	भुसावल	२६	२२	८४
१०.	हनुमाननगर	९	७	७७
११.	देशनोक	३७	२५	६७
१२.	सायरा	४१	३०	७३
१३.	रतनगढ़	७७	५७	७४
१४.	वाव	५०	३९	७८
१५.	मांडका	१०	८	८०
१६.	भाभर	१०	९	९०
१७.	दौलतगढ़	४०	२६	६५
१८.	विनोल	४७	४४	९३

१९. भुज	४०	३६	९०
२०. विजयवाड़ा	२९	२९	१००
२१. गुड़ियात्तम	१७	१७	१००
२२. फतेहगढ़	९	९	१००
२३. मंडिया	२८	२१	७५
२४. जोजावर	२३	१९	८२
२५. चांदारूण	३०	२८	९३
२६. चारभुजा	३४	२९	८५
२७. रीछेड़	५३	३४	६४
२८. रासीसर	२०	१७	८५
२९. रानी-स्टेशन	३२	२७	८४
३०. राजनांदगांव	१४	१४	१००
३१. पालनपुर	५७	४७	८२
३२. नरवाना	७८	६८	८७
३३. थामला	१८	१६	८८
३४. चांखेड	४१	३२	७८
३५ घोईन्दा	३७	२५	६७
३६. फरीदाबाद	१८	१७	९४
३७. आसीद	१११	९२	८२
३८. ब्यावर	३३	३१	९३
३९. झकनावद	५०	३७	७४
४० औरंगावाद	३२	२०	६२
४१. आडसर	२१	१९	९०
४२. कालांवाली	८	८	१००
४३. भुवनेश्वर	५	५	१००
४४. सापोल	१०	८	८०
४५. टमकोर	१५	११	७३
४६. पड़िहारा	११	९	८१
४७. कलकत्ता	६३	५२	८२
४८. चूरू	६५	४७	७२
४९. भादरा	३०	३०	१००
५०. जयपुर (एम०)	२८	२२	७८
५१. सवाई माधोपुर	३३	२८	८४
५२. श्रीडूंगरगढ़	८१	५७	७०
५३. जयपुर सी०	२६	२६	१००

५४. रायपुर	६०	५५	९१
५५. सिलीगुड़ी	१५	१३	८६
५६. वाड़मेर	३३	२८	८४
५७. वोरावड़	६०	४२	७१
५८. आमेट	८२	६७	८१
५९. दीनहट्टा	३	३	१००
६०. केलवा	१०५	६०	५७
६१. दवेर	२३	१६	६९
६२. राजगढ़	२३	१९	८२
६३. गोगुन्दा	३८	१३	३४
६४. कालू	३६	२९	८०
६५. टॉडगढ़	४७	३७	७८
६६. कोयम्वतूर	३२	३१	९६
६७. गंगापुर	२६	१७	६५
६८. शहादा	३०	१०	३३
६९. भीलवाड़ा	३०	२२	७४
७०. पेटलावद	८२	६१	७४
७१. नाथद्वारा	४८	४६	९५
७२. जयसिंहपुर	३०	२५	८३
७३. पाली	७८	७४	९४
७४. उदयपुर	३७	३०	८३
७५. रापर	२१	२०	९५
७६. गेडी	९	९	१००
७७. तिरूवन्नामलै	१०	१०	१००
७८. सेमड़	१७	१७	१००
७९. राणावास I	१९२	१७०	८८
८०. टोहाना	४२	३३	७८
८१. कोप्पल	१७	९	५२
८२. लावासरदारगढ़	१९	१९	१००
८३. चित्रदुर्ग	१९	१७	८९
८४. इन्दौर	३०	१२	४०
८५. तारानगर	५६	४६	८२
८६. अहमदाबाद	३०	२२	७३
८७. वायतू	२४	२२	९१
८८. राजसमंद	३४	२३	६७

८६. राजलदेसर	३१	७	२२
९०. चाड़वास	२१	१६	९०
९१. बीदासर	१०७	९०	८४
९२. समानामण्डी	२६	२८	९६
९३. गौहाटी	१८	१७	९६
९४. सादुलपुर	२७	२३	८५
९५. हिसार	६८	४६	७२
९६. हेवरगांव (नोगांव)	४५	४२	९३
९७. फतेहपुर	६६	२३	३४
९८. नोखा	३३	२३	६९
९९. जीन्द	७४	६४	८६
१००. भीनासर	३२	२९	९०
१०१. लुसरा	२९	२८	९६
१०२. रामामण्डी	२४	१३	५४
१०३. मलाड़	८१	७३	९०
१०४. कांकरोली	३८	२२	५७
१०५. नाभा	३९	२८	७१
१०६. पचपदरासीटी	९४	६५	६९
१०७. देवगढ-मदारिया	२४	११	४५
१०८. पदराड़ा	३१	२५	८०
१०९. सिसाय	५	५	१००
११०. जाटावास-जोधपुर	२३	२२	९५
१११. आदर्शनगर "अ"	२२	९	४०
११२. असाढा	१८	११	६१
११३. उकलानामण्डी	३२	३०	९३
११४. सूरतगढ़	३९	३१	८१
११५. जावद	१८	१०	५५
११६. वारडोली	३९	३४	८७
११७. कानपुर	२२	२२	१००
११८. दिल्ली	२८	२७	९६
११९. कानोड़	४२	४१	९७
१२०. रामपुराफूल	४४	४१	९३
१२१. लोंगोवाल	२३	२३	१००
१२२. संगरूर	८९	३९	४३
१२३. लुधियाना	१२	११	९५

१२४. राणावास II	४२	४१	६७
१२५. उदासर	३६	३४	६७
१२६. छापर	२०	११	५५
१२७. कटिहार	३२	२५	७६
१२८. फारबिसगंज	१०४	६१	८८
१२६. मद्रास	१६८	१६७	८४
१३०. गुलाबबाग	५६	५३	६४
१३१. सरदारशहर	७७	५१	६७
१३२. बीकानेर	५८	४६	७६
१३३. दलकोला	१६	१५	७८
१३४. बालोतरा	६५	८६	६०
१३५. भट्टाबाजार	३४	३३	६७
१३६. गंगाशहर	६१	७८	८५
१३७. बंगलौर	२५१	१६८	६६
१३८. पीलीबंगा	२६	२१	७४
१३६. बम्बई	३७	२६	७२
१४०. नोहर	३०	२०	६६
१४१. खेड़ब्रह्मा	३४	२६	८५
१४२. जसोल	५६	३६	६६
१४३. कुंभकोणम्	८	७	८७
१४४. धूरी	२२	२१	६५
१४५. पटना	५	५	१००
१४६. प्रतापगंज	२०	११	५५
१४७. सुपौल	१२	६	५०
१४८. बावलास	२४	२४	१००
१४६. सुजानगढ़	२५	२४	६६
१५०. भगवतगढ़	७	५	७१
१५१. जगरावों	१०	८	८०
१५२. छोटी खाटू	२१	१७	८०
१५३. डीडवाना	१७	१५	८८
१५४. श्रीगंगानगर	२६	२४	८२
१५५. अजमेर	४५	४१	६१
१५६. कुर्ला-बम्बई	४१	३६	६५
१५७. हांसी	३५	२७	७७
१५८. लूणकरणसर	२०	१५	७५

१५९. छापली	१०	४	४०
१६०. ईडवा	९	७	७७
१६१. मोखुन्दा	१५	१२	८०
१६२. सिकन्दरावाद	११	११	१००
१६३. हिरियुर	१९	१९	१००
१६४. जवलपुर	९	८	८८
१६५. उधना	४४	२४	५४
१६६. सूरत	२१	१५	७१
१६७. अहमदगढ़	५७	४९	८५
१६८. भिवानी	२४	२१	८७
१६९. लाडनूं	३०	२४	८०
१७०. सिरसा	५७	५६	९८
१७१. किशनगंज	११	११	१००
१७२. पुर	२५	१६	६४
१७३. कुवारिया	१३	१३	१००

संकाय का दूसरा उपक्रम है पत्राचार पाठमाला। इसका उद्देश्य है घर बैठे शिक्षित युवा वर्ग को जैन दर्शन का परिचय कराना। यह योजना पिछले आठ वर्षों से चालू है। पिछले सत्र (१९८६-८७) के पत्राचार परीक्षा परिणाम संक्षेप में इस प्रकार रहे —

वर्ष	परीक्षार्थी	उत्तीर्ण	प्रतिशत
प्रथम	१०८	१०१	९३.५१
द्वितीय	४१	४१	१००

प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त मेधावी परीक्षार्थियों का विवरण इस प्रकार है—

प्रथम वर्ष

नामांक	नाम	श्रेणी
१६८	श्रीमती चन्द्रा दूगड़, अहमदावाद	प्रथम
१६४	श्रीमती कुसुम दूगड़, अहमदावाद	द्वितीय
२१६	डा० श्रीमती प्रभा सुराणा, भुसावल	तृतीय

द्वितीय वर्ष

२०	श्रीमती मंजुलता भंडारी, वोरावड़	प्रथम
३४	सुश्री सुनीता रेड़, फतेहपुर	द्वितीय
३२	सुश्री लीला वोहरा, फतेहपुर	तृतीय

संकाय की प्रवृत्तियों को सुचारु रूप से संचालित करने हेतु श्रद्धा के क्षेत्रों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए पत्र व्यवहार मुख्य साधन रहा। इस वर्ष का पत्र-व्यवहार इस प्रकार रहा—आवक पत्र-४१५६, जावक पत्र-६४७६। सम्प्रति संकाय के निदेशक हैं श्री मूलचंद घोसल।

—श्री श्रीचंद बेगानी
मंत्री, जैन विश्व भारती

पारमार्थिक शिक्षण संस्था, लाडनूं

पारमार्थिक शिक्षण संस्था पारमार्थिक उद्देश्य की संपूर्ति की एक आध्यात्मिक प्रयोगशाला है। इस संस्था मे प्रविष्ट होने वाली मुमुक्षु वहिनें किसी अभाव व विवशता की शिकार न होकर अन्तर् वैराग्य से परिपूरित हो साधनाभ्यास करती हैं। शिक्षा की दो धाराओं मे समायोजित कर वे अपने परिपूर्ण एवं विशुद्ध व्यक्तित्व के निर्माण का प्रयास करती हैं। इस वर्ष संपन्न इनकी गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की जा रही है—

दीपावली सं० २०४३ को मुमुक्षु वहिनो की संख्या ६६ थी। इस वर्ष सं० २०४४ को मुमुक्षु वहिनें ७२, उपासिका १४ थी। इस वर्ष संस्था की चार मुमुक्षु वहिनों की दीक्षा हुई।

हमेशा की भांति इस वर्ष भी सत्र का प्रारंभ आध्यात्मिक संस्कारों से हुआ। जैन योग पुनरुद्धारक युवाचार्यश्री के निदेशन में दिल्ली मे शिविर आयोजित हुआ। संस्था की आंतरिक व्यवस्था को भली-भांति संचालित करने हेतु समणी स्मितप्रज्ञाजी की नियुक्ति हुई है। उन्होने अपना कार्यभार भी संभाल लिया है।

संस्था की दैनिक चर्या ब्रह्ममुहूर्त में जागरण, ध्यान, भ्रमण, आसन, प्राणायाम, अध्ययन, अध्यापन सामूहिक तथा व्यक्तिगत कार्य से आवद्ध हैं। वहिनों को संगीतकला, चित्रकला, वक्तृत्वकला व सिलाई कला आदि कलाएं सिखाई जाती है। इन सवमें अधिक महत्त्वपूर्ण कला सिखाई जाती है वह है सामूहिक जीवन जीने की कला।

संस्था के इतिहास की अमिट स्वर्णाक्षर वनी है मुमुक्षु वहिन किरण। संस्था के इतिहास में पहली वार वहिन द्वारा संथारा व संथारे में दीक्षा हुई। ५३ दिन का संथारा संपन्न कर दीर्घतपस्विनी साध्वी किरणयशा ने महाप्रयाण किया।

अध्ययन और अध्यापन—संस्था का मूल उद्देश्य चित्त-शुद्धि और कषाय मुक्ति के साथ-साथ ज्ञानार्जन करना भी है। ज्ञानार्जन के लिए यहां अध्ययन और अध्यापन का कार्य सुचारु रूप से संचालित है। गत वर्षो की भांति शिक्षा की समुचित व्यवस्था पारमार्थिक शिक्षण संस्था द्वारा संचालित ब्राह्मी विद्या-

पीठ, में ही है। ब्राह्मी विद्यापीठ में दो प्रकार का पाठ्यक्रम चलता है—१. संस्था द्वारा संचालित पाठ्यक्रम २. राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रम। इसके अतिरिक्त जीवन-विज्ञान, जैन दर्शन आदि का पाठ्यक्रम भी जैन विश्व भारती की ओर से चल रहा है।

ब्राह्मी विद्यापीठ की प्रवृत्तियों का संचालन समणी स्मितप्रज्ञाजी एवं प्राचार्य श्री सीताराम दाधीच अपने विद्वान प्रवक्ताओं के सहयोग से कुशलतापूर्वक एवं सुन्दर तरीके से कर रहे हैं। समणीवृन्द एवं मुमुक्षु बहिनें भी सहयोग दे रही हैं। इस बार कक्षानुसार प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाली बहिनों की सूची—

कक्षा	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
प्राक् स्नातक प्रथम वर्ष 'ए'	मु० सुलोचना ८६.३४%	मु० विवेक ८०.५२%	मु० कंचन ७९.२१%
प्राक् स्नातक प्रथम वर्ष 'बी'	मु० साधना ६९.१०%	मु० संगीता ६६.३०%	मु० लता ६५.५०%
प्राक् स्नातक द्वितीय वर्ष 'ए'	समणी निर्मलप्रज्ञाजी ७६.४७%	मु० जयमाला ७०.८६%	मु० सुनन्दा ५४ ६४%
प्राक् स्नातक द्वितीय वर्ष 'बी'	मु० कनक ७७.१०%	मु० अंजु ७६.५०%	मु० कल्पना ७३.३०%
स्नातक प्रथम वर्ष	समणी चैतन्यप्रज्ञा ७१.१०%	मु० सुषमा ६६.०६%	स० निर्वाणप्रज्ञा ६४.६२%
स्नातक द्वितीय वर्ष	मु० शशि ७१.६८%	मु० नन्दा ६७.६०%	मु० कान्ता ५९.२०%
स्नातक तृतीय वर्ष	मु० सम्पत ७८.७७%	मु० स्वस्तिका ७५.७७%	स० निर्भयप्रज्ञा ६७.०५%

पर्युषण यात्राएं

एक दशक पूर्व आचार्य प्रवर के इंगित व लोगों की भावना को दृष्टि में रखते हुए मुमुक्षु बहिनो के द्वारा पर्युषण यात्रा की मंगल शुरूआत हुई। इस उपक्रम में इस बार मुमुक्षु बहिनों के ४ दल विभिन्न क्षेत्रों में धार्मिक जागरण हेतु पहुंचे।

कोरवा

मुमुक्षु संतोष के नेतृत्व मे आशा, स्वस्तिका, कांता व कंचन पर्युषण पर्व के दौरान कोरवा क्षेत्र मे गई। कोरवावासियों ने अपूर्व उत्साह के साथ बहिनो का स्वागत किया। बहुत से लोगों को व्यसनमुक्त कराने का सुन्दर प्रयास रहा। 'एन्टीपीसी' क्षेत्र जो बौद्धिकता के लिए प्रसिद्ध है, मे कार्यक्रम सुन्दर रहा।

पीपाडशहर

मुमुक्षु सुबोध के नेतृत्व मे अमिता, मधु, आरती, सुषमा, कुसुम पर्युषण महापर्व की आराधना हेतु पीपाडसीटी पहुंची। पींपाडसीटी जोधपुर जिले का एक प्राचीन शहर है और अनेक धर्मों की रंगस्थली है। श्रद्धा, आस्था से अभिसिंचित यह शहर जैनों का गढ है, लेकिन मुमुक्षु बहिनों के लिए एकदम नया था। क्षमायाचना के दिन सामूहिक जैन स्नेह मिलन कार्यक्रम मे बहिनों ने ऐतिहासिक जैन मंदिरो व जयमल ज्ञान भंडार का अवलोकन किया।

जावद

मुमुक्षु जतन के नेतृत्व में इन्दु, शशि, सुशीला, अंजु व सुलोचना जावद गई। लोगो की धार्मिक अभिरुचि के कारण चारों समय व्यवस्थित कार्यक्रम चला। सुबह आसन, प्राणायाम व ध्यान के विविध प्रयोग कराये गए। दोपहर कन्या मंडल आदि की गोष्ठियां की जाती थी। रात्रिकालीन कार्यक्रम में परिसंवाद, तत्त्वचर्चा आदि रखे गए। संवत्सरी का कार्यक्रम भी सुंदर ढंग से सानंद संपन्न हुआ।

जबलपुर

मुमुक्षु लेखा के नेतृत्व में सविता, पूनम, कनक व मीना का यह दल जबलपुर के लिए रवाना हुआ। यह मध्यप्रदेश का एक महत्त्वपूर्ण शहर है। बौद्धिकता व औद्योगिकता में यह अपना महत्त्व कायम किए हुए है, तो आध्यात्मिक दृष्टि से भी दरिद्र नही है। इस बार पर्युषण पर्व की आराधना हेतु प्रथम बार मुमुक्षु बहिनें वहां गई। १५ दिन तक वही चारों समय नियमित कार्यक्रम हुए। प्रोफेसर कालोनी मे स्थित प्रोफेसर्स परिवारों से सम्पर्क का विशेष कार्यक्रम रहा। जी० सी० एफ० कॉलेज में आयोजित दर्शन शास्त्र

के सेमिनार मे विशेष वक्तव्य हुआ। अनेक मंदिरो व धर्मस्थानो मे भी कार्य-क्रम आयोजित हुए।

अमृतायन

संस्था की इमारत नगर के शोर शराबे से दूर एकान्त वातावरण में लाडनू नगर की सातवी पट्टी में स्थित है। भवन आवासीय दृष्टि से मुमुक्षु बहिनो की संख्यावृद्धि के कारण छोटा पड़ता है, इसलिए जैन विश्व भारती के प्रांगण में पारमार्थिक शिक्षण संस्था की अनेकानेक प्रवृत्तियो के संचालन हेतु। 'अमृतायन' का निर्माण हो रहा है। अभी इस सस्था के संयोजक व मैनेजिंग ट्रस्टी श्री राणमल जीरावला, मंत्री श्री भेरूंलाल बरड़िया व उपमंत्री श्री पारसमल भंसाली है।

—**श्री भेरूंलाल बरड़िया**

आदर्श साहित्य संघ, चूरू

आदर्श साहित्य संघ का मुख्यालय चूरू है, पर शिविर कार्यालय, जहां आचार्यवर का प्रवास होता है, वहां रहता है। इसके अध्यक्ष श्री बच्छराज कठौतिया है, प्रवन्धक श्री कमलेश चतुर्वेदी हैं। संघ द्वारा प्रति सप्ताह विज्ञप्ति प्रकाशित होती है। यह विज्ञप्ति केन्द्रीय समाचारो का मुख्य वुलेटिन है। दिल्ली मर्यादा महोत्सव पर संघ का पंचम दशक प्रवेश समारोह मनाया गया, जिसमे इसके कार्यकर्त्ताओ को सम्मानित किया गया।

आदर्श साहित्य संघ आचार्यश्री, युवाचार्यश्री, साध्वी प्रमुखाश्री तथा अन्य सुधी साधु-साध्वियो की पुस्तको को पिछले काफी लबे अर्से से प्रकाशित कर रहा है। इस वर्ष सघ द्वारा प्रकाशित साहित्य इस प्रकार है—

नवीन पुस्तकें

	पुस्तक	लेखक
१.	हस्ताक्षर	आचार्य तुलसी
२.	राजपथ की खोज	"
३.	संभव है समाधान	युवाचार्य महाप्रज्ञ
४.	प्रस्तुति	"
५.	महाप्रज्ञ से साक्षात्कार	"
६.	जैन दर्शन : दिग्दर्शन	मुनि गणेशमल
७.	विवेक की बाते	"
८.	कथा कल्पतरु भाग-१	मुनि छत्रमल
९.	कथा कल्पतरु भाग-२	"
१०.	कथा कल्पतरु भाग-३	"

११.	भारतीय दर्शन के प्रमुख वाद	मुनि राकेशकुमार
१२.	स्वर्ग-नरक	"
१३.	अमृत योग	साध्वी राजीमती
१४.	आस्था के चमत्कार	साध्वी कल्पलता
१५.	संस्मरणों का वातायन	"

पुनर्मुद्रित पुस्तकें

१.	जैन तत्त्व विद्या	आचार्य तुलसी
२.	अप्पाणं सरणं गच्छामि	युवाचार्य महाप्रज्ञ
३.	अहिंसा तत्त्व दर्शन	"
४.	जैन योग	"
५.	बुद्ध की सूक्तियां : मेरी अनुभूतियां	मुनि छत्रमल्ल
६.	महावीर की सूक्तियां : मेरी अनुभूतियां	"
७.	अमृत कलश	स० डा० जिनप्रभा " स्वर्णरेखा

—श्री केशवप्रसाद शर्मा

जय तुलसी फाऊण्डेशन

फाऊण्डेशन द्वारा गत छह वर्षों से चरित्र-निर्माण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले व्यक्तियों को प्रतिवर्ष एक लाख रुपए का अणुव्रत पुरस्कार प्रदान किया जाता है। वर्ष १९८७ का अणुव्रत पुरस्कार पूर्व केन्द्रीय वित्त एवं रक्षा मन्त्री श्री सी. सुब्रमण्यम को दिया गया। इससे पूर्व डा० आत्माराम, श्री जैनेन्द्रकुमार, डा० डी. एस. कोठारी, श्री शिवाजी भावे, श्री गुलजारीलाल नंदा, श्री मोहनलाल कठोतिया अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित हो चुके हैं।

दूसरी मुख्य प्रवृत्ति में फाऊण्डेशन द्वारा समाज के अभावग्रस्त व्यक्तियों, रोगियों, निर्धन छात्रों, वृद्धों, विधवाओं को प्रतिमास आर्थिक सहयोग दिया जाता है। यह सहयोग राशि स्थानीय तेरापन्थी सभा के माध्यम से प्रतिमाह भेजी जाती है।

फाऊण्डेशन के अभी अध्यक्ष श्री धरमचंद चौपड़ा, उपाध्यक्ष श्री मांगीलाल सेठिया व श्री मांगीलाल विनायकिया सहित निदेशक मण्डल के बारह सदस्य हैं।

—श्री धरमचंद चौपड़ा

नियोजन मंडल

समाज की अखिल भारतीय स्तर की जितनी भी संस्थाएं हैं, उनमें आपसी तालमेल बैठाने की दृष्टि से नियोजन मण्डल का गठन किया गया है। तेरापन्थ अमृत संसद का आयोजन मण्डल करता है। इस वर्ष नियोजन मण्डल की कई गोष्ठियां आयोजित हुईं, जिनमे कई निर्णय लिए गए।

१६ जुलाई को दिल्ली मे इस वर्ष के लिए नियोजन मण्डल का पुनर्गठन किया गया। मण्डल में निम्नलिखित सदस्य मनोनीत किए गए—

श्री धरमचन्द चौपडा	संयुक्त संयोजक
श्री मांगीलाल सेठिया	संयुक्त संयोजक
श्री जवरीमल बैगाणी	सदस्य
श्री कन्हैयालाल छाजेड़	सदस्य
श्री हुलासचंद गोलछा	सदस्य
श्री गिरीश भगवतप्रसाद	सदस्य
श्री लक्ष्मणसिंह कर्णावट	सदस्य
श्रीमती तारादेवी सुराणा	सदस्य
श्रीमती शांतादेवी पुगलिया	सदस्य

—श्री मांगीलाल सेठिया

अन्य

साधना की दृष्टि से नई दिल्ली मे महरौली मे एक अनुपम धाम है अध्यात्म साधना केन्द्र, जहा प्रतिवर्ष देशी-विदेशी लोग ध्यान से लाभान्वित होते है। कलकत्ता की मित्र परिपद् सामाजिक कार्यों के लिए विख्यात है। युवाचार्यश्री की जितनी पुस्तकें प्रकाशित होती है, वे सभी उसके स्थायी कोष से होती है। शैक्षणिक जगत् मे समाज मे अनेक संस्थाए कार्यरत है। वे हैं राणावास की तेरापथ मानव हितकारी संघ, जयपुर का जय विद्या विहार तथा अन्य शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान। राजसमन्द में तुलसी साधना शिखर व अणुव्रत विश्व भारती की प्रवृत्तियां भी प्रभावी ढंग से सपादित हो रही हैं। इनकी रिपोर्ट न मिलने से यहां प्रस्तुत नही हो सकी। मेवाड़ मे अनेकों स्थलों पर अणुव्रत विद्यालय, अमृत भारती आदि संस्थाएं शिक्षा के क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित कर रही है। इनका विस्तृत विवरण 'तेरापंथ दिग्दर्शन १६८६-८७' में उल्लिखित है। उसके बाद भी अनेकों संस्थाओं का जन्म हुआ है।